



जीवन-श्रेयस्कर-पाठमाला



प्रकाशक—

श्री. केशर बहिन अमृतलाल भवेरी
पालनपुर (उ. गुजरात)

द्वितीयावृत्ति

१०००

श्री वीर सम्बत् २४७५

विक्रमार्क २००५

सन् १९४८ ई०

मूल्य

२)

प्रकाशक—

केशर बहिन अमृतलाल भवेरी
पालनपुर (उ. गुजरात)

विषयसूची

नाम	पृष्ठ	नाम	पृष्ठ
दशवैकालिक सूत्र	१ से ५६	उत्तराण पयक्का	२६७
सुखधिपाक भूत्र	१	सुभाषित गाथाएं	२७२
उववाई २२ गाथा	११	भक्तामर स्तोत्र	२७५
पुच्छिसु णं	१३	कल्याण मन्दिर स्तोत्र	२८३
मोक्षमार्ग अध्ययन	१६	रत्नाकर पंचविंशति	२८१
उत्तराध्ययन सूत्र	२०	पार्थना पंचविंशति	२८३
नन्दी सूत्र	२०३	चिन्तामणि पा० स्तोत्र	२८५
अनुत्तरोववाह्य सूत्र	२४६	मेरी सावना	२८५
दशाश्रुतस्कन्ध ५ वीं दशा	२६४	प्रकीर्ण गाथाएं	२८६

मुद्रक—

श्री जा० सिंह के प्रबन्धसे
श्री गुरुकुल प्रिंटिंग प्रेस, व्यावर

भूमिका

श्री जीवन-श्रेयस्कर-पाठमाला को पाठकों के कर-कमलों में समर्पित करते हुए बड़ी प्रसन्नता हो रही है। श्री छोटेलालजी यति द्वारा संचालित जीवन-श्रेयस्कर ग्रन्थमाला ने जीवन श्रेयस्कर-पाठमाला की प्रथमावृत्ति छपायी थी जिसको स्वाध्याय प्रेमियों ने ठीक पसंद की थी। अब अप्राप्य होने के कारण इसकी दूसरी आवृत्ति धर्मानुरक्ता श्रीमती केशर बहिनश्च मृतलाल जौहरी ने कई बहिनों की प्रेरणा से छपवाई है। हमें आशा ही नहीं वरन् पूर्ण विश्वास है कि पाठकों ने पहिले पाठमाला को अपनाई है उसी प्रकार इसे भी अपनावेंगे।

इस पुस्तक में प्रकाशित सूत्रों आदि का प्रकाशन यद्यपि कई स्थानों से हो चुका है किन्तु ये स्वाध्याय के लिए परमोपयोगी होने से इन सब का संग्रह एक ही जगह किया गया है। स्वाध्याय आत्मोन्नति का सरल, सुन्दर और सुगम अत्युत्तम मार्ग है। अतः स्वाध्याय के लिए उत्तमोत्तम ग्रन्थों का संग्रह करना प्रत्येक मनुष्य के लिये आवश्यक है। शास्त्र, धर्म ग्रन्थ, महा-पुरुषों के जीवन चरित्र, महापुरुषों के उपदेश, आप्तपुरुषों द्वारा उपदेशित परमपद प्राप्ति के साधनों का ज्ञान कराने वाले ग्रन्थ तथा आत्म दर्शन कराने वाले साहित्य के पठन-पाठन एवं स्वाध्याय करने से निश्चय ही विचारों में तत्काल परिवर्तन होकर जीवन शान्तिमय बन सकता है।

धर्म ग्रन्थादि, शास्त्र और उपदेश-पूर्ण पुस्तकों के पढ़ने से मनुष्य को महात्माओं तथा विद्वानों के विचार जानने को मिलते हैं, जिन्हें मनन कर मनुष्य स्वयं उनके समान बन सकता है।

स्वाध्याय से ज्ञान बुद्धि और अनुभव बढ़ता है तथा आलस्य-शत्रु का नाश होता है। मनुष्य का जैसा भी पठन-पाठन होगा तथा संगति होगी उसके आचार विचार भी वैसे ही होंगे। अतः मनुष्य को चाहिये कि वह सदा सत्पुरुषों की संगति में रहे। अर्थात् सदा सद्गुरुओं की विनय-भक्ति करना, तथा सत्संग करने का नियम रखना चाहिए।

स्वाध्याय के ५ अंग हैं। उन्हीं के अनुसार ही संत-समागम कृी टेव रखनी चाहिये। पाँच अंग निम्न हैं:—

- १ वाचना—गुरु के पास या स्वयं पढ़ना।
- २ पृच्छना—अपनी शंकाएं गुरु अथवा किसी अनुभवी से पूछना।
- ३ परावर्त्तना—पढ़े हुए भाग को पुनः सोचना या दुहराना।
- ४ अनुप्रेक्षा—पढ़े हुए विषय पर मनन करना।
- ५ धर्मकथा—अपना सिखा हुआ ज्ञान दूसरों को सुनाना, सिखलाना, व्याख्यान या चर्चा करना तथा लेखन द्वारा उनका प्रचार करना।

अतएव प्रतिदिन स्वाध्याय द्वारा थोड़ा २ ज्ञान करने से मनुष्य बहुत बड़ा ज्ञानवान् बन सकता है। इसी उद्देश्य से इस ग्रन्थ का नाम 'स्वाध्याय पाठमाला' रखने का विचार था किन्तु इसमें वर्णित सभी बातों से जीवन सुखमय बनता है इसी लिये इसका नाम 'जीवन-श्रे यस्कर-पाठमाला' रखना अधिक उपयुक्त समझा गया है।

(ग)

इस ग्रन्थ का प्रकाशन करने के लिये बम्बई व पालनपुर की कतिपय स्वाध्याय प्रेमी बहनों बहुत दिनों से आग्रह कर रही थीं इसी लिये यह द्वितीयावृत्ति छपवाई है ।

कागज और छपाई की महंगाई होने पर भी यह पुस्तक सिर्फ २) रु० में दी जाने की व्यवस्था की गई है । श्री जैन गुरुकुल प्रेस व्यावर ने इसे छापने में पूर्ण सहयोग दिया है ।

प्र० संशोधन आदि कार्य में पं० शान्तिलाल वनमाली सेठ ने तथा श्री जिनागम प्र० समिति के पंडितों ने पूर्ण परिश्रम किया है ।

श्री श्वे. स्था. जैन कॉन्फरेन्स द्वारा श्री जिनागम प्रकाशन कार्यालय चल रहा है उससे आगमों के संशोधित पाठ इसके लिये मिले हैं ।

इसके लिए उक्त विद्वानों को और जिनागम प्र० कार्यालय को हार्दिक धन्यवाद दिया जाता है, इतना प्रयत्न होने पर भी प्रेस से या दृष्टिदोष से कोई भूल रह गई हो तो पाठक सुधार कर पढ़ें और प्रकाशक को सूचित करेंगे तो कृपा होगी और नई आवृत्ति में सुधार किया जा सकेगा ।

स्वाध्यायरत सब आत्माएँ स्वकल्याण प्राप्त करें यही भावना है ।

ज्ञान पंचमी }
वि० सं० २००५ }

धीरजलाल के० तुरखिया
अभिष्ठाता, श्री जैन गुरुकुल, व्यावर



॥ अहं ॥

॥ दसवेअालियसुत्तं ॥

दुमपुण्ड्रिया नामं पढमज्झयणं ।



धम्मो मंगलमुक्किट्ठं^१ अहिंसा संजमो तवो ।
देवा वि तं नमंसंति जस्स धम्मे सया मणो ॥ १ ॥
जहा दुमस्स पुण्ड्रेसु भमरो आवियइ रसं ।
न य पुण्ड्रं किलामेइ सो य पीणेइ अप्पयं ॥ २ ॥
एमेए समणा मुत्ता जे लोए संति साहुणो ।
विहंगमा व पुण्ड्रेसु दाणभत्तेसणे रया ॥ ३ ॥
वयं च विट्ठि लब्भामो न य कोइ उवहम्मइ ।
अहागडेसु^२ रीयन्ते पुण्ड्रेसु भमरा जहा ॥ ४ ॥
महुगारसमा बुद्धा जे भवंति अणिसिंसा ।
नाणापिएडरया दन्ता तेण बुच्चन्ति साहुणो ॥ ५ ॥ त्ति बेमि ॥
॥ पढमं दुमपुण्ड्रियज्झयणं समत्तं ॥



॥ सामणपुण्ड्रियं वीयमज्झयणं ॥

कहं नु कुज्जा सामणां जो कामे न निवारण ।
एण एण विसीयंते संकप्पस्स वसं गओ ॥ १ ॥
वत्थगन्धमलंकारं इत्थीओ सयणाणि य ।
अच्छन्दा जे न भुंजन्ति न से चाइ त्ति बुच्चइ ॥ २ ॥
जे य कन्ते पिण भोए लद्धे^३ विपिट्ठिकुव्वइ ।
साहीणे चयइ भोए से हु चाइ त्ति बुच्चइ ॥ ३ ॥

१. कट्ठं । २. रीयंति । ३. वि पिट्ठी ।

समाइ पेहाइ परिव्वयन्तो

सिया मणो निस्सरई बहिद्धा ।

“न सा मंह नो वि अहं पि तीसे”

इच्चैव ताओ विणएज्ज रागं ॥ ४ ॥

आयावयाही, चय सोगमल्लं.

कामे कमाही, कमियं खु दुक्खं ।

छिन्दाहि दोसं, विणएज्ज रागं,

एवं सुही होहिसि संपराए ॥ ५ ॥

पक्खन्दे जलियं जोइ धूमकेउं दुरासयं ।

नेच्छंति वंतयं भोत्तुं कुले जाया अगंधणे ॥ ६ ॥

धिरत्थु तेऽजसोकामी^२ जो तं जीवियकारणा ।

वंतं इच्छसि आवेउं ! सेयं ते मरणां भवे ॥ ७ ॥

अहं च भोगरायस्स तं च सि अन्धगवणिहणे ।

मा कुले गन्धणा होमो, संजमं निहुओ चर ॥ ८ ॥

जइ तं काहिसि भावं जा जा दिच्छसि नारिओ ।

वायाविद्धुव्व हडो अट्टियणा भविस्ससि ॥ ९ ॥

तीसे सो वयणां सोच्चा संजयाए सुभासियं ।

अंकुसेण जहा नागो धम्मे संपडिवाइओ ॥ १० ॥

एवं करंति संबुद्धा पण्डिया पवियक्खणा ।

विणियट्ठन्ति भोगेसु जहा से पुरिसुत्तमो ॥ ११ ॥ त्ति वेमि ॥

॥ वीयं सामएणपुव्वयज्झयणं समत्तं ॥

॥ खुड्डियायार कहा नामं तइयमज्झयणं ॥

संजमे सुट्ठिअप्पाणां विप्पमुक्काण ताइरां ।
 तेसिमेयमणाइराणां निग्गन्थाण महेसिरां ॥ १ ॥
 उदेसियं कीयगडं नियागं अभिहडाणि य ।
 राइभत्ते सिणारो य गन्धमल्ले य वीयणे ॥ २ ॥
 सन्निही गिहिमत्ते य रायपिण्डे किमिच्छए ।
 संवाहणा दन्तपहोयणा य संपुच्छणा देहपलोयणा य ॥ ३ ॥
 अट्ठावण्य नालीए छत्तस्स य धारणट्ठाए ।
 तेगिच्छं^१ पाणहा पाए समारम्भं च जोइणो ॥ ४ ॥
 सिज्जायरपिण्डं च आसन्दी पलियङ्कए ।
 गिहन्तरनिसिज्जा य गायस्सुव्वट्ठणाणि य ॥ ५ ॥
 गिहिणो वेयावडियं जा य आजीववित्तिया ।
 तत्तानिव्वुडभोइत्तं आउरस्सरणाणि य ॥ ६ ॥
 मूलए सिङ्गवेरे य उच्छुखंडे अनिव्वुडे ।
 कन्दे मूले य सच्चित्ते फले वीए य आमए ॥ ७ ॥
 सेवच्चले सिन्धवे लोणे रोमालोणे य आमए ।
 सामुदे पंसुखारे य कालालोणे य आमए ॥ ८ ॥
^२धुवणेत्ति वमणे य वत्थीकम्मविरेयणे ।
 अञ्जणे दन्तवणे य गायम्भङ्गविभूसणे ॥ ९ ॥
 सव्वमेयमणाइराणां निग्गन्थाण महेसिरां
 संजमम्मि य जुत्ताणं लहुभूयविहारिणां ॥ १० ॥
 पञ्चासवपरिआया तिगुत्ता छसु संजया ।
 पञ्चनिग्गहणा धीरा निग्गन्था उज्जुदंसिणो ॥ ११ ॥
 आयावयंति गिम्हेसु, हेमन्तेसु अवाउडा ।
 वासासु पडिसंलीणा संजया सुसमाहिया ॥ १२ ॥

परीसहरिऊदन्ता ^१धुयमोहा जिइन्दिया ।
 सव्वदुक्खप्पहीणट्ठा पक्कमन्ति महेसियो ॥ १३ ॥
 दुक्कराईं करेत्ताणां दुसहाईं सहेत्तु य ।
 केइत्थ देवलोगेसु केइ सिज्झन्ति नीरया ॥ १४ ॥
 खवित्ता पुव्वकम्माईं संजमेण तवेण य ।
 सिद्धिमग्गमणुप्पत्ता ताइणो परिनिव्वुडा ॥ १५ ॥ त्ति बेमि ॥
 ॥ तइयं खुड्डियायारकहज्झयणां समत्तं ॥

॥ छज्जीवणिया नामं चउत्थमज्झयणं ॥

सुयं मे आउसं ! तेणां भगवया एवमक्खायं इह खलु
 छज्जीवणिया नामज्झयणां समणेणां भगवया महावीरेणां कास-
 वेणां पवेइया सुअक्खाया सुपणत्ता । सेयं मे अहिज्जिउं
 अज्झयणां धम्मपणत्ती ॥

कयरा खलु सा छज्जीवणिया नामज्झयणां समणेणां भग-
 वया महावीरेणां कासवेणां पवेइया सुअक्खाया सुपणत्ता
 सेयं मे अहिज्जिउं अज्झयणां धम्मपणत्ती ?

इमा खलु सा छज्जीवणिया नामज्झयणां समणेणां भग-
 वया महावीरेणां कासवेणां पवेइया सुअक्खाया सुपणत्ता
 सेयं मे अहिज्जिउं अज्झयणां धम्मपणत्ती । तं जहा-पुढवि-
 काइया, आउकाइया, तेउकाइया, वाउकाइया, वणस्सइ-
 काइया, तसकाइया ॥

पुढवी चित्तमन्तमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ
 सत्थपरिणएणां । आउ चित्तमन्तमक्खाया अणेगजीवा पुढो-

सत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएणां । तेउ चित्तमन्तमक्खाया अणेग-
जीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएणां । वाउ चित्तमन्त-
मक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएणां ।
वणस्सई चित्तमन्तमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ
सत्थपरिणएणां, तं जहा-अग्गबीया, मूलबीया, पोरबीया,
खन्धबीया, बीयरुहा, संमुच्छिमा, तणलया, वणस्सइकाइया
सबीया चित्तमन्तमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ
सत्थपरिणएणां ॥

से जे पुण इमे अणेगे बहवे तसा पाणा तं जहा—अण्डया
पोयया जराउया रसया संसेइमा संमुच्छिमा उब्भिया उव-
वाइया; जेसिं केसिंचि पाणाणां अभिक्कन्तं पडिक्कन्तं संकुचियं
पसारियं रुयं भंतं तसियं पलाइयं आगइगइविन्नाया जे य
कीडपयंगा जा य कुन्थुपिबीलिया सव्वे बेइंदिया सव्वे तेइंदिया
सव्वे चउरिंदिया सव्वे पंचिंदिया सव्वे तिक्खजोणिया सव्वे
नेरइया सव्वे मणुया सव्वे देवा सव्वे पाणा परमाहम्मिया ।
एसो खलु छट्ठो जीविकाओ “तसकाउ” त्ति पवुच्चइ ॥

इच्चेसिं छएहं जीविकायाणां नेव सयं दंडं समारंभिज्जा,
नेवन्नेहिं दंडं समारंभाविज्जा, दंडं समारम्भन्ते विअन्ने न
समणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणां मणेणां वायाए
काणां न करेमि न कारवेमि करन्तं पि अन्नं न समणुजाणामि
तस्स भन्ते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणां वोसिरामि ।

पढमे भंते ! महव्वए पाणाइवायाओ वेरमणां । सव्वं भंते !
पाणाइवायं पच्चक्खामि, से सुहुमं वा बायरं वा तसं वा
थावरं वा नेव सयं पाणे अइवाएज्जा, नेवन्नेहिं पाणे अइवा-

यावेज्जा, पाणे अइवायंते वि अन्ने न समणुजाणामि जाव-
ज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न
कारवेमि करन्ते पि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भन्ते ! पडि-
क्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि । एढमे भन्ते !
महव्वए उवट्ठिओ मि, सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं ॥१॥

अहावरे दोच्चे भन्ते ! महव्वए मुसावायाओ वेरमणं ।
सव्वं भन्ते ! मुसावायं पच्चक्खामि, से कोहा वा लोहावा
भया वा नेव सयं मुसं वणज्जा, नेवन्नेहिं मुसं वायावेज्जा,
मुसं वयन्ते वि अन्ने न समणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं
तिविहेणं मणेण वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करन्ते
पि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भन्ते ! पडिक्कमामि निन्दामि
गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि । दोच्चे भन्ते ! महव्वए उवट्ठिओ
मि, सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं ॥२॥

अहावरे तच्चे भन्ते ! महव्वए अदिन्नादाणाओ वेरमणं ।
सव्वं भन्ते ! अदिन्नादाणं पच्चक्खामि, से गामे वा नयरे वा
रणे वा अप्पं वा बहं वा अणुं वा थूलं वा चित्तमन्तं वा
अचित्तमन्तं वा नेव सयं अदिन्नं गिरहेज्जा, नेवन्नेहिं अदिन्नं
गिरहावेज्जा, अदिन्नं गिरहन्ते वि अन्ने न समणुजाणामि जाव-
ज्जीवाए तिविहं तिवेहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न
कारवेमि करन्ते पि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भन्ते ! पडि-
क्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि । तच्चे भन्ते !
महव्वए उवट्ठिओ मि, सव्वाओ अदिन्नादाणाओ वेरमणं ॥३॥

अहावरे चउत्थे भन्ते ! महव्वए मेहुणाओ वेरमणं । सव्वं
भन्ते ! मेहुणं पच्चक्खामि से दिव्वं वा माणुसं वा तिरिक्ख-
जोणियं वा नेव सयं मेहुणं सेवेज्जा, नेवन्नेहिं मेहुणं सेवावेज्जा

मेहुणां सेवन्ते वि अन्ने न समणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं
तिविहेणां मणेणां वायाए काएणां न करेमि न कारवेमि करन्तं
पि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भन्ते ! पडिकमामि निन्दामि
गरिहामि अप्पाणां वोसिरामि । चउत्थे भन्ते ! महव्वए उवट्ठिओ
मि, सव्वाओ मेहुणाओ वेरमणां ॥३॥

अहावरे पंचमे भन्ते ! महव्वए परिग्गहाओ वेरमणां ।
सव्वं भन्ते ! परिग्गहं पच्चकखामि, से अप्पं वा बहं वा अप्पं
वा थूलं वा चित्तमंतं वा अचित्तमंतं वा नेव सयं परिग्गहं
परिगिणहेज्जा, नेवन्नेहिं परिग्गहं परिगिणहावेज्जा, परिग्गहं
परिगिणहन्ते वि अन्ने न समणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं
तिविहेणां मणेणां वायाए काएणां न करेमि न कारवेमि करन्तं
पि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भन्ते पडिककमामि निन्दामि
गरिहामि अप्पाणां वोसिरामि । पंचमे भन्ते ! महव्वए उवट्ठिओ
मि, सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमणां ॥५॥

अहावरे छट्ठे भन्ते ! वए राइभोयणाओ वेरमणां । सव्वं भन्ते !
राइभोयणां पच्चकखामि से असणां वा पाणां वा खाइमं वा
साइमं वा नेव सयं राइं भुंजेज्जा, नेवन्नेहिं राइं भुजावेज्जा
राइं भुंजंते वि अन्ने न समणुजाणामि, जावज्जीवाए तिविहं
तिविहेण मणेण वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करन्तं
पि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भन्ते ! पडिककमामि निन्दामि
गरिहामि अप्पाणां वोसिरामि । छट्ठे भन्ते ! वए उवट्ठिओ मि,
सव्वाओ राइभोयणाओ वेरमणां ॥

इच्चेयाइं पंच महव्वयाइं राइभोयणवेरमणल्लुट्ठाइं अत्त
हियट्ठयाए उवसंपज्जित्ताणां विहरामि ॥६॥

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजयविरयपडिहयपच्च-
क्खायपावकम्मे दिआ वा राओ वा एगओ वा परिसागओ
वा सुत्ते वा जागरमाणे वा, से पुढविं वा भित्तिं वा सिलं वा
लेलुं वा ससरक्खं वा कायं ससरक्खं वा वत्थं हत्थेण वा
पाएण वा कट्ठेण वा किलिंचेण वा अङ्गुलियाए वा सलागाए
वा सलागहत्थेण वा न आलिहेज्जा न विलिहेज्जा न घट्टेज्जा न
भिन्देज्जा, अन्नं नालिहावेज्जा न विलिहावेज्जा न घट्टावेज्जा न
भिन्दावेज्जा, अन्नं आलिहन्तं वा विलिहन्तं वा घट्टन्तं वा
भिन्दन्तं वा न समणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं
मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करन्तं पि अन्नं
न समणुजाणामि, तस्स भन्ते ! पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि
अप्पारां वोसिरामि ॥७॥

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजयविरयपडिहयपच्चक्खा-
यपावकम्मे दिआ वा राओ वा एगओ वा परिसागओ वा सुत्ते
वा जागरमाणे वा, से उदगं वा ओसं वा हिमं वा महियं वा
करगं वा हरतणुगं वा सुद्धोदगं वा उदउल्लं वा कायं उद-
उल्लं वा वत्थं, ससिणिद्धं वा कायं, ससिणिद्धं वा वत्थं नामु-
सेज्जा न संफुसेज्जा न आवीलेज्जा न पवीलेज्जा न अक्खो-
डेज्जा न पक्खोडेज्जा न आयावेज्जा न पयावेज्जा, अन्नं
नामुसावेज्जा न संफुसावेज्जा न आवीलावेज्जा न पवीला-
वेज्जा न अक्खोडावेज्जा न पक्खोडावेज्जा न आयावेज्जा न
पयावेज्जा, अन्नं आमसन्तं वा संफुसन्तं वा आवीलन्तं वा
पवीलन्तं वा अक्खोडन्तं वा पक्खोडन्तं वा आयावन्तं वा
पयावन्तं वा न समणुजाणामि, जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं
मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करन्तं पि अन्नं

न समणुजाणामि, तस्स भन्ते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि
अप्पारां वोसिरामि ॥८॥

से भिक्षू वा भिक्षुणी वा संजयविरयपडिहयपञ्च-
कलायपायकम्मे दिआ वा गओ वा एगओ वा परिस्सामओ वा
सुत्ते वा जागरमाणे वा, से अणणिं वा इङ्गलं वा मुम्मुरं वा
अच्चिं वा जालं वा अलायं वा सुद्धाणणिं वा उक्कं वा न उज्जेज्जा
न घट्टेज्जा न भिंदेज्जा न उज्जालेज्जा न पज्जालेज्जा न
निव्वावेज्जा, अन्नं न उजावेज्जा न घट्टावेज्जा न भिंदावेज्जा
न उज्जालावेज्जा न पज्जालावेज्जा न निव्वावेज्जा, अन्नं उज्जंतं
वा घट्टंतं वा भिंदंतं वा उज्जालंतं वा पज्जालंतं वा निव्वावंतं
वा न समणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं
वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समणु-
जाणामि तस्स भन्ते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पारां
वोसिरामि ॥९॥

से भिक्षू वा भिक्षुणी वा संजयविरयपडिहयपञ्च-
कलायपायकम्मे दिआ वा गओ वा एगओ वा परिस्सामओ
वा सुत्ते वा जागरमाणे वा, से सिण्ण वा विहुयणेण वा
तालियंटेण वा पत्तेण वा पत्तभंणेण वा साहाए वा साहाभंणेण
वा पिहुणेण वा पिहुसहत्थेण वा चेलेण वा चेलकण्णेण वा
हत्थेण वा मुहेण वा अप्पणो वा कायं बाहिरं वा वि पोग्गलं
न फूमेज्जा, न वीएज्जा अन्नं न फूमावेज्जा न वीआवेज्जा अन्नं
फूमन्तं वा वीयन्तं वा न समणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं
तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं
पि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भन्ते ! पडिक्कमामि निन्दामि

गरिहामि अप्पाणं वोसरामि ॥१०॥

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजयविरयपडिहयपच्च-
क्खायपावकम्मे दिआ वा राओ वा एगओ वा परिसागओ
वा सुत्ते वा जागरमाणे वा, से वीएसु वा वीयपइट्ठेसु वा रुढेसु
वा रुढपइट्ठेसु वा जाएसु वा जायपइट्ठेसु वा हरिएसु वा
हरियपइट्ठेसु वा छिन्नेसु वा छिन्नपइट्ठेसु वा सच्चित्तसु वा
सच्चित्तकोलपडिनिस्सिएसु वा न गच्छेज्जा न चिट्ठेज्जा न
निसीएज्जा न तुयट्ठेज्जा, अन्नं न गच्छावेज्जा न चिट्ठावेज्जा न
निसीयावेज्जा न तुयट्ठावेज्जा, अन्नं गच्छन्तं वा चिट्ठंतं वा
निसीयन्तं वा तुयट्ठन्तं वा न समणुजणासि जावज्जीवाए
तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि
करन्ते पि अन्नं न समणुजणामि, तस्स भन्ते ! पडिक्कमामि
निन्दामि गरिहामि अप्पाणं वोसरामि ॥ ११ ॥

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजयविरयपडिहयपच्च-
क्खायपावकम्मे दिआ वा राओ वा एगओ वा परिसागओ वा
सुत्ते वा जागरमाणे वा, से कीडं वा पथंगं वा कुन्धु वा पिवी-
त्थियं वा हत्थंसि वा पायंसि वा बाहुंसि वा ऊरुंसि वा उद-
रंसि वा सीसंसि वा वत्थंसि वा पडिग्गहंसि वा कंबलगंसि वा
पाय-पुंछुगंसि वा रयहरांसि वा गोच्छुगंसि वा उडुगंसि वा
दण्डगंसि वा पीढगंसि वा फलगंसि वा सेज्जंसि वा संथार-
गंसि वा अन्नयरंसि वा तहप्पणारे उवगण्णजए तओ
संजयासेव पडिलेहिय पडिलेहिय पमज्जिय पमज्जिय एगन्त-
भवणेज्जा, नो एणं संघायमावज्जेज्जा ॥ १२ ॥

अजयं चरमाणो उ' पाणभूयाइं हिंसइ ।

बन्धइ पावयं कम्मं, तं से होइ कडुयं फलं ॥१॥

अजयं चिट्ठमाणो उ पाणभूयाइं हिंसइ ।
 बन्धइ पावयं कम्मं, तं से होइ कडुयं फलं ॥२॥
 अजयं आसमाणो उ पाणभूयाइं हिंसइ ।
 बन्धइ पावयं कम्मं, तं से होइ कडुयं फलं ॥३॥
 अजयं सयमाणो उ पाणभूयाइं हिंसइ ।
 बन्धइ पावयं कम्मं, तं से होइ कडुयं फलं ॥४॥
 अजयं भुजमाणो उ पाणभूयाइं हिंसइ ।
 बन्धइ पावयं कम्मं, तं से होइ कडुयं फलं ॥५॥
 अजयं भासमाणो उ पाणभूयाइं हिंसइ ।
 बन्धइ पावयं कम्मं, तं से होइ कडुयं फलं ॥६॥
 कहं चरे ? कहं चिट्ठे ? कहमासे ? कहं सए ?
 कहं भुजंतो भासंतो पावं कम्मं न बन्धइ ? ॥७॥
 जयं चरे, जयं चिट्ठे, जयमासे, जयं सए ।
 जयं भुजन्तो भासन्तो पावं कम्मं न बन्धइ ॥८॥
 सब्बभूयप्पभूयस्स सम्मं भूयाइं पासओ ।
 पिहियासवस्स दन्तस्स पावं कम्मं न बन्धइ ॥९॥
 पढमं माणं तओ दया, एवं चिट्ठइ सब्बसंजए ।
 अक्षाणी किं काही किं वा नाहिइ छेयपावणं ॥१०॥
 सोच्चा जाणइ कक्षाणां सोच्चा जाणइ पावणं ।
 उभयं पि जाणइ सोच्चा जं छेयं तं समाधरे ॥११॥
 जो जीवे वि न याणाइ अजीवे वि न याणइ ।
 जीवाजीवे अयाणन्तो कह सो नाहीइ संजमं ॥१२॥
 जो जीवे वि वियाणोइ अजीवे वि वियाणइ ।
 जीवाजीवे वियाणन्तो सो हु नाहीइ संजमं ॥१३॥

जया जीवमजीवे य दो वि एण वियाणइ ।
 तथा गइं बहुविहं सव्वजीवाण जाणइ ॥ १४ ॥
 जया गइं बहुविहं सव्वजीवाण जाणइ ।
 तथा पुण्णां च पावं च बन्धं मोक्खं च जाणइ ॥ १५ ॥
 जया पुण्णां च पावं च बन्धं मोक्खं च जाणइ ।
 तथा निव्विन्दए भोए जे दिव्वे जे य माणुसे ॥ १६ ॥
 जया निव्विन्दए भोए जे दिव्वे जे य माणुसे ।
 तथा चयइ संजोगं सव्विभतरबाहिरं ॥ १७ ॥
 जया चयइ संजोगं सव्विभतरबाहिरं ।
 तथा मुण्डे भवित्ताणं पव्वयइ अणुगारियं ॥ १८ ॥
 जया मुण्डे भवित्ताणं पव्वयइ अणुगारियं ।
 तथा संवरमुक्किट्ठं धम्मं फासे अणुत्तरं ॥ १९ ॥
 जया संवरमुक्किट्ठं धम्मं फासे अणुत्तरं ।
 तथा धुणइ कम्मरयं अबोहिकलुसं कडं ॥ २० ॥
 जया धुणइ कम्मरयं अबोहिकलुसं कडं ।
 तथा सव्वत्तगं नाणं देसणं चाभिगच्छइ ॥ २१ ॥
 जया सव्वत्तगं नाणं देसणं चाभिगच्छइ ।
 तथा लोगमलोगं च जिणो जाणइ केवली ॥ २२ ॥
 जया लोगमलोगं च जिणो जाणइ केवली ।
 तथा जोगे निहंभित्ता सेलेसिं पडिवज्जइ ॥ २३ ॥
 जया जोगे निहंभित्ता सेलेसिं पडिवज्जइ ।
 तथा कम्मं खवित्ताणं सिद्धिं गच्छइ नीरओ ॥ २४ ॥
 जया कम्मं खवित्ताणं सिद्धिं गच्छइ नीरओ ।
 तथा लोगमत्थयत्थो सिद्धो हवइ सासओ ॥ २५ ॥
 सुहसायगस्स समणस्स सायाउल्लगस्स निगमसाइस्स ।
 उच्छोलणापहोअस्स दुल्लहा सुगइ तारिसगस्स ॥ २६ ॥

तवोगुणपहाणस्स उज्जुमइखन्तिसंजमरयस्स ।
 परीसहे जिणंतस्स सुखहा सुगइ तारिसगस्स ॥ २७ ॥
 पच्छा वि ते पयाया खिणं गच्छन्ति अमरभवणाइं ।
 जेसिं पिओ तवो संजमो य खन्ती य बम्भचेरं च ॥ २८ ॥
 इच्छेयं छज्जीवणियं सम्महिट्ठी सया जए ।
 दुल्लहं लहिट्ठु साम्भरणं कम्मुणा न विराहिज्जांसि ॥ २९ ॥
 ॥ च्चि बेमि ॥

॥ चउत्थं छज्जीवणियज्झयणं समत्तं ॥

॥ पिंडेसणा नामं पंचममउभयणं-पटयो उडेसओ ॥

संपत्ते भिक्खकालम्मि असंभन्तो अमुच्छिओ ।
 इमेण कमजोगेण भत्तपाणं गवेस्तए ॥ १ ॥
 से गामे वा नयरे वा गोयरग्गओ मुणी ।
 चरे मन्दमणुव्विग्गो अव्वक्खित्तेण चेयसा ॥ २ ॥
 पुरओ जुगमायाए पेहमाणो महिं चरे ।
 वज्जनो वीयहरियाए पाणे य दग्गमट्ठियं ॥ ३ ॥
 ओवायं विसमं ख्खारुं विज्जलं परिवज्जए ।
 संकमेण न गच्छेज्जा विज्जमाणे परक्कमे ॥ ४ ॥
 षवडन्ते व से तत्थ पक्खलन्ते व संजए ।
 हिंसेज्ज पासभूयाइं तसे अट्ठुव थावरे ॥ ५ ॥
 तक्का तेण न गच्छेज्जा संजए सुसमाहिण ।
 सइ अन्नेण मग्गेण जयमेव परक्कमे ॥ ६ ॥
 इज्जालं छारियं रासिं तुसरसिं च गोमयं ।
 ससरक्खेहिं पाएहिं संजओ तं नइक्कमे ॥ ७ ॥
 न चरेज्ज वासे वासन्ते महियाए व पंडेतिण ।
 महावाए व वायंते तिरिच्छसंपाइमेसु वा ॥ ८ ॥

न चरेज्ज वेसासामन्ते वंभचेरवसाणुए ।
 वंभयारिस्स दंतस्स होज्जा तत्थ विसोत्तिया ॥ ६ ॥
 अणायणे चरंतस्स संसग्गीए अभिक्खणां ।
 होज्ज वयाणां पीला सामणम्मि य संसओ ॥ १० ॥
 तम्हा एयं वियाणित्ता दोसं दुग्गइवह्णं ।
 वज्जए वेससामंतं मुणी एगंतमस्सिए ॥ ११ ॥
 साणं सुइयं गाविं दित्तं गोणं हयं गयं ।
 संडिब्भं कलहं जुद्धं दूरओ परिवज्जए ॥ १२ ॥
 अणुन्नए नावणए अप्पहिट्ठे अणाउले ।
 इंदियाइं जहाभागं दमइत्ता मुणी चरे ॥ १३ ॥
 दवद्ववस्स न गच्छेज्जा भासमाणो य गोयरे ।
 हसंतो नाभिगच्छेज्जा कुलं उच्चावयं सया ॥ १४ ॥
 आलोयं थिग्गलं दारं सन्धिं दमभवणाणि य ।
 चरंतो न विनिज्झाए संकट्टाणां विवज्जए ॥ १५ ॥
 रन्तो गिहवईणं च रहस्साग्गिस्सयाणं^३ य ।
 संकिलेसकरं ठाणं दूरओ परिवज्जए ॥ १६ ॥
 पडिक्कुट्टकुलं न पविसे मामगं परिवज्जए ।
 अचियत्तकुलं न पविसे चियत्तं पविसे कुलं ॥ १७ ॥
 साणीपावारपिहियं अप्पणा नावपंगुरे ।
 कवाडं नो पणोल्लेज्जा ओग्गहैसि अजाइया ॥ १८ ॥
 गोयरग्गपविट्ठो उ^४ वच्चमुत्तं न धारए ।
 ओगासं फासुयं नच्चा अणुन्नविय वोसिरे ॥ १९ ॥
 नीयदुवारं तमसं कोट्टुगं परिवज्जए ।
 अचक्खुविसओ जत्थ पाणा दुप्पडिल्लेहगा ॥ २० ॥

जत्थ पुप्फाइं वीयाइं विप्पइएणाइं कोट्टए ।
 अहुणोवलिसं उल्लं ददट्ठुणं परिवज्जए ॥ २१ ॥
 एलंगं दारंगं साणं वच्छंगं वावि कोट्टए ।
 उल्लंघिया न पविसे विअहिताणं व संजए ॥ २२ ॥
 असंसत्तं पलोएज्जा नाइदूरावलोयए ।
 उप्पुल्लं न विमिज्जाए नियट्ठिज्ज अयंपिरो ॥ २३ ॥
 अइभूमिं न गच्छेज्जा गोयरग्गगओ सुणी ।
 कुलस्स भूमिं जाणित्ता मियं भूमिं परक्कमे ॥ २४ ॥
 तत्थेव पडिलेहिज्जा भूमिभागं वियक्खणो ।
 सिणाणस्स य वच्चस्स संलोगं परिवज्जए ॥ २५ ॥
 दगमट्ठियआयाणे वीयाणि हरियाणि य ।
 परिवज्जन्तो च्छिट्ठेज्जा सव्विन्दियसमाहिए ॥ २६ ॥
 तत्थ से च्छिट्ठमाणस्स आहरे पाणभोयणं ।
 अकप्पियं न गेहिहज्जा, पडिगाहेज्ज कप्पियं ॥ २७ ॥
 आहरन्ती सिया तत्थ परिसाडेज्ज भोयणं ।
 दिन्तियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥ २८ ॥
 संमद्वार्णा पाणाणि वीयाणि हरियाणि य ।
 असंजमकरिं नच्चा तारिसं परिवज्जए ॥ २९ ॥
 साहदट्ठु निक्खिवित्ताणं सच्चित्तं अट्ठियाणि य ।
 तहेव समणट्ठाए उदगं संपणोल्लिया ॥ ३० ॥
 ओगाहइत्ता चलइत्ता आहरे पाणभोयणं ।
 दिन्तियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥ ३१ ॥
 पुरेक्कमेण हत्थेण दव्वीए भायणेण वा ।
 दिन्तियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥ ३२ ॥
 एवं उदउल्ले ससिणिद्धे ससरक्खे मट्ठियाऊसे ।
 हरियाले हिङ्गुलुए मणोसिला अजणे लोणे ॥ ३३ ॥

गेरुयवणियसेडिय सोरट्टियपिट्टुकुकुसकण य ।
 उक्किट्टमसंसट्टे संसट्टे चेव बोद्धव्वे ॥ ३४ ॥
 असंसट्टेण हत्थेण दब्धीए भायणेण वा ।
 दिज्जमाणं पडिच्छेज्जा जं तत्थेसणियं भवे ॥ ३६ ॥
 दोण्हं तु भुजमाणं एगो तत्थ निमंतए ।
 दिज्जमाणं न इच्छेज्जा छन्दं से पडिच्छेहए ॥ ३७ ॥
 दोण्हं तु भुजमाणं दो वि तत्थ निमंतए ।
 दिज्जमाणं पडिच्छेज्जा जं तत्थेसणियं भवे ॥ ३८ ॥
 गुविणीए उवन्नत्थं विधिहं पाणभोयणं ।
 भुजमाणं विवज्जेज्जा, भुत्तसेसं पडिच्छए ॥ ३९ ॥
 सिया य समणट्ठाए गुविणी कालमासिणी ।
 उट्ठिया वा निसीएज्जा निसन्ना वा पुण्डुए ॥ ४० ॥
 तं भवे भत्तापाणं तु संजयाण अकप्पियं ।
 दित्थियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥ ४१ ॥
 थण्णं पिज्जमाणी दारणं वा कुमारियं ।
 तं निक्खसिअ रोअंतं आहरे ण्णभोयणं ॥ ४२ ॥
 तं भवे भत्तापाणं तु संजयाण अकप्पियं ।
 दित्थियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥ ४३ ॥
 जं भवे भत्तापाणं तु कप्पाकप्पम्मि संकियं ।
 दित्थियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥ ४४ ॥
 क्कषारणण पिहियं नीसाए पीढणण वा ।
 लोहेणं वा वि लेवेण सिलेसेण व केणइ ॥ ४५ ॥
 तं च उब्भिदिआ दिज्जा समणट्ठाए व दावए ।
 दित्थियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥ ४६ ॥
 असणं पाणं वा वि खाइमं साइमं तहा ।
 जं जाणेज्ज सुणेज्जा वा दाणट्ठा पगडं इमं ॥ ४७ ॥

तारिसं भत्तापाणां तु संजयाण अकप्पियं ।
 दिंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥ ४८ ॥
 असरां पाणगं वा वि खाइमं साइमं तहा ।
 जं जाणेज्ज सुणेज्जा वा पुण्णट्ठा पगडं इमं ॥ ४९ ॥
 तं भवे भत्तापाणां तु संजयाण अकप्पियं ।
 दिंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥ ५० ॥
 असरां पाणगं वा वि खाइमं साइमं तहा ।
 जं जाणेज्ज सुणेज्जा वा वणिमट्ठा पगडं इमं ॥ ५१ ॥
 तं भवे भत्तापाणां तु संजयाण अकप्पियं ।
 दिंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥ ५२ ॥
 असरां पाणगं वा वि खाइमं साइमं तहा ।
 जं जाणेज्ज सुणेज्जा वा समणट्ठा पगडं इमं ॥ ५३ ॥
 तं भवे भत्तापाणां तु संजयाण अकप्पियं ।
 दिंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥ ५४ ॥
 उद्देसियं कीयगडं पूइकम्मं च आहडं ।
 अज्भोयरपामिच्च मीसजायं च वज्जए ॥ ५५ ॥
 उग्गमं से अ पुच्छेज्जा कस्सट्ठा केण वा कडं ।
 सोच्चा निस्संकियं सुद्धं पडिगाहेज्ज संजए ॥ ५६ ॥
 असरां पाणगं वा वि खाइमं साइमं तहा ।
 पुण्हेसु होज्ज उम्मीसं बीएसु हरिएसु वा ॥ ५७ ॥
 तं भवे भत्तापाणां तु संजयाण अकप्पियं ।
 दिंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥ ५८ ॥
 असरां पाणगं वा वि खाइमं साइमं तहा ।
 उद्दगंमि होज्ज निक्खित्तं उत्तिगपणगेसु वा ॥ ५९ ॥
 तं भवे भत्तापाणां तु संजयाण अकप्पियं ।
 दिंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥ ६० ॥

असरां पाणं वा वि खःइमं साइमं तहा ।
 १अगप्पिम्मि होज्ज निक्खित्तं तं च संघट्टिया दए ॥ ६१ ॥
 तं भवे भत्तपाणं तु संजयाण अकप्पियं ।
 दितियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥ ६२ ॥
 एवं उस्सक्किया ओसक्किया उज्जालिया पज्जालिया निव्वाविया
 उस्सिचिया निस्सिचिया उव्वत्तिया ओयारिया दए ॥ ६३ ॥
 तं भवे भत्तपाणं तु संजयाण अकप्पियं ।
 दितियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥ ६४ ॥
 होज्ज कट्ठं सिलं वा वि इट्ठालं वा वि एगया ।
 ठवियं संकमट्ठाए तं च होज्ज चलाचलं ॥ ६५ ॥
 न तेण भिक्खू गच्छेज्जा दिट्ठो तत्थ असंजमो ।
 गम्भीरं भुत्तिरं चेव सत्थिदियसमाहिण ॥ ६६ ॥
 निस्सेणं फलंगं पीढं उस्सवित्ताणमारुहे ।
 मंचकीलं च पासायं समणट्ठाए व दावण ॥ ६७ ॥
 दुरूहमाणी पवडेज्जा हत्थं षाथं व लूसए ।
 पुढविजीवे वि हिंसेज्जा जे य तं निस्सिया जमा^२ ॥ ६८ ॥
 एयारिसे महादोसे जाणिऊण महेसिणो ।
 तम्हा मालोहडं भिक्खं न पडिगेण्हंति संजया ॥ ६९ ॥
 कंदं मूलं पलंबं वा आमं छिन्ते व सन्निरं ।
 तुबागं सिंगवेरं च आमगं परिवज्जए ॥ ७० ॥
 तहेव सत्तुचुरणाइं कोलचुरणाइं आयणे ।
 सक्कुलिं फाणियं पूयं अन्नं वा वि तहाविहं ॥ ७१ ॥
 विक्कायमाणां पसढं रएण परिफासियं ।
 दितियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥ ७२ ॥

बहुअट्ठियं पोग्गलं अणिमिसं वा बहुकंटयं ।
 अत्थियं तिंदुयं बिलं उच्छुखंडं च सिंबलिं ॥ ७३ ॥
 अप्पे सिया भोयणजाए बहुउज्झयधम्मिए ।
 दिंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥ ७४ ॥
 तहेवुच्चावयं पाणं अदुवा वारधोअणं ।
 संसेइमं चाउलोदगं अहुणाधोअं विवज्जए ॥ ७५ ॥
 जं जाणेज्ज चिराधोयं मईए दंसणेए वा ।
 पडिपुच्छिऊए सोच्चा वा जं च निस्संकियं भवे ॥ ७६ ॥
 अजीवं परिणयं नच्चा पडिगाहेज्ज संजए ।
 अह संकियं भवेज्जा आसाइत्ताए रोयए ॥ ७७ ॥
 थोवमासायणट्ठाए हत्थगम्मि द्वाहि मे ।
 मा मे अच्चबिलं पूइं नालं तएहंविणित्तए ॥ ७८ ॥
 तं च अच्चबिलं पूइं नालं तएहं विणित्तए ।
 दिंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥ ७९ ॥
 तं च होज्ज अकामेणं विमणेए पडिच्छियं ।
 तं अप्पणा न पिवे नो वि अन्नस्स दावए ॥ ८० ॥
 एगंतमवक्कमित्ता अचित्तं पडिलेहिया ।
 जयं परिट्टवेज्जा परिट्टप्प पडिक्कमे ॥ ८१ ॥
 सिया य गोयरग्गगओ इच्छेज्जा परिभोत्तअं ।
 कोट्ठगं भित्तिमूलं वा पडिलेहित्ताए फासुयं ॥ ८२ ॥
 अणुअविच्च मेहावी पडिच्छन्नम्मि संबुडे ।
 हत्थगं संपमज्जित्ता तत्थ भुंजिज्ज संजए ॥ ८३ ॥
 तत्थ से भुंजमाणस्स अट्ठियं कण्ठओ सिया ।
 तणकट्टसकरं वा वि अन्नं वा वि तहाविहं ॥ ८४ ॥

तं उक्खिवित्तु न निक्खिवे आसएण न छट्ठए ।
 हत्थेण तं गहेऊणं एगंतमवक्कमे ॥ ८५ ॥
 एगंतमवक्कमित्ता अचिंतां पडिलेहिया ।
 जयं परिट्ठवेज्जा परिट्ठप्प पडिक्कमे ॥ ८६ ॥
 सिया य भिक्खु इच्छेज्जा सेज्जमागम्म भोत्तुअं ।
 सपिंडपायमागम्म उंडुयं पडिलेहिया ॥ ८७ ॥
 विणएण पविसित्ता सगासे गुरुणो मुणी ।
 इरियावहियमायाय आगओय पडिक्कमे ॥ ८८ ॥
 आभोएत्ताण नीसेसं अइयारं जहक्कमं ।
 गमणागमणे चेव भत्तपाणे य संजए ॥ ८९ ॥
 उज्जुप्पन्नो अणुविग्गो अव्वक्खित्तेण चेयसा ।
 आलोए गुरुसगासे जं जहा गहियं भवे ॥ ९० ॥
 न सम्ममालोइयं होज्जा पुंवि पच्छा व जं कडं ।
 पुणो पडिक्कमे तस्स वोसिट्ठो चितए इमं ॥ ९१ ॥
 अहो जिणेहिऽसावज्जा वित्ती साहूण देसिया ।
 मोक्खसाहूणहेउस्स साहुदेहस्स धारणा ॥ ९२ ॥
 नमोक्कारेण पारेत्ता करेत्ता जिणसंथवं ।
 सज्झायं पट्टवित्ताणं वीसमेज्ज खणं मुणी ॥ ९३ ॥
 वीसमतो इमं चित्ते हियमट्ठं लाभमट्ठिओ^१ ।
 जइ मे अणुग्गहं कुज्जा साहू होज्जामि तारिओ ॥ ९४ ॥
 साहवो तो चियत्तेणं निमंतेज्ज जहक्कमं ।
 जइ तत्थ केइ इच्छेज्जा तेहिं सद्धिं तु भुंजए ॥ ९५ ॥
 अह कोइ न इच्छेज्जा तओ भुंजेज्ज एकओ ।
 आलोए भायणे साहू जयं अपरिसाडियं ॥ ९६ ॥

तित्तगं व कडुयं व कसायं अंबिलं व महुरं लवणं वा ।
 एयलद्धमन्नट्टपउत्तं महुघयं व भुंजेज्ज संजण ॥ ९७ ॥
 अरसं विरसं वा वि सूइयं वा असूइयं ।
 उल्लं वा जइ वा सुक्कं मंथुकुम्मासभोयणं ॥ ९८ ॥
 उप्पन्नं नाइहीलेज्ज। अप्पं वा बहु फासुयं ।
 मुहालद्धं मुहाजीवी भुंजिज्ज। दोसवज्जियं ॥ ९९ ॥
 दुल्लहा उ मुहादाई मुहाजीवी वि दुल्लहा ।
 मुहादाई मुहाजीवी दो वि गच्छन्ति सुग्गइं ॥ १०० ॥
 ॥ त्ति वेमि ॥

॥ पंचममञ्जयणस्स पिंडेसणाए पढमुद्देसओ समत्तो ॥

॥ पंचममञ्जयणं—वीओ उद्देसओ ॥

पडिग्गहं संलिहित्ताणं लेवमायाए संजण ।
 दुग्गंधं वा सुग्गंधं वा सव्वं भुंजे न छड्डुए ॥ १ ॥
 सेज्जा निसीहियाए समावन्नो य गोयरे ।
 १ अयावयट्ठा मोच्चाणं जइ तेण न संथरे ॥ २ ॥
 तओ कारणमुप्पन्ने भत्तपाणं गवेसए ।
 विहिणा पुव्वउत्तेण इमेणं उत्तरेण य ॥ ३ ॥
 कालेण निक्खमे भिक्खू कालेण य पडिक्कमे ।
 अकालं च विवज्जित्ता काले कालं समायरे ॥ ४ ॥
 अकाले चरसि भिक्खू कालं न पडिदेहसि ।
 अप्पाणं च किलामेसि सन्निवेसं च गरिहसि ॥ ५ ॥
 सइ काले चरे भिक्खू कुज्जा पुरिसकारियं ।
 अलामो त्ति न सोएज्जा तवो त्ति अहियासए ॥ ६ ॥

तहेवुच्चावया पाणा भत्तट्टाए समागया ।
 तंउज्जुयं न गच्छिज्जा जयमेव परक्कमे ॥ ७ ॥
 गोयरग्गपविट्ठो उ न निसीपज्ज कत्थइ ।
 कहं च न पबंधेज्जा चिट्ठित्ताण व संजए ॥ ८ ॥
 अगलं फलिहं दारं कवाडं वा वि संजए ।
 अवलंबिया न चिट्ठज्जा गोयरग्गगओ मुणी ॥ ९ ॥
 समरां माहरां वा वि किविरां वा वणीमगं ।
 उवसंकमेतं भत्तट्टा पाणट्टाए व संजए ॥ १० ॥
 तं अइक्कमित्तु न पविसे न चिट्ठे चक्खुगोयरे ।
 एगंतमवक्कमित्ता तत्थ चिट्ठेज्ज संजए ॥ ११ ॥
 वणीमगस्स वा तस्स दायगस्सुभयस्स वा ।
 अप्पत्तियं सिया होज्जा लहुत्तं पवयणस्स वा ॥ १२ ॥
 पडिसेहिए व दिन्ने वा तओ तम्मि नियत्तिए ।
 उवसंकमेज्ज भत्तट्टा पाणट्टाए व संजए ॥ १३ ॥
 उप्पलं पउमं वा वि कुमुयं वा मगदंतियं ।
 अन्नं वा पुप्फसच्चित्तं तं च संलुंचिया दए ॥ १४ ॥
 तं भवे भत्तपाणां तु संजयाण अकप्पियं ।
 दिंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥ १५ ॥
 उप्पलं पउमं वा वि कुमुयं वा मगदंतियं ।
 अन्नं वा पुप्फसच्चित्तं तं च संमदिया दए ॥ १६ ॥
 तं भवे भत्तपाणां तु संजयाण अकप्पियं ।
 दिंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥ १७ ॥
 सालुयं वा विरालियं कुमुयं उप्पलनालियं ।
 मुणालियं सासवनालियं उच्छुखंडं अनिवुडं ॥ १८ ॥
 तरुणं वा पवालं रुक्खस्स तणगस्स वा ।
 अन्नस्स वा वि हरियस्स आमगं परिवज्जए ॥ १९ ॥

तरुणियं वा छिवाडिं आमियं भजियं सइं ।
 दिंतियं पडियाइकसे न मे कप्पइ तारिसं ॥२०॥
 तहा 'कोलमणुस्सिन्नं वेलुयं कासवनालियं ।
 तिलपप्पडगं नीमं आमगं परिवज्जए ॥२१॥
 तहेव चाउलं पिटुं वियडं वा तत्तनिव्वुडं ।
 तिलपिटुपूइपिएणागं आमगं परिवज्जए ॥२२॥
 कविटुं माउलिंगं च मूलगं मूलगत्तियं ।
 आमं असत्थपरिणयं मखसा वि न पत्थए ॥ २३ ॥
 तहेव फलमंथूणि वीयमंथूणि जाणिया ।
 विहेलनं पियालं च आमगं परिवज्जए ॥ २४ ॥
 समुयाणां चरे भिक्खु कुलं उच्चावयं सया ।
 नीयं कुलमइक्कम्म ऊसढं नाभिधारए ॥ २५॥
 अदीणेो वित्तिमेसेज्जा न विसीएज्ज पंडिए ।
 अमुच्छिओ भोयणम्मि मायन्ने एसणारए ॥ २६ ॥
 बहुं परघरे अत्थि यिविहं खाइमसाइमं ।
 न तत्थ पंडिओ कुप्पे इच्छा दिज्ज परो न वा ॥ २७ ॥
 सयणासणवत्थं वा भत्तपाणां व संजए ।
 अदित्सस न कुप्पेज्जा पच्चकखे वि य दीसओ ॥ २८ ॥
 इत्थियं पुरिसं वा वि डहरं वा महल्लगं ।
 वंदमाणं न जाएज्जा नो य णं फरुसं वए ॥ २९ ॥
 जे न वंदे न से कुप्पे वंदिओ न समुक्कसे ।
 एवमन्नेसमाणस्स सामणणमणुचिट्ठइ ॥ ३० ॥
 सिया एगइओ लद्धं लोभेण विणिगूहइ ।
 हा मेयं दाइयं संते ददूणां सयमायए ॥ ३१ ॥

अत्तट्ठागुरुओ लुद्धो बहुं पावं पकुव्वइ ।
 दुत्तोसओ य से होइ निव्वाणं च न गच्छइ ॥ ३२ ॥
 सिया एगइओ लद्धुं विविहं पाणभोयणं ।
 भद्दं भद्दं भोच्चा विवणं विरसमाहरे ॥ ३३ ॥
 जाणंतु ता इमे समणा आययट्ठी अयं मुणी ।
 संतुट्ठो सेवणं पंतं लूहवित्ती सुतोसओ ॥ ३४ ॥
 पूयणट्ठा जसोकामी माणसंमाणकामए ।
 बहुं पसवइ पावं मायासल्लं च कुव्वइ ॥ ३५ ॥
 सुरं वा मेरुं वा वि अन्नं वा मज्जगं रसं ।
 ससक्खं न पिबे भिक्खू जसं सारक्खमप्पणो ॥ ३६ ॥
 पिबणं एगओ तेणो न मे कोइ वियाणइ ।
 तस्स पस्सह देसाइं नियडिं च सुणेह मे ॥ ३७ ॥
 वड्ढइ सौडिया तस्स मायामोसं च भिक्खुणो ।
 अयसो य अनिव्वाणं सययं च असाहुया ॥ ३८ ॥
 निच्चुविग्गो जहा तेणो अत्तकम्मेहिं दुम्मई ।
 तारिसो मरणंते वि नाराहेइ संवरं ॥ ३९ ॥
 आयरिणं नाराहेइ समणे यावि तारिसे ।
 गिहत्था वि णं गरहंति जेण जाणंति तारिसं ॥ ४० ॥
 एवं तु अगुणप्पेही गुणाणं च विवज्जओ ।
 तारिसो मरणंते वि नाराहेइ संवरं ॥ ४१ ॥
 तवं कुव्वइ मेहावी पणीयं वज्जणं रसं ।
 मज्जप्पमायविरओ तवस्सी अइउक्कसो ॥ ४२ ॥
 तस्स पस्सह कल्लाणं अणोगसाहुपूइयं ।
 विउलं अत्थसंजुलं कित्तइस्सं सुणेह मे ॥ ४३ ॥

एवं तु ^१गुणप्पेही अगुणाणां च विवज्जओ ।
 तारिस्सो मरणांते वि आराहेइ संघरं ॥ ४४ ॥
 आयरिण आराहेइ समणे यावि तारिसे ।
 निहतथा वि णं पूयन्ति जे णं जाणंति तारिस्सं ॥ ४५ ॥
 तवतेणे ^२वइतेणे रूवतेणे य जे नरे ।
 आयारभावतेणे य कुव्वइ देवकिब्बिस्सं ॥ ४६ ॥
 लङ्खण वि देवत्तं उवघओ देवकिब्बिसे ।
 तत्थावि से न याणाइ किं मे किच्चा इमं फलं ॥ ४७ ॥
 तत्तो वि से चइत्ताणं लब्धिही एलमूअयं ।
 नरयं तिरिक्खजोणिं वा बोही जत्थ सुदुल्लहा ॥ ४८ ॥
 एयं च दोस्सं दट्ठूणं नायपुत्तेण भासियं ।
 अणुमायं पि मेहवी मायासोस्सं विवज्जए ॥ ४९ ॥
 सिक्खिऊण भिक्खेसणसोहिं संजयाण बुद्धाण सगासे ।
 तत्थ भिक्खु सुप्पणिहिइंदिए तिव्वलज्जगुणवं
 विहरेज्जासि ॥ ५० ॥ त्ति बेस्मि ॥

॥ पंचमज्झयणस्स पिंडेसणाए बीओ उद्देसओ समत्तो ॥

॥ महल्लियायार कहा (धम्मत्थकाम) नामं छट्ठमज्झयणं ॥

नाणदंसणसंपन्नं संजमे य तवे रयं ।
 गणिमागमसंपन्नं उज्जाणम्मि समोसढं ॥ १ ॥
 रायाणो रायमच्चा य माहणा अदुव खत्तिया ।
 पुच्छन्ति निहुयप्पाणो कहं मे आयारगोयरो ॥ २ ॥
 तेसिं सो निहुओ दन्तो सव्वभूयसुहावहो ।
 सिक्खाए सुसमाउत्तो आइक्खइ वियक्खणो ॥ ३ ॥

इदि धम्मत्थकामाणां निग्गन्थाणां सुरोह मे ।
 आयायगोयरं भीमं सयलं दुरहिट्ठियं ॥४॥
 नन्नत्थ परिसं वुत्तं जं लोणं परमदुच्चरं ।
 विडलट्ठाणभाइस्स न भूयं न भविस्सइ ॥५॥
 सखुदुगवियत्ताणां वाहियाणां च जे गुणा ।
 अखंडफुडिया कायव्वा तं सुरोह जहा तथा ॥६॥
 दस अट्ठ य ठाणाइं जाइं बालोऽवरज्झइ ।
 तत्थ अणायरे ठाणे निग्गन्थत्ताओ भस्सइ ॥७॥
 वयछकं कायछकं अकप्पो गिहिभायणां ।
 पलियङ्कनिसेज्जा य सिणाणां सोभवज्जणां ॥८॥
 तत्थिमं पढमं ठाणां महावीरेण देसियं ।
 अहिंसा निउणा दिट्ठा सव्वभूएसु संजमो ॥ ९ ॥
 जावंति लोणं पाणा तसा अदुव थायरा ।
 ते जाखमजाणां वा न हणे नो व घायए ॥ १० ॥
 सव्वजीवा वि इच्छंति जीविउं न मरिज्जिउं ।
 तम्हा पाणवहं घोरं निग्गन्था वज्जयंति णं ॥ ११ ॥
 अप्पणट्ठा परट्ठा वा कोहा वा जइ वा भया ।
 हिंसगं न मुसं बूया नो वि अन्नं वयावए ॥ १२ ॥
 मुखावाओ य लोगंमि सव्वसाहूहिं गरहिओ ।
 अविस्ससो य भूयाणां तम्हा मोखं विवज्जए ॥ १३ ॥
 चित्तमंतमचित्तं वा अप्पं वा जइ वा वहुं ।
 दंतसोहणमेत्तं पि ओग्गहंसि अजाइया ॥ १४ ॥
 तं अप्पणा न गेहंति नो वि गिरहावए परं ।
 अन्नं वा गिरहमाणां पि नाणुज्जाणंति संजया ॥ १५ ॥
 अबंभच्चरियं घोरं पमायं दुरहिट्ठियं ।
 नायरंति मुणी लोणं भेयाययणवज्जिणो ॥ १६ ॥

मूलमेयमहम्मस्स महादोससमुस्सयं ।
तम्हा मेहुणसंसग्गं निग्गंथा वज्जयंति रां ॥ १७ ॥
विडमुब्भेमं लोरां तेहं सप्पि च फालियं ।
न ते सन्निहिमिच्छंति नायपुत्तवओरया ॥ १८ ॥
लोहस्सेस अणुप्फासो मन्ने अन्नयरामवि ।
जे सिया सन्निहीकामे गिही, पव्वइए न से ॥ १९ ॥
जं पि वत्थं व पायं व्पु कंबलं पायपुंछरां ।
नं पि संजमलज्जट्ठा धारंति परिहरंति य ॥ २० ॥
न सो परिग्गहो वुत्तो नायपुत्तेण ताइणा ।
मुच्छा परिग्गहो वुत्तो इइ वुत्तं महेसिणा ॥ २१ ॥
सव्वत्थुवहिणा बुद्धा संरक्खणपरिग्गहे ।
अवि अप्पणो वि देहंमि नायरंति ममाइयं ॥ २२ ॥
अहो निच्चं तवोकम्मं सव्वबुद्धेहिं वरिणयं ।
जा य लज्जासमा वित्ती एगभत्तं च भोयणं ॥ २३ ॥
संतिमे सुहुमा पाणा तसा अदुव थावरा ।
जाइं राओ अपासंतो कहमेसणियं चरे ॥ २४ ॥
उदउल्लं बीयसंसत्तं पाणा निव्वडिया महिं ।
दिआ ताइं विवज्जेज्जा राओ तत्थ कहं चरे ॥ २५ ॥
एयं च दोसं दट्ठूरां नायपुत्तेण भासियं ।
सव्वाहारं न भुंजंति निग्गंथा राइभोयरां ॥ २६ ॥
पुढविकायं न हिंसंति मणसा वयस कायसा ।
तिविहेण कस्सजोएण संजया सुसमाहिया ॥ २७ ॥
पुढविकायं विहिंसंतो हिंसइ उ तयस्सिए ।
तस्से य विविहे पाणे चक्खु से य अचक्खुसे ॥ २८ ॥
तम्हा एयं वियाणित्ता दोसं दुग्गइवइठरां ।
पुढविकायसमारंभं जावज्जीवाए वज्जए ॥ २९ ॥

आउकायं न हिंसति मणसा वयस कायसा ।
 तिविहेण करणजोएण संजया सुसमाहिया ॥ ३० ॥
 आउकायं विहिंसंतो हिंसइ उ तयस्सिए ।
 तसे व विविहे पाणे चक्खु से य अचक्खुसे ॥ ३१ ॥
 तम्हा एयं विद्याणित्ता दोसं दुग्गइवड्ढरां ।
 आउकायसमारंभं जावज्जीवाए वज्जए ॥ ३२ ॥
 जायतेयं न इच्छंति पावगं जल्लइत्तए ।
 तिक्खमन्नयरं सत्थं सव्वओ वि दुरासयं ॥ ३३ ॥
 पाईणं पडिणं वा वि उड्ढं अणुदिसामवि ।
 अहे दाहिणओ वा वि दहे उत्तरओ वि य ॥ ३४ ॥
 भूयाणमेसमाघाओ हव्ववाहो न संसओ ।
 तं पईवपयावट्ठा संजया किंचि नारभे ॥ ३५ ॥
 तम्हा एयं विद्याणित्ता दोसं दुग्गइवड्ढरां ।
 तेउकायसमारंभं जावज्जीवाए वज्जए ॥ ३६ ॥
 अनिलस्स समारंभं बुद्धा मन्नेति तारिसं ।
 सावज्जबहुलं चेयं नेयं ताईहिं सेवियं ॥ ३७ ॥
 तालियंटेण पत्तेण साहायिदुयणेण वा ।
 न ते वीइउमिच्छंति वीयावेऊण वा परं ॥ ३८ ॥
 जं पि वत्थं व पायं वा कंबलं पायपुंछरां ।
 न ते वायमुईरंति, जयं परिहरंति य ॥ ३९ ॥
 तम्हा एयं विद्याणित्ता दोसं दुग्गइवड्ढरां ।
 वाउकायसमारंभं जावज्जीवाए वज्जए ॥ ४० ॥
 वणस्सइ न हिंसंति मणसा वयस कायसा ।
 तिविहेण करणजोएण संजया सुसमाहिया ॥ ४१ ॥
 वणस्सइ विहिंसंतो हिंसइ उ तयस्सिए ।
 तसे य विविहे पाणे चक्खुसे य अचक्खुसे ॥ ४२ ॥

तम्हा एयं वियाणिता दोसं दुग्गइवड्ढणं ।
 वणस्सइसमारंभं जावज्जीवाए वज्जए ॥ ४३ ॥
 तसकायं न हिंसंति मणसा वयस कायसा ।
 तिविहेण करणजोएण संजया सुसमाहिया ॥ ४४ ॥
 तसकायं विहिंसंतो हिंसइ उ तयस्सिए ।
 तसे य विविहे पाणे चक्खुसे य अचक्खुसे ॥ ४५ ॥
 तम्हा एयं वियाणिता दोसं दुग्गइवड्ढणं ।
 तसकायसमारंभं जावज्जीवाए वज्जए ॥ ४६ ॥
 जाइं चत्तारिऽभोज्जाइं इसिणाद्वारमाइणि ।
 ताइं तु विवज्जन्तो संजमं अणुपालए ॥ ४७ ॥
 पिंडं सेज्जं च वत्थं च चउत्थं पायमेव य ।
 अकप्पियं न इच्छेजा पडिगाहेज्ज कप्पियं ॥ ४८ ॥
 जे नियागं ममायंति कीयमुद्देसियाहडं ।
 वहं ते समणुजारांति इइ वुत्तं महेसिणा ॥ ४९ ॥
 तम्हा असणपाणाइं कीयमुद्देसियाहडं ।
 वज्जयंति ठियप्पाणे निग्गंथा धम्मजीविणे ॥ ५० ॥
 कंसेसु कंसपाएसु कुंडमोएसु वा पुणे ।
 भुंजंतो असणपाणाइ आयरा परिभस्सइ ॥ ५१ ॥
 सीओदगसमारंमे मत्तधोयणछुड्डणे ।
 जाइं छंरांति भूयाइं दिट्ठो तत्थ असंजमो ॥ ५२ ॥
 पच्छाकम्मं पुरेकम्मं सिया तत्थ न कप्पइ ।
 एयमट्ठं न भुंजंति निग्गंथा गिहिभायणे ॥ ५३ ॥
 आसंदीपलियंकेसु मंचमासालएसु वा ।
 अणायरियमज्जारां आसइत्तु सइत्तु वा ॥ ५४ ॥
 नासंदीपलियंकेसु न निसेज्जा न पीढए ।
 निग्गंथाऽपडिलेहाए बुद्धवुत्तमहिट्ठगा ॥ ५५ ॥

गंभीरविजया एए पाणा दुप्पडिलेहगा ।
 आसंदीपलियंको य एयमट्ठं विवज्जया ॥ ५६ ॥
 गोयरग्गपविट्ठस्स निसेज्जा जस्स कप्पइ ।
 इमेरिसमणायारं आवज्जइ अबोहियं ॥ ५७ ॥
 विवत्ती बंभचैरस्स पाणाणां च वहे वहो ।
 वणीमगपडिग्घाओ पडिकोहो अगारिणां ॥ ५८ ॥
 अगुत्ती बंभचैरस्स इत्थीओ वावि संकरां ।
 कुसीलघट्ठरां ठारां दूरओ परिवज्जए ॥ ५९ ॥
 तिरहमन्नयरागस्स निसेज्जा जस्स कप्पइ ।
 जराए अभिभूयस्स वाहियस्स तवस्सिणो ॥ ६० ॥
 वाहिओ वा अरोगी वा सिणाणं जो उ पत्थए ।
 बुक्कंतो होइ आयारो, जढो हवइ संजमो ॥ ६१ ॥
 संतिमे सुहुमा पाणा घसासु भिलुगासु य ।
 जे उ भिक्खू सिणायंतो वियडेणुप्पलावए ॥ ६२ ॥
 तम्हा ते न सिणायंति सीएण उसिणेण वा ।
 जाक्कजीवं वयं घोरे असिणाणमहिट्ठगा ॥ ६३ ॥
 सिणाणां अदुवा कक्कं लोद्धं पउमगाणि य ।
 गायस्सुव्वट्ठणट्ठाए नायरंति कयाइ वि ॥ ६४ ॥
 नणिणस्स वा वि मुंडस्स दीहरोमनहंसिणो ।
 मेहुणा उवसंतस्स किं विभूसाए कारियं ॥ ६५ ॥
 विभूसावत्तिंय भिक्खू कम्मं बंधइ त्विक्कणां ।
 संसारसायरे घोरे जेणं पडइ दुरुत्तरे ॥ ६६ ॥
 विभूसावत्तिंय चेयं बुद्धा मन्नंति तारिसं ।
 सावज्जबहुलं चेयं नेयं ताईहिं सेवियं ॥ ६७ ॥

खवेंति अप्पाणममोहदंसिणो ।

तवे रया संजमअज्जवे गुणे ।

धुरांति पावाइं पुरेकडाइं
 नवाइं पावाइं न ते करेंति ॥ ६८ ॥
 सओवसंता अममा अकिंचणा
 सविज्जविज्जाणुगया जसंसिणो ।
 उउप्पसन्ने विमले व चंदिमा
 सिद्धिं विमाणाइं उवेंति ताइणो ॥ ६९ ॥ त्ति वेमि ॥
 ॥ षड्ढंमहिस्त्रियायारकहज्झयणं समत्तं ॥

॥ वक्कसुद्धी नामं सत्तममज्झयणं ॥

चण्हं खलु भासाणं परिसंखाय पण्णवं ।
 दोण्हं तु विणयं सिक्खे दो न भासेज्ज सव्वसो ॥ १ ॥
 जा य सच्चा अवच्चवा सच्चामोसा य जा मुसा ।
 जा य बुद्धेहिऽसाइरणा न तं भासेज्ज पन्नवं ॥ २ ॥
 असच्चमोसं सच्चं च अणवज्जमककसं ।
 समुप्पेहमसंदिद्धं गिरं भासेज्ज पन्नवं ॥ ३ ॥
 एयं च अट्टमन्नं वा जं तु नामेइसासयं ।
 स भासं सच्चमोसं पि तं पि धीरो विवज्जए ॥ ४ ॥
 वितहं पि तहामुत्तिं जं गिरं भासए नरो ।
 तम्हा सो पुट्ठो पावेणं किं पुण जो मुसं वए ॥ ५ ॥
 तम्हा गच्छामो वक्खामो अमुगं वा णे भविस्सइ ।
 अहं वा णं करिस्सामि एसो वा णं करिस्सइ ॥ ६ ॥
 एवमाइ उ जा भासा एस्सकालम्मि संक्रिया ।
 संपयाईयमट्ठे वा तं पि धीरो विवज्जए ॥ ७ ॥
 अईयम्मि य कालम्मि पच्चुप्पन्नमणागए ।
 जमट्ठं तु न जाणेज्जा एवमेयं ति नो वए ॥ ८ ॥

अईयम्मि य कालम्मि पच्चुप्पन्नमणागए ।
 जत्थ संका भवे जं तु एवमेयं ति नो वए ॥ ६ ॥
 अईयम्मि य कालम्मि पच्चुप्पन्नमणागए ।
 निस्संक्किं भवे जं तु एवमेयं ति निहिसे ॥ १० ॥
 तहेव फरुसा भासा गुरुभूओवघाइणी ।
 सच्च्चा वि सा न वत्तव्वा जओ पावस्स आगमो ॥ ११ ॥
 तहेव काणं काणे त्ति पंडगं पंडगे त्ति वा ।
 वाहियं वा वि रोगि त्ति तेणं चोरे त्ति नो वए ॥ १२ ॥
 एएलम्भेण अट्टेण परो जेणुवहम्मइ ।
 आथारभभवदोसन्नू न तं भासेज्ज पन्नवं ॥ १३ ॥
 तहेव होले गोले त्ति सारो वा वसुले त्ति य ।
 दमए दूहए वा वि न तं भासेज्ज पन्नवं ॥ १४ ॥
 अज्जिए पज्जिए वा वि अम्मो माउसिए त्ति य ।
 पिउसिए भाइरोज्ज त्ति धुए नत्तुणिए त्ति य ॥ १५ ॥
 हले हले त्ति अन्ने त्ति भट्टे सामिणि गोमिणि ।
 होले गोले वसुले त्ति इत्थियं नेवमालवे ॥ १६ ॥
 नामधेज्जेण णं बूया इत्थीगोत्तेण वा पुणो ।
 जहारिहमभिगिज्झ आलवेज्ज लवेज्ज वा ॥ १७ ॥
 अज्जए पज्जए वा वि वण्णो चुल्लपिउ त्ति य ।
 साउल्ल भाइरोज्ज त्ति पुत्ते नत्तुणिय त्ति य ॥ १८ ॥
 हे हो हले त्ति अन्ने त्ति भट्टे सामिय गोमिय ।
 होल गोल वसुले त्ति पुरिसं नेवमालवे ॥ १९ ॥
 नामधेज्जेण णं बूया पुरिसगोत्तेण वा पुणो ।
 जहारिहमभिगिज्झ आलवेज्ज लवेज्ज वा ॥ २० ॥

पंचिन्दिआणं पाणाणं एस इत्थी अयं पुमं ।
 जाव एं न विजाणेज्जा ताव जाइ त्ति आलवे ॥ २१ ॥
 तहेव माणुसं पसुं पक्खि वा वि सरीसवं ।
 थूले पमेइले वज्जे पायसित्ति य नो वए ॥ २२ ॥
 परिवूढत्ति एं वूया वूया उवच्चि ए त्ति य ।
 संजाए पीणि ए वा वि महाकाए त्ति आलवे ॥ २३ ॥
 तहेव गाओ दोज्झाओ दम्मा गोरहग त्ति य ।
 वाहिमा रहजोग्गत्ति नेवं भासेज्ज पन्नवं ॥ २४ ॥
 जुवं गवे त्ति एं वूया धेणुं रसदयत्ति य ।
 रहस्से महल्ल ए वा वि वए संवहणे त्ति य ॥ २५ ॥
 तहेव गंतुमुज्जाणं पव्वयाणि वणाणि य ।
 रुक्खा महल्ल पेहाए नेवं भासेज्ज पन्नवं ॥ २६ ॥
 अलं पासायखंभाणं तोरण्णाणं गिहाण य ।
 फलिहगलनावाणं अलं उदगदोणिणं ॥ २७ ॥
 पीढए चंगवेरे य नंगले मइयं सिया ।
 जन्तलट्ठी व नाभी वा गंडिया व अलं सिया ॥ २८ ॥
 आसणं सयणं जाणं होज्जा वा किंचुवस्सए ।
 भूओवघाइणि भासं नेवं भासेज्ज पन्नवं ॥ २९ ॥
 तहेव गंतुमुज्जाणं पव्वयाणि वणाणि य ।
 रुक्खा महल्ल पेहाए एवं भासेज्ज पन्नवं ॥ ३० ॥
 जाइमंता इमे रुक्खा दीहवट्ठा महालया ।
 पयायसाला विडिमा वए दरिसणित्ति य ॥ ३१ ॥
 तहा फलाइं पक्काइं पायखज्जाइं नो वए ।
 वेलोइयाइं टालाइं वेहिमाइं ति नो वए ॥ ३२ ॥

१ असंघडा इमे अंवा बहुनिव्वडिमा^१ फला ।
 वणज बहुसंभूया भूयरूवत्ति वा पुणे ॥ ३३ ॥
 तहेवोसहीओ पक्काओ नीलियाओ छवी इ य ।
 लाइमा भज्जिमाओ त्ति पिहुखज्जत्ति नो वण ॥ ३४ ॥
 रूढा बहुसंभूया थिरा ऊसढा वि य ।
 गग्गिमाओ पसूयाओ ससाराओ त्ति आलवे ॥ ३५ ॥
 तहेव संखडिं नच्चा किच्चं कज्जं ति नो वण ।
 तेणं वा वि वज्जे त्ति सुत्तिथे त्ति य आवगा ॥ ३६ ॥
 संखडिं संखडिं वूया पणियट्ठत्ति तेणं ।
 बहुसमाणि तित्थाणि आवगाणं वियागरे ॥ ३७ ॥
 तहा नईओ पुराणाओ कायतिज्जत्ति नो वण ।
 नावाहि तारिमाओ त्ति पाणिपेज्जत्ति नो वण ॥ ३८ ॥
 बहुवाहडा अगाहा बहुसलिलुप्पिलोदगा ।
 बहुवित्थोदगा यावि एवं भासेज्ज पन्नवं ॥ ३९ ॥
 तहेव सावज्जं जोगं परस्सट्ठाण निट्ठियं ।
 कीरमाणां ति वा नच्चा सावज्जं नालवे मुणी ॥ ४० ॥
 सुकडे त्ति सुपक्के त्ति सुच्छिन्ने सुहडे मडे ।
 सुनिट्ठिए सुलट्ठे ति सावज्जं वज्जए मुणी ॥ ४१ ॥
 पयत्तपक्कत्ति व पक्कमालवे
 पयत्तच्छिन्नत्ति व छिन्नमालवे ।
 पयत्तलट्ठत्ति व कैम्महेउयं
 पहारगाढत्ति व गाढमालवे ॥ ४२ ॥
 सव्वुकसं परग्घं वा अउलं नत्थि एरिसं ।
 अचक्खियमवत्तवं अन्नियत्तं चेव नो वण ॥ ४३ ॥

सव्वमेयं वइस्सामि सव्वमेयं ति नो वए ।
 अणुवीइ सव्वं सव्वत्थ एवं भासेज्ज पन्नवं ॥ ४४ ॥
 सुक्कीयं वा सुविक्कीयं अकिज्जं किज्जमेव वा ।
 इमं गेएह इमं मुञ्च पणियं नो वियागरे ॥ ४५ ॥
 अप्पग्घे वा महग्घे वा कए वा विककए वि वा ।
 पणियट्ठे समुप्पन्ने अणवज्जं वियागरे ॥ ४६ ॥
 तहेवासंजयं धीरो आस एहि करेहि वा ।
 सव, चिट्ठ, वयाहि त्ति नेवं भासेज्ज पन्नवं ॥ ४७ ॥
 बहवे इमे असाहु लोए वुच्चंति साहुणो ।
 न लवे असाहुं साहु त्ति साहुं साहुत्ति आलवे ॥ ४८ ॥
 नाणदंसणसंपन्नं संजमे य तवे रयं ।
 एवं गुणसमाउत्तं संजयं साहुमालवे ॥ ४९ ॥
 देवाणां मणुयाणां च तिरियाणां च वुग्गहे ।
 अमुयाणां जओ होउ मा वा होउ त्ति नो वए ॥ ५० ॥
 वाओ वुट्ठं व सीउएहं खेमं धायं सिवं ति वा ।
 कया णु होज्जा एयाणि मा वा होउ त्ति नो वए ॥ ५१ ॥
 तहेव मेहं व णहं व माणवं
 न देव देव त्ति गिरं वएज्जा ।
 संमुच्छिण उन्नए या पओए
 वएज्ज वा वुट्ठ बलाहय त्ति ॥ ५२ ॥
 अन्तलिक्ख त्ति णं वूय्हा गुज्झाणुचरिय त्ति य ।
 रिद्धिमंतं नरं दिस्स रिद्धिमंतं ति आलवे ॥ ५३ ॥
 तहेव सावज्जणुमोयणी गिरा
 ओहारिणी जा य परोवघाइणी ।

से ^१कोह लोहा भय हास माणवो
 न हासमाणो वि गिरं वण्ज्जा ॥१४॥
 सवक्कसुद्धिं समुपेहिया मुणी
 गिरं च दुट्ठं परिवज्जए सया ।
 मियं अदुट्ठं अणुवीइ भासए
 सयाण मज्जे लहइ पसंसणं ॥१५॥
 भासाए दोसे य गुणे य जाणिया
 तीसे य दुट्ठे परिवज्जए सया ।
 छसु संजए सामणिए सया जए
 वण्ज्ज बुद्धे हियमाणुलोमियं ॥१६॥
 परिकखभासी सुसमाहिइंदिए
 चउक्कसायावगए अणिसिए ।
 स निद्धणे ^२धुन्नमलं पुरेकडं
 आराहए लोगमिणं तहा परं ॥१७॥ त्ति वेमि ॥
 ॥ सत्तमं वक्कसुद्धी अज्भयणं समत्तं ॥
 ॥ आयारपणिहिनामं अट्ठममज्भयणं ॥
 आयारपणिहिं लद्धं जहा कायव्व भिक्खुणा ।
 तं मे उदाहरिस्सामि आणुपुट्ठिं सुणेह मे ॥१॥
 पुढवि-दग्ग-अगणि-^१मारुय-तणरुक्ख-सवीयगा ।
 तसा य पाणा जीव त्ति इइ वुत्तं महेसिणा ॥२॥
 तेसिं अच्छणजोएण निच्चं होयव्वयं सिया ।
 मणसा कायवक्केण एवं भवइ संजए ॥३॥
 पुढविं भित्तिं सिलं लेलुं नेव भिन्दे न संलिहे ।
 तिविहेण करणजोएण संजए सुसमाहिए ॥४॥

सुद्धपुढवीए न निसीए सखरक्खम्मि य आसणे ।
 पमज्झित्तु निसीएज्जा जाइत्ता जस्स उग्गहं ॥५॥
 सीओदगं न सेवेज्जा सिलाघुट्ठं हिमाणि य ।
 उसिणोदगं तत्तफासुयं पडिगाहेज्ज संजए ॥६॥
 उदउल्लं अण्णणो कायं नेव पुंछे न संलिहे ।
 समुप्पेह तहाभूयं नो रां संघट्टए मुणी ॥७॥
 इंगालं अगणिं अच्चिं अलायं वा सजोइयं ।
 न उंजेज्जा न घट्टेज्जा नो रां निव्वावए मुणी ॥८॥
 तालियंटेण पत्तेण साहाए विहुणेण वा ।
 न वीएज्जऽण्णणो कायं बाहिरं वा वि पोग्गलं ॥९॥
 तरुक्खं न छिंदेज्जा फलं मूलं व कस्सइ ।
 आमगं विविहं बीयं मणसा वि न पत्थए ॥१०॥
 गहणेसु न चिट्टेज्जा बीएसु हरिणसु वा ।
 उदगंमि तहा निच्चं उत्तिगपणमेसु वा ॥११॥
 तसे पाणे न हिंसेज्जा वाया अदुव कम्मणा ।
 उवरओ सव्वभूएसु पासेज्ज विविहं जगं ॥१२॥
 अट्ट सुहुमाइं पेहाए जाइं जाणित्तु संजए ।
 दयाहिगारी भूएसु आस चिट्ट सएहि वा ॥ १३ ॥
 कयराइं अट्ट सुहुमाइं ? जाइं पुच्छेज्ज संजए ।
 इमाइं ताइं मेहावी आइक्खेज्ज वियक्खणे ॥ १४ ॥
 सिणेहं पुप्फसुहुमं च पाणुत्तिगं तहेव य ।
 पणगं बीयहरियं च अंडसुहुमं च अट्टमं ॥ १५ ॥
 एवमेयाणि जाणित्ता सव्वभावेण संजए ।
 अण्णमत्ते जए निच्चं सव्विदियसमाहिए ॥ १६ ॥
 धुवं च पडिलेहेज्जा नोगसा पायकम्बलं ।
 सेज्जमुच्चारभूमिं च संथारं अदुवासणं ॥ १७ ॥

उच्चारं पासवरां खेलं सिंघाणजल्लियं ।
 फासुयं पडिलेहितां परिट्ठावेज्ज संजण ॥ १८ ॥
 पविसिच्छु परागारं पाणट्ठा भोयणस्स वा ।
 जयं चिट्ठे मियं भासे न य रूवेसु मणं करे ॥ १९ ॥
 बहुं सुणेइ कण्णेहिं बहुं अच्छीहिं पेच्छइ ।
 न य दिट्ठे सुयं सव्वं भिक्खू अक्खाउमरिहइ ॥ २० ॥
 सुयं वा जइ वा दिट्ठं न लवेज्जोवघाइयं ।
 न य केण उवाण्णां गिहिजोगं समायरे ॥ २१ ॥
 निट्ठाणां रसनिज्जुढं भद्दगं पावगं ति वा ।
 पुट्ठो वा वि अपुट्ठो वा लाभालाभं न निदिसे ॥ २२ ॥
 न य भोयणम्मि गिद्धो चरे उंछं अयंपिरो ।
 अफासुयं न भुंजेज्जा कीयमुद्देसियाहडं ॥ २३ ॥
 सन्निहिं च न कुव्वेज्जा अणुमायं पि संजण ।
 मुहाजीवी असंबद्धे हवेज्जा जगनिस्सिए ॥ २४ ॥
 लूहवित्ती सुसंतुट्ठे अप्पिच्छे सुहरे सिया ।
 आसुरत्तां न गच्छेज्जा सोच्चा णं जिणसासणां ॥ २५ ॥
 कण्णसोकखेहिं सद्देहिं पेमं नाभिनिवेसए ।
 दारुणां कक्कसं फासं काएण अहियासए ॥ २६ ॥
 खुहं पिवासं दुस्सेज्जं सीउणहं अरई भयं ।
 अहियासे अव्वहिओ देहदुक्खं महाफलं ॥ २७ ॥
 अत्थंगयंमि आइच्चे पुरत्था य अणुग्गए ।
 आहारमाइयं सव्वं मणसा वि न पत्थए ॥ २८ ॥
 अतिंविणे अचवले अप्पभासी मियासणे ।
 हवेज्ज उयरे दन्ते थोवं लद्धुं न खिसए ॥ २९ ॥
 न बाहिरं परिभवे अत्ताणं न समुक्कसे ।
 सुयलाभे न मज्जेज्जा जच्चा तवस्सिबुद्धिए ॥ ३० ॥

से जाणां अजाणां वा कट्ठु आहम्मियं पयं ।
 संवरे खिप्पमप्पाणां बीयं तं न समायरे ॥ ३१ ॥
 अणायारं परक्कम्म तेव गूहे न निगहवे ।
 सुई सया वियडभावे असंसत्ते जिइदिण ॥ ३२ ॥
 अमोहं वयरां कुज्जा आयरियस्स महप्पणो ।
 तं परिगिज्झ वायाण कम्मणा उववायण ॥ ३३ ॥
 अभुवं जीवियं नच्चा सिद्धिमग्गं वियाणिया ।
 विणियट्ठेज्ज भोगेसु आउं परिमियमप्पणो ॥ ३४ ॥
 बलं थामं च पेहाण सद्धमारोग्गमप्पणो ।
 खेत्तां कालं च विन्नाय तहप्पाणां न जुंजण ॥ ३५ ॥
 जरा जाव न पीलेइ वाही जाव न वड्डइ ।
 जाविदिद्या न हायंति ताव धम्मं समायरे ॥ ३६ ॥
 कोहं माणं च मायं च लोभं च पाववड्डणं ।
 वमे चत्तारि देसे उ इच्छंतो हियमप्पणो ॥ ३७ ॥
 कोहो पीइ पणासेइ माणो विणयनासणो ।
 माया मित्ताणि नासेइ लोहो सव्वविणासणो ॥ ३८ ॥
 उवसमेण हणे कोहं माणं मद्दवया जिणे ।
 मायं चज्जवभावेण लोभं संतोसओ जिणे ॥ ३९ ॥
 कोहो य माणो य अणिग्गहीया माया य लोभो य पवड्डमाणा ।
 चत्तारि ण कसिणा कसाया सिंचंति मूलाइं पुणब्भवस्स ॥ ४० ॥
 राइणिणसु विणयं पउंजे धुवसीलं सययं न हावइज्जा ।
 कुम्मो व्व अल्लीणपलीणगुत्तो परक्कमेज्जा तवसंजमम्मि ॥ ४१ ॥
 निदं च न बहु मन्नेज्जा सप्पहासं विवज्जण ।
 मिहो कहाहिं न रमे सज्झायम्मि रओ सया ॥ ४२ ॥
 जोगं च समणधम्मम्मि जुंजे अणलसो धुवं ।
 जुत्तो य सपणधम्मम्मि अट्ठं लहइ अणुत्तरं ॥ ४३ ॥
 इहलोगपारत्तहियं जेणं गच्छइ सोग्गइ ।

बहुसुयं पज्जुवासेज्जा पुच्छेज्जत्थविणिच्छयं ॥ ४४ ॥
 हत्थं पायं च कायं च पणिहाय जिह्मदिणं ।
 अलीणगुत्तो निसिए सगासे गुरुणो मुणी ॥ ४५ ॥
 न पक्खओ न पुरओ नेव किच्चाण पिट्ठओ ।
 न य ऊरुं समासेज्जा चिट्ठेज्जा गुरुणन्तिण ॥ ४६ ॥
 अपुच्छिओ न भासेज्जा भासमाणस्स अन्तरा ।
 पिट्ठिमंसं न खाएज्जा मायामोसं विवज्जण ॥ ४७ ॥
 अप्पत्तियं ज्ञेण सिया आसु कुप्पेज्ज वा पेरो ।
 सच्चसो तं न भासेज्ज भासं अहियगामिणिं ॥ ४८ ॥
 दिट्ठं मियं असंदिद्धं पडिपुणं वियंजियं ।
 अयंपिरमणुव्विग्गं भासं निसिर अत्तवं ॥ ४९ ॥
 आचारपन्नतिधरं दिट्ठिवायमहिज्जगं ।
 वायविकखलियं नच्चा न तं उवहसे मुणी ॥ ५० ॥
 नक्खत्तं सुमिणं जोगं निमित्तं मन्तभेसजं ।
 गिहिणो तं न आइक्खे भूयाहिगरणं पयं ॥ ५१ ॥
 अन्नट्ठं पगळं लयणं भएज्जा सयणासणं ।
 उच्चारभूमिसंपन्नं इत्थीपसुविवस्सियं ॥ ५२ ॥
 विवित्ता य भवे सेज्जा नारीणं न लवे कहं ।
 गिहिसंथवं न कुज्जा कुज्जा साहूहिं संथवं ॥ ५३ ॥
 जहा कुकुडपोयस्स निच्चं कुललओ भयं ।
 एवं खु वंभयारिस्स इत्थीविग्गहओ भयं ॥ ५४ ॥
 चित्ताभित्तिं न निज्झाए नारिं वा सुअलंकियं ।
 भक्खरं पिव दट्ठूणं दिट्ठिं पडिसमाहरे ॥ ५५ ॥
 हत्थपायपडिच्छिन्नं कण्णनासविकप्पियं ।
 अवि वाससइं नारिं वंभयागी विवज्जण ॥ ५६ ॥
 विभूसा इत्थिसंसग्गो पणीयरसभोयणं ।
 नरस्सत्तगवेस्सिस्स विसं तालउडं जहा ॥ ५७ ॥

अंगपच्चंगसंठाणं चारुल्लवियपेहियं ।
 इत्थीणं तं न निज्झाप कामरागविवद्दुरां ॥ ५८ ॥
 विसणसु मणुत्तेसु पेमं नाभिनिवेसण ।
 अणिच्च तेसिं विन्नाय परिणामं पोग्गलाण य ॥ ५९ ॥
 पोग्गलाण परिमाणं तेसिं नच्चा जहा तथा ।
 विणीयतण्हो विहरे सीईभूएण अप्पणा ॥ ६० ॥
 जाण सद्धाए निक्खंतो परियायट्ठाणमुत्तमं ।
 तमेव अणुपालेज्जा गुरो आयरियसम्मण ॥ ६१ ॥
 तवं चिमं संजमजोगयं च
 सज्झायजोगं च सया अहिट्ठण ।
 सूरे व सेणाए समत्तमाउहे
 अलमप्पणो होइ अलं परेसिं ॥ ६२ ॥
 सज्झायसज्झाणरयस्स ताइणो
 अपावभावस्स तवे रयस्स ।
 विसुज्झई जं^१ से मलं पुरेकडं
 समीरियं रुप्पमलं व जोइणा ॥ ६३ ॥
 से तारिसे दुक्खसहे जिइदिण
 सुएण जुत्ते अममे अकिंचलो ।
 विरायई कम्मघणम्मि अवगण
 कसिणब्भपुडावगमे व चन्दिमे ॥ ६४ ॥ त्ति वेसि ॥
 ॥ अट्ठमं आमारप्पणिही अज्झयणं समत्तं ॥
 ॥ विणयसमाही नामं णवममज्झयणं--षट्ठमो उद्देसओ ॥
 थंभा व कोहा व मयप्पमाया
 गुरुस्सगासे विणयं न सिक्खे ।

सो चेव ऊ तस्स अभूइभावो
 फलं व कीयस्स वहाय होइ ॥ १ ॥
 जे यावि मंदित्ति गुरुं विइत्ता
 डहरे इमे अप्पमुण त्ति नच्चा ।
 हीलंति मिच्छं पडिवज्जमाणा
 करंति आसायण ते गुरूणां ॥ २ ॥
 पगईए मन्दा वि भवंति एगे
 डहरा वि य जे सुयबुद्धोववेया ।
 आचारमंता गुणसुट्टियप्पा
 जे हीलिया सिहिरिव भास कुज्जा ॥ ३ ॥
 जे यावि नागं डहरं ति नच्चा
 आसायण से अहियाय होइ ।
 एवारियं पि हु हीलयंतो
 नियच्छइ जाइपहं खु मन्दे । ४ ॥
 आसीविसो यावि परं सुरुट्टो
 किं जीवनासाउ परं नु कुज्जा ।
 आयरियपाया पुण अप्पसन्ना
 अबोहिआसायण नत्थि मोक्खो ॥ ५ ॥
 जो पावगं जलियमवक्कमेज्जा
 आसीविसं वा वि हु कोवणज्जा ।
 जो वा विसं खायइ जीवियट्ठी
 एसोवमाऽऽसायणया गुरूणां ॥ ६ ॥
 सिया हु से पावय नो डहेज्जा
 आसीविसो वा कुविओ न भक्खे ।
 सिया विसं हालहलं न मारे
 न यावि मोक्खो गुरुहीलणाए ॥ ७ ॥

जो पव्वयं सिरसा भेत्तुमिच्छे
 सुत्तं व सीहं पडिबोहएज्जा ।
 जो वा दए सत्तिअग्गे पहारं
 एसोवमाऽऽसायणया गुरूणं ॥ ८ ॥
 सिया हुं सीसेण गिरिं पि भिंदे
 सिया हु सीहो कुविओ न भक्खे ।
 सिया न भिंदेज्ज व सत्तिअग्गं
 न यावि मोक्खो गुरुहीलणाए ॥ ९ ॥
 आयरियपाया पुण अप्पसन्ना
 अबोहिआसायण नत्थि मोक्खो ।
 तम्हा अणावाहसुहाभिकंखी
 गुरुप्पसायाभिमुहो रमेज्जा ॥ १० ॥
 जहाहियग्गी जलणं नमंसे
 नाणाहुईमंतपयाभिसित्तं ।
 एवायरियं उवचिट्ठएज्जा
 अणंतनाणोवगओवि संतो ॥ ११ ॥
 जस्संतिए धम्मपयाइं सिक्खे
 तस्संतिए वेणइयं पउंजे ।
 सक्कारए सिरसा पंजलीओ
 कायगिरा भो मणसा य निच्चं ॥ १२ ॥
 लज्जा-दया-संजम-वंभचेरं
 कल्लाणभागिस्स विसोहिठाणं ।
 जे मे गुरू सययमणुसासयंति
 ते हं गुरू सययं पूययामि ॥ १३ ॥
 जहा निसंते तवणच्चिमात्ती
 पभासइ केवलभारहं तु ।

एवायरिओ सुयसीलबुद्धिए
 विरायई सुरमज्जे व इंदो ॥ १४ ॥
 जहा ससी कोमुइजोगजुत्तो
 नक्खत्ततारागणपरिवुडप्पा ।
 खे सोहइ विमळे अब्भमुक्के
 एवं गणी सोहइ भिक्खुमज्जे ॥ १५ ॥
 महागरा आयरिया महेसी
 समाहिजोगे सुयसीलबुद्धिए ।
 संपाधिउकामे अणुत्तराई
 आराहए तोसए धम्मकामी ॥ १६ ॥
 सोच्चाण मेहावि सुभासियाई
 सुस्सूसए आयरियप्पमत्तो ।
 आराहइत्ताण गुणे अणेगे
 सो पावई सिद्धिमणुत्तरं ॥ १७ ॥ त्ति वेमि ॥
 ॥ णवमअज्भयणस्स विणायसमाहीए पढमो उद्देसओ समत्तो ॥

॥ णवममज्भयणं—बीओ उद्देसओ ॥

मूलाओ खंधप्पभवो दुमस्स
 खंधाउ पच्छा समुवेति साहा ।
 साहप्पसाहा विरुहंति पत्ता
 तओ से पुप्फं च फलं रसो य ॥ १ ॥
 एवं धम्मस्स विणओ मूलं परमो से मोक्खो ।
 जेण किंत्तिं सुयं सिग्धं निस्सेसं चाभिगच्छइ ॥ २ ॥
 जे य चंडे मिए थडे दुव्वाई नियडी सढे ।
 बुज्झइ से अविणीयप्पा कट्ठे सोयगयं जहा ॥ ३ ॥
 विणयं पि जो उवाएण चोइओ कुप्पइ नरो ।
 दिव्वं सो सिरिमेज्जन्ति दंडेण पडिसेहए ॥ ४ ॥

तहेव अविणीयप्पा उववज्झा हया गया ।
 दीसंति दुहमेहंता अभियोगमुवट्ठिया ॥ ५ ॥
 तहेव सुविणीयप्पा उववज्झा हया गया ।
 दीसंति सुहमेहंता इड्ढिं पत्ता महायसा ॥ ६ ॥
 तहेव अविणीयप्पा लोगंसि नरनारिओ ।
 दीसंति दुहमेहंता छाया ते विगल्लिंदिया ॥ ७ ॥
 दंडसत्थपरिजुण्णा असम्भवयणेहिं य ।
 कलुणा विवन्नच्छंदा खुप्पिवासाइपरिगया ॥ ८ ॥
 तहेव सुविणीयप्पा लोगंसि नरनारिओ ।
 दीसंति सुहमेहंता इड्ढिं पत्ता महायसा ॥ ९ ॥
 तहेव अविणीयप्पा देवा जक्खा य गुज्झगा ।
 दीसंति दुहमेहंता अभियोगमुवट्ठिया ॥ १० ॥
 तहेव सुविणीयप्पा देवा जक्खा य गुज्झगा ।
 दीसंति सुहमेहंता इड्ढिं पत्ता महायसा ॥ ११ ॥
 जे आयरियउवज्झायाणां सुस्सूसावयणांकरा ।
 तेंसिं सिक्ख पवइढंति जलसित्ता इव पायवा ॥ १२ ॥
 अप्पणट्ठा परट्ठा वा सिप्पा नेउणियणि य ।
 गिहिणो उवभोगट्ठा इहलोगस्स कारणा ॥ १३ ॥
 जेण बंधं वहं घोरं परियावं च दारुणं ।
 सिक्खमाण नियच्छंति जुत्ता ते ललिइंदिया ॥ १४ ॥
 ते वि तं गुरुं पूयंति तस्स सिप्पस्स कारणा ।
 सक्कारंति णमंसन्ति तुट्ठा निदेसवत्तिणो ॥ १५ ॥
 किं पुण जे सुयग्गाही अणन्तहियकामए ।
 आयरिया जं वए भिक्खू तम्हा तं नाइवत्तए ॥ १६ ॥

नीयं सेज्जं गइं ठाणं नीयं च आसणाणि य ।
 नीयं च पाए वंदेज्जा नीयं कुज्जा य अंजलिं ॥ १७ ॥
 संघट्टइत्ता कायणां तहा उवहिणामवि ।
 खमेह अवराहं मे वणज्ज न पुणेो त्ति य ॥ १८ ॥
 दुग्गओ वा पओएणं चोइओ वहइ रहं ।
 एवं दुबुद्धि किच्चाणां वुत्तो वुत्तो पकुव्वइ ॥ १९ ॥
 आलवंते लवंते वा न निसेज्जाए पडिस्सुणे ।
 मोत्तूणां आसणां धीरो सुस्सुसाए पडिस्सुणे ॥ २० ॥
 कालं छंदोवय्यारं च पडिलेहिच्चाण हेउहिं ।
 तेहिं तेहिं उवाएहिं तं तं संपडिवायए ॥ २१ ॥
 विवत्ती अविणीयस्स संपत्ती विणियस्स य ।
 जस्सेयं दुहओ नायं सिक्खं से अभिगच्छइ ॥ २२ ॥
 जे यावि चण्डे मइइइडिगारवे
 पिसुणे नरे साहस हीणपेसणे ।
 अदिट्ठधम्मं विणए अकोविए
 असंविभागी न हु तस्स मोक्खो ॥ २३ ॥
 णिद्देसवत्ती पुण जे गुरूणं
 सुयत्थधम्मा विणयंमि कोविया ।
 तरित्तु ते ओहमिणं दुरुत्तरं
 खवित्तु कम्मं गइमुत्तमं गया ॥ २४ ॥ त्ति वेमि ॥
 णवमअजभयणास्स विणयसमाहीए बिइओ उद्देसगो समत्तो ॥

॥ णवमअजभयणं—तइओ उद्देसओ ॥

आयरियग्गिमिवाहियग्गी
 सुस्सुसमारो पडिजागरिज्जा ।
 आलोइयं इंगियमेव नच्चा
 जो छन्दमाराहयई स पुज्जो ॥ १ ॥

आयारमट्ठा विणयं पउंजे
 सुस्सुसमाणो परिणिज्झ वक्कं ।
 जहोवइट्ठं अभिकंखमाणो
 गुरुं तु नासाययई स पुज्जो ॥ २ ॥
 राइणिएसु विणयं पउंजे
 डहरा वि य जे परियाय जिट्ठा ।
 नीयत्तणे वट्ठइ सच्चवाई
 ओवायवं वक्ककरे स पुज्जो ॥ ३ ॥
 अन्नायउंछं चरई विसुद्धं
 जवणट्ठया समुयाणां च निच्चं ।
 अलद्धयं नो परिदेवएज्जा
 लद्धं न विकत्थयई स पुज्जो ॥ ४ ॥
 संथारसेज्जासणभत्तपाणे
 अप्पिच्छया अइलामे वि संते ।
 जो एवमण्णाणभितोसएज्जा
 संतोसपाहन्नरए स पुज्जो ॥ ५ ॥
 सक्का सहेउ आसाइ कंटया
 अओमया उच्छहया नरेणां ।
 अणासए जो उ सहेज्ज कंटए
 वईमए कण्णसरे स पुज्जो ॥ ६ ॥
 मुहुत्तदुक्खा उ हवंति कंटया
 अओमया ते वि तओ सुउद्धरा ।
 वायादुरुत्ताणि दुरुद्धराणि
 वेराणुबंधीणि महब्भयाणि ॥ ७ ॥
 समावयंता वयणाभिघाया
 कणां गया दुम्मणियं जरांति ।
 धम्मो त्ति किच्चा परमग्गसूरे

जिइंदिए जो सहई स पुज्जो ॥ ८ ॥
 अवणवायं च परंमुहस्स
 पच्चक्खओ पडिणीयं च भासं ।
 ओहारिणिं अप्पियकारिणिं च
 भासं न भासेज्ज सया स पुज्जो ॥ ९ ॥
 अलोलुए अक्कुहए अमाई
 अपिसुणे यावि अदीणवित्ती ।
 नो भावए नो वि य भावियप्पा
 अकोउहल्ले य सया स पुज्जो ॥ १० ॥
 गुणेहि साहू, अगुणेहिऽसाहू
 गिणहाहि साहूगुण मुच्चऽसाहू ।
 वियाणिया अप्पगमप्पणां
 जो रागदोसेहिं समो स पुज्जो ॥ ११ ॥
 तहेव डहरं व महल्लगं वा
 इत्थी पुमं पव्वइयं गिहिं वा ।
 नो हीलए नो वि य खिसएज्जा
 थंभं च कोहं च चए स पुज्जो ॥ १२ ॥
 जे माणिया सययं माणयंति
 जत्तेण कन्नं व निवेसयंति ।
 ते माणए माणरिहे तवस्सी
 जिइंदिए सच्चरण स पुज्जो ॥ १३ ॥
 तेसिं गुरूणां गुणसागराणां
 सोच्चाण मेहावि सुभासियाइं ।
 चरे मुणी पंचरण तिगुत्तो
 चउक्कसायावगए स पुज्जो ॥ १४ ॥

गुरुमिह सययं पडियरिय मुणी
जिणवयनिउणो^१ अभिगमकुसले ।

धुणिय रयमलं पुरेकडं
भासुरमउलं गइं गए^२ ॥१५॥ त्ति वेमि ॥

॥ एवमअज्भयणस्स विणयसमाहीए तइओ उद्देसओ समत्तो ॥

॥ एवममज्भयणां--चउत्थो उद्देसओ ॥

सुयं मे आउसं ! तेणं भगवया एवमकखायं—इह खलु
थेरेहिं भगवंतेहिं चत्तारि विणयसमाहिट्ठाणा पणत्ता ।

कयरे खलु ते थेरेहिं भगवंतेहिं चत्तारि विणयसमाहिट्ठाणा
पणत्ता ?

इमे खलु ते थेरेहिं भगवंतेहिं चत्तारि विणयसमाहिट्ठाणा
पणत्ता तं जहा—विणयसमाही, सुयसमाही, तवसमाही,
आयारसमाही ।

विणए सुए तवे य आयारे णिच्च पंडिया ।

अभिरामयंति अण्णाणां जे भवंति जिइंदिया ॥१॥

चउव्विहा खलु विणयसमाही भवइ, तं जहा—अणुसासि-
ज्जन्तो सुस्सुसइ, सम्मं संपडिवज्जइ, वेयमाराहयइ, न य
भवइ अत्तसंपग्गहिए चउत्थं पयं भवइ । भवइ य एत्थ
सिलोगोः—

पेहेइ हियाणुसासणां सुस्सुसइ तं च पुणो अहिट्ठए ।

न य माणमण मज्जइ वियणसमाही आययट्ठिए ॥२॥

चउव्विहा खलु सुयसमाही भवइ, तं जहा—सुयं मे
भविस्सइ त्ति अज्झाइयउवं भवइ, एगग्गचित्तो भविस्सामि

त्ति अज्झाइयव्वं भवइ, अण्णाणां ठावइस्सामि त्ति अज्झाइयव्वं भवइ, ठिओ परं ठावइस्सामि त्ति अज्झाइयव्वं भवइ, चउत्थं पयं भवइ । भवइ य एत्थ सिलोगोः—

नाणमेगग्गचित्तो य ठिओ य ठावइ परं ।

सुयाणि य अहिज्जित्ता रओ सुयसमाहिण ॥३॥

चउव्विहा खलु तवसमाही भवइ, तं जहा—नो इहलोग-
दुयाए तवमहिट्ठेज्जा, नो परलोगदुयाए तवमहिट्ठेज्जा, नो कित्ति-
वणएसइसिलोगदुयाए तवमहिट्ठेज्जा, नअत्थ निज्जरदुयाए
तवमहिट्ठेज्जा चउत्थं पयं भवइ । भवइ य एत्थ सिलोगोः—

विविहगुणतवोरण य निच्चं

भवइ निरासए निज्जरट्ठिण ।

तवसा धुणइ पुराणपावगं

जुत्तो सया तवसमाहिण ॥४॥

चउव्विहा खलु आयारसमाही भवइ, तं जहा—नो इह-
लोगदुयाए आयारमहिट्ठेज्जा, नो परलोगदुयाए आयारमहिट्ठेज्जा
नो कित्तिवणएसइसिलोगदुयाए आयारमहिट्ठेज्जा, नअत्थ
आरहन्तेहिं हेऊहिं आयारमहिट्ठेज्जा चउत्थं पयं भवइ । भवइ
य एत्थ सिलोगोः—

जिणवयणए अतितणे

पडिपुणाययमाययट्ठिण ।

आयारसमाहिसंवुडे

भवइ य दंते भावसंधण ॥५॥

अभिगम चउरो समाहिओ

सुविमुद्धो सुसमाहियणओ ।

विउलहियं सुहावहं पुणो

कुव्वइ सो पयखेममण्णो ॥६॥

जाइमरणाउ मुच्चइ

इत्थंथां च चणइ सज्जसो ।

सिद्धे वा भवइ सासण

देवो वा अप्परण महिद्धिण ॥७॥ त्ति वेमि ॥

॥ एवमं विणायसमाही अज्झयणं समत्तं ॥

॥ सभिक्षू नामं दसमं अज्झयणं ॥

निकखम्ममाणाइ अ बुद्धवयणे

णिच्चं चित्तसमाहिओ हवेज्जा ।

इत्थीण वसं न यावि गच्छे

वंतं नो पडियायइ जे स भिक्षू ॥ १ ॥

पुढविं न खणे न खणावण

सीओदगं न पिण न पियावण ।

अगणिसत्थं जहा सुनिसियं

तं न जले न जलावण जे स भिक्षू ॥ २ ॥

अनिलेण न वीण न वीयावण

हरियाणि न छिन्दे न छिन्दावण ।

वीयाणि सया विवज्जयन्तो

सच्चित्तं नाहारण जे स भिक्षू ॥ ३ ॥

वहरां तसथावराण होइ

पुढवीतणकट्टुनिसियणं ।

तम्हा उहेसियं न भुंजे

नो वि पण न पयावण जे स भिक्षू ॥ ४ ॥

रोइय नायपुत्तवयणे

^१अप्पसमे मञ्जेज्ज छप्पि काण ।

पञ्च य फासे महव्वयाइं
 पञ्चासवसंवरण जे स भिक्खू ॥ ५ ॥
 चत्तारि वमे सया कसाण
 धुवजोगी य हवेज्ज बुद्धवयणे ।
 अहणे निज्जायरुवरण
 निहिजोगं परिवज्जण जे स भिक्खू ॥ ६ ॥
 सम्मदिट्ठी सया अमूढे
 अत्थि हु नारो तवे संजमे य ।
 तवसा धुणइ पुराणपावगं
 मणवयकायसुसंबुडे जे स भिक्खू ॥ ७ ॥
 तहेव असरां पाणगं वा
 विविहं खाइमसाइमं लभित्ता ।
 होही अट्ठो सुण परे वा
 तं न निहे न निहावण जे स भिक्खू ॥ ८ ॥
 तहेव असरां पाणगं वा
 विविहं खाइमसाइमं लभित्ता ।
 छंदिय साहम्मियाण भुंजे
 भोच्चा सज्झायरण य जे स भिक्खू ॥ ९ ॥
 न य वुग्गहियं कहं कहिज्जा
 न य कुप्पे निहुइंदिण पसंते ।
 संजमधुवजोगजुत्ते
 उवसंते अविहेडण जे स भिक्खू ॥ १० ॥
 जो सहइ हु गामकण्टण
 अक्कोसपहारतज्जणाओ य ।

भयमेरवसहसप्पहासे

समसुहदुक्खसहे य जे स भिक्खू ॥ ११ ॥

पडिमं पडिवज्जिया मसाणे

नो भीयए भयमेरवाइं दिस्स ।

विविहगुणतवोरए य निच्चं

न सरीरं चाभिकंखइ जे स भिक्खू ॥ १२ ॥

असइं वोसट्ठचत्तदेहे

अक्कुट्टे व हए व लूसिए वा ।

पुढविसमे मुणी हवेज्जा

अनियाणे अकोउहल्ले य जे स भिक्खू ॥ १३ ॥

अभिभूय काएण परीसहाइं

समुद्धरे जाइपहाउ अण्णयं ।

विइत्तु जाइमरणं महब्भयं

तवे एए सामणिए जे स भिक्खू ॥ १४ ॥

हत्थसंजए पायसंजए

वायसंजए संजइंदिए ।

अज्झण्णरए सुसमाहियण्णा

सुत्तात्थं च वियाणइ जे स भिक्खू ॥ १५ ॥

उवहिम्मि अमुच्छिण्ण अग्निद्धे

अन्नायउच्छं पुलनिप्पुलाए ।

कयविक्रयसन्निहिओ विरए

सव्वसंगावगए य जे स भिक्खू ॥ १६ ॥

अलोल भिक्खू न रसेसु गिद्धे

उंछं चरे जीविय नाभिकंखी ।

इइढिं च सक्कारण पूयणां च

चए ठियण्णा अणिहे जे स भिक्खू ॥ १७ ॥

न परं वएज्जासि अयं कुसीले
 जेणन्नो कुप्पेज्ज न तं वएज्जा ।
 जाणिय पत्तयं पुण्णपावं
 अत्ताणं न समुक्खसे जे स भिक्खू ॥ १८ ॥
 न जाइमत्ते न य रूवमत्ते
 न लाभमत्ते न सुण्ण मत्ते ।
 मयाणि सव्वाणि विवज्जयंतो
 धम्मज्झाणरण य जे स भिक्खू ॥ १९ ॥
 पवेयए अज्जपयं महामुणी
 धम्मे ठिओ ठावयइ परं पि ।
 निक्खम्म वज्जेज्ज कुसीललिंगं
 न यावि हासंकुहए जे स भिक्खू ॥ २० ॥
 तं देहवासं असुइं असासयं
 सया चए निच्चहियट्ठियप्पा ।
 छिंदित्तु जाईमरणस्स बंधणं
 उवेइ भिक्खू अपुणागमं गइं ॥ २१ ॥ त्ति बेमि ॥
 ॥ सभिक्खू अज्झयणं दसमं समत्तं ॥

॥ रइवका चूलिया पढमा ॥

इह खलु भो पव्वइएणं उप्पन्नदुक्खेणं संजमे अरइसमा-
 वन्नचित्तेणं ओहाणुप्पेहिणा अणोहाइएणं चेव हयरस्सिगयं-
 कुसपोयपडागाभूयाइं इमाइं अट्टारस ठाणाइं सम्मं संपडि-
 लेहियव्वाइं भवन्ति । तं जहा—

हं भो दुस्समाए दुप्पजीवी ॥ १ ॥
 लहुस्सगा इत्तरिया गिहीणं कामभोगा ॥ २ ॥
 भुज्जो य साइवहुला मणुस्सा ॥ ३ ॥

इमं च मे दुक्खं न चिरकालोवट्ठाई भविस्सइ ॥ ४ ॥

ओमजणपुरक्कारे ॥ ५ ॥

वंतस्स य पडिआयणं ॥ ६ ॥

अहरगइवासोवसंपया ॥ ७ ॥

दुल्लमे खलु भो ! गिहीणं धम्मे गिहिवासमज्जे वसंताणं ॥ ८ ॥

आयंके से वहाय होइ ॥ ९ ॥

संकप्पे से वहाय होइ ॥ १० ॥

सोवक्केसे गिहिवासे निरुवक्केसे परियाए ॥ ११ ॥

बंधे गिहिवासे मोकखे परियाए ॥ १२ ॥

सावज्जे गिहिवासे अणवज्जे परियाए ॥ १३ ॥

बहुसाहारणा गिहीणं कामभोगा ॥ १४ ॥

पत्तेयं पुण्णपावं ॥ १५ ॥

अणिच्च खलु भो मणुयाण जीविण कुसग्गजलविंदुचंचले ॥ १६ ॥

बहुं च खलु भो ! पावं कम्मं पगडं ॥ १७ ॥

पावाणं च खलु भो कडाणं कम्माणं पुर्व्वि दुच्चिरणाणं
दुप्पडिक्कंताणं वेयइत्ता मोकखे; नत्थि अवेयइत्ता, तवसा वा
मेासइत्ता । अठारसमं पयं भवइ ॥ १८ ॥ भवइ य एत्थ
सिलोगोः—

जया य चयइ धम्मं अणज्जो भोगकारणा ।

से तत्थ मुच्छिण बाले आयइं नावबुज्झइ ॥ १ ॥

जया ओहाविओ होइ इंदो वा पडिओ छुमं ।

सव्वधम्मपरिब्भट्ठो स पच्छा परितप्पइ ॥ २ ॥

जया य वंदिमो होइ पच्छा होइ अवंदिमो ।

देवया व च्चुया ठाणा स पच्छा परितप्पइ ॥ ३ ॥

जया य पूइमो होइ पच्छा होइ अपूइमो ।

राया व रज्जपम्भट्ठो स पच्छा परितप्पइ ॥ ४ ॥

जया य माणिमो होइ पच्छा होइ अमाणिमो ।
 सेट्ठिव्व कब्बले बूडो स पच्छा परितप्पइ ॥ ५ ॥
 जया य थेरओ होइ समइकंतजोव्वरो ।
 मच्छोव्व गलं णिलित्ता स पच्छा परितप्पइ ॥ ६ ॥
 जया य कुल्लुडंबस्स कुतत्तीहिं विहम्मइ ।
 हत्थी व बंधणे बद्धो स पच्छा परितप्पइ ॥ ७ ॥
 पुत्तदारपरिक्रिणो मोहसंताणसंतओ ।
 पंकोसओ जहा नागो स पच्छा परितप्पइ ॥ ८ ॥
 अज्ज याहं गणी हेंतो भावियण्णा बहुस्सुओ ।
 जइऽहं रमतो परियाए सामरणे जिणदेसिए ॥ ९ ॥
 देवलोगसमाणो उ परियाओ महेसियां ।
 रयाणं अरयाणं च महानरयसारिसो ॥ १० ॥

अमरोवमं जाणिय सोक्खमुत्तमं
 रयाण परियाए तहारयाणं ।
 निरयोवमं जाणिय दुक्खमुत्तमं
 रमेज्ज तम्हा परियाए पंडिए ॥ ११ ॥

धम्माउ भट्ठं सिरिओ अवेयं
 जन्नगि विज्झायमिवण्णतेयं ।
 हीलंति एं दुव्विहियं कुसीला
 दाड्ढिदुयं घोरविसं व नागं ॥ १२ ॥

इहेवऽधम्मो अयसो अकित्ती
 दुन्नामपेज्जं च पिहुज्जणम्मि ।
 चुयस्स धम्माओ अहम्मसेविणो
 संभित्तिवित्तस्स य हेट्ठओ गई ॥ १३ ॥

भुंजित्तु मेगाइं पसज्ज चेतसा
 तहापिहं कट्ठु असंजमं बहुं ।

गइं चं गच्छे अणभिज्झियं दुहं
 बोही य से नो सुलभा पुणोपुणो ॥ १४ ॥
 इमस्स ता नेरइयस्स जंतुणो
 दुहोवणीयस्स किलेसवत्तिणो ।
 पलिओवमं भिज्झइ सागरोवमं
 किमंग पुण मज्झ इमं मणोदुहं ? ॥ १५ ॥
 न मे चिरं दुक्खमिणं भविस्सइ
 असासया भोगपिवास जंतुणो ।
 न चे सरीरेण इमेणऽवेस्सइ
 अवेस्सई जीवियपज्जवेण मे ॥ १६ ॥
 जस्सेवमप्पा उ हवेज्ज निच्छिओ
 चणज्ज देहं न उ धम्मसासणं ।
 तं तारिसं नो पयलेन्ति इन्दिया
 उविन्तवाया व सुदंसणं गिरिं ॥ १७ ॥
 इच्चेव संपस्सिय बुद्धिमं नरो
 आयं उवायं विविहं वियाणिया ।
 काणण वाया अदु माणसेणं
 तिगुत्तिगुत्तो जिणवयणमहिट्ठिज्जासि ॥ १८ ॥ त्तिवेमि ॥
 ॥ रइवक्का पढमा चूलिया समत्ता ॥

॥ विवित्त चरिआ णामा बीया चूलिया ॥

चूलियं तु पवक्खामि सुयं केवलिभासियं ।
 जं सुणित्तु सपुज्जाणं धम्मे उप्पज्जण मई ॥ १ ॥
 अणुसोयपट्ठिण बहुजणम्मि पडिसोयलद्धलक्खेणं ।
 पडिसोयमेव अप्पा दायव्वो होउकामेणं ॥ २ ॥
 अणुसोयसुहो लोगो पडिसोओ आसवो सुविहियाणं ।
 अणुसोओ संसारो पडिसोओ तस्स उत्तारो ॥ ३ ॥

तम्हा आयारपरक्कमेण संवरसमाहिबहुलेणं ।
 चरिया गुणा य नियमा य हेति साहूण दट्टव्वा ॥ ४ ॥
 अणिएयवासो समुयाणचरिया
 अन्नायउच्छं पइरिक्कया य ।
 अप्पोवही कलहविषज्जणा य
 विहारचरिया इसिणं पसत्था ॥ ५ ॥
 आइरणओमाणविषज्जणा य
 ओसन्नदिट्ठाहडभत्ताणो ।
 संसट्ठकप्पेण चरेज्ज भिक्खू
 तज्जायसंसट्ठ जई जएज्जा ॥ ६ ॥
 अमज्जमंसासि अमच्छरीया
 अभिक्खणं निव्विगइं गया य ।
 अभिक्खणं काउस्सग्गकारी
 सज्झायजोगे पयओ हवेज्जा ॥ ७ ॥
 न पडिन्नवेज्जा सयणासणाइं
 सेज्जं निसेज्जं तह भत्ताणां ।
 गामे कुले वा नगरे व देसे
 ममत्ताभावं न कहिंचि कुज्जा ॥ ८ ॥
 गिहिणो वेयावडियं न कुज्जा
 अभिवायणं वंदण पूयणं वा ।
 असंक्किलिट्ठेहिं समं वसेज्जा
 मुणी चरित्तस्स जओ न हाणी ॥ ९ ॥
 न था लमेज्जा निउणं सहायं
 गुणाहियं वा गुणओ समं वा ।
 एक्को वि पावाइं विवज्जयंतो
 विहरेज्ज कामेसु असज्जमाणो ॥ १० ॥

संवच्छुरं चावि परं पमाणं
 वीयं च वासं न तहिं वसेज्जा ।
 सुत्तस्स मग्गेण चरेज्ज भिक्खू
 सुत्तस्स अत्थो जह आणवेइ ॥ ११ ॥
 जो पुव्वरत्तावररत्तकाले
 संपेहई अप्पगमप्पणां ।
 किं मे कडं किं च मे किच्चसेसं
 किं सक्कणिज्जं न समायरामि ॥ १२ ॥
 किं मे परो पासइ किं च अप्पा
 किं चाहं खलियं न विवज्जयामि ।
 इच्चैव सम्मं अणुपासमाणो ।
 अणागयं नो पडिवंध कुज्जा ॥ १३ ॥
 जत्थेव पासे कइ दुप्पउत्तं
 काएण वाया अदु माणसेणं ।
 तत्थेव धीरो पडिसाहरेज्जा
 आईएणओ खिप्पमिव कखलीणं ॥ १४ ॥
 जस्सेरिसा जोग जिइंदियस्स
 धिईमओ सप्पुरिसस्स निच्चं ।
 तमाहु लोए पडिबुद्धजीवी
 सो जीवई संजमजीविण ॥ १५ ॥
 अप्पा खलु सययं रक्खियव्वो
 सव्विदिणहिं सुसमाहिणहिं ।
 अरक्खिओ जाइपहं उवेइ
 सुरक्खिओ सव्वदुहाण मुच्चइ ॥ १६ ॥ त्ति वेमि ॥
 ॥ बीया चूलिया समत्ता ॥



जीवन-श्रेयस्कर-पाठमाला

श्रीसुखविपाक सूत्रम्

(१) तेरां कालेरां तेरां समरां रायगिहे रांम रायरे होत्था, रिद्धित्थिमियसम्भिद्धे । गुणसिलए चेइए सुहम्मे अणगारे समो-सढे । जंबू जाव पज्जुवासमाणे-एवं वयासी-जइ रां भंते ! सम-रां भगवया महावीरेरां जाव संपत्तेरां दुहविवागारां अयमट्ठे परणत्ते, सुहविवागारां भन्ते ! समरां भगवया महावीरेरां जाव संपत्तेरां के अट्ठे परणत्ते ? तए रां से सुहम्मे अणगारे जंबूअणगारं एवं वयासी-एवं खलु जंबू ! समरां भगवया महावीरेरां जाव संपत्तेरां सुहविवागारां दस अज्झयणा परणत्ता तंजहा-सुवाहू^१, भदन्दी^२ य सुजाण^३ य सुवासवे^४, तहेव जिण-दासे^५, धणवई^६ य महव्वले^७ भदन्दी^८ महव्वन्दे^९ वरदत्ते^{१०} ।

जइ रां भंते ! समरां भगवया महावीरेरां जाव संपत्तेरां सुहविवागारां दस अज्झयणा परणत्ता, पढमस्स रां भन्ते ! अज्झयणास्स सुहविवागारां समरां भगवया महावीरेरां जाव संपत्तेरां के अट्ठे परणत्ते ? तएरां से सुहम्मे अणगारे जंबू-अणगारं एवं वयासी-एवं खलु जंबू ! तेरां कालेरां तेरां समरां

हत्थिसीसे णामं णयरे होत्था, रिद्धित्थिमियसमिद्धे । तत्थ णं हत्थिसीसस्स णयरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए पत्थणां पुप्फकरंडए णामं उज्जाणे होत्था सव्वोउयपुप्फ-
लसमिद्धे, रम्मे, नंदणवणप्पगासे पासाईण ४ । तत्थ णं कय-
वणमालपियस्स जक्खस्स जक्खायतणे होत्था दिव्वे ।

तत्थ णं हत्थिसीसे णयरे अदीणसत्तू नाम राया होत्था । महया हिमवन्त रायवरणओ । तस्स णं अदीणसत्तूस्स रणणे धारिणीपामोक्खं देवीसहस्सं ओरोहे यावि होत्था । तए णं सा धारिणी देवी अन्नया कयाइ तंसि तारिसगंसि वासभव-
णांसि सीहं सुमिणे पासति जहा मेहजम्भणां तहा भाणियव्वं । णवरं सुबाहुकुमारे जाव अलं भोगसमत्थं यावि जाणंति २ त्ता अम्मापियरो पंच पासायवडिंसगसयाइं करेंति अब्भुग्गयमू-
सियपहसिए दिव भवणं । एवं जहा महब्बलस्स रणणे । णवरं पुप्फचूलापामोक्खाणां पंचरहं रायवरकरणासयाणां एगदिव-
सेणां पाणिं मेरहावेन्ति तहेव पंचसइओ दाओ जाव उप्पि पा-
सायवरगते फुट्टमाण जाव विहरति । तेषां कालेणां तेषां समएणां समणे भगवं महावीरे समोसढे । परिसा निग्गया अदीणसत्तू जहा कोणिए निग्गए । सुबाहुकुमारे वि जहा जमाली तहा रहेणं निग्गए । जाव धम्मो कहिओ । राया परिसा पडिगया ।

तए णं से सुबाहुकुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्टुट्टे उट्टाए उट्टेइ जाव एवं वयासी-सइहामि णं भन्ते ! निग्गंथं पावयणं जाव जहा णं देवाणुप्पियाणां अंतिए बहवे राईसरसत्थवाहपभइउ मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइया । नो खलु अहं तहा संवाएमि मुंडे भवित्ता आगाराउ अणगारियं पव्वइत्तए अहं णं देवाणुप्पियाणां अंतिए पंचाणुव्वयाइं सत्तसिक्खावयाइं-

दुवालसविहं-गिहिधम्मं पडिवज्जामि । अहासुहं देवाणु-
प्पिया ! मा पडिवधं करेह ।

तए रां से सुबाहुकुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स
अतिए पंचाणुव्वयाइं सत्तसिक्खावयाइं पडिवज्जइ २ त्ता
तमेव रहं दुरूहइ २ त्ता जामेव दिसं पाउव्वभूए तामेव दिसं
पडिगए । तेरां कालेरां तेरां समणरां समणस्स भगवओ महा-
वीरस्स जेट्ठे अतेवासी इंदभूर्ई णामं अएगारे जाव एवं वयासी-

अहो रां भन्ते ! सुबाहुकुमारे इट्ठे इट्ठरूवे १ कंते कंतरूवे २
पिये पियरूवे ३ मणुन्ने मणुन्नरूवे ४ मणामे मणामरूवे ५ सोमे
सुभगे पियदंसणे सुरूवे; बहुजणस्सवि य रां भंते ! सुबाहु-
कुमारे इट्ठे इट्ठरूवे ५ सोमे जाव सुरूवे । साहुजणस्सवि य रां
भंते ! सुबाहु कुमारे इट्ठे इट्ठरूवे ५ जाव सुरूवे । सुबाहुणा
भंते ! कुमारेण इमे एयारूवा उगाला माणुस्सरिद्धी किरणा
लद्धा किरणा पत्ता किरणा अभिसमणणागया ? को वा एस
आसी जाव किं नामए वा किं गोत्तए वा किं वा दच्चा किं वा
भोच्चा किं वा समायरित्ता कस्स वा तहारूवस्स समणस्स
वा अतिए एगमवि आयरियं धम्मियं सुवयरां सोच्चा जेरां
इमे एयारूवा माणुस्सरिद्धी लद्धा पत्ता अभिसमणणागया ।

एवं खलु गेयमा ! तेरां कालेरां तेरां समणरां इहेव जंबू-
दीवे दीवे भारहे वासे हत्थिणाउरे णामं णयरे रिद्धित्थिमिय
समिद्धे वरणओ । तत्थ रां हत्थिणाउरे णयरे सुमुहे णामं गाहा-
वई परिवसइ अइहे दित्त जाव अपरिभूए । तेरां कालेरां तेरां
समणरां धम्मओसे णामं थेरे जाइसंपन्ने जाव पंचहिं समण-
सएहिं सद्धिं संपरिबुडे पुव्वाणुपुर्व्वि चरमाणे गामाणुगामं
दूइज्जमाणे जेणेव हत्थिणाउरे णयरे जेणेव सहस्संबवणे
उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता अहापडिरूवं उगगहं उग्गि-

बहइ २ त्ता संजमेरां तवसा अप्पारां भावेमाणे विहरइ ।

तेरां कालेशं तेरां समएरां धम्मघोसारां थेराणां अंतेवासी सुदत्ते णामं अणगारे उराले जाव तेउलेसे मासं मासेरां खम-माणे विहरइ । तएरां सुदत्ते अणगारे मासखमणपारणंसि पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेइ । जहा गोयम तहेव धम्म-घोसं थेरं आपुच्छइ जाव अडमाणे सुमुहस्स गाहावइस्स गिहं अणुपट्ठे । तएरां से सुमुहे गाहावई सुदत्तं अणमारं एज्ज-माणां पासइ २ त्ता हट्ठ तुट्ठे आसणाउ अब्भुट्ठेइ २ त्ता पाय-वीढाउ पच्चोखहइ २ त्ता पाउयाउ ओमुयति २ त्ता एगसाडियं उत्तरासंगं करेइ २ त्ता सुदत्तं अणगारं सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ २ त्ता तिकखुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ २ त्ता वंदइ णम-सइ २ त्ता जेणेव भत्तघरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता सयहत्येण विउलं असरां पासां खाइमं साइमं पडिलाभिस्सामि त्ति कदट्ठ तुट्ठे पडिलाभेमाणे वि तुट्ठे पडिलाभिए त्ति तुट्ठे ।

तएरां तस्स सुमुहस्स गाहावइस्स तेरां द्व्वसुद्धेरां दायगसुद्धेरां पडिगाहयसुद्धेणं तिदिहेरां तिकरणसुद्धेणं सुदत्तं अणगारे पडिलाभिए समासे संसारे परित्तीकए, मणुस्साउए निबद्धे, गिहंसि य से इमाइ पंच दिव्वाइं पाउब्भू-याइं-तं जहा—वसुहारा बुट्ठा १ दसद्धवरणे कुसुमे निवाइए २ चेलुकखेवे कए ३ आहयाओ देवदुंदुहीओ ४ अंतरा वि यणं आगासंसि अहो दाणं घुट्ठे य ५ । तए णं हत्थिणाउरे सयरे सिंघाडग जाव पहेसु बहुजरो अणमणस्स एवमाइक्खइ ४ धन्नेरां देवाणुप्पिया सुमुहे गाहावई जाव तं धन्नेरां देवाणु-प्पिया सुमुहे गाहावई ।

तए रां से सुमुहे गाहावई बहइं वासाइं आउयं पालेइ २ त्ता कलमासे कालं किच्चा इहेव हत्थिसीसे णयरे अदीणस-

तुरणो धारिणी देवीए कुच्छिसि पुत्तत्ताए उववणणे । तए
 णं सा धारिणी देवी सयणिज्जंस्सि सुत्तजागरा ओहीरमाणी २
 तहेव सीहं पासइ । सेसं तं चेव जाव उप्पि पांसायवरणए विह-
 रइ । तं एवं खलु गोयमा ! सुवाहुणा कुमारेणं इमे एयारूवा
 मार्णस्सरिद्धी लद्धा पत्ता अभिसमणणागया । पभू णं भन्ते !
 सुवाहुकुमारे देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता आगाराउ
 अणगारियं पव्वइत्तए ? हंता पभू ! तए णं से भगवं गोयमे
 समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ २ त्ता संजमेणं तवसा
 अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।

तए णं से समणे भगवं महावीरे अणया कयाइ हत्थि-
 सीसाउ णयराउ पुप्फकरंडयाउ उज्जाणाउ कयवणमालप्पियस्स
 जक्खस्स जक्खायतणाउ पडिनिक्खमइ २ त्ता बहिया जणव-
 यविहारं विहरइ । तए णं से सुवाहुकुमारे समणोवासए जाए
 अभिगयजीवा तीवे जाव पडिलाभेमाणे विहरइ । तए णं से
 सुवाहुकुमारे अणया कयाइ चाउदसट्टमुदिट्टुणमासिणीसु
 जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ २ त्ता पोसहसाला
 पमज्जइ २ त्ता उच्चारपासवणं भूमिं पडिलेहइ २ त्ता दब्भसंथा-
 रगं संथरेइ २ त्ता दब्भसंथारगं दुरुहइ २ त्ता अट्टमभत्तं पणि-
 रहइ २ त्ता पोसहसालाए पोसहिण अट्टमभत्तिए पोसहं पडि-
 जागरमाणे विहरइ ।

तए णं तस्स सुवाहुस्स कुमारस्स पुव्वरत्तावरत्तकाले
 धम्मजागरियं जागरमाणस्स इमे एयारूवे अज्झत्थिए ५ समु-
 प्पन्ने-धरणा णं ते मामागरणगर जाव सन्निवेसा जत्थ णं
 समणे भगवं महावीरे विहरइ । धन्ना णं ते राईसर जाव सत्थ-
 वाहपभइउ जे णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए मुंडे
 भवित्ता आगाराउ अणगारियं पव्वयंति, धरणा णं ते राईसर

जाव सत्थवाह पभइउ जेतां समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिण धम्मं पडिसुणांति । तं जइ एां समणे भगवं महावीरे पुब्बा-
णुपुब्बि चरमाणे जाव गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागच्छेज्जा
जाव विहरेज्जा । तए एां अहं समणस्स भगवओ महावीरस्स
अंतिण मुंडे भवित्ता जाव पव्वएज्जा ।

तए एां समणे भगवं महावीरे सुवाहुस्स कुमारस्स इमं
एयारूवं अज्झत्थियं जाव वियाणित्ता पुब्बाणुपुब्बि चरमाणे
जाव गामाणुगामं दूइज्जमाणे जेणेव हत्थिसीसे एयरे जेणेव
पुप्फकरंडे उज्जाणे जेणेव कयवणमालपियस्स जक्खस्स जक्खा-
यतसे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता अहापडिरूवं उग्गहं उगिणिहत्ता
संजमेलां तवसा अप्पाणां भावेमाणे विहरइ । परिसा, राया
निग्गया । तए एां तस्स सुवाहुस्स कुमारस्स तं महया जहा
पढमं तहा निग्गओ । धम्मो कहिओ परिसा राया पडिगया ।

तए एां से सुवाहुकुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स
अंतिण धम्मं सोच्चा निसम्महट्ट-तुट्ठे । जहा मेहो तहा अम्मा-
प्रियरे आपुच्छइ । निक्खमणाभिसेओ तहेव जाव अणगारे जाए
इरियासमिण जाव गुत्तवंभयारी । तए एां से सुवाहु अणगारे
समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाणां थेराणां अंतिण
सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिंजइ २ त्ता वहुहिं
चरत्थछट्टुट्टम तवोविहाणेहिं अप्पाणां भावित्ता वहुंइं वासाइं
सामणपरियागं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अप्पाणां
भूसित्ता सट्ठि भत्ताइं अणसणाइं छेदित्ता आलोइय पडिक्कंते
समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा सोहम्मेकण्णे देवत्ताए
उववण्णे ।

से णं तओ देवलोगाओ आउक्खएणां भवक्खएणं ठिइ-
क्खएणं अणांतरं चयं चइत्ता माणुस्सं विग्गहं लभिहिइ २ त्ता

केवलबोहिं बुज्झहिइ २ ता तहारूवाण थेराणं अतिण मुंडे भवित्ता जाव पव्वइस्सइ । से एं तथ्य बहूइ वासाइं सामण-परियाणं पाउणिहिइ २ ता आलोइय पडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा सरां कुमारे कप्पे देवताए उववणणे । से एं तथो देवलोगाउ माणुस्सं जाव पवज्जा । बंभलोए । ततो माणुस्सं महासुक्के । ततो माणुस्सं आणए देवे । ततो माणुस्सं । ततो आरणे । ततो माणुस्सं सव्वट्ठसिद्धे ।

से एं तथो अणंतरं चयं चइत्ता महाविदेहे वासे जाव अहं जहा दढपइन्ते सिज्झिहत्ति बुज्झिहत्ति मुच्चिहत्ति परि-निव्वाहिति सव्वदुक्खाणमंतं करेहिति । एवं खलु जंबू ! सम-रणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं सुहविवागणं पढ-मस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पणत्ते त्तिवेमि ।

इइ सुहविवागस्स पढमं अज्झयणं समत्तं ॥ १ ॥

(२) वितियस्स उक्खेवओ । एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समणं उस्सभणुरे णामं णयरे थूभकरंडणं उज्जाणं । धरणो जक्खो । धणवहो राया सरस्सई देवी । सुमिणंदसणं, कहणं, जम्प, बालत्तणं, कलाओ य जेवणे पाणिगहणं, दाओ पासादा य भोगा य जहा सुवाहुस्स णवरं भद्दं दी कुमारे । सिरीदेवी पाप्पोक्खाणं पंचसया । सामिस्स समोसरणं । साव-गधम्मं । पुव्वभव पुच्छा । महाविदेह वासे पुंडरिणिणि नगरीए विजए कुमारे जुगवाहू तिस्थयरे पडिलम्मिण माणु-स्साउए निवज्जे इह उववणणे । सेसं जहा सुवाहुस्स जाव महा-विदेहेवासे सिज्झिहत्ति बुज्झिहत्ति मुच्चिहत्ति परिनिव्वाहिति सव्वदुक्खाणमंतं करेहिति । एवं खलु जंबू ! समरणेणं भग-वया महावीरेणं जाव संपत्तेणं सुहविवागणं वितियस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पणत्ते त्तिवेमि ।

इह सुहविवागस्त वीथं अज्भयणं समत्तं ॥ २ ॥

(३) तइयस्स उक्खेवओ । वीरपुरे णांमं णयरे । मणोरमे उज्जाणे वीरकरहे जक्खो, मित्ते राया सिरीदेवी सुजाणं कुमारे । बलसिली पामोक्खाणां पंचसयाकन्ना । सामी समोसरिण । पुव्वभव पुच्छा । उमुयारे णयरे उमुदत्ते गाहावई पुप्फदंते अणगारे पडिलाभिण मणुस्साउण निबद्धे इह उववणणे जाव महाविदेहे वासे सिज्झिहिति ५ ।

इह सुहविवागस्त तइयं अज्झयणां समत्तं ॥ ३ ॥

(४) चउत्थस्स उक्खेवओ । विजयपुरे णयरे । रांदणवणे उज्जाणे असोगो जक्खो । वासवदत्ते राया । करहसिरी देवी । सुवासवे कुमारे । भद्दा पामोक्खाणां पंचसया जाव पुव्वभव पुच्छा कोसंबी णयरी । धणपालो राया । वेसमणभेदे अणगारे पडिलाभिण इह उववणणे जाव सिद्धे ।

इह सुहविवागस्त चउत्थं अज्भयणां समत्तं ॥ ४ ॥

(५) पंचमस्स उक्खेवओ । सोमंधियाणयरी नीलासोगे उज्जाणे सुकालो जक्खो । अपडिहय राया सुकरहादेवी महचंदे कुमारे । तस्स अरहदत्ता भारिया । जिणदासो पुत्तो । तित्थयरगमणां जिणदासो पुव्वभव पुच्छा । मज्झमिया नयरी मेहरहे राया । सुधम्भे अणगारे पडिलाभिण जाव सिद्धे ।

इह सुहविवागस्त पंचमं अज्भयणां समत्तं ॥ ५ ॥

(६) छट्ठस्स उक्खेवओ । कणगपुरे णयरे सेयासोये उज्जाणे । वीरभद्दो जक्खो । पियचंदे राया । सुभद्दादेवी । वेसमणे कुमारे जुवराया । सिरीदेवी पामोक्खाणां पंचसया । तित्थयरगमणां । धणवई जुवरायपुत्ते जाव पुव्वभव पुच्छा । मणिव-

इया णयरी । मित्ते राया संभूइविजए अणगारे पडिलाभिए जाव सिद्धे ॥ ६ ॥

इइ सुहविवागस्स छट्ठं अज्झयणं समत्तं ॥ ६ ॥

(७) सत्तमस्स उक्खेवओ । महापुरे णयरे । रत्तासोगे उज्जारो । रत्तपाउ जक्खो । बले राया सुभदादेवी । महाबले कुमारे । रत्तवई पामोक्खाणं पंचसया । तिथयरागमणं जाव पुव्वभवं पुच्छा । मणिपुरे णयरे । णागदत्ते गाहावई । इंददत्ते अणगारे पडिलाभिए जाव सिद्धे ।

इइ सुहविवागस्स सत्तमं अज्झयणं समत्तं ॥ ७ ॥

(८) अट्ठमस्स उक्खेवओ । सुघोसे णयरे । देवरमणे उज्जारो । वीरसेणो जक्खो । अज्जुणो राया । रत्तवई देवी । भद्दनंदी कुमारे । सिरीदेवी पामोक्खाणं पंचसया जाव पुव्वभवं पुच्छा । महाघोसे णयरे । धम्मघोसे गाहावई । धम्मसीहे अणगारे । पडिलाभिए जाव सिद्धे ।

इइ सुहविवागस्स अट्ठमं अज्झयणं समत्तं ॥ ८ ॥

(९) नवमस्स उक्खेवओ । चंपा णयरी । पुण्णभदे उज्जारो । पुण्णभदो जक्खो । दत्ते राया । रत्तवईदेवी । महचन्दे कुमारे । जुवराया । सिरीकन्ता पामोक्खाणं पंचसया जाव पुव्वभवं पुच्छा । तिगिच्छा णयरी । जियसत्तुराया धम्मवीरिए अणगारे पडिलाभिए जाव सिद्धे ।

इइ सुहविवागस्स नवमं अज्झयणं समत्तं ॥ ९ ॥

(१०) जइ णं भन्ते ! दसमस्स उक्खेवओ । एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं साइए णामं णयरे होत्था । उत्तरकुह

उज्जारे पासामिउ जकखो मित्तनंदी राया । सिरीकन्ता देवी ।
 वरदत्ते कुमारे । वीरसेणा पामोकखाणं पंचदेवी सया । तित्थ-
 यरागमणं सावगधम्मं पुव्वभवं पुच्छ । सयदुवारे णयरे ।
 विमलवाहणे राया । धम्महई अणगारे पडिलाभिण मणुस्सा-
 उप निबद्धे इह उववरणे । सेसं जहा सुवाहुस्स चिंता जाव
 पवज्जा कप्पंतरिण जाव सव्वट्टुसिद्धे । तत्रो महाविदेह जहा
 दढपइरणे जाव सिज्जिहिति ५ । एवं खलु जंबू ! समणेणं
 भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं सुहविवागाणं दसमस्स
 अज्झयणस्स अयमट्ठे पणत्ते सेवं भन्ते २ त्तिवेमि ।

इह सुहविवागस्स दसमं अज्झयणं समसं ।

विवागसुयस्स दो सुयखंधा दुहविवागे य सुहविवागे य ।
 तत्थ दुहविवागे दस अज्झयणा एक्कासरगा दससु चेव
 दिवसेसु उद्दिसिज्जन्ति । एवं सुहविवागे वि सेसं जहा
 आयारस्स ॥ १० ॥

॥ इति सुखविपाकसूत्रम् ॥



उववाई सूत्र

(अन्तिम बावीस गाथाएँ)

- कहिं पडिहया सिद्धा ? कहिं सिद्धा पइट्टिया ? ।
 कैहिं बोंदिं चइत्ता रां, कत्थ गंतूण सिज्झइ ॥ १ ॥
- अलोपे पडिहया सिद्धा, लोयग्गे य पइट्टिया ।
 इहसे दिं चइत्ता रां, तत्थ गंतूण सिज्झइ ॥ २ ॥
- जं म्मां रां तु इह भवं चयंतस्स चरिमसमयंमि ।
 आसी य पपसघरां तं संठारां तहिं तस्स ॥ ३ ॥
- दीहं वा हस्सं वा जं चरिमभवे हवेज्ज संठारां ।
 ततो तिभागहीरां सिद्धाणोगाहणा भणिया ॥ ४ ॥
- तिणिण सया तेत्तीसा धणुत्तिभागो य होइ बोधव्वा ।
 एसा खलु सिद्धाणं उक्कोसोगाहणा भणिया ॥ ५ ॥
- चत्तारि य रयणीओ रयपितिभागूणिया य बोधव्वा ।
 एसा खलु सिद्धाणं मज्झिमओगाहणा भणिया ॥ ६ ॥
- एक्का य होइ रयणी साहिया अंगुलाइ अट्ठ भवे ।
 एसा खलु सिद्धाणं जहरणओगाहणा भणिया ॥ ७ ॥
- ओगाहणाए सिद्धा भवतिभागेण होइ परिहीणा ।
 संठारणमणित्थं जरामरणविप्पमुक्काणं ॥ ८ ॥
- जत्थ य एगो सिद्धो तत्थ अरांता भवक्खयविमुक्का ।
 अणणोणसमोगाढा पुट्ठा सव्वे य लोगंते ॥ ९ ॥

फुलइ अणंति सिद्धे सव्वपपसेहि णियमसो सिद्धो ।
 ते वि असंखेज्जगुणा देसपपसेहिं जे पुट्ठा ॥ १० ॥
 असरीरा जीवघणा उवउत्ता दंसणे य णाणे य ।
 सागारमणागारं लक्खणमेयं तु सिद्धाणं ॥ ११ ॥
 केवलणाणुवउत्ता जणंति सव्वभावगुणभावे ।
 पासंति सव्वओ खलु केवलदिट्ठिअणंताहिं ॥ १२ ॥
 एवि अत्थि माणुसाणं ते सोक्खं एवि य सव्वदेवताणि ॥ १३ ॥
 जं सिद्धाणं सोक्खं अवावाहं उवगयाणं ॥ १४ ॥
 जं देवाणं सोक्खं सव्वद्धापिंडियं अणंतगुणं ॥ १५ ॥
 ए य पावइ मुत्तिमुहं एणंताहिं वग्गवग्गूहि ॥ १६ ॥
 सिद्धस्स सुहो रासी सव्वद्धापिंडिओ जइ हवेज्जा ॥ १७ ॥
 सोणंतवग्गभइओ सव्वागासे ए मापज्जा ॥ १८ ॥
 जह णाम कोई मिच्छो एणरगुणे बहुविहे सिद्धाणंते ।
 ए चपइ परिकहेउं उवमाणं तहिं असेंतीण ॥ १९ ॥
 इय सिद्धाणं सोक्खं अणोवमं एत्थि तस्स ओवम्मं ।
 किंचि विसेसेणेत्तो ओवम्ममिणं सुणह वोच्छं ॥ २० ॥
 जह सव्वकामगुणियं पुरिसो भोचूण भोयणं कोई ।
 तण्हालुहाविमुक्को अच्चेज्ज जहा अमियत्तित्तो ॥ २१ ॥
 इय सव्वकालत्तिता अतुलं निव्वाणमुवगया सिद्धा ।
 सासयमवावाहं चिट्ठंति सुही सुहं पत्ता ॥ २२ ॥
 सिद्धत्ति य बुद्धत्ति य पारगयत्ति य परंपरगयत्ति ।
 उम्मुक्ककम्मकवया अजरा अमरा असंगा य ॥ २३ ॥
 णिच्छिण्णसव्वदुक्खा जाइजराअरखंधणविमुक्का ।
 अवावाहं सुक्खं अणुहोति सासयं सिद्धा ॥ २४ ॥
 अतुलसुहसागरगया अवावाहं अणोवमं पत्ता ।
 सव्वमणागयमद्धं चिट्ठंति सुहं पत्ता ॥ २५ ॥

॥ सूत्रकृताङ्ग सूत्रे वीरस्तुत्याख्यं (पुच्छिस्सुणं)

षष्ठमध्ययनं ॥



पुच्छिस्सु रां समणा माहणा य, अगारिणो या परतिथिआ य ।
 से केइ गेगंतहियधम्ममाहु, अणेहिसं साहुममिक्खयाए ॥१॥
 कहं च णारां कहं दंसणं से, सीलं कहं ना सुयस्स आसि ? ।
 जाणासि रां भिक्खु जहातहेणं, अहासुयं बूहि जहा णिसंतं ॥२॥
 खेयन्नए से कुसले-महेसी, अणंतनाणी ए अणंतदंसी ।
 जसंसिणो चक्खुपहे ठियस्स, जाणाहि धम्मं वा धिइं च पेहि ॥३॥
 उइढं अहे यं तिरियं दिसासु, तसा य जे थावर जे य पाणा ।
 से णिच्चणिच्चेहि समिक्ख पन्ने, दीवे व धम्मं उमियं उदाहु ॥४॥
 से सव्वदंसी अभिभूयनाणी, णिरामगंधे धिइमं ठियप्पा ।
 अणुत्तरे सव्वजगंसि विज्जं, गंधा अईए अमर अणाऊ ॥५॥
 से भूइपणणे अणिएअचारी, ओहंतरे धीरे अणंतचक्खू ।
 अणुत्तरं तप्पइ सूरिए वा, वइरोयणिन्दे वा नामं पगासे ॥६॥
 अणुत्तरं धम्मसिणं जिणारां, रोया मुणी वा सव आसुपन्ने ।
 इंदेव देवाणं महणुभावे, सहस्सणेया दिं रां विसिट्ठे ॥७॥
 से पन्नया अकलयसागरे वा, भवोददी वा अणंतपारे ।
 अणाविले वा अकसाइ मुक्के, सक्के व देवा विवई जुइमं ॥८॥
 से वीरिएणं पडिपुन्नवीरिए, सुदंसणे वा सणसव्वसेट्ठे ।
 सुरालए वा सि मुदागरे से, विरायए गेगमुणोववेए ॥९॥

सयं सहस्साण उ जोयणाणां, तिकंडगे पंडगवेजयंते ।
 से जोयणे णवणवइसहस्से, उड्डुस्सितो हेट्ठ सहस्समेगं ॥१०॥
 पुट्ठे णमे चिट्ठइ भूमिवट्ठिए, जं सूरिया अणुपरिवट्ठयंति ।
 से हेमवन्ने बहुनंदणे य, जंसि रणिं वेदयंति महिंदा ॥११॥
 से पव्वण सद्महप्पगासे, विरायइ कंचणमट्ठवन्ने ।
 अणुत्तरे गिरिसु य पव्वदुग्गे, गिरीवरे से जलिएव भोमे ॥१२॥
 महीए मज्झंमि ठिए णगिंदे, पन्नायते सूरिए सुद्धलेसे ।
 एवं सिरीए उ स भूरिवन्ने, मणेारमे जोयइ अच्चिमाली ॥१३॥
 सुदंसणस्सेव जसो गिरिस्स, पवुच्चई महतो पव्वयस्स ।
 एतोवमे समणे नायपुत्ते, जाइजसोदंसणनाणसीले ॥१४॥
 गिरीवरे वा निसहाऽऽययाणां, खयए व सेट्ठे वलयायताणां ।
 तओवमे से जगभूइपन्ने मुणीण मज्झे तमुदाहु पन्ने ॥१५॥
 अणुत्तरं धम्ममुईरइत्ता, अणुत्तरं भाणवरं झियाइ ।
 सुसुक्कसुकं अपगंडसुकं, संखिंदुएगंतवदातसुकं ॥१६॥
 अणुत्तरगं परमं महेसी, असेसकम्मं स विसोहइत्ता ।
 सिद्धिं गए साइमरांतपत्ते, नाणेण सीलेण य दंसणेण ॥१७॥
 रुक्खेसु णाए जह सामली वा, जंसि रइं वेदयंति सुवन्ना ।
 वणेसु वा णंदणमाहु सेट्ठं, नाणेण सीलेण य भूतिपन्ने ॥१८॥
 थणियं व सद्दाण अणुत्तरे उ, चन्दो व ताराण महानुभावे ।
 गंधेसु वा चन्दणमाहु सेट्ठं, एवं मुणीणां अपडिन्नमाहु ॥१९॥
 जहा सयंभू उदहीण सेट्ठं, नागेसु वा धरणिंदमाहु सेट्ठे ।
 खोओदए वा रसवेजयंते, तवोवहाणे मुणीवेजयंते ॥२०॥
 हत्थीसु परावणमाहु नाए, सीहो मिगाणां सल्लिलाण गङ्गा ।
 पक्खीसु वा गरुले वेणुदेवो, निव्वाणवादीणिह नायपुत्ते ॥२१॥
 जोहेसु नाए जह वीससेणे, पुप्फेसु वा जह अरविंदमाहु ।
 खत्तीण सेट्ठे जह दंतवक्के, इसीण सेट्ठे तह वद्धमाणे ॥२२॥

दाणाण सेट्ठं अभयप्पयाणां, सच्चेसु वा अणवज्जं वयंति ।
 तवेसु वा उत्तम बंभचेरं, लोगुत्तमे समणे नायपुत्ते ॥२३॥
 ठिईण सेट्ठा लवसत्तमा वा, सभा सुहम्मा व सभाण सेट्ठा ।
 निव्वाणसेट्ठा जह सव्वधम्मा, न नायपुत्ता परमत्थि नाणी ॥२४॥
 पुढोवमे धुणइ विगयगेही, न सण्णिहिं कुव्वइ आसुपन्ने ।
 तरिउं समुहं च महाभवोघं, अभयंकरे वीर अणांतचक्खू ॥२५॥
 कोहं च माणां च तहेव मायं, लोभं चउत्थं अज्झत्यदोसा ।
 पयाणि वंता अरहा महेसी, ए कुव्वइ पाव ण कारवेइ ॥२६॥
 किरियाकिरियं वेणइयाणुवायं, अण्णाणियाणां पडियच्च ठाणं ।
 से सव्ववायं इइ वेयइत्ता, उवट्ठिण संजमदीहरायं ॥२७॥
 से वारिया इत्थी सराइभंत्त, उवहाणवं दुक्खखयट्ठयाण ।
 लोगं विदित्ता आरं परं च, सव्वं पभू वारिय सव्ववारं ॥२८॥
 सोच्चा य धम्मं अरहंतभासियं समाहियं अट्ठपदोवमुद्धं ।
 तंसद्दहाणा य जणा अणाऊ, इंदं व देवाहिव आगमिस्संति ॥२९॥
 त्ति वेमि ॥



मोक्षमार्गनामकं एकादशाध्ययनम्



कयरे मग्गे अक्खाए, महारेणां मईमया !
जं मग्गं उज्जु पावित्ता ओहं तरइ दुत्तरं ॥१॥
तं मग्गं सुत्तरं सुद्धं सव्वदुक्खविमोक्खणां ।
जाणासिणं जहा भिक्खू, तं णो बूहि महामुणी ॥२॥
जइ णो वेइ पुच्छिज्जा, देवा अदुव माणुसा ।
तेहिं तु कयरं मग्गं, आइक्खेज्ज ? कहाहि णो ॥३॥
जइ णो वेइ पुच्छिज्जा, देवा अदुव माणुसा ।
तेहिं पडिसाहिज्जा, मग्गसारं सुणेह मे ॥४॥
अणुपुव्वेण महाघोरं कासवेण पवेइयं ।
जमायाय इओ पुव्वं, समुद्धं ववहारिणो ॥५॥
अतरिंसु तरंतेगे, तरिस्संति अणागया ।
तं सोच्चा पडिवक्खामि, जंतवो तं सुणेह मे ॥६॥
पुढवी जीवा पुढो सत्ता, आउजीवातहाऽगणी ।
वाउजीवा पुढो सत्ता, तणरुक्खा सवीयगा ॥७॥
अहावरा तसा पाणा, एवं छक्काय आहिया ।
एयावए जीवकाए, णावरे कोइ विज्जई ॥८॥
सव्वाहिं अणुजुत्तीहिं, मइमं पडिलेहिया ।
सव्वे अक्कंतदुक्खाय, अओ सव्वेन हिंसया ॥९॥
एयं खु णाणिणो सारं, जं न हिंसइ किंचरां ।
अहिंसासमयं चेव, एतावंतं त्रियाणिया ॥१०॥

उद्धं अहे य तिरियं, जे केइ तसथावरा ।
 सव्वत्थ विरइं विज्जा, संति निव्वाणमाहियं ॥११॥
 पभू दोसे निराकिञ्चा, ए विरुज्जेज्ज केणई ।
 मणसा वयसा चेव, कायसा चेव अंतसो ॥१२॥
 संबुडे से महापन्ने, धीरे दत्तेसरां चरे ।
 एसणासमिण शिच्चं, वज्जयंते अणेसरां ॥१३॥
 भूयाइं च समारंभ, तमुद्दिस्सा य जं कडं ।
 तारिसं तु न गिरहेज्जा, अन्नपाणां सुसंजण ॥१४॥
 पूइकम्मं न सेविज्जा एस धम्मे वुसीमओ ।
 जं किंचि अभिकंखेज्जा, सव्वसो तं न कप्पण ॥१५॥
 हणंतं णाणुजाणेज्जा, आयगुत्ते जिइदिण ।
 ठाणाइं संति सइदीणां, गामेसु नगरेसु वा ॥१६॥
 तहा गिरं समारब्भ, अत्थि पुण्णांति णो वण ।
 अहवा एत्थि पुण्णांति, एवमेयं महब्भयं ॥१७॥
 दाणद्वया य जे पाणा, हम्मंति तस-थावरा ।
 तेसिं सारक्खणद्वया, तम्हा अत्थि त्ति णो वण ॥१८॥
 जेसिं तं उवकप्पंति, अन्नपाणां, तहाविहं ।
 तेसिं लाभंतरायंति, तम्हा एत्थि त्ति णो वण ॥१९॥
 जे य दाणां पसंसंति, वहमिच्छंति पाणिणां ।
 जे य णं पडिसेहंति, वित्तिच्छेयं करंति ते ॥२०॥
 दुहओवि ते ण भासंति, अत्थि वा नत्थि वा पुणो ।
 आयं रयस्स हेच्चा णं निव्वाणं पाउणंति ते ॥२१॥
 निव्वाणं परमं बुद्धा, णक्खत्ताण व चंदिमा ।
 तम्हा सया जण दंते, निव्वाणं संधण मुणी ॥२२॥
 बुज्झमाणाण पाणाणां किच्चन्ताण सकम्मुणा ।
 आघ्राइ साहु तं दीवं, पतिट्टेसा पवुच्चई ॥२३॥

आयगुत्ते सया दन्ते, भिन्नसोए अणासवे ।

जे धम्मं सुद्धमक्खाइ, पडिपुत्तमणेत्तिसं ॥२४॥

तमेव अविजाणन्ता, अबुद्धा बुद्धमाणिणो ।

बुद्धामोत्ति य मन्नंता, अंत एते समाहिण ॥२५॥

ते य वीयोदगं चेव तमुद्दिस्सा य जं कडं ।

भोच्चा भाणं झियायंति, अखेयन्नाऽसमाहिया ॥२६॥

जहा ढंका य कंका य, कुलला मग्गुका सिही ।

मच्छेसणं झियायंति, भाणं ते कलुसाहमं ॥२७॥

एवं तु समणा एगे, मिच्छदिट्ठी अणारिया ।

विसएसणं झियायंति, कंका वा कलुसाहमा ॥२८॥

सुद्धं मगं विराहित्ता, इहमेगे उ दुम्मई ।

उम्मग्गगया दुक्खं, घायमेसंति तं तथा ॥२९॥

जहा आसाविणि नावं जाइअंधो दुरूहिया ।

इच्छई पारमागंतुं, संतरा य विसीयइ ॥३०॥

एवं तु समणा एगे, मिच्छदिट्ठी अणारिया ।

सोयं कसिणमावन्ना, आगंतारो महब्भयं ॥३१॥

इमं च धम्ममायाय, कासवेण पवेदितं ।

तरे सोयं महाघोरं, अत्तत्ताए परिव्वए ॥३२॥

विरए गामधम्महिं, जे केई जगई जगा ।

तेसिं अत्तुवमायाए, थामं कुव्वं परिव्वए ॥३३॥

अइमाणं च मायं च, तं परिन्नाय पंडिण ।

सव्वमेयं गिराकिच्चा, गिवाणां संधए मुणी ॥३४॥

संधए साहुधम्मं च, पावधम्मं गिराकरे ।

उवहाणवीरिए भिक्खू, कोहं माणं ए पत्थए ॥३५॥

जे य बुद्धा अत्तिक्कंता, जे य बुद्धा अणागया ।

संति तेसिं पइट्ठाणं, भूयाणां जगई जहा ॥३६॥

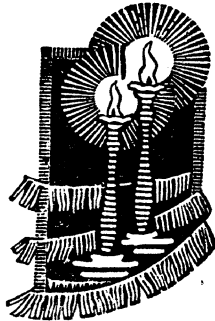
अहं एां वयमावन्नं, फासा उच्चावया फुसे ।

एा नेसु विणिहणणेजा, वाएण व महागिरी ॥३७॥

संवुडे से महापन्ने, धीरे दत्तेसरां चरे ।

निव्वुडे कालमाकंखी, एवं-(यं) केवलिणो मयं ॥३८॥

॥ इति मोक्षमार्गनामकं एकादशध्वयनम् ॥



॥ उत्तरजम्भयणा-सुत्तं ॥

अह विणयसुयं पढमं अजम्भयणं

संजोगा विण्णमुक्कस्स, अणगारस्स भिक्खुरो ।
विणयं पाउकरिस्सामि, आणुपुर्व्वेव सुणेह मे ॥१॥
आणानिहेसकरे, गुरुणमुववायकारण ।
इंणियागारसंपन्ने, से विणीए त्ति बुच्चइ ॥२॥
आणाऽनिहेसकरे, गुरुणमणुववायकारण ।
पडिणीए असंबुद्धे, अविणीए त्ति बुच्चइ ॥३॥
जहा सुणी पूइकरणी, निक्कसिज्जइ सव्वसो ।
एवं दुस्सीलपडिणीए, मुहरी निक्कसिज्जइ ॥४॥
कणकुण्डगं चइत्ताणं, विट्ठं भुंजइ सूयरे ।
एवं सीलं चइत्ताणं, दुस्सीले रमइ मिण ॥५॥
सुणिया भावं साणस्स, सूयरस्स नरस्स य ।
विणए ठवेज्ज अप्पाणमिच्छन्तो हियमण्णो ॥६॥
तम्हा विणयमेसिज्जा, सीलं पडिलभेज्जओ ।
बुद्धपुत्ते नियागट्ठी, न निक्कसिज्जइ कण्हुई ॥७॥

निसन्ते सियाऽमुहरी, बुद्धाणां अन्तिण सया ।
 अट्टजुत्ताणि सिक्खिज्जा, निरट्टाणि उ वज्जण ॥८॥
 अणुसासिओ न कुप्पिज्जा, खंतिं सेविज्ज पण्डिण ।
 खुड्ढेहिं सह संसग्गि, हासं कीडं च वज्जण ॥९॥
 मा य चण्डालियं कासी, बहुयं मा य आलवे ।
 कालेण य अहिज्जित्ता, तओ झाइज्ज एगगो ॥१०॥
 आहच्च चण्डालियं कट्ठु, न निगहविज्ज^१ कयाइ वि ।
 कडं कडे त्ति भासेज्जा, अकडं नो कडे त्ति य ॥११॥
 मा गलियस्सेव कसं, वयणमिच्छे पुणो पुणो ।
 कसं व दट्ठुमाइरणे, पावगं परिवज्जण ॥१२॥
 अणासवा थूलवया कुसीला,
 मिउं पि चण्डं पकरिन्ति सीसा ।
 चित्ताणुया लहु दक्खोवथेया,
 पसायण ते हु दुरासयंपि ॥१३॥
 नापुट्ठो वागरे किंचि, पुट्ठो वा नालियं वण ।
 कोहं असच्चं कुवेज्जा, धारेज्जा पियमप्पियं ॥१४॥
 अप्पा चेव दमेयव्वो, अप्पा हु खलु दुहमो ।
 अप्पा दन्तो सुही होइ, अस्सि लोण परत्थ य ॥१५॥
 वरं मे अप्पा दन्तो, संजमेण तवेण य ।
 माहं परेहि दम्मंतो, बंधणेहिं वहेहि य ॥१६॥
 पडिणीयं च बुद्धाणां, वाया अदुव कम्मणा ।
 आवी वा जइ वा रहस्से, नेव कुज्जा कयाइ वि ॥१७॥
 न पक्खओ न पुरओ, नेव किच्चाण पिहूओ ।
 न जुंजे ऊरुणा ऊरुं, सयणे नो पडिस्सुणे ॥१८॥

नेव पल्हत्थियं कुज्जा, पक्खपिण्डं च संजए ।
 पाए पसारिण वावि, न च्छिट्ठे गुरुणन्तिए ॥१६॥
 आयरिणहिं वाहित्तो, तुसिणीओ न कयाइवि ।
 १पसायपेही नियागट्ठी, उवच्चिट्ठे गुरुं सया ॥२०॥
 आलवन्ते लवन्ते वा न, निसीएज्ज कयाइ वि ।
 चइऊणमासणं धीरो, जओ जत्तं पडिस्सुणे ॥२१॥
 आसणगओ न पुच्छेज्जा, नेव सेज्जागओ २कयाइवि ।
 आगम्मुक्कुडुओ सन्तो, पुच्छेज्जा पंजलीउडो ॥२२॥
 एवं विणयजुत्तस्स, मुत्तं अत्थं च तदुभयं ।
 पुच्छमाणस्स सीसस्स, वागरिज्ज जहासुयं ॥२३॥
 मुसं परिहरे भिक्खू, न य ओहारिणिं वए ।
 भासादोसं परिहरे, मायं च वज्जए सया ॥२४॥
 न लवेज्ज पुट्ठो सावज्जं, न निरट्ठं न मम्मयं ।
 अप्पणट्ठा परट्ठा वा, उभयस्सन्तरेण वा ॥२५॥
 समरेसु अगारेसु, ३सन्धीसु य महापहे ।
 एगो एगत्थिए सद्धिं, नेव च्छिट्ठे न संलवे ॥२६॥
 जं मे बुद्धाऽणुसासन्ति, सीएण फरुसेण वा ।
 मम लाहो त्ति पेहाए, पयओ तं पडिस्सुणे ॥२७॥
 अणुसासणमोवायं, दुक्कडस्स य चोयणं ।
 हियं तं मरणइ परणो, वेसं होइ असाहुणो ॥२८॥
 हियं विगयभया बुद्धा, ४फरुसंपि अणुसासणं ।
 वेस्सं तं होइ मूढाणं, खन्तिसोहिकरं पयं ॥२९॥
 आसणे उवच्चिट्ठेज्जा, अणुञ्चेऽकुक्कुए थिरे ।
 अप्पुट्ठाई निरुट्ठाई, निसीएज्जप्पकुक्कुए ॥३०॥

१. पसायट्ठी । २. कया । ३. गिहसंधिसु अ महापहेसु । ४. फरु-
 समप्पणुसासणं ।

कालेण निक्खमे भिक्खू, कालेण य पडिक्कमे ।
 अकालं च विवज्जित्ता, काले कालं समायरे ॥३१॥
 परिवाडीए न चिट्ठेज्जा, भिक्खू दत्तेसणं चरे ।
 पडिरूवेण एसित्ता, मियं कालेण भक्खए ॥३२॥
 नाइदूरमणासन्ने, नऽन्नेसिं चक्खुफासओ ।
 एगो चिट्ठेज्ज भत्तट्ठं, लंघित्ता तं नऽइक्कमे ॥३३॥
 नाइउच्चे न नीए वा, नासन्ने नाइदूरओ ।
 फासुयं परकडं पिरंइ, पडिगाहेज्ज संजए ॥३४॥
 अण्णपाणेऽण्णवीयम्मि, पडिच्छन्नम्मि संवुडे ।
 समयं संजए भुंजे, जयं अपरिसाडियं ॥३५॥
 सुकडित्ति सुपक्कित्ति, सुच्छिन्ने सुहडे मडे ।
 सुणिट्ठिए सुलट्ठित्ति, सावज्जं वज्जए मुणी ॥३६॥
 रमए पण्डिए सासं, हयं भदं व वाहए ।
 बालं सम्मइ सासंतो, गलियस्सं व वाहए ॥३७॥
 खड्डुया मे चवेडा मे, अक्कोसा य वहा य मे ।
 कल्लाणमणुसासन्तो, पावदिट्ठित्ति मन्नइ ॥३८॥
 पुत्तो मे भाय नाइ त्ति, साहू कल्लाण मन्नई ।
 पावदिट्ठिउ अण्णाणां, सासं दासि त्ति मन्नइ ॥३९॥
 न कोवए आयरियं, अण्णाणांपि न कोवए ।
 बुद्धोवघाई न सिया न सिया तोत्तागवेसए ॥४०॥
 आयरियं कुवियं नच्चा, पत्तिएण पसायए ।
 विज्झवेज्ज पंजलीउडो, वणज्ज न पुरोत्ति य ॥४१॥
 धम्मज्जियं च ववहारं, बुद्धेहायरियं सया ।
 तमायरंतो ववहारं, गरहं नाभिगच्छइ ॥४२॥

मणोगयं वक्कयं, जाणित्तायरियस्स उ ।

तं परिगिज्झायाए, कम्मणा उववायए ॥४३॥

वित्ते अचोइए निच्चं, ^१खिप्पं हवइ सुचोइए ।

जहोवइट्ठं सुवयं, किच्चाइं कुव्वई सया ॥४४॥

नच्चा नमइ मेहावी, लोए कित्ती से जायए ।

हवई किच्चाणं सरणां, भूयाणं जगई जहा ॥४५॥

पुज्जा जस्स पसीयंति, संबुद्धा पुव्वसंथुया ।

पसन्ना लाभइस्संति, विउलं अट्ठियं सुयं ॥४६॥

स पुज्जसत्थे सुविणीयसंसए,

^२मणोरूई चिट्ठई कम्मसंपया ।

तवोसमायारिसमाहिसंबुडे,

महज्जुई पंच वयाइं पालिया ॥४७॥

स देवगंधव्वमणुस्सपूइए,

चइत्तु देहं मलपंकपुव्वयं ।

सिद्धे वा हवइ सासए,

देवे वा अप्परए महिद्धीए ॥४८॥ त्ति बेमि

॥ विणयसुयं नाम पढमं अज्झयणं समत्तं ॥

॥ अह दुइअं परिसहज्झयणं ॥

सुयं मे आजसं ! तेणं भगवया एवमक्खायं—इह खलु बावीसं परीसहा समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया । जे भिक्खु ओच्चा नच्चा जिच्चा अभिभूय भिक्खायरियाए परिव्वयंतो पुट्ठो ओ विनिहन्नेज्जा ।

कयरे ते खलु बावीसं परीसहा समणेणं भगवया महा-

वीरेणं कासवेणं पवेइया, जे भिक्खू सोच्चा नच्चा जिच्चा अभिभूय भिक्खायरियाए परिव्वयंतो पुट्ठो नो विनिहन्नेज्जा ?

इमे ते खलु बावीसं परीसहा समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया, जे भिक्खू सोच्चा नच्चा जिच्चा अभिभूय भिक्खायरियाए परिव्वयंतो पुट्ठो नो विनिहन्नेज्जा; तंजहा-

दिगिंछापरीसहे १ पिवासापरीसहे २ सीयपरीसहे ३ उसिणपरीसहे ४ दंसमसयपरीसहे ५ अचेलपरीसहे ६ अरइ-परीसहे ७ इत्थीपरीसहे ८ चरियापरीसहे ९ निसीहियापरीसहे १० सेज्जापरीसहे ११ अक्कोसपरिसहे १२ वहपरीसहे १३ जायणा-परीसहे १४ अलाभपरीसहे १५ रोगपरीसहे १६ तण्णफास-परीसहे १७ जल्लपरीसहे १८ सक्कारपुरक्कारपरीसहे १९ पन्ना-परीसहे २० अन्नाणपरीसहे २१ दंसणपरीसहे २२ ।

परीसहाणं पविभत्ती, कासवेणं पवेइया ।

तं मे उदाहरिस्सामि, आणुपुर्व्व सुणेह मे ॥१॥

^१दिगिंछापरिण देहे, तवस्सी भिक्खू थावमं ।

न छिंदे न छिंदावए, न पए न पयावए ॥२॥

कालीपव्वंगसंकासे, किसे धमणिसंतए ।

मायन्ने असणपाणस्स, अदीणमणसो चरे ॥३॥

तओ पुट्ठो पिवासाए, दोगुंछी लज्जसंजए ।

सीओदगं न सेविज्जा, वियडस्सेसणं चरे ॥४॥

छिन्नावाणसु पंथेसु, आउरे सुपिवासिण ।

परिसुक्कमुहाऽदीणे, तं तित्तिक्खे परीणहं ॥५॥

चरंतं विरयं लूहं, सीयं फुसइ एगया ।

नाइवेलं ^३मुणी गच्छे, सोच्चाणं जिणसासणं ॥६॥

१. दिगिंछापरियावेणं । २. सव्वतो य परिव्वए । ३. विहज्जिज्जा पावदिट्ठी बिहज्जइ ।

न मे निवारणं अत्थि, छुवित्ताणं न विज्झइ ।
 अहं तु अग्निं सेवामि, इइ भिक्खू न चिंतए ॥७॥
 उसिणपरियावेणं, परिदाहेण तज्जिए ।
 धिसु वा परियावेणं, सायं नो परिदेवए ॥८॥
 उण्हाहितत्तो मेहावी, सिण्णाणं नो वि पत्थए ।
 गायं नो परिसिचेज्जा, न वीएज्जा य अप्पयं ॥९॥
 पुट्ठो य दंसमसएहिं, समरे व महामुणी ।
 नागो संगामसीसे वा, सूरु अमिहणे परं ॥१०॥
 न संतसे न वारेज्जा, मणं पि न पओसए ।
 उवेहे न हणे पाणे, भुंजंते मंससोणियं ॥११॥
 पत्तिज्जुणणेहि वत्थेहिं, होक्खामि त्ति अचेलए ।
 अदुवा सचेलए होक्खं, इइ भिक्खू न चिंतए ॥१२॥
 एगयाऽचेलए होइ, सचेले आवि एगया ।
 एयं धम्मं हियं नच्चा, नाणी नो परिदेवए ॥१३॥
 गामाणुगामं रीयंतं, अण्णगारं अक्किंचणं ।
 अरई अणुप्पवेसेज्जा, तं तितिकखे परीसहं ॥१४॥
 अरइं पिट्ठओ किच्चा, विरए आयरक्खिए ।
 धम्मारामे निरारम्भे, उवसंते मुणी चरे ॥१५॥
 संगो एस मणूसाणं, जाओ लोगम्मि इत्थिओ ।
 नो ताहिं विणिहम्मेज्जा, चरेज्जत्तगवेसए ॥१७॥
 एग एव चरे लाढे, अभिभूय परीसहे ।
 गामे वा नगरे वावि, निगमे वा रायहाणिए ॥१८॥
 असमाणे चरे भिक्खू, नेव कुज्जा परिग्गहं ।
 असंसत्तो गिहत्थेहिं, अणिपओ परिव्वए ॥१९॥
 सुसाणे सुन्नगारे वा, रुक्खमूले व एगओ ।
 अकुक्कुओ निसीएज्जा, न य वित्तासए परं ॥२०॥

तत्थ से चिट्ठमाणस्स, उवसग्गाभिधारण ।
 संकाभीओ न गच्छेज्जा, उट्ठित्ता अन्नमासरां ॥२१॥
 उच्चावयाहिं सेज्जाहिं, तवस्सी भिक्खू थायव ।
 नाइवेलं विहन्निज्जा, पावदिट्ठी विहन्नई ॥२२॥
 पइरिककुवस्सयं लद्धं, कल्लणमदुवा पावयं ।
 किमेगराईं करिस्सइ, एवं तत्थऽहियासए ॥२३॥
 अक्कोसेज्जा परे भिक्खुं, न तेसिं पडिसंजले ।
 सरिसो होइ बालारां, तम्हा भिक्खू न संजले ॥२४॥
 सोच्चारं फरुसा भासा, दाहणा गामकण्टगा ।
 तुम्हिणीओ उवेहेज्जा, न ताओ मणसीकरे ॥२५॥
 हओ न संजले भिक्खू, मरांपि न पओसए ।
 तितिकखं परमं नच्चा, भिक्खू धम्मं विचित्तए ॥२६॥
 समरां संजयं दंतं, हणिज्जा कोइ कत्थई ।
 नत्थि जीवस्स नासुत्ति, ^१एवं पेहेज्ज संजए ॥२७॥
 दुक्करं खलु भो निच्चं, अणगारस्स भिक्खुणो ।
 सव्वं से जाइयं होइ, नत्थि किंचि अजाइयं ॥२८॥
 गोयरग्गपविट्ठस्स पाणी नो सुण्णसारण ।
 सेओ अगारवासुत्ति, इइ भिक्खू न चित्तए ॥२९॥
 परेसु घासमेसेज्जा, भोयणे परिणिट्ठिए ।
^२लद्धे पिएडे अलद्धे वा, नाणुत्तप्पेज्ज पंडिए ॥३०॥
 अज्जेवाहं न लब्भामि, अवि लाभो सुए सिया ।
 जो एवं पडिसंचिकखे, अलाभो तं न तज्जए ॥३१॥
 नच्चा उप्पइयं दुक्खं, वेयणाए दुहट्ठिए ।
 अदीणो थावए पन्नं, पुट्ठो तत्थऽहियासए ॥३२॥

१. ए तं पेहे असाहुवं । २. लद्धे पिंडे आहरिज्जा अलद्धे नाणु-
 त्पए ।

तेइच्छं नाभिनंदेज्जा संचिक्खत्तगवेसए ।
 एवं खु तस्स सामराणां, जं न कुज्जा न कारवे ॥३३॥
 अचेलगस्स लूहस्स, संजयस्स तवस्सिणो ।
 तणेसु सयमाणस्स, हुज्जा गायविराहणा ॥३४॥
 आयवस्स निवाएण, अउला हवइ वेयणा ।
 एवं नच्चा न सेवन्ति, तंतुजं तणतज्जिया ॥३५॥
 किलिन्नगाए मेहावी, पंकेण व रएण वा ।
 धिसु वा परियावेण, सायं नो परिदेवए ॥३६॥
 वेएज्जा निज्जरापेही, आरियं धम्मणुत्तरं ।
 जाव सरीरभेउत्ति, जल्लं काएण धारए ॥३७॥
 अभिवायणमब्भुट्ठाणां, सामी कुज्जा निमंतरां ।
 जे ताइं पडिसेवन्ति, न तेसिं पीहए मुणी ॥३८॥
 अणुक्कसाई अप्पिच्छे अन्नाएसी अलोलुए ।
 रसेसु नाणुगिज्जेज्जा, नाणुतप्पेज्ज पन्नवं ॥३९॥
 से नूरां मए पुव्वं, कम्माऽणाणफला कडा ।
 जेणाहं नाभिजाणामि, पुट्ठो केणइ करहुई ॥४०॥
 अह पच्छा उइज्जन्ति, कम्माऽणाणफला कडा ।
 एवमस्सासि अप्पाणां, नच्चा कम्मविवागयं ॥४१॥
 निरट्ठगम्मि विरओ, मेहुणाओ सुसंबुडो ।
 जो सक्खं नाभिजाणामि, धम्मं कल्लाणपावगं ॥४२॥
 तवोवहाणमादाय, पडिमं पडिवज्जओ ।
 एवं पि विहरओ मे, छुउमं न नियट्ठइ ॥४३॥
 नत्थि नूरां परे लोए, इइढी वावि तवस्सिणो ।
 अदुवा वंचिओमिच्छि, इइ भिक्खू न चितए ॥४४॥
 अभू जिणा अत्थि जिणा, अदुवावि भविस्सइ ।
 मुसं ते एवमाहंसु, इइ भिक्खू न चितए ॥४५॥

एष परीसहा सव्वे, कासवेण पवेइया ।
जे भिक्खू न विहन्नेज्जा, पुट्ठो केणइ करहई ॥४६॥त्ति वेमि॥

॥ दुइअं परिसहज्भयणां समत्तं ॥२॥

॥ अह तइअं चाउरंगिज्जं अज्भयणां ॥

चत्तारि परमंगाणि दुल्लहाणीह जन्तुणो ।
माणुसत्तं सुई सद्धा, संजमम्मि य वीरियं ॥१॥
समावन्नाण संसारे, नाणागोत्तासु जाइसु ।
कम्मा नाणाविहा कट्ठु, पुट्ठो विस्संभिया पया ॥२॥
एगया देवलोएसु, नरएसु वि एगया ।
एगया आसुरं कायं, अहाकम्मेहिं गच्छइ ॥३॥
एगया खत्तिओ होइ, तओ चण्डालवुक्कसो ।
तओ कीडपयंगो य, तओ कुन्थु पिवीलिया ॥४॥
एवमावट्टजोणीसु, पाणिणो कम्मकिव्विसा ।
न निविज्जन्ति संसारे, सव्वट्ठेसु व खत्तिया ॥५॥
कम्मसंगेहिं संमूढा, दुक्खिया बहुवेयणा ।
अमाणुसासु जोणीसु, विणिहम्मैन्ति पाणिणो ॥६॥
कम्माणां तु पहाणाए, आणुपुव्वी कयाइ उ ।
जीवा सोहिमणुप्पत्ता, आययंति मणुस्सयं ॥७॥
माणुस्सं विग्गहं लद्धं, सुई धम्मस्स दुल्लहा ।
जं सोच्चा पडिवज्जन्ति, तवं खंतिमहिं सयं ॥८॥
आहच्च सवणं लद्धं सद्धा परमदुल्लहा ।
सोच्चा नेआउयं मग्गं, बहवे परिभस्सइ ॥९॥
सुइं च लद्धं सद्धं च, वीरियं पुण दुल्लहं ।
बहवे रोयमाणावि, नो य णं पडिवज्जप ॥१०॥

माणुसत्तमि आयाओ, जो धम्मं सोच्च सदहे ।
 तवस्सी वीरियं लद्धुं, संवुडे निद्धुरे रयं ॥११॥
 सोही उज्जुयभूयस्स, धम्मो सुद्धस्स चिट्ठइ ।
 निव्वारां परमं जाइ, घयसित्तिव्व पावए ॥१२॥
 विगिंच कम्मणो हेउं, जसं संचिणु खंतिए ।
 सरीरं पाढवं हिच्चा, उड्ढं पक्कमए दिसं ॥१३॥
 विसालसेहिं सीलेहिं, जक्खा उत्तैरंउत्तरा ।
 महासुक्का व दिप्पंता, मन्नंता अपुणच्चयं ॥१४॥
 अप्पिया देवकामारां, कामरूवविउद्विणो ।
 उड्ढं कप्पेसु चिट्ठंति, पुव्वावाससया बहु ॥१५॥
 तत्थ ठिच्चा जहाठाणं, जक्खा आउक्खये चुया ।
 उवैति माणुसं जोणिं, से दसंगे भिजायए ॥१६॥
 खित्तं वत्थुं हिररणं च, पसवो दासपोरुसं ।
 चत्तारि कामखंधाणि तत्थ से उववज्जइ ॥१७॥
 मित्तवं नाइवं होइ, उच्चागोए य वण्णवं ।
 अप्पायंके महापत्ते, अभिजाए जसो बले ॥१८॥
 भुच्चा माणुस्सए भोए, अप्पडिरूवे अहाउयं ।
 पुव्वं विसुद्धसद्धम्मे, केवलं बोहि बुज्झिया ॥१९॥
 चउरंगं दुल्लहं नच्चा, संजमं पडिवज्जिया ।
 तवसा धुयकम्मंसे, सिद्धे हवइ सासए ॥२०॥ त्ति बेमि ।
 तइअं चाउरंगिज्जं अज्झयणं समत्तं ॥

॥ अहं चउत्थं असंखयं अज्झयणं ॥

असंखयं जीविय मा पमायए,
 जरोवणीयस्स हु नत्थि ताणं ।

एवं विद्याणाहि जणे पमत्ते,
 किन्नु विहिंसा अजया गहिति ॥१॥
 जे पावकम्मेहिं धणं मणूसा,
 समाययंती अमइं गहाय ।
 पहाय ते पासपयट्टिए नरे,
 वेराणुक्खा नरयं उविति ॥२॥
 तेणे जहा संधिमुहे गहीए,
 सकम्मुणा किच्चइ पावकारी ।
 एवं पया पेच्च इहं च लोए,
 कडाण कम्माण न मोक्ख अत्थि ॥३॥
 संसारमावन्न परस्स अट्ठा,
 साहारणं जं च करेइ कम्मं ।
 कम्मस्स ते तस्स उ वेयकाले,
 न बंधवा बंधवयं उविति ॥४॥
 वित्तेण ताणं न लभे पमत्ते,
 इमंमि लोए अदुवा परत्थ ।
 दीवप्पणट्ठेव अणंतमोहे,
 नेयाउयं ददुमददुमेव ॥५॥
 सुत्तेसु आवी पडिबुद्धजीवी,
 न वीससे पंडिय आसुपणणे ।
 घोरा मुहुत्ता अबलं सरीरं,
 भारंडपक्खीव चरेऽपमत्ते ॥६॥
 चरे पयाइं परिसंकमाणो,
 जं किंचि पासं इह मन्नमाणो ।

लामन्तरे जीविय बूहइत्ता,
 पच्छा परिन्नाय मलावधंसी ॥७॥
 छंदनिरोहेण उवेइ मोक्खं,
 आसे जहा सिक्खियवम्मधारी ।
 पुब्बाइं वासाइं चरण्णमत्ते,
 तम्हा मुणी खिण्णमुवेइ मुक्खं ॥८॥
 स पुब्बमेवं न लभेज्ज पच्छा,
 एसोवमा सासयवाइयाणं ।
 विसीयई सिटिले आउयम्मि,
 कालोवणीए सरीरस्स भेए ॥९॥
 खिण्णं न सक्केइ विवेगमेउं,
 तम्हा समुट्ठाय पहाय कामे ।
 समिच्च लोयं समया महेसी,
 अण्णारकली चरऽण्णमत्ते ॥१०॥
 मुहुं मुहुं मोहगुणे जयंतं,
 अणेगरूवा समरां चरंतं ।
 फासा फुसन्ति असमंजसं च,
 न तेसि भिक्खू मणसा पउस्से ॥११॥
 मन्दा य फासा बहुलोहणिज्जा,
 तहण्णगारेसु मरां न कुज्जा ।
 रक्खिज्ज कोहं विण्णज्ज माणं,
 मायं न सेवेज्ज पहेज्ज लोहं ॥१२॥
 जे संख्या तुच्छपरण्णवाई,
 ते पिज्जदोसाणुगया परज्झा ।
 एए अहम्मे त्ति दुगुंछमाणो,
 कंखे गुणे जाव सरीरमेउ ॥१३॥ त्ति वेमि ।

॥ अह अकाममरणिज्जं पञ्चमं अडभयणं ॥
 अण्णावंसि महोहंसि, एगे 'तिण्णो दुरुत्तरं ।
 तत्थ एगे महापत्ते, इमं परहमुदाहरे ॥१॥
 सन्तिमे य दुवे ठाणा, अक्खाया मरणन्तिथा ।
 अकाममरणं चेव, सकाममरणं तहा ॥२॥
 बालाणं तु अकामं तु, मरणं असइं भवे ।
 पण्डियाणं सकामं तु, उक्कोसेण सइं भवे ॥३॥
 तत्थिमं पढमं ठाणं, महावीरेण देसियं ।
 कामगिद्धे जहा बाले, भिसं कूराइं कुव्वई ॥४॥
 जे गिद्धे कामभोगेसु, एगे कूडाय गच्छई ।
 न मे दिट्ठे परे लोप, चक्खुदिट्ठा इमा रई ॥५॥
 हत्थागया इमे कामा, कालिया जे अणागया ।
 को जाणइ परे लोप, अत्थि वा नत्थि वा पुणो ॥६॥
 जणेण सद्धिं होक्खामि, इइ बाले पगब्भई ।
 कामभोगाणुराणं, केसं संपडिवज्जई ॥७॥
 तओ से दण्डं समारभई, तसेसु थावरेसु य ।
 अट्ठाण य अणट्ठाण, भूयगामं विहिंसई ॥८॥
 हिंसे बाले मुसावाई, माइल्ले पिसुणे सढे ।
 भुजमाणे सुरं मंसं, सेयमेयं ति मन्नई ॥९॥
 कायसा वयसा मत्ते, वित्ते गिद्धे य इत्थिसु ।
 दुहओ मलं संचिणइ, सिसुणागुव्व मट्ठियं ॥१०॥
 तओ पुट्ठो आयंकेणं, गिलाणो परितप्पई ।
 पमीओ परलोगस्स, कम्माणुप्पेहि अप्पणो ॥११॥
 सुया मे नरण ठाणा, असीलाणं च जा गई ।
 बालाणं कूरकम्माणं, पगाढा जत्थ वेयणा ॥१२॥

तत्थोववाइयं ठाणं, जहा मे तमणुस्सुयं ।
 अहाकम्मेहिं गच्छन्तो, सो पच्छा परितप्पइ ॥१३॥
 जहा सागडिओ जाणं, समं हिच्चा धहापहं ।
 विसमं मग्गमोइण्णो, अक्खे भग्गम्मि सोयई ॥१४॥
 एवं धम्मं विउक्कम्पं, अहम्मं पडिवज्जिया ।
 बाले मच्चुमुहं पत्ते, अक्खे भग्गे व सोयई ॥१५॥
 तओ से मरणन्तम्मि, बाले संतसई भया ।
 अकाममरणां मरइ, धुत्ते व कलिणा जिण ॥१६॥
 एयं अकाममरणां, बालाणं तु पवेइयं ।
 इत्तो सकाममरणं, पण्डियाणं सुणेह मे ॥१७॥
 मरणां पि सपुण्णाणां, जहा मेयमणुस्सुयं ।
 विप्पसरणमणाघायं, संजयाण वुसीमओ ॥१८॥
 न इमं सव्वेसु भिक्खूसु, न इमं सव्वेसुग्गारिसु ।
 नाणासीला अगारत्था, विसमसीला य भिक्खुणो ॥१९॥
 सन्ति एगेहिं भिक्खूहिं, गारत्था संजमुत्तरा ।
 गारत्थेहि य सव्वेहिं, साहवो संजमुत्तरा ॥२०॥
 चीराजिणं नगिणिणं, जडी संघाडिमुण्डिणं ।
 एयाणि वि न तायंति, दुस्सीलं परियागयं ॥२१॥
 पिंडोलपव्व दुस्सीले, नरगाओ न मुच्चइ ।
 भिक्खाए वा गिहत्ये वा, सुव्वए कम्मइ दिवं ॥२२॥
 अगारिसामाइयंगाणि, सइदी काएण फासए ।
 पोसहं दुहओ पक्खं, एगरायं न हावए ॥२३॥
 एवं सिक्खासमावन्ने, गिहवासे वि सुव्वए ।
 मुच्चइ छुविपव्वाओ, गच्छे जक्खसलोगयं ॥२४॥
 अह जे संबुडे भिक्खू, दोणहं अन्नयरे सिया ।
 सव्वदुक्खपहीणे वा, देवे वावि महिइदीए ॥२५॥

उत्तराहं विमोहाहं, जुईमन्ताणुपुव्वसो ।
 समाइएणाहं जक्खेहिं, आवासाहं जसंसिणो ॥२६॥
 दीहाउया इड्ढिमन्ता, समिद्धा कामरूविणो ।
 अहुणोववन्नसंकासा, भुज्जो अच्चिमालिप्पभा ॥२७॥
 ताणि ठाणाणि गच्छन्ति,
 सिक्खित्ता संजमं तथं ।
 भिक्खए वा गिहित्थे वा,
 जे संति परिनिव्वुडा ॥२८॥
 तेसिं सोच्चा सपुज्जाणां, संजयाण वुसीमओ ।
 न संतसंति मरणांते, सीलवन्ता बहुसुया ॥२९॥
 तुलिया विसेसमादाय, दयाधम्मस्स खंतिए ।
 विप्पसीएज्ज मेहावी, तहाभूएण अप्पणा ॥३०॥
 तओ काले अभिप्पेए, सड्ढी तालिसमंतिए ।
 विणएज्ज लोमहरिस्सं, मेयं देहस्स कंखए ॥३१॥
 अह कालम्मि संपत्ते, आघायाय समुत्सयं ।
 सकाममरणं मरइ, तिण्हमन्नयरं मुणी ॥३२॥ त्ति बेमि ।
 इअ अकाममरणिज्जं पंचमं अज्झयणं समत्तं ॥५॥

॥ अह खुड्डागनियठिज्जं छट्ठं अज्झयणं ॥

जायन्तऽविज्जापुरिसा, सव्वे ते दुक्खसंभवा ।
 लुप्पन्ति बहुसो मूढा, संसारम्मि अणंतए ॥१॥
 समिक्ख परिडए तम्हा, पासजाइपहे बहू ।
 अप्पणा सच्चमेसेज्जा; मित्तिं भूएसु कप्पए ॥२॥
 माया पिया गहुसा भाया, भज्जा पुत्ता य ओरसा ।
 नालं ते मम ताणाए, लुप्पंतस्स सकम्मुणा ॥३॥

एयमट्टं सपेहाण, पासे समियदंसणे ।
 छिन्द गिद्धिं सियोहं च, न कंखे पुव्वसंथवं ॥४॥
 गवासं मणिकुण्डलं, पसवो दासपोरुसं ।
 सव्वमेयं चइत्ताणं कामरूवी भविस्ससि ॥५॥
 (थावरं जंगमं चेव धणं धन्नं उवक्खरं ।
 पञ्चमाणस्स कम्मेहिं नालं दुक्खाउ मोयणे ॥ ६)
 अज्झत्थं सव्वओ सव्वं, दिस्स पाणे पियायए ।
 न हणे पाणिणो पाणे, भयवेराओ उवरए ॥६॥
 आदाणं नरयं दिस्स, नायएज्ज तणामवि ।
 दोगुञ्छी अप्पणो पाए, दिन्नं भुंजेज्ज भोयणं ॥७॥
 इहमेगे उ मन्नंति, अपञ्चक्खाय पावगं ।
 आयरियं विदित्ता णं, सव्वदुक्खा विमुच्चए ॥८॥
 भणंता अकरेन्ता य, बन्धमोक्खपइणिणो ।
 धायावीरियमेत्तेण, समासासैति अप्पयं ॥९॥
 न चित्ता तायए भासा, कुओ विज्जाणुत्तासणं ।
 विसन्ना पावकम्मेहिं, बाला पंडियमाणिणो ॥१०॥
 जे केइ सरीरे सत्ता, वरणे रूवे य सव्वसो ।
 मणसा कायवक्केणं, सव्वे ते दुक्खसंभवा ॥११॥
 आवन्ना दीहमद्धाणं, संसारम्मि अणंतए ।
 तम्हा सव्वदिसं पस्स, अप्पमत्तो परिव्वए ॥१२॥
 बहिया उद्धमादाय, नावकंखे कयाइ वि ।
 पुव्वकम्मक्खयट्ठाए, इमं देहं समुद्धरे ॥१३॥
 विविच्च कम्मुणो हेउं, कालकंखी परिव्वए ।
 मायं पिंडस्स पाणस्स, कडं लद्धूण भक्खए ॥१४॥

सन्निहिं च न कुब्जेजा, लेवमायाए संजए ।
 पक्खीपत्तं समादाय, निरवेक्खो परिव्वर ॥१५॥
 एसणासमिओ लज्जू, गामे अणियओ चरे ।
 अप्पमत्तो पमत्तेहिं, पिण्डवायं गवेसए ॥१६॥
 एवं से उदाहु अणुत्तरनाणी अणुत्तरदंसी अणुत्तरनाणदंसण-
 धरे अरहा नायपुत्ते भगवं वेसालिए वियाटिए । त्ति बेमि ॥

॥ इइ खुड्डागनियंठिज्जं छट्ठं अज्झयणं समत्तं ॥ ५ ॥

॥ अह एलइज्ज सत्तमं अज्झयणं ॥

जहाएसं समुद्दिस्स, कोइ पोसेज्ज एलयं ।
 ओयणं जवसं देज्ज, पोसेज्जावि सयंगणे ॥१॥
 तओ से पुट्टे परिवूढे, जायमेए महोदरे ।
 पीणिए विउले देहे, आपसं परिकंखए ॥२॥
 जाव न एइ आपसे, ताव जीवइ से दुद्धो ।
 अह पत्तम्मि आपसे, सीसं छेत्तूण भुज्जइ ॥३॥
 जहा से खलु उरब्भे, आपसाए समीहिए ।
 एवं बाले अहम्मिपुट्टे, ईहई नरयाउयं ॥४॥
 हिंसे बाले मुसावाई, अद्धाणांसि विलोवए ।
 अन्नदत्तहरे तेणे, माई कं नु हरे सढे ॥५॥
 इत्थीविसयगिद्धे य, महारंभपरिग्गहे ।
 भुंजमाणे सुरं मंसं, परिवूढे परंदमे ॥६॥
 अयककरभोई य, तुंडिले चियलोहिए ।
 आउयं नरए कंखे, जहाएसं व एलए ॥७॥
 आसणं सयणं जाणं, वित्तं कामे य भुंजिया ।
 दुस्साहडं धणं हिच्चा, बहु संचिणिया रवं ॥८॥

તઓ કમ્મગુરુ જંતુ, પચ્ચુલ્લપ્પપરાયણે ।
 અપ્પવ્વ આગયાપ્પસે, મરણંતમ્મિ સોયદ્દ ॥૬॥
 તઓ આપરિક્ખીણે, ચુયદેહા વિહિંસગા ।
 આપુરીયં દિસં બાલા, ગચ્છંતિ અવસા તમં ॥૧૦॥
 જહા કાગિણિયે હેઉં, સહસ્સં હારણ નરો ।
 અપત્થં અમ્બગં ભોઘ્ઘા, રાયા રજ્જં તુ હારણ ॥૧૧॥
 એવં માણુસ્સગા કામા, દેવકામાણ અંતિયે ।
 સહસ્સગુણિયા ભુજ્જો, આઉં કામા ય દિવ્વિયા ॥૧૨॥
 અણેગવાસાનડયા, જા સા પન્નવઓ ઠિર્ઠે ।
 જાણિ જીયંતિ દુમ્મેહા, ઊણે વાસસયાડયે ॥૧૩॥
 જહા ય તિન્નિ વણિયા, મૂલં ઘેત્તૂણ નિગ્ગયા ।
 એગોડ્ડત્થ લહણ લાભં એગો મૂલેણ આગઓ ॥૧૪॥
 એગો મૂલં પિ હારિત્તા, આગઓ તત્થ વાણિઓ ।
 મૂલચ્છેણ જીવાણં નરગતિરિક્ખત્તણં ધુવં ॥૧૬॥
 દુહઓ ગર્ઘે બાલસ્સ, આવર્ઘવહમૂલિયા ।
 દેવત્તં માણુસત્તં ચ, જં જિયે લોલયાસઢે ॥૧૭॥
 તઓ જિયે સઙ્ગં હોદ્દ, દુવિહં દુગ્ગઙ્ગં ગયે ।
 દુલ્લહા તસ્સ ઉમ્મગ્ગા, અદ્ધાણે સુચિરાદવિ ॥૧૮॥
 એવં જિયં સપેહાણ, તુલિયા બાલં ચ પણ્ણિયં ।
 મૂલિયં તે પવેસન્તિ, માણુસિં જોણિમેન્તિ જે ॥૧૯॥
 વેમાયાહિં સિક્ખાહિં, જે નરા ગિહિસુવ્વયા ।
 ઉવેંતિ માણુસં જોણિં, કમ્મસઘ્ઘા હુ પાણિણો ॥૨૦॥
 જે સિં તુ વિડલા સિક્ખા, મૂલિયં તે અહિચ્છિયા ।
 સીલવન્તા સવિસેસા, અદીણાં જંતિ દેવયં ॥૨૧॥
 એવમદીણવં ભિક્કૂ, આગારિં ચ વિયાણિયા ।
 કહણુ જિચ્છમેલિક્ખં, જિચ્છમાણે ન સંવિદે ॥૨૨॥

जहा कुसग्गे उदगं, समुद्देण समं मिणे ।
 एवं माणुस्सगा कामा, देवकामाण अंतिण ॥२३॥
 कुसग्गमेत्ता इमे कामा, सन्निरुद्धम्मि आउण ।
 कस्स हेउं पुराकाउं, जोगक्खेमं न संविदे ॥२४॥
 इह कामाणियट्ठस्स, अत्तट्ठे अवरज्झइ ।
 सोच्चा नेयाउयं मग्गं, जं भुज्जो परिभस्सई ॥२५॥
 इह कामाणियट्ठस्स, अत्तट्ठे नावरज्झई ।
 पूइदेहनिर्रोहेणं, भवे देवित्ति मे सुयं ॥२६॥
 इड्ढी जुई जसो वरणो, आउं सुहमणुत्तरं ।
 भुज्जो जत्थ मणुस्सेसु, तत्थ से उववज्जइ ॥२७॥
 बालस्स पस्स बालत्तं, अहम्मं पडिवज्जिया ।
 चिच्चा धम्मं अहम्मिण्ठे, नरण उववज्जइ ॥२८॥
 धीरस्स पस्स धीरत्तं, सव्वधम्माणुवत्तिणो ।
 चिच्चा अधम्मं धम्मिण्ठे, देवेसु उववज्जइ ॥२९॥
 तुलियाण बालभावं, अबालं चेव परिडण ।
 चइऊण बालभावं, अबालं सेवण मुणी ॥३०॥ त्ति वेमि ॥
 एलयज्झयणं समत्तं ॥३॥

॥ अह काविलियं अट्ठमं अज्झयणं ॥

अधुवे असासयम्मि,

संसारम्मि दुक्खपउराए ।

किं नाम होउज्ज तं कम्मयं

जेणाहं दुग्गइं न गच्छेज्जा ॥१॥

विजहित्तु पुव्वसंजोयं,

न सिणेहं कहिंचि कुव्वेज्जा ।

असिरोदसिरोहकरेहिं,
 दोसपओसेहि मुच्चए भिक्खू ॥२॥
 तो नाणदंसणसमग्गो,
 हियनिस्सेसाए सव्वजीवाणं ।
 तेसिं विमोक्खणट्ठाए,
 भासइ मुणिवरो विगयमोहो ॥३॥
 सव्वं गंथं कलहं च,
 विव्वजहे तहाविहं भिक्खू ।
 सव्वेसु कामजाएसु,
 पासमाणो न लिप्पइ ताई ॥४॥
 भोगामिसदोसविसन्ने,
 हियनिस्सेयसबुद्धिवोच्चत्थे^१ ।
 बाले य मंदिए मूढे,
 बज्झइ मच्छिया व खेलम्मि ॥५॥
 दुप्परिच्चया इमे कामा,
 नो सुजहा अधीरपुरीसेहिं ।
 अह संति सुव्वया साह,
 जे तरंति अतरं वणिया वा ॥६॥
 समणा मु एगे वयमाणा,
 पाणवहं मिया अयाणन्ता ।
 मन्दा निरयं गच्छंति,
 बाला पावियाहिं दिट्ठीहिं ॥७॥
 न हु पाणवहं अणुजाणे,
 मुच्चज्ज कयाइ सव्वदुक्खाणं ।

एवारिएहिं अक्खायं,
 जेहिं इमो साहुधम्मो पन्नत्तो ॥८॥
 पाणे य नाइवाएज्जा,
 से समीइ त्ति बुच्चइ ताई ।
 तओ से पावयं कम्मं,
 निज्जाइ उदगं व थलाओ ॥९॥
 जगनिस्सिएहिं भूएहिं,
 तसनामेहिं थावरेहिं च ।
 नो तेसिमारमे दंडं,
 मणसा वयसा कायसा चेव ॥१०॥
 सुद्धेसणाओ नच्चाणं,
 तत्थ ठवेज्ज भिक्खू अण्णाणं ।
 जायाए घासमेसेज्जा,
 रसगिद्धे न सिया भिक्खाए ॥११॥
 पन्ताणि चेव सेवेज्जा,
 सीयपिंडं पुराणकुम्मासं ।
 अदु बुक्कसं पुलागं वा,
 जवणट्ठाए निसेवए मंथुं ॥१२॥
 जे लक्खणं च सुविणं च,
 अङ्गविज्जं च जे पउंजंति ।
 न हु ते समणा बुच्चंति,
 एवं आयरिएहिं अक्खायं ॥१३॥
 इह जीवियं अणियमेत्ता,
 पभट्ठा समाहिजोएहिं ।
 ते कामभोगरसगिद्धा,
 उववज्जंति आसुरे काए ॥१४॥

तत्तो वि य उच्चट्टिता,
 संसारं बहु अणुपरियडंति ।
 बहुकम्मलैवलित्ताणं,
 बोही होइ सुदुल्लहा तेसिं ॥१५॥
 कसिणांपि जो इमं लोयं,
 पडिपुण्णं दलेज्ज इक्कस्स ।
 तेणावि से न संतुस्से,
 इइ दुप्पूरण इमे आया ॥१६॥
 जहा लाहे तहा लोहा,
 लाहा लोहा पवड्ढइ ।
 दोमासकयं कज्जं,
 कोडीण वि न निट्ठियं ॥१७॥
 नो रक्खसीसु गिज्जेज्जा,
 गंडवच्छासु ऽणोगचित्तासु ।
 जाओ पुरिसं पलोभित्ता,
 खेळंति जहा व दासेहिं ॥१८॥
 नारीसु नोवगिज्जेज्जा,
 इत्थी विप्पजहेज्ज अणगारे ।
 धम्मं च पेसलं नच्चा,
 तत्थ ठवेज्ज भिक्खू अप्पाणां ॥१९॥
 इअ एस धम्मे अक्खाण,
 कविलेणं च विसुद्धपन्नेणं ।
 तरिहिंति जे उ काहिंति,
 तेहिं आराहिया दुवे लोगा ॥२०॥ त्ति वेमि॥
 ॥ काविलीयं अट्ठमं अज्झयणं समत्तं ॥

॥ अह नवमं नमिपच्चज्जा अज्झयणं ॥

चइऊण देवलोगाओ, उववओ माणुसंमि लोगंमि ।
 उवसन्तमोहणिज्जो, सरइ पोराणियं जाइं ॥१॥
 जाइं सरित्तु भयवं, सहसंबुद्धो अणुत्तरे धम्मे ।
 पुत्तं ठवित्तु रज्जे, अभिनिक्खमइ नमी राया ॥२॥
 से देवलोगसरिसे, अन्तेउरवरगओ वरे भोए ।
 भुंजित्तु नमी राया, बुद्धो भोगे परिच्चयइ ॥३॥
 मिहिलं सपुरजणवयं, बलमोरोहं च परियणं सव्वं ।
 चिच्चा अभिनिक्खन्तो एगन्तमहिड्ढीओ भयवं ॥४॥
 कोलाहलगसंभूयं, आसी मिहिलाए पव्वयन्तंमि ।
 तइया रायरिसिंमि, नमिमि अभिनिक्खमंतंमि ॥५॥
 अब्भुट्ठियं रायरिसिं, पव्वज्जाठमणमुत्तमं ।
 सक्को माहणरूवेण, इमं वयणमव्ववी ॥६॥
 किण्ण भो अज्ज मिहिलाए, कोलाहलगसंकुला ।
 मुव्वन्ति दारुणा सद्दा, पासाएसु गिहेसु य ॥७॥
 एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ ।
 तओ नमी रायरिसी, देविंदं इणमव्ववी ॥८॥
 मिहिलाए चेइए वच्छे, सीयच्छाए मणोरमे ।
 पत्तापुप्फफलोवेए, बहूणां बहुगुणे सया ॥९॥
 वाएण हीरमाणम्मि, चेइयम्मि मणोरमे ।
 दुहिया असरणा अत्ता, एए कंदंति भो ! खगा ॥१०॥
 एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ ।
 तओ नमिं रायरिसिं, देविंदो इणमव्ववी ॥११॥

एस अग्गी य वाऊ य, एयं डज्झइ मंदिरं ।
 भयवं अन्तेउरं तेरां, कीस रां नावपेक्खह ॥१२॥
 एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ ।
 तओ नमी रायरिसी, देविंदं इणमब्बवी ॥१३॥
 सुहं वसामो जीवामो, जेसि मो नत्थि किंचरां ।
 मिहिलाए डज्झमाणीए, न मे डज्झइ किंचरां ॥१४॥
 चत्तपुत्तकलत्तस्स, निव्वावारस्स भिक्खुणो ।
 पियं न विज्जए किंचि, अप्पियं पि न विज्जए ॥१५॥
 बहं खु मुणिणो भदं, अणगारस्स भिक्खुणो ।
 सव्वओ विप्पमुक्कस्स, एगन्तमणुपस्सओ ॥१६॥
 एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ ।
 तओ नमिं रायरिसिं, देविंदो इणमब्बवी ॥१७॥
 पागारं कारइत्तारां, गोपुरट्ठालगाणि य ।
 उस्सूलगसयग्धीओ, तओ गच्छसि खत्तिया ! ॥१८॥
 एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ ।
 तओ नमी रायरिसी, देविंदं इणमब्बवी ॥१९॥
 सद्धं नगरं किच्चा, तवसंवरमग्गलं ।
 खंत्ति निउणपागारं, तिगुत्तं दुप्पधसयं ॥२०॥
 धणुं परक्कमं किच्चा, जीवं च हरियं सया ।
 धिइं च केयरां किच्चा, सच्चेण पलिमन्थए ॥२१॥
 तवनारायजुत्तेरां, भित्थूणां कम्मकंचुयं ।
 मुणी विगयसंगामो, भवाओ परिमुच्चए ॥२२॥
 एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ ।
 तओ नमिं रायरिसिं, देविन्दो इणमब्बवी ॥२३॥
 पासाए कारइत्तारां, वद्धमाणिहाणि य ।
 बालग्गपोइयाओ य, तओ गच्छसि खत्तिया ! ॥२४॥

एयमट्टं निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ ।
 तओ नमी रायरिसी, देविन्दं इणमब्बवी ॥२५॥
 संसयं खलु सो कुणइ, जो मग्गे कुणइ घरं ।
 जत्थेव गन्तुमिच्छेज्जा, नत्थ कुव्वेज्ज सासयं ॥२६॥
 एयमट्टं निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ ।
 तओ नमिं रायरिसिं, देविन्दो इणमब्बवी ॥२७॥
 आमोसे लोमहारे य, गंठिमेण य तक्करे ।
 नगरस्स खेमं काऊणां, तओ गच्छसि खत्तिया ! ॥२८॥
 एयमट्टं निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ ।
 तओ नमी रायरिसी, देविन्दं इणमब्बवी ॥२९॥
 असइं तु मणुस्सेहिं, मिच्छा दंडो पउंजए ।
 अकारिणोऽत्थ बज्झंति, मुच्चए कारओ जणो ॥३०॥
 एयमट्टं निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ ।
 तओ नमिं रायरिसिं, देविन्दो इणमब्बवी ॥३१॥
 जे केइ पत्थिवा तुज्झं, नानमंति नराहिवा !
 वसे ते ठावइत्ताणां, तओ गच्छसि खत्तिया ! ॥३२॥
 एयमट्टं निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ ।
 तओ नमी रायरिसी देविंदं इणमब्बवी ॥३३॥
 जो सहस्सं सहस्साणां, संगामे दुज्जए जिणे ।
 एगं जिणेज्ज अप्पाणां, एस से परमो जओ ॥३४॥
 अप्पाणमेव जुज्झाहि, किं ते जुज्झेण बज्झओ ।
 अप्पणा चेव अप्पाणां, जइत्ता सुहमेहए ॥३५॥
 पंचिदियाणि कोहं, माणां मायं तहेव लोहं च ।
 दुज्जयं चेव अप्पाणां, सव्वं अप्पे जिणं जियं ॥३६॥
 एयमट्टं निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ ।
 तओ नमिं रायरिसिं, देविन्दो इणमब्बवी ॥३७॥

जइत्ता विउले जन्ने, भोइत्ता समणमाहणे ।
 दच्चा भोच्चा य जिट्ठा य, तओ गच्छसि खत्तिया ! ॥३८॥
 एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ ।
 तओ नमी रायरिसी, देविंदं इणमब्बवी ॥३९॥
 जो सहस्सं सहस्साणां, मासे मासे गवं दण ।
 तस्स वि संजमो सेओ, अदिन्तस्स वि किंचणां ॥४०॥
 एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ ।
 तओ नमिं रायरिसिं, देविन्दो इणमब्बवी ॥४१॥
 घोरासमं चइत्ताणां, अन्नं पत्थेसि आसमं ।
 इहेव पोसहरओ, भवाहि मणुयाहिवा ! ॥४२॥
 एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ ।
 तओ नमी रायरिसी, देविन्दं इणमब्बवी ॥४३॥
 मासे मासे तु जो वालो, कुसग्गेण तु भुंजण ।
 न सो सुअक्खायधम्मस्स, कलं अग्घइ सोलसिं ॥४४॥
 एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ ।
 तओ नमिं रायरिसिं, देविन्दो इणमब्बवी ॥४५॥
 हिरणां सुवणां मणिमुत्तं कंसं दूस्सं च वाहणां ।
 कोसं वट्ठावइत्ताणां, तओ गच्छसि खत्तिया ! ॥४६॥
 एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ ।
 तओ नमी रायरिसी, देविंदं इणमब्बवी ॥४७॥

सुवणरुप्पस्स उ पव्वया भवे,

सिया हु केलाससमा असंखया ।

नरस्स लुक्खस्स न तेहि किंचि,

इच्छा हु आगाससमा अणांतिया ॥४८॥

पुढवी साली जवा चेव, हिरणां पसुभिस्सह ।

पडिपुणां नालमेगस्स, इइ विज्जा तवं चरे ॥४९॥

एयमटुं निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ ।
 तओ नमिं रायरिसिं, देविन्दो इणमब्बवी ॥५०॥
 अच्छेरयमब्भुयए, भोए चयसि पत्थिवा ।
 असन्ते कामे पत्थेसि, संकप्पेण विहन्नसि ॥५१॥
 एयमटुं निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ ।
 तओ नमी रायरिसी, देविंद इणमब्बवी ॥५२॥
 सल्लं कामा विसं कामा, कामा आसीविसोवमा ।
 कामे पत्थेमाणा, अकामा जंति दोग्गइं ॥५३॥
 अहे वयंति कोहेणां. माणेणां अहमा गई ।
 माया गइ पडिग्घाओ, लोहाओ दुहओ भयं ॥५४॥
 अवउज्झिऊण माहरूवं, विउव्विऊण इन्दत्तं ।
 वन्दइ अभित्थुणन्तो, इमाहि महुराहिं वग्गूहिं ॥५५॥
 अहो ते निज्जिओ कोहो, अहो माणो पराजिओ ।
 अहो निरक्किया माया, अहो लोहे वसीकओ ॥५६॥
 अहो ते अज्जवं साहु, अहो ते साहु महवं ।
 अहो ते उत्तमा खन्ती, अहो ते मुत्ति उत्तमा ॥५७॥
 इहं सि उत्तमो भन्ते, पेच्चा हेहिसि उत्तमो ।
 लोगुसमुत्तमं ठाणां, सिद्धिं गच्छसि नीरओ ॥५८॥
 पव्वं अभित्थुणांतो, रायरिसिं उत्तमाए सद्धाए ।
 पयाहिणां करेन्तो, पुणो पुणो वन्दए सक्को ॥५९॥
 तो वंदिऊण पाए, चक्कंकुसलक्खणे मुणिघरस्स ।
 आगासेणुणइओ, ललियचवलकुंडलतिरीडी ॥६०॥
 नमी नमेइ अप्पाणां, सक्खं सक्केण चोइओ ।
 चइऊण गेहं च वेदेही, सामणै पज्जुवट्ठिओ ॥६१॥

एवं करेंति संबुद्धा, पण्डिया पवियक्खणा ।
विणियट्ठन्ति भोगेसु, जहा से नमी रायरिसि ॥६२॥ त्ति वेमि

॥ नमिपव्वज्जा समत्ता ॥

॥ अह दुमपत्तय दसम अज्झयण ॥

दुमपत्तए पंडुरए जहा,
निवडइ राइगणाण अच्चए ।
एवं मणुयाण जीवियं,
समयं गोयम ! मा पमायए ॥१॥
कुसग्गे जह ओसविन्दुए,
थोवं चिट्ठइ लम्बमाणए ।
एवं मणुयाण जीवियं,
समयं गोयम ! मा पमायए ॥२॥
इइ इत्तरियम्मि आउए,
जीवियए बहुपच्चवायए ।
विट्ठुणाहि रयं पुरे कडं,
समयं गोयम ! मा पमायए ॥३॥
दुल्लहे खलु माणुसे भवे,
चिरकालेण वि सव्वपाणिणं ।
गाढा य विवाग कम्मुणो,
समयं गोयम ! मा पमायए ॥४॥
पुढविक्कायमइगओ,
उक्कोत्तं जीवो उ संवसे ।
कालं.....संखाईयं
समयं गोयम ! मा पमायए ॥५॥

आउक्कायमइगओ,
 उक्कोसं जीवो उ संवसे ।
 कालं संखाईयं,
 समयं गोयम ! मा पमायए ॥६॥
 तेउक्कायमइगओ,
 उक्कोसं जीवो उ संवसे ।
 कालं संखाईयं,
 समयं गोयम ! मा पमायए ॥७॥
 वाउक्कायमइगओ,
 उक्कोसं जीवो उ संवसे ।
 कालं संखाईयं,
 समयं गोयम ! मा पमायए ॥८॥
 वणस्सइक्कायमइगओ,
 उक्कोसं जीवो उ संवसे ।
 कालमएणन्तदुरन्तयं,
 समयं गोयम ! मा पमायए ॥९॥
 वेइंदियक्कायमइगओ,
 उक्कोसं जीवो उ संवसे ।
 कालं संखिज्जसन्नियं,
 समयं गोयम ! मा पमायए ॥१०॥
 तेइंदियक्कायमइगओ,
 उक्कोसं जीवो उ संवसे ।
 कालं संखिज्जसन्नियं,
 समयं गोयम ! मा पमायए ॥११॥
 चउरिंदियक्कायमइगओ,
 उक्कोसं जीवो उ संवसे ।

कालं संखिज्जसन्नियं,

समयं गोयम ! मा पमायए ॥१२॥

पंचिंदियकायमइगओ,

उक्कोसं जीवो उ संबसे ।

सत्तट्ठभवगहणे,

समयं गोयम ! मा पमायए ॥१३॥

देवे नेरइए य अइगओ,

उक्कोसं जीवो उ संबसे ।

इक्केक्कभवगहणे,

समयं गोयम ! मा पमायए ॥१४॥

एवं भवसंसारे,

संसरई सुहासुहेहि कम्मेहिं ।

जीवो पमायबहुलो,

समयं गोयम ! मा पमायए ॥१५॥

लद्धूण वि माणुसत्तणं,

आरिअत्तं पुणरावि दुल्लहं ।

बहवे दसुया मिलक्खुया,

समयं गोयम ! मा पमायए ॥१६॥

लद्धूण वि आरियत्तणं,

अहीणपंचेंदियया हु दुल्लहा ।

विगलिंदियया हु दीसई,

समयं गोयम ! मा पमायए ॥१७॥

अहीणपंचेंदियत्तं पि से लहे,

उत्तमधम्मसुई हु दुल्लहा ।

कुत्तिथिनिसेवए जणे,

समयं गोयम ! मा पमायए ॥१८॥

लद्धूण वि उत्तमं सुहं,
 सदहणा पुणरावि दुल्लहा ।
 मिच्छत्तनिसेवण जणे,
 समयं गोयम ! मा पमायण ॥१६॥
 धम्मं पि हु सदहन्तया,
 दुल्लहया काणण फासया ।
 इह कामगुणेहि मुच्छिक्खा,
 समयं गोयम ! मा पमायण ॥१७॥
 परिजूरइ ते सरीरयं,
 केसा पण्डुरया हवन्ति ते ।
 से सोयबले य हायई,
 समयं गोयम ! मा पमायण ॥१८॥
 परिजूरइ ते सरीरयं,
 केसा पण्डुरया हवन्ति ते ।
 से चक्खुबले य हायई,
 समयं गोयम ! मा पमायण ॥१९॥
 परिजूरइ ते सरीरयं,
 केसा पण्डुरया हवन्ति ते ।
 से घाणबले य हायई,
 समयं गोयम ! मा पमायण ॥२०॥
 परिजूरइ ते सरीरयं,
 केसा पण्डुरया हवन्ति ते ।
 से जिब्भबले य हायई,
 समयं गोयम ! मा पमायण ॥२१॥
 परिजूरइ ते सरीरयं,
 केसा पण्डुरया हवन्ति ते ।

से फासबले य हायई,

समयं गोयम ! मा पमायए ॥२५॥

परिजूरइ ते सरीरयं,

केसा परडुरया हवंति ते ।

से सव्वबले य हायई,

समयं गोयम ! मा पमायए ॥२६॥

अरई गएडं विसूइया,

आयंका विविहा फुसंति ते ।

विहडइ विद्धंसइ ते सरीरयं,

समयं गोयम ! मा पमायए ॥२७॥

वोच्छिन्द सिलोहमण्णो,

कुमुयं सारइयं व पाणियं ।

से सव्वसिलोहवज्जिए,

समयं गोयम ! मा पमायए ॥२८॥

चिच्चाए धरां च भारियं,

पव्वइओ हि सि अणगारियं ।

मा वन्तं पुणो वि आइए,

समयं गोयम ! मा पमायए ॥२९॥

अवउज्झिय मित्तबन्धवं,

विउलं चेव धणोहसंचयं ।

मा तं बिइयं गवेसए,

समयं गोयम ! मा पमायए ॥३०॥

न हु जिणे अज्ज दिस्सई,

बहुमए दिस्सइ मग्गदेसिए ।

संपइ नेयाउए पहे,

समयं गोयम ! मा पमायए ॥३१॥

अवसोहिय कण्टगापहं,
 ओङ्गणो सि पहं महालयं +
 गच्छसि मग्गं विसोहिया,
 समयं गोयम ! मा पमायण ॥३२॥
 अबले जहं भारवाहण,
 मा मग्गे विसमेऽवगाहिया ।
 पच्छा पच्छाणुतावणं,
 समयं गोयम ! मा पमायण ॥३३॥
 तिरणो हु सि अण्णवं महं,
 किं पुणं चिट्ठसि तीरमागओ ।
 अभितुरं पारं गमित्तणं,
 समयं गोयम ! मा पमायण ॥३४॥
 अकलेवरसेणिं उस्सिया,
 सिद्धिं गोयम ! लोयं गच्छसि !
 खेमं च सिवं अणुत्तरं,
 समयं गोयम ! मा पमायण ॥३५॥
 बुद्धे परिनिव्वुडे चरे,
 गामगणं नगरे च संजणं ।
 संतिमग्गं च वूहणं,
 समयं गोयम ! मा पमायण ॥३६॥
 बुद्धस्स निसम्म भासियं,
 सुकहियमट्ठपओवसोहियं ।
 रागं दोसं च छिन्दिया,
 सिद्धिगइं गणं गोयमे ॥३७॥ त्ति वेमि ।
 ॥ इअ दुमपत्तयं समत्तं ॥१०॥

॥ अह बहुस्सुपपुज्जं णाम एगारसं अज्झयणं ॥

संजोगा विप्पमुक्कस्स, अणगारस्स भिक्खुरो ।
 आयारं पाउकरिस्सामि, आणुपुठिवं सुणेह मे ॥१॥
 जे यावि होइ निव्विजे, थद्धे लुद्धे अणिग्गहे ।
 अभिक्खणां उल्लवइ, अविणीए अबहुस्सए ॥२॥
 अह पंचहिं ठाणेहिं, जेहिं सिक्खा न लब्भइ ।
 थम्भा कोहा पमाणां, रोगेणालस्सएण य ॥३॥
 अह अट्ठहिं ठाणेहिं, सिक्खासीलि त्ति वुच्चइ ।
 अहस्सिरे सया दन्ते, न य मम्ममुदाहरे ॥४॥
 नासीले न विसीले, न सिया अइलोलुए ।
 अकोहणे सच्चरण, सिक्खासीलि त्ति वुच्चइ ॥५॥
 अह चोदसहिं ठाणेहिं, वट्ठमाणे उ संजए ।
 अविणीए वुच्चई सो उ, निव्वाणां च न गच्छई ॥६॥
 अभिक्खणां कोही हवह, पवन्धं च पकुव्वई ।
 मेत्तिज्जमाणो वमइ, सुयं लद्धं मज्जई ॥७॥
 अवि पावपरिक्खेयी, अवि मित्तेसु कुप्पइ ।
 सुप्पियस्सावि मित्तस्स, रहे भासइ पावयं ॥८॥
 पइरणवाई दुहिले, थद्धे लुद्धे अणिग्गहे ।
 असंविभागी अवियत्ते, अविणीए त्ति वुच्चइ ॥९॥
 अह पन्नरसहिं ठाणेहिं, सुविणीए त्ति वुच्चइ ।
 नीयावत्ती अचवले, अमाई अकुऊहले ॥१०॥
 अप्पं च अहिक्खवइ, पवन्धं च न कुव्वइ ।
 मेत्तिज्जमाणो भयइ, सुयं लद्धं न मज्जइ ॥११॥

न य पावपरिक्खेवी, न य मित्तेसु कुप्पइ ।
 अप्पियस्सावि मित्तस्स, रहे कल्लाण भासइ ॥१२॥
 कलहडमरवज्जिए बुद्धे अभिजाइगे ।
 हिरिमं पडिसंलीणे, सुविणीए त्ति बुच्चइ ॥१३॥
 वसे गुरुकुले निब्बं, जोगवं उवहाणवं ।
 पियंकरे पियंवाई, से सिक्खं लद्धुमरिहइ ॥१४॥
 जहा संखम्मि पयं, निहियं दुहओ वि विरायइ ।
 एवं बहुस्सुए भिक्खू, धम्मो किन्ती तहा सुयं ॥१५॥
 जहा से कम्बोयाणां, आइरणे कन्थए सिया ।
 आसे जवेण पवरे, एवं हवइ बहुस्सुए ॥१६॥
 जहाइरणसमारूढे, सूरे दढपरक्कमे ।
 उभओ नन्दिघोसेणां, एवं हवइ बहुस्सुए ॥१७॥
 जहा करेणुपरिकिण्णे, कुंजरे सट्ठिहायणे ।
 बलवंते अप्पडिहए, एवं हवइ बहुस्सुए ॥१८॥
 जहा से तिक्खसिंगे, जायखन्धे विरायइ ।
 वसहे जूहाहिवई, एवं हवइ बहुस्सुए ॥१९॥
 जहा से तिक्खदाढे, उदग्गे दुप्पहंसए ।
 सीहे मियाण पवरे, एवं हवइ बहुस्सुए ॥२०॥
 जहा से वासुदेवे, संखचक्कगयाधरे ।
 अप्पडिहयबले जोहे, एवं हवइ बहुस्सुए ॥२१॥
 जहा से चाउरन्ते, चक्कवट्ठीमहिद्धिढए ।
 चोइसरयणाहिवई, एवं हवइ बहुस्सुए ॥२२॥
 जहा से सहस्सक्खे, वज्जपाणी पुरन्दरे ।
 सक्के देवाहिवई, एवं हवइ बहुस्सुए ॥२३॥
 जहा से तिमिरविद्धंसे, उच्चिट्ठन्ते दिवायरे ।
 जलन्ते इव तेएण, एवं हवइ बहुस्सुए ॥२४॥

जहा से उडुवई चन्दे, नक्खत्तपरिवारिए ।
 पडिपुण्णे पुण्णमासिए, एवं हवइ बहुस्सुए ॥२५॥
 जहा से समाइयाणां, कोट्टागारे सुरक्खिए ।
 नाणाधन्नपडिपुण्णे, एवं हवइ बहुस्सुए ॥२६॥
 जहा सा दुमाण पवरा, जेवू नाय सुदेसणा ।
 अणादियस्स देवस्स, एवं हवइ बहुस्सुए ॥२७॥
 जहा सा नईण पवरा, सलिला सागरंगमा ।
 सीया नीलवन्तपवहा, एवं हवइ बहुस्सुए ॥२८॥
 जहा से नगाण पवरे, सुमहं मन्दरे गिरी ।
 नाणोसहिपज्जलिए, एवं हवइ बहुस्सुए ॥२९॥
 जहा से सयंभुरमणे, उदही अक्खओदए ।
 नाणाखणपडिपुण्णे, एवं हवइ बहुस्सुए ॥३०॥

समुद्गंभीरसमा दुरासया,

अचक्रिया केणइ दुप्पहंसया ।

सुयस्स पुण्णा विउलस्स ताइणे,

खवित्तु कम्मं गइमुत्तमं गया ॥३१॥

तम्हा सुयमहिट्टिज्जा, उत्तमट्ठगवेसए ।

जेणप्पाणां परं चेव, सिद्धिं संपाउणेज्जासि ॥३२॥ त्ति केमि

॥ बहुस्सुयपुज्जं समत्तं ॥११॥

॥ अह हरिएसिज्जं वारहं अज्झयणं ॥

सोवागकुलसंभूओ, गुणुत्तरधरो मुणी ।

हरिएसबलो नाम, आसी भिक्खू जिइन्दिओ ॥१॥

इरिएसणभासाए, उच्चारसमिईसु य ।

जओ ज्ञायाणनिकस्सेवे, अजओ सुसमाहिओ ॥२॥

मणगुत्तो, वयगुत्तो, कायगुत्तो जिह्मिन्द्रो ।
 भिक्खट्ठा बम्भइज्जम्मि, जन्नवाडमुवट्ठिओ ॥३॥
 तं पासिऊणं पज्जन्तं, तवेण परिसोसियं ।
 पन्तोवहिउवगराणं, उवहसन्ति अणारिया ॥४॥
 जाइमयपडिथद्धा, हिंसगा अजिह्मिन्दिया ।
 अबम्भचारिणो बाला, इमं वयणमब्बवी ॥५॥

कयरे आगच्छइ दित्तरूवे ?

काले विगराले फोक्कनासे ।

ओमचेलण पंमुपिसायभूए,

संकरदूसं परिहरिय कण्ठे ॥६॥

कयरे तुमं इय अदंसणिज्जे ?

काए व आता इहमागओसि ?

ओमचेलया पंमुपिसाभूया,

गच्छ क्खलाहि किमिहं ठिओ सि ॥७॥

जक्खे तहिं तिन्दुरक्खवासी,

अणुकम्पओ तस्स महामुणिस्स ।

पच्छायइत्ता नियगं सरीरं ,

इमाइं वयणाइमुदाहरित्था ॥८॥

समणो अहं संजओ, बम्भयारी,

विरओ धणपयणपरिग्गहाओ ।

परपवित्तस्स उ भिक्खकाले,

अन्नस्स अट्ठा इहमागओमि ॥९॥

वियरिज्जइ खज्जइ भुज्जइ य,

अन्नं पभूयं भवयाणमेयं ।

जाणाहि मे जायणजीविणु त्ति,

सेसावसेसं लहउ तवस्सी ॥१०॥

उवक्खडं भोयण माहणां,
 अत्तट्ठियं सिद्धमिहेगपक्खं ।
 न ऊ वयं एरिसमन्नपाणां,
 दाहामु तुज्झं किमिहं टिओ सि ॥११॥
 थलेसु वीयाइ ववन्ति कासगा,
 तहेव निन्नेसु य आससाए ।
 एयाए सद्धाए दलाह मज्झं,
 आराहए पुण्णमिणां खु खित्तं ॥१२॥
 खेत्ताणि अम्हं विइयाणि लोए,
 जहिं पक्किण्णा विरुहन्ति पुण्णा ।
 जे माहणा जाइविज्जोववेया,
 ताइं तु खित्ताइ सुपेसलाइं ॥१३॥
 कोहो य माणो य वहो य जेसिं,
 मोसं अदत्तं च परिग्गहं च ।
 ते माहणा जाइविज्जाविहीणा,
 ताइं तु खित्ताइ सुपावयाइं ॥१४॥
 तुम्मेत्थ भो भारधरा गिराणां,
 अट्ठं न जाणेह अहिज्ज वेए ।
 उच्चावयाइं मुणिणो चरन्ति,
 ताइं तु खेत्ताइ सुपेसलाइं ॥१५॥
 अज्झावयाणां पडिकूलभासी,
 पभाससे किं नु सगासि अम्हं ।
 अवि एयं विणस्सउ अन्नपाणां,
 न य एणं दाहामु तुमं नियण्ठा ! ॥१६॥
 समिईहि मज्झं सुसमाहियस्स,
 गुत्तीहि गुत्तस्स जिइन्दियस्स ।

जइ मे न दाहित्थ अहेसणिज्जं,
 किमज्ज जन्नाण लहित्थ लाहं ॥१७॥
 के इत्थ खत्ता उवजोइया वा,
 अज्झावया वा सह खण्डिएहिं ।
 एयं खु दण्डेण फलएण हन्ता,
 कएठम्मि घेत्तूण खलेज्ज जो एं ॥१८॥
 अज्झावयाणं वयणं सुणेत्ता,
 उद्धाइया तत्थ बहू कुमारा ।
 दण्डेहि वित्तेहि कसेहि चेव,
 समागया तं इस्सि तालयन्ति ॥१९॥
 रत्तो तद्धिं कोसलियस्य धूया,
 भइत्ति नामेण अणिन्दियंगी ।
 तं पासिया संजयहम्ममाणां,
 कुद्धे कुमारे परिनिव्ववेइ ॥२०॥
 देवाभिओगेण निओइएणां,
 दिन्ना मु रत्ता मणसा न भाया ।
 नरिन्ददेविन्दभिवन्दिएणां,
 जेणम्मि वंता इसिणा स एसो ॥२१॥
 एसो हु सो उग्गतवो महप्पा,
 जिइन्दिओ संजओ बम्भयारी ।
 जो मे तया नेच्छइ दिज्जमाणिं,
 पिउणा सयं कोसलिएण रत्ता ॥२२॥
 महाजसो एस महाणुभागो,
 घोरव्वओ घोरपरक्कमो य ।

मा एयं हीलेह अहीलणिज्जं,
 मा सव्वे तेएण भे निदहेज्जा ॥२३॥
 एयाइं तीसे वयणाइ सोच्चा,
 पत्तीइ भद्दाइ सुभासियाइं ।
 इसिस्स वेयावडियट्टयाप,
 जक्खा कुमारे विणिवारयन्ति ॥२४॥
 ते घोररूवा ठिय अन्तलिकखे,
 असुरा तहिं तं जरां तालयन्ति ।
 ते भिन्नदेहे रुहिरं वमन्ते,
 पासिच्चु भद्दा इणमाहु भुज्जो ॥२५॥
 गिरिं नहेहिं खणह,
 अयं दंतेहिं खायह ।
 जायतेयं पाएहि हणह,
 जे भिक्खुं अवमन्नह ॥२६॥
 आसीविसो उगगतवो महेसी,
 घोरवओ घोरपरक्कमो य ।
 अगणिं व पक्खन्द पयंगसेणा,
 जे भिक्खुयं भत्तकाले वहेह ॥२७॥
 सीसेण एयं सराणं उवेह,
 समागया सव्वजणेण तुब्भे ।
 जइ इच्छह जीवियं वा धरां वा,
 लोगंपि एसो कुविओ डहेज्जा ॥२८॥
 अवहेडियपिट्टिसउत्तमंगे,
 पसारिया बाहु अकम्मचेट्टे ।
 निब्भेरियच्छे रुहिरं वमन्ते,
 उद्धंमुहे निग्गयजीहनेस्से ॥२९॥

ते पासिया खण्डियकटुभूष,
 विमणो विसरणो अह माहणो सो ।
 इसिं पसाणइ सभारियाओ,
 हीलं च निन्दं च खमाह भन्ते ! ॥३०॥
 बालेहि मूढेहि अयाणएहिं,
 जं हीलिया तस्स खमाह भन्ते !
 महप्पसाया इसिणो हवन्ति,
 न हु मुणी कोवपरा हवन्ति ॥३१॥
 पुब्बि च इरिंह च अणागयं च,
 मणप्पओसो न मे अत्थि कोइ ।
 जक्खा हु वेयावडियं करेन्ति,
 तम्हा हु एण निहया कुमारा ॥३२॥
 अत्थं च धम्मं च वियाणमाणा,
 तुब्भं न वि कुप्पह भूइपप्पा ।
 तुब्भं तु पाए सरणं उवेमो,
 समागया सब्वजणेण अम्हे ॥३३॥
 अब्बेमु ते महाभाग,
 न ते किंचि न अच्चिमो ।
 भुंजाहि सालिमं कूरं,
 नाणा-वंजण-संजुयं ॥३४॥
 इमं च मे अत्थि पभूयमन्नं,
 तं भुजसु अम्ह अणुग्गहट्ठा ।
 वाढं ति पडिच्छइ भत्तपाणां,
 मासस्स ऊ पारणए महप्पा ॥३५॥
 तहियं गन्धोदयपुप्फवासं,
 दिव्वा तहिं वसुहारा य वुट्ठा ।

पहयाओ दुन्दुहीओ सुरेहिं,
 आगासे अहो दाणं च घुट्टं ॥३६॥
 सक्खं खु दीसइ तवोविसेसो,
 न दीसइ जाइविसेस कोई ।
 सोवागपुत्तं हरिणससाहुं,
 जस्सेगिसा इड्ढिढ महाणुभागा ॥३७॥
 किं माहणा जोइसमारभन्ता,
 उदण सोहिं बहिया विमग्गह ।
 जं मग्गहा बाहिरियं विसोहिं,
 न ते सुदिट्ठं कुसला वयन्ति ॥३८॥
 कुसं च जूवं तणकट्टमग्गिं,
 सायं च पायं उदगं फुसन्ता ।
 पाणाइ भूयाइ विहेडंयन्ता,
 भुज्जो वि मन्दा पगरेह पावं ॥३९॥
 कहं चरे भिक्खु ! वयं जयामो,
 पावाइ कम्माइ पुणोल्लयामो ।
 अक्खाहि णे संजय ! जक्खपूइया,
 कहं सुजट्ठं कुसला वयन्ति ॥४०॥
 छज्जीवकाए असमारभन्ता,
 मोसं अदत्तं च असेवमाणा ।
 परिग्गहं इत्थिओ माणमायं,
 एयं परिन्नाय चरंति दंता ॥४१॥
 सुसंबुडा पंचहिं संवरेहि,
 इह जीवियं अणवकंखमाणा ।
 वोसट्ठकाया सुइचत्तदेहा,
 महाजयं जयइ जन्नसिट्ठं ॥४२॥

के ते जोई के व ते जोइठाणो ?

का ते सुया किंच ते कारिसंगं ?

एहा य ते कयरा सन्ति भिक्खु ?

कयरेण होमेण हुणासि जोइं ? ॥४३॥

तवो जोई जीवो जोइठाणं,

जोगा सुया सरीरं कारिसंगं ।

कम्मेहा संजमजोगसन्ती,

होमं हुणामि इसिणं पसत्थं ॥४४॥

के ते हरए के य ते सन्तितित्थे ?

कहिं सिणाओ व रयं जहासि ?

आइक्ख रो संजय ! जक्खपूइया,

इच्छामो नाउं भवओ सगासे ॥४५॥

धम्मे हरए बम्मे सन्तितित्थे,

अणाविले अत्तपसन्नलेसे ।

जहिं सिणाओ विमलो विसुद्धो,

सुसीइभूओ पजहामि दोसं ॥४६॥

एयं सिणाणं कुसलेहि दिट्ठं,

महासिणाणं इसिणं पसत्थं ।

जहि सिणाया विमला विसुद्धा,

महारिती उत्तमं ठाणं पत्ते ॥४७॥ त्ति वेमि

॥ हरिएसिज्जं समत्तं ॥१२॥

॥ अह चित्तसम्भूइज्जं तेरहमं अज्झयणं ॥

जाईपराजिओ खलु, कासि नियाणं तु हत्थिणपुरम्मि ।

बुलणीए बम्भदत्तो, उववन्नो पउमगुम्माओ ॥१॥

कम्पिल्ले सम्भूओ, चित्तो पुण जाओ पुरिमतालम्मि ।
 सेट्ठिकुलम्मि विसाले, धम्मं सोऊण पव्वइओ ॥२॥
 कम्पिल्लम्मि य नयरे, समागया दो वि चित्तसम्भूया ।
 सुहदुक्खफलविवागं, कहेन्ति ते एकमेकस्स ॥३॥
 चक्रवट्ठी महिड्ढीओ, बम्भदत्तो महायसो ।
 भायरं बहुमाणेणं, इमं वयणमवव्वी ॥४॥
 आसीमु भायरा दोवि, अन्नमन्नवसाणुगा ।
 अन्नमन्नमणुरत्ता, अन्नमन्नहिएसिणो ॥५॥
 दासा दसणे आसी, मिया कालिंजरे नगे ।
 हंसा मयंगतीराए, सोवागा कासिभूमिए ॥६॥
 देवा य देवलोगम्मि, आसि अम्हे महिड्ढिया ।
 इमा नो छट्ठिया जाई, अन्नमन्नेण जा विणा ॥७॥
 कम्मा नियाणपयडा, तुमे राय ! विचिन्तिया ।
 तेसिं फलविवागेण, विप्पओगमुवागया ॥८॥
 सच्चसोयप्पगडा, कम्मा मए पुरा कडा ।
 ते अज्ज परिभुंजामो, किं नु चित्तेवि से तहा ? ॥९॥

सव्वं सुचिएणं सफलं नराणं,
 कडाण कम्माण न मोक्ख अत्थि ।
 अत्थेहि कामेहि य उत्तमेहिं,
 आया ममं पुणणफलोववेण ॥१०॥
 जाणाहि संभूय ! महाणुभागं,
 महिड्ढियं पुणणफलोववेयं ।
 चित्तं पि जाणाहि तहेव रायं,
 इड्ढी जुई तस्स विय णभूया ॥११॥
 महत्थरूवा वयणप्पभूया,
 गाहाणुगीया नरसंघमज्जे ।

जं भिक्खुणो सीलगुणोववेया,
 इहं जयंते समणो मिजाओ ॥१२॥
 उच्चोयए महु कक्के य वम्मे,
 पवेइया आवसहा य रम्मा ।
 इमं गिहं चित्ताधणप्पभूयं,
 पसाहि पंचालगुणोववेयं ॥१३॥
 नट्टेहि गीएहि य वाइएहिं,
 नारीजणाहिं परिवारयन्तो ।
 भुंजाहि भोगाइ इमाइ भिक्खू !
 मम रोयई पव्वज्जा हु दुक्खं ॥१४॥
 तं पुव्वनेहेण कयाणुरागं,
 नराहिवं कामगुणेषु गिच्छं ।
 धम्मस्सिओ तस्स हियाणुपेदी,
 चित्तो इमं वयणमुदाहरित्था ॥१५॥
 सव्वं विलवियं गीयं,
 सव्वं नट्टं विडम्भियं ।
 सव्वे आभरणा भारा,
 सव्वे कामा दुहावहा ॥१६॥
 बालाभिरामेषु दुहावहेसु,
 न तं सुहं कामगुणेषु रायं !
 विरत्तकामाणं तवोधणाणं,
 जं भिक्खुणं सीलगुणे रयाणं ॥१७॥
 नरिंद ! जाई अहमा नराणं,
 सोवागजाई दुहओ गयाणं ।
 जहिं वयं सव्वजणस्स वेस्सा,
 वसीय सोवागनिवेसणेषु ॥१८॥

तीसे य जाईइ उ पावियाए,
 बुच्छामु सोवागनिवेसणेसु ।
 सबस्स लोगस्स दुगंछणिज्जा,
 इहं तु कम्माइ पुरे कडाइ ॥१९॥
 सो दाणिसिं राय ! महाणुभागो,
 महिद्धिओ पुरणफलोववेओ ।
 चइत्तु भोगाइ असासयाइ,
 आदाणहेउं अभिणिक्खमाहि ॥२०॥
 इह जीविए राय ! असासयम्मि,
 धणियं तु पुरणाइ अकुव्वमाणो ।
 से सोयइ मच्चुमुहोवणीए,
 धम्मं अकाऊण परंसि लोए ॥२१॥
 जहेह सीहो व मियं गहाय,
 मच्चू नरं नेइ हु अन्तकाले ।
 न तस्स माया व पिया व भाया,
 कालम्मि तम्मंसहरा भवन्ति ॥२२॥
 न तस्स दुक्खं विभयन्ति नाइओ,
 न मित्तवग्गा न सुया न बंधवा ।
 एको सयं पच्चणुहोइ दुक्खं,
 कत्तारमेवं अणुजाइ कम्मं ॥२३॥
 चिच्चा दुपयं च चउप्पयं च,
 खेत्तां गिहं धणधन्नं च सव्वं ।
 सकम्मबीओ अवसो पयाइ,
 परं भवं सुंदरपावगं वा ॥२४॥
 तं एकगं तुच्छसरीरगं से,
 चिईययं दहिय उ पावणेणं ।

भज्जा य पुत्तावि य नायओ य,
 दायारमन्नं अणुसंकमन्ति ॥२५॥
 उवणिज्जई जीवियमप्यमायं,
 वयणां जरा हरइ नरस्स रायं !
 पंचालराया ! वयणां सुणाहि,
 मा कासि कम्माइ महालयाइ ॥२६॥
 अहं पि जाणामि जहेह साहू,
 जं मे तुमं साहसि वक्कमेयं ।
 भोगा इमे संगकरा हवन्ति,
 जे दुज्जया अज्जो अम्हारिसेहिं ॥२७॥
 हत्थिणपुरम्मि चित्ता,
 ददट्ठणां नरवइं महिद्धियं ।
 कामभोगेसु गिद्धेणां,
 नियाणमसुहं कडं ॥२८॥
 तस्स मे अपडिक्कन्तस्स,
 इमं एयारिसं फलं ।
 जाणमाणो वि जं भम्मं,
 कामभोगेसु मुच्छिओ ॥२९॥
 नागो जहा पंकजलावसन्नो,
 दट्ठुं थलं नाभिसमेइ तीरं ।
 एवं वयं कामगुणेसु गिद्धा,
 न भिक्खुणो मग्गमणुव्वयामो ॥३०॥
 अच्चेइ कालो तूरन्ति राइओ,
 न यावि भोगा पुरिसाण निच्चा ।
 उविच्च भोगा पुरिसं चयन्ति,
 दुमं जहा खीणफलं व पक्खी ॥३१॥

जइ तं सि भोगे चइउं असत्तो,
 अज्जाइ कम्माइ करेहि रायं !
 धम्मं ठिओ सव्वपयाणुकम्पी,
 तो होहिसि देवो इओ विउव्वी ॥३२॥
 न तुज्झ भोगे चइऊण बुद्धी,
 गिद्धो सि आरम्भपरिगहेसु ।
 मोहं कओ एत्तिउ विष्णलावो,
 गच्छामि रायं ! आमन्तिओसि ॥३३॥
 पंचालराया वि य धम्मदत्तो,
 साहुस्स तस्स वयणं अकाउं ।
 अणुत्तरे भुंजिय कामभोगे,
 अणुत्तरे सो नरण पविट्ठो ॥३४॥
 चित्तो वि कामेहि विरत्तकामो,
 उदग्गचारित्तवो महेसी ।
 अणुत्तरं संजमं पालइत्ता,
 अणुत्तरं सिद्धिगइं गओ ॥३५॥ त्ति बेमि
 ॥ चित्तसम्भूइज्जं समत्तं ॥

॥ अइ उसुयारिज्जं चोइहमं अज्झयणं ॥

देवा भवित्ताण पुरे भवम्मि,
 केइ चुया एगविमाणवासी ।
 पुरे पुराणे उसुयारनामे,
 खाए समिद्धे सुरलोगरम्मे ॥३६॥
 सकम्मसेसेण पुराकएणां,
 कुलेसुदग्गोसु य ते पसूया ।

निव्विण्णसंसारभया जहाय,
 जिणिंदमग्गं सरणं पवन्ना ॥२॥
 पुमत्तमागम्म कुमार दो वि,
 पुरोहिओ तस्स जसा य पत्ती ।
 विसालकित्ती य तहोसुयारो,
 रायत्थ देवी कमलावई य ॥३॥
 जाईजरामच्चुभयाभिभूया,
 बहिं विहाराभिनिविट्ठचित्ता ।
 संसारचक्कस्स विमोक्खण्णट्ठा,
 ददूहण ते कामगुणे विरत्ता ॥४॥
 पियपुत्तगा दुन्नि वि माहणस्स,
 सकम्मसीलस्स पुरोहियस्स ।
 सरित्तु पोराणिय तत्थ जाई,
 तहा सुच्चिण्णं तवसंजमं च ॥५॥
 ते कामभोगेसु असज्जमाणा,
 माणुस्सपसुं जे यावि दिव्वा ।
 मोक्खाम्भिकंखी अभिजायसट्ठा,
 तायं उवागम्म इमं उदाहु ॥६॥
 असासयं ददूहु इमं विहारं,
 बहुअन्तरायं न य दीहमाउं ।
 तम्हा गिहिंसि न रइं लहामो,
 आमन्तयामो चरिस्सामु मोणां ॥७॥
 अह तायगो तत्थ मुणीण तेसिं,
 तवस्स वाघायकरं वयासी ।
 इमं वयं वेयविओ वयन्ति,
 जहा न होई असुयाण लोगो ॥८॥

अहिज्ज वेए परिबिस्स विप्पे,
 पुत्ते परिट्ठप्प गिहंसि जाया ।
 भोच्चाए भोए सह इत्थियाहिं.
 आरणगा होह मुणी पसत्था ॥६॥
 सोयगिणा आयगुणिन्धणेरां,
 मोहाणिला पज्जलणाहिपरां ।
 संतत्ताभावं परितप्पमारां,
 लालप्पमारां बहुहा बहुं च ॥१०॥
 पुरोहियं तं कमसोऽणुणन्ते,
 निमंतयन्ते च सुए धणेरां ।
 जहकमं कामगुणेहि चेव,
 कुमारगा ते पसमिक्ख वक्कं ॥११॥
 वेया अहीया न भवन्ति तारां,
 भुत्ता दिया निन्ति तमं तमेरां ।
 जाया य पुत्ता न हवन्ति तारां,
 को णाम ते अणुमन्नेज्ज एयं ॥१२॥
 खणमित्तसुक्खा बहुकालदुक्खा,
 पगामदुक्खा अणिगामसुक्खा ।
 संसारमोक्खस्स विपक्खभूया,
 खाणी अणत्थाए उ कामभोगा ॥१३॥
 परिव्वयन्ते अणियत्तकामे,
 अहो य राओ परितप्पमारे ।
 अन्नप्पमत्ते धणमेसमारे,
 पप्पोति मच्चुं पुरिसे जरं च ॥१४॥
 इमं च मे अत्थि इमं च नत्थि,
 इमं च मे किच्च इमं अकिच्चं ।

तं एवमेयं लालप्पमाणां,
 हरा हरन्ति त्ति कहं पमाओ ॥१५॥
 धरां पभूयं, सह इत्थियाहिं,
 सयणा तथा कामगुणा पगामा ।
 तवं कए तप्पइ जस्स लोगो,
 तं सव्वसाहीणमिमेव तुब्भं ॥१६॥
 धरोण किं धम्मधुराहिगारे,
 सयरोण वा कामगुणेहि चेव ।
 समणा भविस्सामु गुणोहधारी,
 बहिंविहारा अभिगम्म भिक्खं ॥१७॥
 जहा य अग्गी अरणी असन्तो,
 खीरे घयं तेल्लमहातिलेसु ।
 एमेव जाया सरीरंसि सत्ता,
 संमुच्छइ नासइ नावच्छिद्वे ॥१८॥
 नो इन्द्रियग्गेज्झ अमुत्तभावा,
 अमुत्तभावा वि य होइ निच्चो ।
 अज्झत्थहेउं निययस्स बन्धो,
 संसारहेउं च वयन्ति बन्धं ॥१९॥
 जहा वयं धम्मं अजाणमाणा,
 पावं पुरा कम्ममकासि मोहा ।
 ओरूज्झमाणा परिरक्खयन्ता,
 तं नेव भुज्जो वि समायरामो ॥२०॥
 अब्भाहयम्मि लोगम्मि,
 सव्वओ परिवारिए ।
 अमोहाहिं पडन्तीहिं,
 गिहंसि न रइ लभे ॥२१॥

केण अब्भाहओ लोगो ?
 केण वा परिवारिओ ?
 का वा अमोहा वुत्ता ?
 जाया चिन्तावरो हुमि ॥२२॥
 मच्चुणाऽब्भाहओ लोगो,
 जराए परिवारिओ ।
 अमोहा रयणी वुत्ता,
 एवं ताय ! विजाणह ॥२३॥
 जा जा वच्चइ रयणी,
 न सा पडिनियत्ताइ ।
 अहम्मं कुणमाणस्स,
 अफला जन्ति राइओ ॥२४॥
 जा जा वच्चइ रयणी,
 न सा पडिनियत्ताइ ।
 धम्मं च कुणमाणस्स,
 सफला जन्ति राइओ ॥२५॥
 एगओ संवसित्ताणां,
 दुहओ सम्मत्तासंजुया ।
 पच्छा जाया गमिस्सामो,
 भिक्खमाणा कुले कुले ॥२६॥
 जस्सत्थि मच्चुणा सक्खं,
 जस्स वऽत्थि पलायणां ।
 जो जाणे न मरिस्सामि,
 सो हु कंखे सुए सिया ॥२७॥
 अज्जेव धम्मं पडिवज्जयामो,
 जहिं पवन्ना न पुणब्भवामो ।

अणागयं नेव य अत्थि किंची,
 सद्धाखमं णो विणइत्तु रागं ॥२८॥
 पहीणपुत्तस्स हु नत्थि वासो,
 वासिट्ठि ! भिक्खायरियाइ कालो ।
 साहाहि रुक्खो लहए समाहिं,
 छिन्नाहि साहाहि तमेव खाणुं ॥२९॥
 पंखाविहूणोव्व जहेव पक्खी,
 भिच्चविहूणोव्व रणे नरिन्दो ।
 विवन्नसारो वणिओव्व पोए,
 पहीणपुत्तो मि तहा अहंपि ॥३०॥
 सुसंभिया कामगुणे इमे ते,
 संपिण्डिया अग्गरसण्णभूया ।
 भुंजामु ता कामगुणे पगामं,
 पच्छा गमिस्सामु पहणमग्गं ॥३१॥
 भुत्ता रसा भोइ ! जहाइ णेवओ,
 न जीवियट्ठा पजहामि भोए ।
 लाभं अलाभं च सुहं च दुक्खं ।
 संचिक्खमाणो चरिस्सामि मोरां ॥३२॥
 मा हू तुमं सोयरियाण सम्भरे,
 जुण्णो व हंसो पडिसोत्तागामी ।
 भुंजाहि भोगाइ मए समाणं,
 दुक्खं खु भिक्खायरियाविहारो ॥३३॥
 जहा य भोई तणुयं भुयंगो,
 निम्मोयणिं हिच्च पलेइ मुत्तो ।
 एमेए जाया पयहन्ति भोए,
 ते हं कहं नाणुगमिस्समेक्को ? ॥३४॥

छिन्दितु जालं अबलं व रोहिया,
 मच्छा जहा कामगुणे पहाण ।
 घोरेयसीला तवसा उदारा,
 धीरा हु भिक्खाचरियं चरन्ति ॥३५॥
 नहेव कुंचा समइक्कमन्ता,
 तथाणि जालाणि दलितु हंसा ।
 पलेन्ति पुत्ता य पई य मज्झं,
 ते हं कहं नाणुगमिस्समेक्का ? ॥३६॥
 पुरोहियं तं ससुयं सदारं,
 सोच्चाऽभिनिक्खम्म पहाय भोण ।
 कुडुम्बसारं विउलुत्तमं च,
 रायं अभिक्खं समुवाय देवी ॥३७॥
 वन्तासी पुरिसो रायं !
 न सो होई पसंसिओ ।
 माहणेण परिच्चत्तं,
 धणं आदाउमिच्छसि ॥३८॥
 सव्वं जगं जइ तुहं,
 सव्वं वावि धणं भवे ।
 सव्वं पि ते अपज्जत्तं,
 नेव ताणाय तं तव ॥३९॥
 मरिहिसि रायं ! जया तथा वा,
 मणोरमे कामगुणे पहाय ।
 एको हु धम्मो नरदेव ! ताणं,
 न विज्जई अन्नमिहेह किंचि ॥४०॥
 नाहं रमे पक्खिणि पंजरे वा,
 संताणद्धिन्ना चरिस्सामि मोरां ।

अकिंचणा उज्जुकडा निरामिसा,
 परिग्गहारम्भनियत्तदोसा ॥४१॥
 दवग्गिणा जहा रणणे, डज्झमाणेसु जन्तुसु ।
 अघे सत्ता पमोयन्ति. रागदोसवसं गया ॥४२॥
 एवमेव वयं मूढा, कामभोगेसु मुच्छिन्त्या ।
 डज्झमाणं न बुज्झामो, रागदोसग्गिणा जगं ॥४३॥
 भोगे भोच्चा वमित्ता य, लहुभूयविहारिणो ।
 आमोयमाणा गच्छन्ति, दिया कामकमा इव ॥४४॥
 इमे य षट्ठा फंदंति, मम हत्थऽज्झमागया ।
 वयं च सत्ता कामेसु, भविस्सामो जहा इमे ॥४५॥
 सामिसं कुललं दिस्स, बज्झमाणं निरामिसं ।
 आमिसं सव्वमुज्झित्ता, विहरिस्सामि निरामिसा ॥४६॥
 गिद्धोवमा उ नच्चाणां, कामे संसारवड्डणे ।
 उरगो सुवण्णपासेव्व, संकमाणो तणुं चरे ॥४७॥
 नागोम्व बन्धणं छित्ता, अप्पणो वसहिं वण ।
 एयं पत्थं महारायं, उस्सुयारि त्ति मे सुयं ॥४८॥
 चइत्ता विउलं रज्जं, कामभोगे य दुच्चण ।
 निव्विसया निरामिसा, निच्चेहा निप्परिग्गहा ॥४९॥
 सम्मं धम्मं वियाणित्ता, निच्चा कामगुणे वरे ।
 तवं पणिज्झहक्खायं, घोरें घोरेवरक्कमा ॥५०॥
 एवं ते कमसो बुद्धा, सव्वे धम्मपरायणा ।
 जम्ममच्चुभउद्धिग्गा, दुक्खस्सन्तगवेसिणो ॥५१॥
 सासणे विगयमोहाणां, पुव्विं भावणभाविया ।
 अचिरेणेव कालेणां, दुक्खस्सन्तमुवागया ॥५२॥
 राया सह देवीण, माहणो य पुरोहिओ ।
 माहणी दारगा खेव, सव्वे ते परिनिव्वुडे ॥५३॥ त्ति वेमि॥

॥ अहं सभिक्षू पंचदहं अज्भयणं ॥

मोरां चरिस्सामि समिच्च धम्मं,
सहिण उज्जुकडे नियाणद्धिन्ने ।

संथवं जहिज्ज अकामकामे,
अन्नायएसी परिव्वए स भिक्षू ॥१॥

राओवरयं चरेज्ज लाढे,
विगए वेयवियायरक्खिए ।

पन्ने अभिभूय सव्वदंसी जे,
कम्महिचि न मुच्छिए स भिक्षू ॥२॥

अक्कोसवहं विट्ठत्तु धीरे,
मुणी चरे लाढे निच्चमायगुत्ते ।

अव्वग्गमणे असंपहिट्ठे,
जे कसिणं अहियासए स भिक्षू ॥३॥

पन्तं सयणासणं भइत्ता,
सीउएहं विविहं च दंसमसणं ।

अव्वग्गमणे असंपहिट्ठे,
जे कसिणं अहियासए स भिक्षू ॥४॥

नो सक्कइमिच्छई न पूयं,
नो वि य वन्दणं कुओ पसंसं ?

से संजए सुव्वए तवस्सी,
सहिण आयगवेसए स भिक्षू ॥५॥

जेण पुण जहाइ जीवियं,
मोहं वा कसिणं नियच्छइ ।

नरनारिं पजहे सया तवस्सी,
 न य कोऊहलं उवेइ स भिक्खू ॥६॥
 छिन्नं सरं भोमन्तलिकखं,
 सुमिणं लक्खणदण्डवत्थुविज्जं ।
 अंगवियारं सरस्स विजयं,
 जे विज्जाहिं न जीवइ स भिक्खू ॥७॥
 मन्तं मूलं विविहं वेज्जचिन्तं,
 वमणविरेयणधूमणेत्तसिणारां ।
 आउरे सरणं तिगिच्छियं च,
 तं परिन्नाय परिव्वण स भिक्खू ॥८॥
 खत्तियगणउग्गरायपुत्ता,
 माहणमोई य विविहा य सिप्पिणो ।
 नो तेसिं वयइ सिलोगपूयं,
 तं परिन्नाय परिव्वण स भिक्खू ॥९॥
 गिहिणो जे पव्वइएण दिट्ठा,
 अप्पव्वइएण व संथुगा हविज्जा ।
 तेसिं इहलोइयफलट्ठा,
 जो संथुवं न करेइ स भिक्खू ॥१०॥
 सयणासणपाणमोयणं,
 विविहं खाइमसाइमं परेसिं ।
 अदण पडिसेहिण नियण्ठे,
 जे तत्थ न पउस्सइ स भिक्खू ॥११॥
 जं किं चि आहारपाणगं^१,
 विविहं खाइमसाइमं परेसिं लद्धुं ।

जो तं तिविहेण नाणुकम्पे,
 मणवयकायसुसंबुडे स भिक्खू ॥१२॥
 आयामगं चेव जवोदणं च,
 सीयं सोवीरजवोदणं च ।
 नो हीलए पिण्डं नीरसं तु,
 पन्तकुलाइं परिव्वए स भिक्खू ॥१३॥
 सद्दा विविहा भवन्ति लोए,
 दिव्वा माणुस्सगा तिरिच्छा ।
 भीमा भयभेरवा उराला,
 सोच्चा न बिहिज्जइ स भिक्खू ॥१४॥
 वादं विविहं समिच्च लोए,
 सहिए खेयाणुगए य कोवियप्पा ।
 पन्ने अभिभूय सव्वदंसी,
 उवसन्ते अविहेडए स भिक्खू ॥१५॥
 असिप्पजीवी अगिहे अमिस्से
 जिइन्दिए सव्वओ विप्पमुक्के ।
 अणुकसाई लहुअप्पभक्खी,
 चिच्चा गिहं एगचरे स भिक्खू ॥१६॥

॥ इअ सभिक्खुयं समत्तां ॥ १५ ॥

॥ अह बम्मचेरसमाहिठाणा णामं सोलसमं अज्झयणं ॥

सुयं मे आउसं ! तेरां भगवया एवमक्खायं-इह खलु
 थेरेहिं भगवन्तेहिं दस बम्मचेरसमाहिठाणा पन्नत्ता, जे भिक्खु
 सोच्चा निसम्म संजमबहुले संवरबहुले समाहिबहुले गुत्ते
 गुत्तिन्दिए गुत्ताबम्भयारी सया अप्पमत्ते विहरेज्जा ।

कयरे खलु ते थेरेहिं भगवन्तेहिं दस बम्भचेरसमाहिठाणा पन्नता, जे भिक्खू सोच्चा निसम्म संजमबहुले समाहिवहुले गुत्ते गुत्तिन्दिण गुत्तबम्भयारी सया अप्पमत्ते विहरेज्जा ?

इमे खलु ते थेरेहिं भगवन्तेहिं दस बम्भचेरठाणा पन्नता, जे भिक्खू सोच्चा निसम्म संजमबहुले संवरबहुले गुत्ते गुत्तिन्दिण गुत्तबम्भयारी सया अप्पमत्ते विहरेज्जा तंजहाः—

विवित्ताइं सयणासणाइं^१ सेवित्ता हवइ से निग्गन्थे । नो इत्थी-
पसुपण्डगसंसत्ताइं सयणासणाइं सेवित्ता हवह से निग्गन्थे ।
तं कहमिति चे ? आयरियाहः—निग्गन्थस्य खलु इत्थिपसु-
पण्डगसंसत्ताइं सयणासणाइं सेवमाणस्य बम्भयारिस्स बम्भ-
चेरे संका वा कंखा वा विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेदं वा
लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीलकालियं वा रोगायकं हवेज्जा,
केवलपन्नत्ताओ धम्माओ भंसेज्जा । तम्हा नो इत्थिपसुपण्डग-
संसत्ताइं सयणासणाइं सेवित्ता हवइ से निग्गन्थे ॥ १

नो इत्थीणां कंहं कहित्ता हवइ से निग्गन्थे । तं कहमिति
चे ? आयरियाह—निग्गन्थस्म खलु इत्थीणां कंहं कहेमाणस्स
बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा कंखा वा विइगिच्छा वा
समुप्पज्जिज्जा, भेदं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीह-
कालियं वा रोगायकं हवेज्जा, केवलपन्नत्ताओ धम्माओ
भंसेज्जा । तम्हा नो इत्थीणां कंहं कहेज्जा ॥ २ ॥

नो इत्थीणां सद्धिं सन्निसेज्जागए विहरित्ता हवइ से निग्ग-
न्थे । तं कहमिति चे ? आयरियाह—निग्गन्थस्स खलु इत्थीहिं
सद्धिं सन्निसेज्जागयस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा
कंखा वा विइगिच्छा व समुप्पज्जिज्जा, भेदं वा लभेज्जा,

उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायकं हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ धम्माओ भंसेज्जा । तम्हा खलु नो निगगन्थे इत्थीहिं सद्धिं सन्निसेज्जागए विहरेज्जा ॥३॥

नो इत्थीणां इन्दियाइं मणोहराइं मनोरमाइं अलोइत्ता निज्झाइत्ता हवइ से निगगन्थे । तं कहमिति चे ? आयरियाह-निगगन्थस्स खलु इत्थीणां इन्दियाइं मणोहराइं अलोएमाणस्स निज्झायमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा कंखा वा विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेदं व लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायकं हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ धम्माओ भंसेज्जा । तम्हा खलु नो निगगन्थे इत्थीणां इन्दियाइं मणोहराइं मनोरमाइं अलोएज्जा निज्झाएज्जा ॥४॥

नो इत्थीणां कुडुन्तरंसि वा दूसन्तरंसि वा भित्तन्तरंसि वा कूइयसदं वा रुइयसदं वा गीयसदं वा हसियसदं वा थणियसदं वा कन्दियसदं वा विलवियसदं वा सुणित्ता हवइ से निगगन्थे । तं कहमिति चे ? आयरियाह निगगन्थस्स खलु इत्थीणां कुडुन्तरंसि व दूसन्तरंसि भित्तन्तरंसि व कूइयसदं वा रुइयसदं वा गीयसदं वा हसियसदं वा थणियसदं वा कन्दियसदं वा विलवियसदं वा सुणेमाणस्य बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा कंखा विइगिच्छा व समुप्पज्जिज्जा, भेदं व लभेज्जा उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायकं हवेज्जा केवलिपन्नत्ताओ धम्माओ भंसेज्जा । तम्हा खलु नो निगगन्थे इत्थीणां कुडुन्तरंसि वा दूसन्तरंसि भित्तन्तरंसि वा वा कूइयसदं वा रुइयसदं वा गीयसदं वा हसियसदं वा थणियसदं वा कन्दियसदं वा सुणेमाणे विहरेज्जा ॥५॥

नो निगगन्थे पुण्वरयं पुण्वकीलियं अणुसरित्ता हवइ से

निग्नन्थे । तं कहमिति चे ? आयरियाह-निग्नन्थस्स खलु पुव्व-
रयं पुव्वकीलियं अणुसरमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका
वा कंखा व विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेदं व लभेज्जा,
उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायकं हवेज्जा,
केवलपन्नत्ताओ धम्माओ भंसेज्जा । तम्हा खलु नो निग्न-
न्थे पुव्वरयं पुव्वकीलियं अणुसरेज्जा ॥६॥

नो पणीयं 'आहारं आहरित्ता हवइ से निग्नन्थे । तं कह-
मिति चे ? आयरियाह-निग्नन्थस्स खलु पणीयं आहारं आहा-
रेमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा कंखा विइगिच्छा
वा समुप्पज्जिज्जा भेदं वा लभेज्जा उम्मायं वा पाउ-
णिज्जा, दीहकालियं वा रोगायकं हवेज्जा, केवलपन्नत्ताओ
धम्माओ भंसेज्जा । तम्हा खलु नो निग्नन्थे पणीयं आहारं
आहारेज्जा ॥७॥

नो अइमायाए पाणभोयणं आहारेत्ता हवइ से निग्नन्थे ।
तं कहमिति चे ? आयरियाह-निग्नन्थस्य खलु अइमायाए
पाणभोयणं आहारेमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा
कंखा वा विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेदं वा लभेज्जा,
उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीलकालियं व रोगायकं हवेज्जा, केव-
लिपन्नत्ताओ धम्माओ भंसेज्जा । तम्हा खलु नो निग्नन्थे अइ-
मायाए पाणभोयणं आहारेज्जा ॥८॥

नो विभूसाणुवाई हवइ से निग्नन्थे ! तं कहमिति चे ? आय-
रियाह-विभूसावत्तिण विभूसियसरीरे इत्थिजणस्य अभिलस-
णिज्जे हवइ तओ ण इत्थिजणेणं अभिलसिज्जमाणस्स बम्भ-

चेरे संका वा कंखा वा विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेदं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायकं हवेज्जा, केवलपन्नत्ताओ धम्माओ भंसेज्जा । तम्हा खलु नो निग्गन्थे विभूसाणुवाई हविज्जा ॥६॥

नो सद्वरुवरसगन्धफासाणुवाई हवइ से निग्गन्थे । तं कहमिति चे ? आयसियाह-निग्गन्थस्स खलु सद्वरुवगन्धफासाणुवाईस्स बम्भचेरे संका वा कंखा वा विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा भेदं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा दीहकालियं वा रोगायकं हवेज्जा, केवलपन्नत्ताओ धम्माओ, भंसेज्जा । तम्हा खलु नो निग्गन्थे सद्वरुवरसगन्धफासाणुवाई भवेज्जा । दसमे बम्भचेरसमाहिठारे हवइ ॥१०॥

भवन्ति इत्थ सिलोगा तंजहा—

जं विवित्तमणाइणां, रहियं इत्थिजणेण य ।

बम्भचेरस्स रक्खट्ठा, आलयं तु निसेवण ॥१॥

मणपल्हायजणणी, कामरागविवट्ठणी ।

बम्भचेररओ भिक्खु, थीकहं तु विवज्जण ॥२॥

समं च संथवं थीहिं, संकहं च अभिक्खणां ।

बम्भचेररओ भिक्खु, निच्चसो परिवज्जण ॥३॥

अंगपच्चंगसंठाणां, चारुल्लवियपेहियं ।

बम्भचेररओ थीणां, चक्खुगिज्झं विवज्जण ॥४॥

कूइयं रुइयं गीयं, हसियं थणियकन्दियं ।

बम्भचेररओ थीणां, सोयगेज्झं विवज्जण ॥५॥

हासं किट्ठं रइं दप्पं, सहसावित्तासियाणि य ।

बम्भचेररओ थीणां, नाणुचिन्ते कयाइ वि ॥६॥

पणीयं भत्तपाणं तु, खिप्पं मयविवट्ठणं ।
 बम्भचेररओ भिक्खू, निच्चसो परिवज्जए ॥७॥
 धम्मलद्धं मियं काल्हे, जत्तत्थं पणिहाणवं ।
 नाइमत्तं तु भुंजेज्जा, बम्भचेररओ सया ॥८॥
 विभूसं परिवज्जेज्जा, सरीरपरिमण्डणं ।
 बम्भचेररओ भिक्खू, सिंगारत्थं न धारए ॥९॥
 सहे रूवे य गन्धे य, रसे फासे तहेव य ।
 पंचविहे कामगुणे, निच्चसो परिवज्जए ॥१०॥
 आलओ श्रीजणाइणो, श्रीकहा य मणोरमा ।
 संथवो चेव नासीणं, तासिं इन्द्रियदरिसणं ॥११॥
 कूइयं रुइयं गीयं, हासभुत्तासियाणि य ।
 पणीयं भत्तपाणं च, अइमायं पाणभोयणं ॥१२॥
 गरभूसणमिट्ठं च, कामभोगा य दुज्जया ।
 नरस्सत्तगवेसिस्स, विसं तालउडं जहा ॥१३॥
 दुज्जए कामभोगे य, निच्चसो परिवज्जए ।
 संकट्टाणाणि सव्वाणि, वज्जेज्जा पणिहाणवं ॥१४॥
 धम्मारामे चरे भिक्खू, धिइमं धम्मसारही ।
 धम्मारामरते दन्ते, बम्भचेरसमाहिण ॥१५॥
 देवदाणवगन्धव्वा, जक्खरक्खसकिन्नरा ।
 बम्भयारिं नमंसन्ति, दुक्करं जे करन्ति ते ॥१६॥
 एस धम्मे धुवे निच्चे, सासए जिणदेसिए ।
 सिद्धा सिज्झन्ति चाणेण, सिज्झिक्खस्सन्ति तहावरे ॥१७॥
 ॥ बम्भचेरसमाहिंठाणा समत्ता ॥

॥ अह पावसमणिज्जं सत्तदहं अजक्खयणं ॥

जे केइ उ पव्वइए नियंटे,

धम्मं सुणित्ता विणओववन्ने ।

सुदुल्लहं लहिउं बोहिलाभं,
 विहरेज्ज पच्छा य जहासुहं तु ॥१॥
 सेज्जा दढा पाउरणां मिअत्थि,
 उप्पज्जई भोचु तहेव पाउं ।
 जाणामि जं वट्टइ आउसु त्ति,

किं नाम काहामि सुएण भन्ते ! ॥२॥

जे केई पव्वइए, निदासीले पगामसो ।
 भोच्चा पिच्चा सुहं सुवइ, पावसमणि त्ति बुच्चइ ॥३॥
 आयरियउवज्झाएहि, सुयं विणयं च गाहिए ।
 ते चेव खिसई बाले, पावसमणि त्ति बुच्चइ ॥४॥
 आयरियउवज्झायाणां, सम्मं न पडितप्पइ ।
 अप्पडिपूयए थद्धे पावसमणि त्ति बुच्चइ ॥५॥
 सम्मदमाणे पाणाणि, बीयाणि हरियाणि य ।
 असंजए संजयमन्नमाणे, पावसमणि त्ति बुच्चइ ॥६॥
 संथारं फलगं पीढं, निसेज्जं पायकम्बलं ।
 अप्पमज्जियमारुहइ, पावसमणि त्ति बुच्चइ ॥७॥
 दवदवस्स चरई, पमत्ते य अभिक्खणां ।
 उल्लंघणेय चण्डे य, पावसमणि त्ति बुच्चइ ॥८॥
 पडिलेहेइ पमत्ते, अवउज्झइ पायकम्बलं ।
 पडिलेहाअणाउत्ते, पावसमणि त्ति बुच्चइ ॥९॥
 पडिलेहेइ पमत्ते, से किंचि हु निसामिया ।
 गुरुं परिभावए निच्चं, पावसमणि त्ति बुच्चइ ॥१०॥
 बहुमाई पमुहरी, थद्धे लुद्धे अणिग्गहे ।
 असंविभागी^१ अचियत्ते, पावसमणि त्ति बुच्चइ ॥११॥

विवादं च उदीरेइ, अहम्मे अत्तपन्नहा ।
 वुग्गहे कलहे रत्ते, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥१२॥
 अथिरासणे कुकुइए, जत्थ तत्थ निसीयइ ।
 आसणम्मि अणाउत्ते, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥१३॥
 ससरकखपाए सुवइ, सेज्जं न पडिलेहइ ।
 संथारए अणाउत्ते, पावसमणि त्ति वुच्चइ । १४॥
 दुद्धदहीविगईओ, आहारेइ अभिक्खणां ।
 अरण य तवोकम्मे, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥१५॥
 अत्थन्तम्मि य सूरम्मि, आहारेइ अभिक्खणां ।
 चोइओ पडिचोएइ, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥१६॥
 आयरियपरिच्चाई, परपासण्डसेवए ।
 गागांगणिए दुब्भूए, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥१७॥
 सयं गेहं परिच्चज्ज, परगेहंसि वावरे ।
 निमिस्सेण य ववहरइ, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥१८॥
 सन्नाइपिण्डं जेमेइ, नेच्छई सामुदाणियं ।
 गिहिनिसेज्जं च वाहेइ, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥१९॥

एयारिसे पंचकुसीलसुंवुडे,
 रूवंधरे मुणिपवराण हेट्टिमे ।
 अयंसि लोए विसमेव गरहिण,
 न से इहं नेव परत्थ लोए ॥२०॥

जे वज्जए एए सया उ दोसे,
 से सुव्वए होइ मुणीण मज्जे ।
 अयंसि लोए अमयं व पूइए,
 आराहए लोगमिणं तहा परं ॥२१॥ त्ति बेमि ।

॥ पावसमणिज्जं समत्तां ॥१७॥

॥ अह संजइज्जं अठारहमं अजभयणं ॥

कम्पिल्ले नयरे राया, उदिणवल्वाहणे ।
 नामेणं संजणं नाम, मिगव्वं उवणिग्गण ॥१॥
 हयाणीण गयाणीण, रहाणीण तहेव य ।
 पायताणीण महया, सव्वओ परिवारिण ॥२॥
 मिणं छुहित्ता हयगओ, कम्पिल्लुज्जाणकेसरे ।
 भीणं सन्ते मिणं तत्थ, वहेइ रसमुच्छिण ॥३॥
 अह केसरम्मि उज्जाणे, अणगारे तवोधणे ।
 सज्झायज्झाणसंजुत्ते, धम्मज्झाणं झियायइ ॥४॥
 अण्णोवमण्डवम्मि, भायइ कखवियासवे ।
 तस्साणं मिणं पासं, वहेइ से नराहिवे ॥५॥
 अह आसगओ राया, खिप्पमागम्म सो तहिं ।
 हणं मिणं उ पासित्ता, अणगारं तत्थ पासइ ॥६॥
 अह राया तत्थ संभन्तो, अणगारो मणाहओ ।
 मणं उ मन्दपुण्णेषां, रसगिद्धेण घंतुणा ॥७॥
 आसं विसज्जइत्ताणां, अणगारस्स सो निवो ।
 विणणं वन्दणं पाणं, भगवं ! एत्थ मे खमे ॥८॥
 अह मोणेण सो भगवं, अणगारे भाणमस्सिण ।
 रायाणां न पडिमन्तेइ, तओ राया भयद्दुओ ॥९॥
 संजओ अहमम्मीति, भगवं ! वाहराहि मे ।
 कुद्धे तेणं अणगारे, डहेज्जं नरकोडिओ ॥१०॥
 अभओ पत्थिवा ! तुब्भं, अभयदाया भवाहि य ।
 अणिच्चे जीवलोगंमि, किं हिंसाणं पसज्जसि ? ॥११॥
 जया सव्वं परिच्चज्ज, गंतव्वमवसस्स ते ।
 अणिच्चे जीवलोगंमि, किं रज्जंमि पसज्जसि ? ॥१२॥

जीवियं चेव रूवं च, विज्जुसंपायचंचलं ।
 जत्थ तं मुज्झसि रायं ! पेच्चत्थं नावबुज्झसे ॥१३॥
 दाराणि य सुया चेव, मित्ता य तह बन्धवा ।
 जीवन्तमणुजीवन्ति, मयं नाणुवयन्ति य ॥१४॥
 नीहरन्ति मयं पुत्ता, पियरं परमदुक्खिया ।
 पियरो वि तहा पुत्ते, बन्धू रायं ! तवं चरे ॥१५॥
 तओ तेणज्जिए दब्बे, दारे य परिरक्खिए !
 कीलन्तिऽन्ने नरा रायं ! हट्ठुट्ठमलंकिया ॥१६॥
 तेणावि जं कयं कम्मं, सुहं व जइ वा दुहं ।
 कम्मुणा तेण संजुत्तो, गच्छई उ परं भवं ॥१७॥
 सोऊण तस्स सो धम्मं, अणगारस्स अन्तिए ।
 महया संवेगनिब्बेयं, समावन्नो नराहिवो ॥१८॥
 संजओ चइउं रज्जं, निक्खन्तो जिणसासणे ।
 गद्दभालिस्स भगवओ, अणगारस्स अन्तिए ॥१९॥
 चिच्चा रट्ठं पव्वइए, खत्तिए परिभासइ ।
 जहा ते दीसइ रूवं, पसन्ने ते तहा मणो ॥२०॥
 किं नामे किं गोत्ते कस्सट्ठाए व माहणे ।
 कहं पडियरसि बुद्धे, कहं विणीए त्ति बुच्चसि ? ॥२१॥
 संजओ नाम नामेणां, तहा गोत्तेण गोयमो ?
 गद्दभाली ममायरिया, विज्जाचरणपारगा ॥२२॥
 किरियं अकिरियं विणयं, अन्नाणां च महामुणी ।
 एएहिं चउहिं ठारोहिं, मेयन्ने किं पभासइ ॥२३॥
 इइ पाउकरे बुद्धे, नायए परिणिव्वुए ।
 विज्जाचरणसंपन्ने, सच्चे सच्चपरक्कमे ॥२४॥
 पडन्ति नरए घोरे, जे नरा पावकारिणो ।
 दिव्वं च गइं गच्छन्ति, चरित्ता धम्ममारियं ॥२५॥

मायाबुद्ध्यमेयं तु मुसा भासा निरत्थिया ।
 संजममाणो वि अहं, वसामि इरियामि य ॥२६॥
 सव्वेण विइया मज्झं, मिच्छादिट्ठी अणारिया ।
 विज्जमाणे परे लोए, सम्मं जाणामि अण्णगं ॥२७॥
 अहमासि महापाणे, जुइमं वरिससओवमे ।
 जा सा पालिमहापाली, दिव्वा वरिससओवमा ॥२८॥
 से चुए वम्भलोगाओ, माणुस्सं भवमाणए ।
 अण्णणो य परेसिं च, आउं जाणे जहा तहा ॥२९॥
 नाणारुइं च छुन्दं च, परिवज्जेज्ज संजए ।
 अणट्ठा जे य सव्वत्था, इइ विज्जामणुसंचरे ॥३०॥
 पडिक्कमामि पसिणाणं, परमंतेहिं वा पुणे ।
 अहो उट्ठिए अहोरायं, इइ विज्जा तवं चरे ॥३१॥
 जं च मे पुच्छसी काले, समं सुद्धेण चैयसा ।
 ताइं पाउकरे बुद्धे तं नारां जिणसासणे ॥३२॥
 किरियं च रोयइ धीरे, अकिरियं परिवज्जए ।
 दिट्ठीए दिट्ठिसम्पन्ने, धम्मं चरसु दुच्चरं ॥३३॥
 एयं पुण्णपयं सोच्चा, अत्थधम्मोवसोहियं ।
 भरहेो वि भारहं वासं, चिच्चा कामाइ पव्वए ॥३४॥
 सगरो वि सागरन्तं, भरहवासं नराहिवो ।
 इस्सरियं केवलं हिच्चा, दयाइ परिनिव्वुडे ॥३५॥
 चइत्ता भारहं वासं, चक्कवट्ठी महिड्ढिओ ।
 पव्वज्जमब्भुवणओ, मघवं नाम महाजसो ॥३६॥
 सणकुमारो मणुस्सिन्दो, चक्कवट्ठी महिड्ढिओ ।
 पुत्तं रज्जे ठवेऊरां, सो वि राया तवं चरे ॥३७॥
 चइत्ता भारहं वासं चक्कवट्ठी महिड्ढिओ ।
 सन्ती सन्तिकरे लोए, पत्तो गइमणुत्तरं ॥३८॥

इक्खागरायवसभो, कुन्थू नाम नरीसरो ।
 विक्खायकित्ती भगवं, ^१पत्तो गइमणुत्तरं ॥३६॥
 सागरन्तं चइत्ताणं, भरहं नरवरीसरो ।
 अरो य अरयं पत्तो, पत्तो गइमणुत्तरं ॥४०॥
 चइत्ता भारहं वासं, ^२चइत्ता बलवाहणं ।
 चइत्ता उत्तमे भोए, महापउमे तवं चरे ॥४१॥
 एगच्छरां पसाहिता, महिं माणनिसूरणो ।
 हरिसेणो मणुस्सिन्दो, पत्तो गइमणुत्तरं ॥४२॥
 अग्निओ रायसहस्सेहिं, सुपरिच्चाई दमं चरे ।
 जयनामो जिणक्खायं, पत्तो गइमणुत्तरं ॥४३॥
 दसण्णरज्जं मुदियं, चइत्ताणं मुणी चरे ।
 दसण्णभदो निक्खन्तो, सक्खं सक्केण चोइओ ॥४४॥
 नमी नमेइ अप्पाणं, सक्खं सक्केण चोइओ ।
 चइऊण गेहं वइदेही, सामणो पज्जुवट्ठिओ ॥४५॥
 करकण्डू कलिंगेसु, पंचालेसु य दुम्मुहो ।
 नमी राया विदेहेसु, गन्धारेसु य नग्गई ॥४६॥
 एए नरिन्दवसभा, निक्खन्ता जिणसासरो ।
 पुत्ते रज्जे ठवेऊणं, सामणो पज्जुवट्ठिया ॥४७॥
 सोवीररायवसभो, चइत्ताण मुणी चरे ।
 उदायणो पव्वइओ, पत्तो गइमणुत्तरं ॥४८॥
 तहेव कासिराया, वि सेओ सच्चपरक्कमे ।
 कामभोगे परिच्चज्ज, पहणे कम्ममहावरां ॥४९॥
 तहेव विजओ राया, ^३अणट्ठाकित्ति पव्वए ।
 रज्जं तु गुणसमिद्धं, पयहित्तु महाजसो ॥५०॥

तहैवुगं तवं किञ्चा, अव्वक्खित्तेण चैयसा ।
 महव्वलो रायरिसी, आदाय सिरसो सिरिं ॥५१॥
 कहं धीरो अहेऊहिं, उम्मत्तो व महिं चरे ?
 एए विसेसमादाय, सूरा दढपरक्कमा ॥५२॥
 अच्चन्तनियाणखमा, सच्चा मे भासिया वई ।
 अतरिंसु तरन्तेगे, तरिस्सन्ति अणागया ॥५३॥
 कहिं धीरे अहेऊहिं अत्ताणं परियावसे ।
 सव्वसंगविनिम्मुके, सिद्धे भवइ नीरण ॥५४॥ त्ति वेसि ॥

॥ संजइज्जं समत्तं ॥ १८ ॥

॥ मियापुत्तीयं एगूणवीसइमं समत्तं ॥

सुग्गीवे नयरे रम्मे, काणणुज्जाणसोहिण ।
 राया बलभदित्ति, मिया तस्सग्गमाहिसी ॥१॥
 तेसिं पुत्ते वलसिरी, मियापुत्ते ति विस्सुण ।
 अम्मापिऊण दइए, जुवराया दमीसरे ॥२॥
 नन्दणे सो उ पासाए, कीलए सह इत्थिहिं ।
 देवो दोगुन्दगो चैव, निच्चं मुइयमाणसो ॥३॥
 मणिरयणकोट्टिमतले, पासायालोयणट्टिओ ।
 आलोणइ नगरस्स, चउक्कतियचच्चरे ॥४॥
 अह तत्थ अइच्छन्तं, पासइ समणसंजयं ।
 तवनियमसंजमधरं, सीलइढं गुणआगरं ॥५॥
 तं पेहई मियापुत्ते, दिट्ठीए अणिमिस्साए उ ।
 कहिं मन्नेरिसं रूवं, दिट्ठुपुव्वं मए पुरा ॥६॥
 साहुस्स दरिसणे तस्स, अउक्कवसाणम्मि सोहणे ।
 मोहं गयस्स सन्तस्स, जाइसरणं समुप्पन्नं ॥७॥

(देवलोगचुओ संतो माणुसं भवमागओ ।
 सन्निनाणसमुप्पन्ने जाइं सरइ पुराणियं ॥)
 जाईसरणे समुप्पन्ने, मियापुत्ते महिडिढए ।
 सरइ पुराणियं जाइं, सामणां च पुरा कयं ॥८॥
 विसएहि अरज्जन्तो, रज्जन्तो संजमंमि य ।
 अम्मापियरमुवागम्म, इमं वयणमब्बवी ॥९॥

सुयाणि मे पंच महव्वयाणि,
 नरएसु दुक्खं च तिरिक्खजोणिसु ।

मिच्चिण्णकामो मि महणवाओ,
 अणुजाणह पव्वइस्सामि अम्मो ! ॥१०॥

अम्भताय ! मए भोगा, भुत्ता विसफलोवमा ।
 पच्छा कडुयविवागा, अणुबन्धदुहावहा ॥११॥
 इमं सरीरं अणिच्चं, असुइं असुइसंभवं ।
 असासयावासमिणां, दुक्खकेसाण भायणां ॥१२॥
 असासए सरीरंमि, रइं नोवलभामहं ।
 पच्छा पुरा व चइयव्वे, फेणुवुव्वसन्निमे ॥१३॥
 माणुसत्ते असारंमि, वाहीरोगाण आलए ।
 जरामरणघत्थंमि, खणंपि न रमामहं ॥१४॥
 जम्मं दुक्खं जरा दुक्खं, रोगाणि मरणाणि य ।
 अहो दुक्खो हु संसारो, जत्थ कीसन्ति जन्तुणो ॥१५॥
 खेत्तां वत्थुं हिरणां च, पुत्तदारं च बन्धवा ।
 चइत्ताणां इमं देहं, गन्तव्वमवसस्स मे ॥१६॥
 जहा किम्मागफलाणां, परिणामो न सुन्दरो ।
 एवं भुत्ताण भोगाणां, परिणामो न सुन्दरो ॥१७॥
 अद्धाणां जो महंतं तु, अप्पाहेओ पवज्जइ ।
 गच्छन्तो सो दुही होइ, छुहातएहाए पीडिओ ॥१८॥

एवं धम्मं अकाऊणं, जो गच्छइ परं भवं ।
 गच्छन्तो सो दुही होइ, वाहीरोगेहिं पीडिओ ॥१६॥
 अद्धाणं जो महंतं तु, सपाहेओ पवज्जइ ।
 गच्छन्तो सो सुही होइ, छुहातण्हाविवज्जिओ ॥२०॥
 एवं धम्मं पि काऊणं, जो गच्छइ परं भवं ।
 गच्छन्तो सो सुही होइ, अप्पकम्मे अव्येयणे ॥२१॥
 जहा गेहे पलित्तम्मि, तस्स गेहस्स जो पट्ठ ।
 सारभण्डाणि नीरोइ, असारं अवउज्झइ ॥२२॥
 एवं लोए पलित्तम्मि, जराए मरणेण ष ।
 अप्पाणं तारइस्सामि, तुम्हेहिं अणुमन्निओ ॥२३॥
 तं विन्तम्माम्भियरो, सामणं पुत्त ! दुच्चरं ।
 गुण्णं तु सहस्साइं, धारेयव्वाइं^१ भिक्खुणा ॥२४॥
 समया सव्वभूएसु, सत्तुमित्तेसु वा जगे ।
 पाणाइवायविरई, जावज्जीवाए दुक्करं ॥२५॥
 निच्चकालप्पमत्तेणं, मुसावायविवज्जणं ।
 भासियव्वं हियं सच्चं, निच्चाउत्तेणं दुक्करं ॥२६॥
 दन्तसोहणमइस्स, अदत्तस्स विवज्जणं ।
 अणवज्जेसणिज्जस्स, गिरहणा अवि दुक्करं ॥२७॥
 विरई अब्भचेरस्स, कामभोगरसन्नुणा ।
 उगं महव्वयं बम्भं, धारेयव्वं सुदुक्करं ॥२८॥
 धणधन्नपेसवग्गेसु, परिग्गहविवज्जणं ।
 सव्वारम्भपरिच्चाओ, निम्ममत्तं सुदुक्करं ॥२९॥
 चउव्विहे वि आहारे, राईभोयणवज्जणा ।
 सन्निहीसंचओ चेव, वज्जेयव्वो सुदुक्करं ॥३०॥

लुहा तणहा य सीउणहं, दंसमसअवेयणा ।
 अक्रोसा दुक्खसेज्जा य, तणफासा जल्लमेव य ॥३१॥
 तालणा तज्जणा चेव, वहबन्धपरीसहा ।
 दुक्खं भिक्खायरिया, जायणा य अलाभया ॥३२॥
 कावोया जा इमा वित्ती, केसलोओ य दारुणो ।
 दुक्खं बम्भव्वयं घोरं, धारेउं य 'महप्पणो ॥३३॥
 सुहोइओ तुमं पुत्ता, ! सुकुमालो सुमज्जिओ ।
 न हुसि पभू तुमं पुत्ता, सामणणमणुपालियं^१ ॥३४॥
 जाघज्जीवमविस्सामो, गुणाणां तु महब्भरो ।
 गुरु उ लोहभारुव्व, जो पुत्ता होइ दुव्वहो ॥३५॥
 आगासे गंगसोउव्व, पडिसोउव्व दुत्तरो ।
 बाहाहिं सागरो चेव, तरियव्वो गुणोदही ॥३६॥
 वालुया कवले चेव, निरस्साए उ संजमे ।
 असिधारागमणां चेव, दुक्करं चरिउं तवो ॥३७॥
 अहीवेगन्तदिट्ठीए, चरित्ते पुत्त ! दुक्करो ।
 जवा लोहमया चेव, चावेयव्वा सुदुक्करं ॥३८॥
 जहा अग्गिसिहा दित्ता, पाउं होइ सुदुक्करा ।
 तहा दुक्करं करेउं जे, तारुणो समणत्तणां ॥३९॥
 जहा दुक्खं भरेउं जे, होइ वायस्स कोत्थलो ।
 तहा दुक्खं करेउं जे, कीवेणां समणत्तणां ॥४०॥
 जहा तुलाए तोलेउं, दुक्करो मन्दरो गिरी ।
 तहा निहुयनीसंकं, दुक्करं समणत्तणां ॥४१॥
 जहा भुयाहिं तरिउं, दुक्करं रयणायरो ।
 तहा अणुवसन्तेणां, दुक्करं दमसागरो ॥४२॥

भुंज माणुस्सए भोगे, पंचलक्खणए तुमं ।
 भुत्ताभोगी तओ जाया ! पच्छा धम्मं चरिस्ससि ॥४३॥
 सो वेइ अम्मापियरो, एवमेयं जहा फुडं ।
 इह लोए निष्पिवासस्स, नत्थि किञ्चिवि दुक्करं ॥४४॥
 सारीरमाणसा चेव, वेयणाओ अनन्तसो ।
 मए सोढाओ भीमाओ, असइं दुक्खभयाणि य ॥४५॥
 जरामरणकन्तारे, चाउरन्ते भयागरे ।
 मए सोढाणि भीमाणि, जम्माणि मरणाणि य ॥४६॥
 जह इहं अगणी उएहो, एत्तोऽणन्तगुणो तहिं ।
 नएएसु वेयणा उएहा, अस्साया वेइया मए ॥४७॥
 जहा इहं इमं सीयं, एत्तोऽणन्तगुणे तहिं ।
 नएएसु वेयणा सीया, अस्साया वेइया मए ॥४८॥
 कन्दन्तो कंदुकुम्भीसु, उड्डपाओ अहोसिरे ।
 हुयासणे जलन्तम्मि, पक्कपुव्वो अणन्तसो ॥४९॥
 महादवग्गिसंकासे, मरुंमि वइरबालुए ।
 कदम्बवालुयाए य, दड्डपुव्वो अणन्तसो ॥५०॥
 रसन्तो कन्दुकुम्भीसु, उड्डं तद्धो अबन्धवो ।
 करवत्ताकरकयाईहिं, छिन्नपुव्वो अणन्तसो ॥५१॥
 अइतिक्खकएट्ठाइरणे, तुंगे सिम्बलिपायवे ।
 खेवियं पासबद्धेरां, कड्डोकड्डाहिं दुक्करं ॥५२॥
 महाजन्तेसु उच्छ वा, आरसन्तो सुभेरवं ।
 पीलिओ मि सकम्मेहिं, पावकम्मो अणंतसो ॥५३॥
 कूवन्तो कोलसुणएहिं, सामेहिं सबलेहि य ।
 पाडिओ फालिओ छिन्नो, विप्फुरन्ते अणेगसो ॥५४॥

असीहि अयसिवरणाहिं, भल्लेहिं पट्टिसेहि य ।
 छिन्नो भिन्नो विभिन्नो य, ^१ओइरणो पावकम्मुणा ॥५५॥
 अवसो लोहरहे जुत्तो, जलन्ते समिलाजुए ।
 चोइओ तोत्तजुत्तेहिं, रोज्झो वा जह पाडिओ ॥५६॥
 हुयासणे जलन्तम्मि, चियासु महिसो विव ।
 दडढो पक्को य अवसो, पावकम्मेहि पाविओ ॥५७॥
 वला संडासतुण्डेहिं, लोहत्तुण्डेहिं पक्खिहिं ।
 विलुत्तो विलवन्तोऽहं, ढंकगिद्धेहिऽणन्तसो ॥५८॥
 तण्हाकिलन्तो धावन्तो, पत्तो वेयरणिं नदिं ।
 जलं पाहन्ति चिन्तन्तो, खुरधाराहिं विवाइओ ॥५९॥
 उण्हाभितत्तो संपत्तो, असिपत्तं महावरं ।
 असिपत्तेहिं पडन्तेहिं, छिन्नपुण्वो अणेगसो ॥६०॥
 मुग्गरेहिं मुसंडीहिं, सुलेहिं मुसलेहिं य ।
 गयासंभग्गत्तेहिं, पत्तं दुक्खं अणन्तसो ॥६१॥
 खुरेहिं तिक्खधाराहिं, लुरियाहिं कप्पणीहि य ।
 कप्पिओ फालिओ छिन्नो, उक्कित्तो य अणेगसो ॥६२॥
 पासेहिं कूडजालेहिं, मिओ वा अवसो अहं ।
 वाहिओ बद्धरूद्धो य, ^२बहुसो चेव विवाइओ ॥६३॥
 गलेहिं मगरजालेहिं, मच्छो वा अवसो अहं ।
 उल्लिओ फालिओ गहिओ, मारिणो य अणन्तसो ॥६४॥
 विदंसणहिं जालेहिं, लेप्पाहिं सउणो विव ।
 गहिओ लग्गो बद्धो य, मारिओ य अणन्तसो ॥६५॥
 कुहाडफरसुमाईहिं, वड्ढईहिं दुमो विव ।
 कुट्टिओ फालिओ छिन्नो, तच्छिओ य अणन्तसो ॥६६॥

चवेडमुट्टिमाईहिं कुमारेहिं, अयं पिव ।
 ताडिओ कुट्टिओ भिन्नो, चुण्णिओ य अणन्तसो ॥६७॥
 तत्ताइं तम्बलोहाइं, तउयाइं सीसयाणि य ।
 पाइओ कलकलन्ताइं, आरसंतो सुमेरवं ॥६८॥
 तुहं पियाइं मंसाइं, खण्डाइं सोलगाणि य ।
 खाविओ मि समंसाइं, अग्गिवण्णाइऽण्णसो ॥६९॥
 तुहं पिया सुरा सीहू, मेरओ य महुणि य ।
 पाइओ मि जलन्तीओ, वसाओ रुहिराणि य ॥७०॥
 निच्चं भीएण तत्थेण, दुहिएण वहिएण य ।
 परमा दुहसंबद्धा, वेयणा वेइया मए ॥७१॥
 तिक्कचण्डप्पगाढाओ, घोराओ अइदुस्सहा ।
 महब्भयाओ भीमाओ, नरएसु वेइया मए ॥७२॥
 जारिसा माणुसे लोए, ताया ! दीसन्ति वेयणा ।
 एत्तो अणन्तगुणिया, नरएसु दुक्खवेयणा ॥७३॥
 सव्वभवेसु अस्साया, वेयणा वेइया मए ।
 निमेसन्तरमित्तं पि, जं साता नत्थि वेयणा ॥७४॥
 तं विन्तऽम्मापियरो, छन्देणं पुत्त ! पव्वया ।
 नवरं पुण सामण्णे, दुक्खं निप्पडिकम्मया ॥७५॥
 सो वेइ अम्मापियरो ! एवमेयं जहा फुडं ।
 पडिकम्मं को कुणइ, अरण्णे मियपक्खिणं ॥७६॥
 एगब्भूए अरण्णे व, जहा उ चरइ मिगे ।
 एवं धम्मं चरिस्सामि, संजमेण तवेण य ॥७७॥
 जया मिगस्स आयंको, महारण्णंमि जायइ ।
 अच्छंतं रुक्खमूलंमि, को णं ताहे तिगिच्छई ॥७८॥
 को वा से ओसहं देइ, को वा से पुच्छइ सुहं ?
 को से भरां च पाणां वा, आहरित्तं पणामए ? ॥७९॥

जया से सुही होइ, तथा गच्छइ गोयरं ।
 भक्तपाणस्स अट्ठाण, वल्लराणि सराणि य ॥८८॥
 खाइत्ता पाणियं पाउं, वल्लरेहिं सरेहि य ।
 भिगचारियं चरित्ताणं, गच्छइ भिगचारियं ॥८९॥
 एवं समुट्ठिओ भिक्खू, एवमेव अणेगए ।
 भिगचारियं चरित्ताणं, उड्ढं पक्कमई दिसं ॥९०॥
 जहा मिए एग अणेगचारी,
 अणेगवासे धुवगोयरे य ।
 एवं मुणी गोयरियं पविट्ठे,
 नो हीलए नो वि य खिसएज्जा ॥९१॥
 भिगचारियं चरिस्सामि, एवं पुत्ता ! जहासुहं ।
 अम्मापिऊहिऽणुत्ताओ, जहाइ उवहिं तओ ॥९२॥
 भिगचारियं चरिस्सामि, सव्वदुक्खविमोक्खणिं ।
 तुब्भेहिं अम्भणुत्ताओ, गच्छ पुत्त ! जहासुहं ॥९३॥
 एवं सो अम्मापियरो, अणुमाणित्ताण बहुविहं ।
 ममत्तं छिन्दइ ताहे, महानागो व्व कंचुयं ॥९४॥
 इइढी वित्तं च मित्ते य, पुत्तदारं च नायओ ।
 रेणुयं व गडे लग्गं, निदधुणित्ताण निग्गओ ॥९५॥
 पंचमहव्वयजुत्तो पंचसमिओ तिगुत्तिगुत्तो य ।
 सव्विन्तरवाहिरए तवोकम्मंसि उज्जुओ ॥९६॥
 निम्ममो निरहंकारो, निस्संगो चत्तागारवो ।
 समो य सव्वभूएसु, तसेसु थावरेसु य ॥९७॥
 लाभालाभे सुहे दुक्खे, जीविण मरणे तहा ।
 समो निन्दापसंसागु, तहा माणावमाणओ ॥९८॥

गारवेसुं कसाएसुं, दण्डसल्लभएसु य ।
 नियत्तो हाससोगाओ, अनियाणो अवन्धणो ॥६१॥
 अणिस्सिओ इहं लोए, परलोए अणिस्सिओ ।
 वासीचन्दणकप्पो य, असणे अणसणे तथा ॥६२॥
 अप्पसत्येहिं दारेहिं, सव्वओ पिहियासवे ।
 अज्झप्पज्झाणजोगेहिं, पसत्थदमसासणे ॥६३॥
 एवं नारेण चरणेण, दंसणेण तवेण य ।
 भावणाहिं य सुद्धाहिं, सम्मं भावित्तु अप्पयं ॥६४॥
 बहुयाणि उ वासाणि, सामरणमणुपालिया ।
 मासिएण उ भत्तेण, सिद्धिं पत्तो अणुसरं ॥६५॥
 एवं करन्ति संबुद्धा, पण्डिया पवियक्खणा ।
 विणिअट्टन्ति भोगेसु, मियापुत्ते जहारिस्सी ॥६६॥

महाप्पभावस्स महाजसस्स,
 मियाइपुत्तस्स निसम्म भासियं ।
 तवप्पहाणं चरियं च उत्तमं,
 गइप्पहाणं च तिलोगविस्सुतं ॥६७॥
 वियाणिया दुक्खविवद्धणं धरां,
 ममत्तवन्धं च महाभयावहं ।
 सुहावहं धम्मधुरं अणुत्तरं,
 धारेज्ज निव्वाणगुणावहं महं ॥६८॥
 ॥मियापुत्तीयं समत्तं ॥१६॥

॥अह महानियंठिज्जं वीसइमं अज्झयणं ॥

सिद्धाण नमो किच्चा, संजयाणं च भावओ ।
 अन्थधम्मगइं तच्च अणुसट्ठिं सुणेह मे ॥१॥

पभूयरयणो राया, सेणिओ मगहाहिवो ।
 विहारजत्तं निज्जाओ, मण्डिकुच्छिसि चेइए ॥२॥
 नाणादुमलयाइएणां, नाणापक्खिनिसेवियं ।
 नाणाकुसुमसंछयं उज्जाणां नन्दणोवमं ॥३॥
 नत्थ सो पासइ साहुं संजयं सुसमाहियं ।
 निसच्चं रुक्खमूलम्मि, सुकुमालं मुहोइयं ॥४॥
 तत्थ रुवं तु पासित्ता, राइणो तम्मि संजए ।
 अच्चन्तपरमो आसी, अउलो रुवविम्हओ ॥५॥
 अहो वरणो अहो रुवं, अहो अज्जस्स सोमया ।
 अहो खन्धी अहो मुत्ती, अहो भोगे असंगया ॥६॥
 तस्स पाए उ वन्दित्ता, काऊण य पयाहिणां ।
 नाइदूरमणासजे, पंजली पडिपुच्छइ ॥७॥
 तरुणो सि अज्जो ! पव्वइओ, भोगकालम्मि संजया ।
 उवट्ठिओ सि सामरणे, पयमट्ठं सुणेमि ता ॥८॥
 अणाहोमि महाराय, नाहो मज्झ न विज्जइ ।
 अणुकम्पगं सुहिं वावि, कंचि'नामिसमेमहं ॥९॥
 तओ सो पहसिओ राया, सेणिओ मगहाहिवो ।
 एवं ते इड्ढिमन्तस्स, कहं नाहो न विज्जइ ॥१०॥
 होमि नाहो भयंताणां, भोगे भुंजाहि संजया !
 मित्तनाइपरिवुडो माणुस्सं खु सुदुल्लहं ॥११॥
 अप्पणा वि अणाहो सि, सेणिया ! मगहाहिवा !
 अप्पणा अणाहो सन्तो, कहं नाहो भविस्ससि ? ॥१२॥
 एवं वुत्तो नरिन्दो सो, सुसंभन्तो सुविम्हिओ ।
 वयणां अस्सुयपुव्वं, साहुणा विम्हयन्निओ ॥१३॥

अस्सा हत्थी मणुस्सा मे, पुरं अन्तेउरं च मे ।
 भुंजामि माणुसे भोगे, अणा इस्सरियं च मे ॥१४॥
 एरिसे सम्पयग्गम्मि, सव्वकामसमप्पिण ।
 कहं अणाहो भवइ, मा हु भन्ते ! मुसं वण ॥१५॥
 न तुमं जाणे अणाहस्स, अत्थं पोत्थं च पत्थिवा !
 जहा अणाहो भवइ, सणाहो वा नराहिवा ॥१६॥
 सुणेह मे महाराय, अव्वक्खित्तेण चेयसा ।
 जहा अणाहो भवई, जहा मेअ पवत्तियं ॥१७॥
 कोसम्बी नाम नयरी, पुराणपुरभेयणी ।
 तत्थ आसी पिया मज्झ, पभूयधणसंचओ ॥१८॥
 पढमे वण महाराय, अउला मे अच्छिवेयणा ।
 अहोत्था विउलो दाहो, सव्वगत्तेसु पंत्थिवा ॥१९॥
 सत्थं जहा परमत्तिक्खं, सरीरविवरंतरे ।
 १ आवीलिज्ज अरी कुद्धो, एवं मे अच्छिवेयणा ॥२०॥
 तियं मे अन्तरिच्छं च, उत्तमंगं च पीडइ ।
 इन्दासणिसमा घोरा, वेयणा परमदारुणा ॥२१॥
 उवट्ठिया मे आयरिया, विज्जाप्रन्ततिगिच्छया ।
 अधीया सत्थकुसला, मन्तमूलविसारया ॥२२॥
 ते मे तिगिच्छं कुव्वन्ति, चाउप्पायं जहाहियं ।
 न य दुक्खा विमोयन्ति, एसा मज्झ अणाहया ॥२३॥
 पिया मे सव्वसारंभि, दिज्जाहि मम कारणा ।
 न य दुक्खा विमोएइ, एसा मज्झ अणाहया ॥२४॥
 माया य मे महाराय, पुत्तसोगदुहट्ठिया ।
 न य दुक्खा विमोएइ, एसा मज्झ अणाहया ॥२५॥

भाग्रयो मे महाराय, सगाजेदृकणिदृगा ।
 न य दुक्खा विमोयन्ति, एसा मज्झ अणाहया ॥२६॥
 भइणीओ मे महाराय, सगा जेदृकणिदृगा ।
 न य दुक्खा विमोयन्ति, एसा मज्झ अणाहया ॥२७॥
 भास्त्रिया मे महाराय, अणुरत्ता अणुव्वया ।
 अंसुपुण्णेहिं नयणेहिं, उरं मे परिसिचइ ॥२८॥
 अन्नं पाणं च एहाणं च, गन्धमल्लविलेदरां ।
 मए तायमणायं वा, खा वाला जोबभुंजइ ॥२९॥
 खरां पि मे मल्लाराय, पासाओ वि न फिट्ठइ ।
 न य दुक्खा विमोएइ, एसा मज्झ अणाहया ॥३०॥
 तओ हे एवमाहंसु, दुक्खमाहु पुणो पुणो ।
 वेयणा अणुभविं जे, रससारम्मि अणुन्तए ॥३१॥
 सइं च जइ मुच्चेजा, वेयणा विउत्ता इओ ।
 खन्तो दन्तो निरारम्भो, पव्वए अणगारियं ॥३२॥
 एवं च चिन्तइत्ताणं, पसुत्तो मि नराहिवा ।
 परियत्तन्तीए राईए, वेयणा मे खयं गया ॥३३॥
 तओ कल्ले पभायम्मि, आपुच्छित्ताण बन्धवे ।
 खन्तो दन्तो निरारम्भो, पव्वइओऽणगारियं ॥३४॥
 ततो हं नाहो जाओ, अप्पणो य परस्स य ।
 सव्वेसिं चेव भूयाणां, तसाण थावराण य ॥३५॥
 अप्पा नई वेयरणी, अप्पा मे कूडसामली ।
 अप्पा कामदुहा धेणू, अप्पा मे नन्दरां वरां ॥३६॥
 अप्पा कत्ता विकत्ता य, दुहाण य सुहाण य ।
 अप्पा मित्तममित्तं च, दुप्पट्ठियसुपट्ठिओ ॥३७॥
 इमा हु अन्ना वि अणाहया निवा,
 तमेगचित्तो निहुओ सुरेहि ।

नियण्ठधम्मं लहियाणं वि जहा,
 सीयन्ति एगे बहुकायरा नरा ॥३८॥
 जो पव्वइत्ताणं महव्वयाइं,
 सम्मं च नो फासयइ पमाया ।
 अनिग्गहणा य रसेसु गिद्धे,
 न मूलओ छिन्नइ बन्धणां से ॥३९॥
 आउत्तया जस्स न अत्थि काइ,
 इरियाए भासाए तहेसणाए ।
 आयाणनिकखेवदुगंछणाए,
 न धीरजायं अणुजाइ मग्गं ॥४०॥
 चिरं पि से मुण्डरुई भविता,
 अथिरव्वए तवनियमेहि भट्टे ।
 चिरं पि अप्पणा किलेसइत्ता,
 न पारए होइ हु संपराए ॥४१॥
 पोहे व मुट्ठी जह से असारे,
 अयन्तिए कूडकहावणे वा ।
 राढामणी वेरुलियप्पगासे,
 अमहग्घए होइ हु जाणएसु ॥४२॥
 कुसीललिंगं इह धारइत्ता,
 इसिज्झयं जीविय वूहइत्ता ।
 असंजए संजयलप्पमाणो,
 विणिघायमागच्छइ से चिरंपि ॥४३॥
 विसं तु पीयं जह कालकूडं,
 हणाइ सत्थं जह कुग्गहीयं ।

एसो वि धम्मो विसओववन्नो,
 हणाइ वेयाल इवाविवन्नो ॥४४॥
 जे लक्खणं सुविण पउंजमाणे,
 निमित्तकोऊहलसंपगाढे ।
 कुहेडविज्जासवदारजीवी,
 न गच्छई सरणं तम्मि काले ॥४५॥
 तमंतमेणेव उ से असीले,
 सया दुही विप्परियासुवेइ ।
 संधावई नरगतिरिक्खजोणिं
 मोणं विराहित्तु असाहुरूवे ॥४६॥
 उद्देसियं कीयगडं नियागं,
 न मुंचई किंन्चि अणेसणिज्जं ।
 अग्गी विवा सव्वभक्खी भवित्ता,
 इत्तो चुए गच्छइ कट्ठु पावं ॥४७॥
 न तं अरी कंठेत्ता करेइ,
 जं से करे अप्पणिया दुरप्पया ।
 से नाहिइ मच्चुमुहं तु पत्ते,
 पच्छाभितावेण दयाविहूणो ॥४८॥
 निरट्टिया नग्गरुई उ तस्स,
 जे उत्तमट्टे विवज्जासमेइ ।
 इमे वि से नत्थि परे वि लोए,
 दुहिओ वि से भिज्जइ तत्थ लोए ॥४९॥
 एमेव हा छन्दकुसीलरूवे,
 भग्गं विराहेत्तु जिणुत्तमाणं ।
 कुररी विवा भोगरसाणुगिद्धा,
 निरट्टसोया परियासमेइ ॥५०॥

सोच्चाण मेहावि ! सुभासियं इमं,
 अणुसासरां नाणगुणोववेयं ।
 मग्गं कुसीलाण जहाय सव्वं,
 महानियसूटाण वए पहेण ॥५१॥
 चरित्तमायारगुणन्निए तओ,
 अणुत्तरं संजम फालियाणं ।
 निरासवे संखवियाण कम्मं,
 उवेइ ठाणं विउल्लुत्तामं धुव्वं ॥५२॥
 एवुग्गदन्ते वि महातवोधणे,
 महामुणी महापइत्ते महाग्रसे ।
 महानियण्ठिज्जमिणं महासुयं,
 से काहए महया वित्थरेणं ॥५३॥
 तुट्ठो य सेणिओ राया,
 इणमुदाहु कयंजली ।
 अणाहत्तं जहाभूयं,
 सुट्ठु मे उवदंसियं ॥५४॥
 तुज्झं सुलद्धं खु मणुस्सजम्मं,
 लाभा सुलद्धा य तुमे महेसी ।
 तुव्वे सणाहा य सबन्धवा य,
 जं मे ठिया मग्गि जिणुत्तमाणं ॥५५॥
 तं सि नाहो अणाहाणां,
 सव्वभूयाण संजया ।
 खामेमि ते महाभाग,
 इच्छामि अणुसासिउं ॥५६॥
 पुच्छिऊण मए तुव्वं,
 आणविग्गो उ जो कओ ।

निमन्तिया य भोगेहिं,
 तं सत्त्वं मरिसेहि मे ॥५७॥
 एवं थुणित्ताण स रायसीहो,
 अण्णगारसीहं परमाइ भत्तिण ।
 सओरोहो सपरियणो सबन्धवो,
 धम्माणुरत्तो विमलेण चेत्यसा ॥५८॥
 ऊससियरोमकूवो,
 काऊण य पयाहिणं ।
 अभिवन्दिऊण सिरसा,
 अइयाओ नराहिवो ॥५९॥
 इयरो वि गुणसमिद्धो,
 तिगुत्तिगुत्तो तिदण्डविरओ य ।
 विहग इव विप्पमुक्को,
 विहरइ वसुहं विगयमोहो ॥६०॥ त्ति वेसि
 ॥ महानियंठिज्जं समत्तं ॥

॥ अह समुद्दपालीयं एगवीसइमं अज्झयणं ॥
 चम्पाए पालिए नाम, सावए आसिवाणिण ।
 महावीरस्स भगवओ, सीसे सो उ महप्पणो ॥१॥
 निग्गन्थे पावयणे, सावए से वि कोविण ।
 पोएण ववहरन्ते, पिहुण्डं नगरमागए ॥२॥
 पिहुण्डे ववहरन्तस्स, चाणिओ देइ धूयरं ।
 तं ससत्तां पइगिज्झ, सदेसमह पत्थिओ ॥३॥
 अह पालियस्स घरिणि, समुद्दम्मि पसवइ ।
 अह बालए तहिं जाए, समुद्दपालि त्ति नामए ॥४॥
 खेमेण आगए चम्पं, साविण चाणिण घरं ।
 संवड्ढई तस्स घरे, दारए से सुहोइए ॥५॥

वावत्तरी कलाओ य, सिक्खई नीइकोविए ।
 जोव्वणेण य संपन्ने, सुरुवे पियदंसणे ॥६॥
 तस्स रुववइं भज्जे, पिया आणेइ रुविणिं ।
 पासाए कीलए रम्मे, देवो दोगुन्दओ जहा ॥७॥
 अह अन्नया कयाई, पासायालोयणे ठिओ ।
 वज्झमण्डणसोभागं, वज्झं पासइ वज्झगं ॥८॥
 तं पासिऊण संवेगं^१, समुद्दपालो इणमव्ववी ।
 अहोऽसुहाण कम्माणां, निज्जाणं पावगं इमं ॥९॥
 संबुद्धो सो तहिं भगवं, परमसंवेगमागओ ।
 आपुच्छेऽम्मापियरो, पव्वए अणगारियं ॥१०॥

जहित्तु संगं च महाकिलेसं,
 महन्तमोहं कसिणं भयावहं ।
 परियायधम्मं चऽभिरोयएज्जा,
 वयाणि सीलाणि परीसहे य ॥११॥
 अहिंससच्चं च अतेणगं च,
 तत्तो य वम्मं अपरिग्गहं च ।
 पडिवज्जिया पंचमहव्वयाणि,
 चरिज्ज धम्मं जिणदेसियं विऊ ॥१२॥
 सव्वेहिं भूएहिं दयानुकंपी,
 खन्तिकखमे संजयवम्भयारी ।
 सावज्जजोगं परिवज्जयन्तो,
 चरिज्ज भिक्खू सुसमाहिइन्दिए ॥१३॥
 कालेण कालं विहरेज्ज रुट्ठे,
 बलाबलं जाणिय अप्पणो य ।

सीहो व सद्देण न संतसेज्जा,
 वयजोग सुच्चा न असम्भमाहु ॥१४॥
 उवेहमाणो उ परिव्वइज्जा,
 पियमप्पियं सव्व तितिकखइज्जा ।
 न सव्व सव्वत्थ ऽभिरोयइज्जा,
 न यावि पूयं गरहं च संजण ॥१५॥
 अणोगच्छन्दाइह माणवेहिं,
 जे भावओ संपगरेइ भिक्खू ।
 भयमेरवा तत्थ उइन्ति भीमा,
 दिव्वा मणुस्सा अदुवा तिरिच्छंका ॥१६॥
 परीसहा दुव्विसहा अणोगे,
 सीयन्ति जत्था बहुकायरा नरा ।
 से तत्थ पत्ते न वहिज्ज भिक्खू,
 संगामसीसे इव नागराया ॥१७॥
 सीओसिणा दंसमसा य फासा,
 आयंका विविहा फुसन्ति देहं ।
 अकुक्कुओ तत्थ ऽहियासहेज्जा,
 रयाइ खेविज्ज पुरे कयाइं ॥१८॥
 पहाय रागं च तहेव दोसं,
 मोहं च भिक्खू सययं वियक्खणो ।
 मेरुव्व वाणण अकम्पमाणो,
 परीसहे आयगुत्ते सहेज्जा ॥१९॥
 अणुन्नण नावणण महेसी,
 न यावि पूयं गरहं च संजण ।
 स उज्जुभावं पडिवज्ज, संजण,
 निव्वाणमगं विरण उवेइ ॥२०॥

अरइरइसहे पहीणसंथवे,
 विरए आयहिण पहाणवं ।
 परमदुपएहिं चिदुई,
 छिन्नसोए अममे अकिंचणे ॥२१॥
 विवित्तलयणाइ भएज ताई,
 निरोवलेवाइ असंथडाइं ।
 इसीहि चिणणाइ महायसेहिं,
 काएण फासेज परीसहाइं ॥२२॥
 सन्नाणनाणोवगए महेसी,
 अखुत्तरं चरिउं भम्मसंनयं ।
 अणुत्तरे नाणधरे जसंसी,
 ओभासई सूरिण वऽन्तलिकखे ॥२३॥
 दुविहं खवेउण य पुणणपावं,
 निरंगणे सव्वओ विप्पमुक्के ।
 तरित्ता समुदं व महाभवोहं,
 समुदपाले अपुणागमं गए ॥२४॥ त्ति वेमि
 ॥ समुदपालियं समत्तं ॥

॥ अह रहनेमिज्जं बावीसइमं अउभयणं ॥

सोरियपुरम्मि नयरे, आसि राया महिड्ढिण ।
 वसुदेवु त्ति नामेणं, रायलक्खणसंजुए ॥१॥
 तस्स भज्जा दुवे आसी, रोहिणी देवई तहा ।
 तासिं दोणहं दुवे पुत्ता, इट्ठा रामकेसवा ॥२॥
 सोरियपुरम्मि नयरे, आसि राया महिड्ढिण ।
 समुदविजय नामं, रायलक्खणसंजुए ॥३॥

तस्स भज्जा सिवा नाम, तीसे पुत्तो महायसो ।
 भगवं अरिट्ठनेमि त्ति, लोगनाहे दमीसरे ॥३॥
 सोऽरिट्ठनेमिनामो उ, लक्खणस्सरसंजुओ ।
 अट्ठसहस्सलक्खणधरो, गोयमो कालगच्छवी ॥५॥
 वज्जरिसहसंघयणो, समचउरंसो भसोदरो ।
 तस्स रायमईकन्नं, भज्जं जायइ केसवो ॥६॥
 अह सा रायवरकन्ना, सुसीला चारुपेहणी ।
 सव्वलक्खणसंपन्ना, विज्जुसोयामणिप्पभा ॥७॥
 अहाह जणओ तीसे, वासुदेवं महिद्धिद्वं ।
 इहागच्छउकुमारै, जा से कन्नं द्दामिऽहं ॥८॥
 सव्वोसहीहिं एहविओ, कयकोउयमंगलो ।
 दिव्वजुयलपरिहिओ, आभरणेहिं विभूसिओ ॥९॥
 मत्तं च गन्धहत्तिं, वासुदेवस्स जेट्ठं ।
 आरूढो सोहए अहियं, सिरे चूडामणि जहा ॥१०॥
 अह ऊसिएण छत्तेण, चामराहि य सोहिए ।
 दसारचक्रेण य सो, सव्वओ परिवारिओ ॥११॥
 चउरंगिणीए सेणाए, रइयाए जहकमं ।
 तुरियाण सन्निनाएण, दिव्वेणं गगरां फुसे ॥१२॥
 एयारिसाए इद्धिद्वए, जुत्तीए उत्तमाइ य ।
 नियगाओ भवणाओ, निज्जाओ वण्हिपुंगवो ॥१३॥
 अह सो तत्थ निज्जन्तो, दिस्स पाणे भयद्दुए ।
 वाडेहिं पंजरेहिं च, सन्निरुद्धे सुदुक्खिए ॥१४॥
 जीवियन्तं तु सम्पत्ते, मंसट्ठा भक्खियवव्वए ।
 पासित्ता से महापन्ने, सारहिं इणमव्ववी ॥१५॥
 कस्स अट्ठा इमे पाणा, एए सव्वे सुहेसिणो ।
 वाडेहिं पंजरेहिं च, सन्निरुद्धा य अच्छहिं ! ॥१६॥

अह सारही तओ भणइ, एए भद्दा उ पाणिणो ।
 तुज्झं विवाहकज्जम्मि, भोयावेउं बहुं जणं ॥१७॥
 सोऊण तस्स वयणं, बहुपाणिविणासणं ।
 चिन्तेइ से महापन्नो, साणुक्कोसे जिण हिओ ॥१८॥
 जइ मज्झ कारणा एए, हम्मन्ति सुवहू जिया ।
 न मे एयं तु निस्सेसं, परलोगे भविस्सई ॥१९॥
 सो कुण्डलाण जुयलं, सुत्तणं च महासयो ।
 आभरणाणि य सव्वणि, सारहिस्स पणमए ॥२०॥
 मणपरिणामे य कए, देवा य जहोइयं समोइण्णा ।
 सव्विद्धिटीइ सपरिसा, निक्खमणं तस्स काउं जे ॥२१॥
 देवमय्युस्सपरिवुडो, सीयारयणं तओ समारूढो ।
 निक्खमिय वारगाओ, रेवयम्मि ठिओ भगवं ॥२२॥
 उज्जाणं संपत्तो, ओइण्णो उत्तमाउ सीयाओ ।
 साहस्सीइपरिवुडो, अह निक्खमइ उ चित्ताहिं ॥२३॥
 अह से सुगन्धगन्धीए, तुरियं मउअकुंचिए ।
 सयमेव लुंचई केसे, पंचमुट्ठीहिं समाहिओ ॥२४॥
 वासुदेवो य णं भणइ, लुत्तकेसं जिइन्दियं ।
 इच्छियमणोरहं तुरियं, पावसु तं दमीसरा ! ॥२५॥
 नाण्णं दंसण्णं च, चरित्तेण तहेव य ।
 खंतीए मुत्तीए, वड्डमाणो भवाहि य ॥२६॥
 एवं ते रामकेसवा, दसारा य बहू जणा ।
 अरिट्ठणेमिं वन्दित्ता, अभिगया वारगापुरिं ॥२७॥
 सोऊण रायकन्ना, पव्वज्जं सा जिणस्स उ ।
 नीहासा य निराणन्दा, सोगेण उ समुच्छिया ॥२८॥
 राईमई विचिन्तेइ, धिरत्थु मम जीवियं ।
 जाऽहं तेण परिच्चत्ता, सेयं पव्वइउं मम ॥२९॥

अह सा भमरसन्निभे, कुञ्चफणगसाहिण ।
 सयमेव लुंचइ केसे, धिइमंती ववस्सिया ॥३०॥
 वासुदेवो य एं भणइ, लुत्तकेसं जिइन्दियं ।
 संसारसागरं घोएं, तर कन्ते लहुं लहुं ॥३१॥
 सा पव्वइया सन्ती, पव्वावेसी तहिं बहुं ।
 सयणं परियणं चेव, सीलवन्ता बहुस्सुया ॥३२॥
 गिरिरेवतयं जन्ती, वासेणुल्ला उ अन्तरा ।
 वासन्ते अन्धयारम्मि, अन्तो लयणस्स सा ठिया ॥३३॥
 चीवराइं विसारन्ती, जहा जायत्ति पासिया ।
 रहनेमि भग्गचित्तो, पच्छा दिट्ठो य तीइ वि ॥३४॥
 मीया य सा तहिं दट्ठु, एगन्ते संजयं तयं ।
 बाहाहिं काउ संगोप्फं, वेवमाणी निसीयई ॥३५॥
 अह सो वि रायपुत्तो, समुद्विजयंगओ ।
 भीयं पवेवियं दट्ठुं, इमं वक्कं उदाहरे ॥३६॥
 रहनेमी अहं भदे !, सुरूवे ! चारुभासिणी ! ।
 ममं भयाहि सुयणु, न ते पीला भविस्सइ ॥३७॥
 एहि ता भुंजिमो भोए, माणुस्सं खु सुदुल्लहं ।
 भुत्तभोगी पुणो पच्छा, जिणमग्गं चरिस्सिमो ॥३८॥
 दट्ठुण रहनेमिं तं, भग्गुजोयपराजियं ।
 रायमई असम्भन्ता, अप्पाणं संवरे तहिं ॥३९॥
 अह सा रायवरकन्ना, सुट्ठिया नियमव्वण ।
 जाई कुलं च सीलं च ! रक्खमाणीं तयं वण ॥४०॥
 जइ सि रूवेण वेसमणो, लल्लिणनलकूवरो ।
 तहा वि ते न इच्छामि, जइ सि सक्खं पुरंदरो ॥४१॥
 (पक्खंदे जलिअं जोइं, धूमकेउं दुरासयं ।
 वेच्छन्ति वंतयं भोत्तुं, कुले जाया अगंधणा ॥)

धिरत्थु तेऽजसोकाभी, जो तं जीवियकारणा ।
 वन्तं इच्छसि आवेउं, सेयं ते मरणां भवे ॥४२॥
 अहं च भोगरायस्स, तं च सि अन्धगवणिहणो ।
 मा कुले गंधणा होमो, संजमं निहुओ चर ॥४३॥
 जइ तं काहिसि भावं, जा जा दच्छसि नारिओ ।
 वायाइद्धो व्व हढो, अट्ठिअप्पा भविस्ससि ॥४४॥
 गोवालो भण्डवालो वा जहा तद्दव्वणिससरो ।
 एवं अणिससरो तं पि, सामणस्स भविस्ससि ॥४५॥
 (कोहं माणां निगिण्हित्ता, मायं लोभं च सव्वसे ।
 इंदियाइं वसे काउं, अप्पाणं उवसंहरे ॥)
 तीसे सो वयणं सोच्च, संययाए सुभासियं ।
 अंकुसेण जहा नागो, धम्मे संपाडवाइओ ॥४६॥
 मणगुत्तो वयगुत्तो, कायगुत्तो जिइन्दिण ।
 सामणां मिच्चलं फासे, जावज्जीवं दढव्वओ ॥४७॥
 उग्गं तवं चरित्ताणं, जाया दुरिण वि केवली ।
 सव्वं कम्मं खविच्चाणां, सिद्धिं पत्ता अणुत्तरं ॥४८॥
 एवं करेन्ति संबुद्धा, परिड्डया पवियक्खणा ।
 विणियट्ठन्ति भोगेसु, जहा सो पुरिसोत्तमो ॥४९॥ त्ति वेमि

॥ रहनेमिज्जं समत्तं ॥

॥ अहं केसिगोयमिज्जं तेवीसइमं अउभयणं ॥

जिणे पासित्ति नामेणां, अरहा लोगपूइओ ।
 संबुद्धप्पा य सव्वन्नू, धम्मतिथयरे जिणे ॥१॥

१. लोयविस्सुए ! । सव्वन्नु सव्वदंसीय, धम्मतिथयस्सदेस ।

तस्स लोगपदीवस्स, आसि सीसे महायसे ।
 केसी कुमारसमणे, विज्जाचरणपारणे ॥२॥
 ओहिनाणसुए बुद्धे, सीससंघसमाउले ।
 गामाणुगामं रीयन्ते, सावत्थि पुरमागए ॥३॥
 तिन्दुयं नाम उज्जाणां, तम्मि नगरमण्डले ।
 फासुए सिज्जसंधारे, तत्थ वासमुवागए ॥४॥
 अह तेणेव कालेणं धम्मतित्थयरे जिणे ।
 भगवं वद्धमाणि त्ति, सव्वलोगम्मि विस्सुए ॥५॥
 तस्स लोगपदीवस्स आसि सीसे महायसे ।
 भगवं गोयमे नामं, विज्जाचरणपारए ॥६॥
 वारसंगविऊ बुद्धे, सीससंघसमाउले ।
 गामाणुगामं रीयन्ते, से वि सावत्थिमागए ॥७॥
 कोट्टुगं नाम उज्जाणां, तम्मि नगरमण्डले ।
 फासुए सिज्जसंधारे, तत्थ वासमुवागए ॥८॥
 केसी कुमारसमणे, गोयमे य महायसे ।
 उभओ वि तत्थ विहरिंसु, अल्लीणा सुसमाहिया ॥९॥
 उभओ सीससंघाणां, संजयाणां तवस्सिणां ।
 तत्थ चिन्ता समुप्पन्ना, गुणवंताण ताइणां ॥१०॥
 केरिसो वा इमो धम्मो, इमो धम्मो व केरिसो ?
 आयारधम्मपणिही, इमा वा सा व केरिसी ? ॥११॥
 चाउज्जामो य जो धम्मो, जो इमो पंचसिक्खिओ ।
 देमिओ वद्धमाणेण, पासेण य महामुणी ॥१२॥
 अचेलओ य जो धम्मो, जो इमो सन्तरुत्तरो ।
 एगकज्जपवन्नाणां, विसेसे किं नु कारणां ? ॥१३॥

अह ते तत्थ सीसाणां, विन्नाय पदितक्कियं ।
 समागमे कयमई, उभओ केसिगोयमा ॥१४॥
 गोयमे पडिरूवन्नू, सीससंघसमाउले ।
 जेट्ठं कुलमवेक्खन्तो, तिन्दुयं वणमागओ ॥१५॥
 केसी कुमारसमणे, गोयमं दिस्समागयं ।
 पडिरूवं पडिवत्तिं, सम्मं संपडिवज्जइ ॥१६॥
 पलालं फासुयं तत्थ, पंचमं कुसतणाणि य ।
 गोयमस्स मिसेज्जाए, खिप्पं संपणामए ॥१७॥
 केसी कुमारसमणे, गोयमे य महायसे ।
 उभओ निसण्णा सोहन्ति, चन्दसूरसमण्णभा ॥१८॥
 समागया बहु तत्थ, पासण्डा कोउया मिया^१ ।
 गिहत्थाणां अणेगाओ, साहस्सीओ समागया ॥१९॥
 देवदाणवमन्धव्वा, जक्खरक्खसक्किन्नरा ।
 अदिस्साणां च भूयाणां, आसी तत्थ समागमो ॥२०॥
 पुच्छामि ते महाभाग ! केसी गोयममव्ववी ।
 तओ केसिं वुवंतं तु, गोयमो इणमव्ववी ॥२१॥
 पुच्छ भन्ते ! जहिच्छं ते, ^२केसिं गोयममव्ववी ।
 तओ केसी अणुत्ताए, गोयमं इणमव्ववी ॥२२॥
 चाउज्जामो य जो धम्मो, जो इमो पंचसिक्खिओ ।
 देसिओ वद्धमाणेण, पासेण य महामुणी ॥२३॥
 एगकज्जपवन्नाणां विसेसे किं नु कारणां ?
 धम्मे दुविहे मेहावी, कहं विण्णच्चओ न ते ? ॥२४॥
 तओ केसिं वुवन्तं तु, गोयमो इणमव्ववी ।
 पन्ना समिक्खए धम्मं तत्तं तत्तविणिच्छियं ॥२५॥

पुरिमा उज्जुजडा उ, वंक्रजडा य पच्छिमा ।
 मज्झिमा उज्जुपन्ना उ, तेण धम्मो दुहा कए ॥२६॥
 पुरिमाणां दुव्विसुज्झो उ, चरिमाणां दुरणुगालओ ।
 कण्णो मज्झिमगाणां तु, सुविसुज्झो सुपालओ ॥२७॥
 साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो ।
 अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा ! ॥२८॥
 अचेलसो य जो धम्मो, जो इमो सन्तरुत्तरो ।
 देसिओ वद्धमाणेण, पासेण य महाजसा ॥२९॥
 एगकज्जपवन्नाणां, विसेसे किं नु कारणां ।
 लिंगे दुविहे मेहावी, कहं विप्पच्चओ न ते ? ॥३०॥
 केसिमेवं बुवाणां तु, गोयमो इणमव्ववी ।
 विन्नाणेण समागम्म, धम्मसाहणमिच्छियं ॥३१॥
 पच्चयत्थं च लोगस्स, नाणाविहविगप्परां ।
 जत्तत्थं गहणत्थं च, लोमे लिंगपओयरां ॥३२॥
 अह भवे पइन्ना उ, मोक्खसव्वभूयसाहणा ।
 नारां च दंसरां खेव, चरितं चेव निच्छए ॥३३॥
 साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमे ।
 अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा ! ॥३४॥
 अणेगाणां सहस्सारां, मज्जे चिट्ठसि गोयमा !
 ते य ते अभिगच्छन्ति, कहं ते निज्जिया तुमे ? ॥३५॥
 एगे जिण जिया पंच, पंच जिण जिया दस ।
 दसहा उ जिणित्ताणां, सव्वसत्तू जिणामहं ॥३६॥
 सत्तू य इइ के बुत्ते ? केसी गोयममव्ववी ।
 तओ केसिं बुवंतं तु, गोयमो इणमव्ववी ॥३७॥
 एगण्णा अजिण सत्तू, कसाया इन्दियाणि य ।
 ते जिणुत्तु जहानायं, विहरामि अहं मुणी ॥३८॥

साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो ।
 अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा ॥३६॥
 दीसन्ति वहवे लोए, पासबद्धा सरीरिणो ।
 मुक्कपासो लहुब्भूओ, कहं तं विहरसि मुणी ? ॥३७॥
 ते पासे सव्वसो चित्ता, निहन्तूण उवायओ ।
 मुक्कपासो लहुब्भूओ, विहरामि अहं मुणी ॥३८॥
 पासा य इइ के वुत्ता ? केसी गोयममव्ववी ।
 केसिमेवं बुवंतं तु, गोयमो इणमव्ववी ॥३९॥
 रागदोसादओ तिब्बा, नेहपासा भयंकरा ।
 ते छिन्दित्ता जहानायं, विहरामि जहक्कमं ॥४०॥
 साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो ।
 अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा ॥४१॥
 अन्तोहिययसंभूया, लया चिट्ठइ गोयमा ।
 फलेइ विसभक्खीणि, सा उ उद्धरिया कहं ? ॥४२॥
 तं लयं सव्वसो छित्ता, उद्धरित्ता समूत्तियं ।
 विहरामि जहानायं, मुक्को मि विसभक्खणं ॥४३॥
 लया य इइ का वुत्ता ? केसी गोयममव्ववी ।
 केसिमेवं बुवंतं तु, गोयमो इणमव्ववी ॥४४॥
 भवतएहा लया वुत्ता, भीमा भीमफलोदया ।
 तमुद्धिच्चा जहानायं, विहरामि जहासुहं ॥४५॥
 साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो ।
 अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा ॥४६॥
 संपज्जलिया घोरा, अग्गी चिट्ठइ गोयमा !
 जे डहन्ति सरीरत्था, कहं विज्झाविया तुमे ? ॥४७॥

महामेहप्पसूयाओ, गिज्झ वारि जलुत्तमं ।
 सिंचामि सययं तेउं, सिन्ता नो व डहन्ति मे ॥५१॥
 अग्गी य इइ के वुत्ता ? केसी गोयममब्बवी ।
 केसिमेवं बुवन्तं तु गोयमो इणमब्बवी ॥५२॥
 कसाया अग्गिणो वुत्ता, सुयसीलतवो जलं ।
 सुयधारामिहया सन्ता, भिन्ना हु न डहन्ति मे ॥५३॥
 साहु गोयम पन्ना ते ! छिन्नो मे संसओ इमो ।
 अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा ! ॥५४॥
 अयं साहसिओ भीमो, दुट्ठस्सो परिधावई ।
 जंसि गोयम ! आरूढो, कहां तेण न हीरसि ? ॥५५॥
 पधावन्तं निगिण्हामि, सुयरस्सीसमाहियं ।
 न मे गच्छइ उम्मग्गं, मग्गं च पडिवज्झइ ॥५६॥
 आसे य इइ के वुत्ते ? केसी गोयममब्बवी ।
 केसिमेवं बुवंतं तु, गोयमो इणमब्बवी ॥५७॥
 मणो साहसिओ भीमो, दुट्ठस्सो परिधावइ ।
 तं सम्मं तु निगिण्हामि, धम्मसिक्खाइ कन्थगं ॥५८॥
 साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो ।
 अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा ॥५९॥
 कुप्पहा बहवो लोण, जेहिं नासन्ति जन्तुणो ।
 अद्धाणे कह वट्ठन्ते, तं न नाससि गोयमा ? ॥६०॥
 जे य मग्गेण गच्छन्ति, जे य उम्मग्गपट्ठिया ।
 ते सव्वे वेइया मज्जं, तो न नस्सामहं मुणी ॥६१॥
 मग्गे य इइ के वुत्ते ? केसी गोयममब्बवी ।
 केसिमेवं बुवंतं तु, गोयमो इणमब्बवी ॥६२॥

कुप्पवयणपासण्डी, सव्वे उम्मग्गपट्टिया ।
 सम्मग्गं तु जिणक्खायं, एस मग्गे हि उत्तमे ॥६३॥
 साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो ।
 अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा ॥६४॥
 महाउदगवेगेण, बुज्झमाणाण पाणिणं ।
 सरणं गई पइट्ठा य, दीवं कं मन्नसि मुणी ? ॥६५॥
 अत्थि एगो महादीवो, वारिमज्जे महालओ ।
 महाउदगवेगस्स, गई तत्थ न विज्झइ ॥६६॥
 दीवे य इइ के वुत्ते ? केसी गोयमव्ववी ।
 केसिमेवं वुवंतं तु, गोयमो इणमव्ववी ॥६७॥
 जरामरणवेगेणं, बुज्झमाणाण पाणिणं ।
 धम्मो दीवो पइट्ठा य, गई सरणमुत्तमं ॥६८॥
 साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो ।
 अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा ॥६९॥
 अण्णवंसि महोहंसि, नावा विपरिश्चावइ ।
 जंसि गोयम ! आरूढो, कहं पारं गमिस्ससि ? ॥७०॥
 जा उ अस्साविणी नावा, न सा पारस्स गामिणी ।
 जा निरस्साविणी नावा, सा उ पारस्स गामिणी ॥७१॥
 नावा य इइ का वुत्ता ? केसी गोयमव्ववी ।
 केसिमेवं वुवंतं तु, गोयमो इणमव्ववी ॥७२॥
 सरीरमाहु नाव त्ति, जीवो वुच्चइ नाविओ ।
 संसारो अण्णवो वुत्तो, जं तरंति महेस्सिणो ॥७३॥
 साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो ।
 अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा ! ॥७४॥
 अन्धयारे तमे घोरे, चिट्ठन्ति पाणिणो बहू ।
 को करिस्सइ उज्जोयं ? सव्वलोयम्मि पाणिणं ॥७५॥

उगगओ विमलो भाणू, सव्वलोयपभंकरो ।
 सो करिस्सइ उज्जोयं, सव्वलोयम्मि पाणिणं ॥७६॥
 भाणू य इइ के वुत्ते ? केसी गोयममव्ववी ।
 केसिमेवं वुवंतं तु, गोयमो इणमव्ववी ॥७७॥
 उगगओ खीणसंसारो, सव्वन्नू जिणभक्खरो ।
 सो करिस्सइ उज्जोयं, सव्वलोयम्मि पाणिणं ॥७८॥
 साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो ।
 अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा ! ॥७९॥
 सारीरमाणसे दुक्खे, वज्झमाणणा पाणिणं ।
 खेमं सिवमणावाहं, ठाणं किं मन्नसे मुणी ? ॥८०॥
 अत्थि एगं धुवं ठाणं, लोगगम्मि दुरारुहं ।
 जत्थ नत्थि जरा मच्चू, वाहिणो वेयणा तहा ॥८१॥
 ठाणे य इइ के वुत्ते ? केसी गोयममव्ववी ।
 केसिमेवं वुवंतं तु, गोयमो इणमव्ववी ॥८२॥
 निव्वारां ति अवाहं ति, सिद्धी लोगगमेव य ।
 खेमं सिवं अणावाहं, जं चरंति महेसिणो ॥८३॥
 तं ठाणं सासयं वासं, लोयगम्मि दुरारुहं ।
 जं संपप्ता न सोयन्ति, भवोहन्तकरा मुणी ॥८४॥
 साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो ।
 नमो ते संसयातीत ! सव्वसुत्तमहोयही ॥८५॥
 एवं तु संसए छिन्ने ! केसी घोरपरक्कमे ।
 अभिवन्दित्ता सिरसा, गोयमं तु महात्थसं ॥८६॥
 पंचमहव्वयधम्मं, पडिवज्जइ भावओ ।
 पुरिस्स पच्छिमम्मि, मग्गे तत्थ सुहावहे ॥८७॥
 केसीगोयमओ निच्चं, तम्मि आसि समागमे ।
 सुयसीलसमुक्करिस्सो, महत्थत्थविणिच्छओ ॥८८॥

तोसिया परिसा सव्वा, सम्मगं समुवट्ठिया ।
संथुया ते पसीयंतु, भयवं केसिगोयमे ॥८९॥

॥ केसिगोयमिज्जं समत्त ॥ २३ ॥

॥ अहं समिईओ णाम चउवीसइमं अज्झयणं ॥

अट्ठ पवयणमायाओ, समिई गुत्ती तहेव य ।
पंचेव य समिईओ, तओ गुत्तीउ आहिया ॥१॥
इरियाभासेसणादाणे, उच्चारे समिई इय ।
मणगुत्ती वयगुत्ती, कायगुत्ती य अट्ठमा ॥२॥
एयाओ अट्ठ समिईओ, समासेण वियाहिया ।
दुवालसंगं जिणक्खायं, मायं जत्थ उ पवयणं ॥३॥
आलम्बणेण कालेण, मग्गेण जयणाइ य ।
चउकारणपरिसुद्धं, संजए इरियं रिण ॥४॥
तत्थ आलम्बणं नारां, दंसणं चरणं तहा ।
काले य दिवसे वुत्ते, मग्गे उप्पहवज्जिण ॥५॥
दव्वओ खेत्तओ चेव, कालओ भावओ तहा ।
जयणा चउव्विहा वुत्ता, तं मे कित्तयओ सुण ॥६॥
दव्वओ चक्खुसा पेहे, जुगमित्तं च खेत्तओ ।
कालओ जाव रीइज्जा, उवउत्ते य भावओ ॥७॥
इन्दियत्थे विवज्जित्ता, सज्झायं चेव पञ्चहा ।
तम्मुत्ती तप्पुरक्कारे, उवउत्ते रियं रिण ॥८॥
कोहे माणे य मायाए, लोभे य उवउत्तया ।
हासे भए मोहरिण, विकहासु तहेव य ॥९॥
एयाइं अट्ठ ठाणाइं, परिवज्जित्तु संजए ।
असावज्जं पियं काले, भासं भासिज्ज पन्नवं ॥१०॥

गवेसणाए गहणे य, परिभोगेसणा य जा ।
 आहारोवहिसेज्जाए, एए तिन्नि विसोहए ॥११॥
 उग्गमुप्पायणां पढमे, वीए सोहेज्जा एसणां ।
 परिभोयम्मि चउक्कं, विसोहेज्जा जयं जई ॥१२॥
 ओहोवहोवग्गहियं, भण्डगं दुविहं मुणी ।
 गिरहन्तो निक्खिवन्तो या, पउंजेज्जा इमं विहिं ॥१३॥
 चक्खुसा पडिलेहिता, पमज्जेज्जा जयं जई ।
 आयए निक्खिवेज्जा वा, दुहओ वि समिए सया ॥१४॥
 उच्चारं पासवणां, खेलं सिंघाणजल्लियं ।
 आहारं उवहिं देहं, अन्नं वावि तहाविहं ॥१५॥
 अणावायमसंलोए, अणावाए चेव होइ संलोए ।
 आवायमसंलोए, आवाए चेव संलोए ॥१६॥
 अणावायमसंलोए, परस्साणुवघाइए ।
 समे अज्जुसिरे वावि, अचिरकालकयम्मि य ॥१७॥
 वित्थिएणे दूरमोगाढे, नासन्ने विलवज्जिए ।
 तसपाणवीयरहिए, उच्चारईणि वोसिरे ॥१८॥
 एयाओ पंच समिईओ, समासेण वियाहिया ।
 इत्तो य तओ गुत्तीओ, वोच्छामि अणुपुब्बसो ॥१९॥
 सच्चा तहेव मोसा य सच्चामोसा तहेव य ।
 चउत्थी असच्चमोसा य, मणगुत्ती चउव्विहा ॥२०॥
 संरम्भसमारम्मे, आरम्भे य तहेव य ।
 मणां पवत्तमाणां तु, नियत्तिज्जा जयं जई ॥२१॥
 सच्चा तहेव मोसा य, सच्चामोसा तहेव य ।
 चउत्थी असच्चमोसा य, वइगुत्ती चउव्विहा ॥२२॥
 संरम्भसमारम्मे, आरम्भे य तहेव य ।
 वयं पवत्तमाणां तु, नियत्तिज्जा जयं जई ॥२३॥

ठाणे निसीयणे चेव, तहेव य तुयट्टणे ।
 उल्लंघणपल्लंघणे, इन्दियाण य जुंजणे ॥२४॥
 संरम्भसमारम्भे, आरम्भम्मि तहेव य ।
 कायं पवत्तमाणां तु, नियत्तिज्ज जयं जई ॥२५॥
 एयाओ पञ्च समिईओ, चरणस्स य पवत्तणे ।
 गुत्ती नियत्तणे वुत्ता, असुभत्थेसु सव्वसो ॥२६॥
 एसा पवयणमाया, जे-सम्मं आयरे मुणी ।
 सो खिप्पं सव्वसंसारो, विप्पमुच्चइ पण्डिण ॥२७॥ त्ति वेमि

॥ समिईओ समत्ताओ ॥

॥ अह जन्नइज्जं पंचवीसइमं अउक्कयणं ॥

माहणकुलसंभूओ, आसि विप्पो महायसो ।
 जायाई जमजन्नम्मि, जयघोसि त्ति नामओ ॥१॥
 इन्दियगामनिग्गाही, मग्गगामी महामुणी ।
 गामाणुगामं रीयन्ते, पत्तो वाणारसिं पुरिं ॥२॥
 वाणारसीए बहिया, उज्जाणम्मि मणोरमे ।
 फासुए सेज्जसंथारे, तत्थ वासमुवागए ॥३॥
 अह तेणेव कालेणं, पुरीए तत्थ माहणे ।
 विजयघोसि त्ति नामेण, जन्नं जयइ वैयवी ॥४॥
 अह से तत्थ अणगारे, मासक्खमणपारणे ।
 विजयघोसस्स जन्नम्मि, भिक्खमट्ठा उवट्ठिए ॥५॥
 समुवट्ठियं तहिं सन्तं, जायगो पडिसेहए ।
 न हु दाहामि ते भिक्खं, भिक्खू ! जयाहि अन्नओ ॥६॥
 जे य वेयविऊ विप्पा, जन्नट्ठा य जै दिया ।
 जोइसंगविऊ जे य, जे य धम्माण पारगा ॥७॥

जे समत्था समुद्धत्तुं, परमप्पाणमेव य ।
 तेसि अन्नमिणं देयं, भो भिक्खू ! सव्वकामियं ॥८॥
 सो तत्थ एव पडिस्सिद्धो, जायगेण महामुणी ।
 न वि रुद्धो न वि तुद्धो, उत्तमट्ठगवेसओ ॥९॥
 नन्नट्ठं पाणहेउं वा, नवि निव्वाहणाय वा ।
 तेसि विमोक्खणट्ठाए, इमं वयणमव्ववी ॥१०॥
 नवि जाणसि वेयमुहं, नवि जन्नाण जं मुहं ।
 नक्खत्ताण मुहं जं च, जं च धम्माण वा मुहं ॥११॥
 जे समत्था समुद्धत्तुं, परमप्पाणमेव य ।
 न ते बुभं वियाणासि, अह जाणासि तो भण ॥१२॥
 तस्सक्खेवपमुक्खं तु, अचयन्तो तहिं दिओ ।
 सपरिसो पंजली होउं, पुच्छई तं महामुणिं ॥१३॥
 वेयाणं च मुहं बूहि, बूहि जन्नाण जं मुहं ।
 नक्खत्ताण मुहं बूहि, बूहि धम्माण वा मुहं ॥१४॥
 जे समत्था समुद्धत्तुं, परमप्पाणमेव य ।
 एयं मे संसयं सव्वं, साहू ! कहसु पुच्छिओ ॥१५॥
 अग्गिहुत्तमुहा वेया, जन्नट्ठी वेयसा मुहं ।
 नक्खत्ताण मुहं चन्दो, धम्माणं कासवो मुहं ॥१६॥
 जहा चन्दं गहाईया, चिट्ठन्ति पंजलीउडा ।
 वन्दमाणा नमंसन्ता, उत्तामं मण्हारिणो ॥१७॥
 अजाणगा जन्नवाई, विज्जामाहणसंपया ।
 गूढा सज्झायतवसा, भासच्छन्ना इवग्गिणो ॥१८॥
 जो लोए वम्भणो वुत्तो, अग्गी वा महिओ जहा ।
 सया कुसलसंदिट्ठं, तं वयं बूम माहरां ॥१९॥
 जो न सज्जइ आगन्तुं, पव्वयन्तो न सोयइ ।
 रमइ अज्जवयणम्मि, तं वयं बूम माहरां ॥२०॥

जायरूवं जहामट्टं, निद्धन्तमलपावगं ।
 रागदोसभयार्हयं, तं वयं बूम माहणं ॥२१॥
 तवस्सियं किसं दन्तं अवचियमंससोणियं ।
 सुव्वयं पत्तनिव्वाराणं, तं वयं बूम माहणं ॥२२॥
 तसपाणे वियाणेत्ता, संगहेण य थावरे ।
 जो न हिंसइ तिव्विहेण, तं वयं बूम माहणं ॥२३॥
 कोहा वा जइ वा हासा, लोहा वा जइ वा भया ।
 मुसं न वयइ जो उ, तं वयं बूम माहणं ॥२४॥
 चित्तमन्तमचित्तं वा, अप्पं या जइ वा बह्नुं ।
 न गिरहइ अदत्तं जो, तं वयं बूम माहणं ॥२५॥
 दिव्वमाणुस्सतेरिच्छं जो न सेवइ मेहुणं ।
 मणसा कायवक्केणं, तं वयं बूम माहणं ॥२६॥
 जहा पोमं जले जायं, नोवत्तिप्पइ वारिणा ।
 एवं अलित्तो कामेहिं, तं वयं बूम माहणं ॥२७॥
 अलोलुयं मुहाजीविं, अणगारं अकिंचणं ।
 असंसत्तं गिहत्थेसु, तं वयं बूम माहणं ॥२८॥
 जहिता पुव्वसंजोगं, नाइसंगे य बन्धवे ।
 जो न सज्जइ एणसुं, तं वयं बूम माहणं ॥२९॥
 पसुबन्धा सव्ववेया य, जट्ठं च पावकम्मुणा ।
 न तं तायन्ति दुस्सीलं, कम्माणि बलवन्ति हि ॥३०॥
 न वि मुण्डिण्ण समणो, न ओंकारेण बम्भणो ।
 न मुणी रणणवासेणं, कुसचीरेण न तावसो ॥३१॥
 समयए समणो होइ बम्भचेरेण बम्भणो ।
 नाणेण उ मुणी होइ, तवेण होइ तावसो ॥३२॥

कम्मुणा बम्भणो होइ, कम्मुणा होइ खत्तिओ ।
 वइस्सो कम्मुणा होइ, सुद्धो हवइ कम्मुणा ॥३३॥
 एए पाउकरे बुद्धे, जेहिं होइ सिणायओ ।
 सव्वकम्मविणिम्मुक्कं, तं वयं बूम माहणं ॥३४॥
 एवं गुणसमाउत्ता, जे भवन्ति दिउत्तामा ।
 ते समत्था उ उद्धत्तुं, परमप्पाणमेव य ॥३५॥
 एवं तु संसए छिन्ने, विजयघोसे य माहणे ।
 समुदाय तओ तं तु, जयघोसं महामुणिं ॥३६॥
 तुट्ठे य विजयघोसे, इणमुदाहु कयंजली ।
 माहणं जहाभूयं, सुद्धु मे उवदंसियं ॥३७॥
 तुब्भे जइया जन्नाणं तुब्भे वेयविऊ विऊ ।
 जोइसंगविऊ तुब्भे, तुब्भे धम्माण पारगा ॥३८॥
 तुब्भे समत्था उद्धत्तुं, परमप्पाणमेव य ।
 तमणुग्गहं करेहऽम्हं भिक्खेणं भिक्खुउत्तमा ॥३९॥
 न कज्जं मज्झ भिक्खेणं, खिप्पं निक्खमसु दिया !
 मा भमिहिसि भयावट्ठे, घोरे संसारसागरे ॥४०॥
 उवलेघो होइ भोगेसु, अभोगी नोवलिप्पइ ।
 भोगी भमइ संसारे, अभोगी विप्पमुच्चइ ॥४१॥
 उल्लोसुक्को य दो लूढा, गोलया मट्ठियामया ।
 दो वि आवडिणा कुट्ठे, जो उल्लो सोऽत्थ लग्गइ ॥४२॥
 एवं लग्गन्ति दुम्मेहा, जे नरा कामलालसा ।
 विरत्ता उ न लग्गन्ति, जहा से सुक्कगोलए ॥४३॥
 एवं से विजयघोसे, जयघोसस्स अन्तिए ।
 अणुगारस्स निक्खन्तो, धम्मं सोच्चा अणुत्तरं ॥४४॥
 खवित्ता पुव्वकम्माइं, संजमेण तवेण य ।
 जयघोसविजयघोसा, सिद्धिं पत्ता अणुत्तरं ॥४५॥ त्ति वेमि

॥ अहं सामायारी णामं छ्वीसइमं अज्झयणं ॥

सामायारिं पक्खामि, सव्वदुक्खविमोक्खणिं ।
 जं चरित्ताणं निग्गन्था, तिरिणा संसारसागरं ॥१॥
 पढमा आवस्सिया नामं, विइया यं निसीहिया ।
 आपुच्छणा यं तइया, चउत्थी पडिपुच्छणा ॥२॥
 पंचमी छन्दणा नामं, इच्छाकारो यं छट्ठो ।
 सत्तमो मिच्छकारो यं, तहकारो यं अट्ठमो ॥३॥
 अब्भुट्ठं च नवमं, दसमा उवसंपदा ।
 एसा दसंगा साहूणां, सामायारी पवेइया ॥४॥
 गमणे आवस्सियं कुज्जा, ठाणे कुज्जा निसीहियं ।
 आपुच्छणां सयंकरणे, परकरणे पडिपुच्छणां ॥५॥
 छन्दणा दव्वजाणां इच्छाकारो यं सारणे ।
 मिच्छाकारो यं निन्दाए, तहकारो पडिस्सुण ॥६॥
 अब्भुट्ठाणां गुरुपूया, अच्छणे उवसंपदा ।
 एवं दुपंचसंजुत्ता, सामायारी पवेइया ॥७॥
 पुव्विल्लम्मि चउब्भाए, आइच्चम्मि समुट्ठिण ।
 भण्डयं पडिलेहिता, वन्दिता यं तओ गुरुं ॥८॥
 पुच्छिज्जा पंजलीउडो, किं कायव्वं मए इह ।
 इच्छं निओइउं भन्ते ! वेयावच्चे व सज्झाए ॥९॥
 वेयावच्चे निउत्तेणां, कायव्वं अगिलायओ ।
 सज्झाए वा निउत्तेणा, सव्वदुक्खविमोक्खणे ॥१०॥
 दिवसस्स चउरो भागे, कुज्जा भिक्खू वियक्खणो ।
 तओ उत्तरगुणे कुज्जा, दिणभागेसु चउसु वि ॥११॥
 पढमं पोरिसिं सज्झायं, वीयं ज्ञाणं क्रियायई ।
 तइयाए भिक्खायरियं, पुणो चउत्थीइ सज्झायं ॥१२॥

आसाढे मासे दुपया, पोसे मासे चउप्पया ।
 चित्तासोणसु मासेसु, तिप्पया हवइ पोरिसी ॥१३॥
 अंगुलं सत्तरत्तेणं, पक्खेणं च दुअंगुलं ।
 वड्डण हायप वावि, मासेणं चउरंगुलं ॥१४॥
 आसाढबहुलपक्खे, भद्दवण कत्तिण य पोसे य ।
 फग्गुणवइसाहेसु य, बोद्धव्वा ओमरत्ताओ ॥१५॥
 जेट्टामूले आसाढसावणे, छहिं अंगुलेहिं पडिलेहा ।
 अट्ठहिं विइयतियंमि, तइण दस अट्ठहिं चउत्थे ॥१६॥
 रत्तिं पि चउरो भागे, भिक्खू कुज्जा वियक्खणो ।
 तओ उत्तरगुणे कुज्जा, राइभाणसु चउसु वि ॥१७॥
 पढमं पोरिसिं सज्झायं, वीयं भाणं मियायई ।
 तइयाण निइमोक्खं तु, चउत्थी भुज्जो वि सज्झायं ॥१८॥
 जं नेइ जया रत्तिं, नक्खत्तं तम्मि नहचउब्भाण ।
 संपत्ते विरमेज्जा, सज्झायं पओसकालम्मि ॥१९॥
 तम्मेव य नक्खत्ते, गयणचउब्भागसावसेसम्मि ।
 वेरत्तियंमि कालं, पडिलेहिता मुणी कुज्जा ॥२०॥
 पुव्विल्लम्मि चउब्भाण, पडिलेहिताण भण्डयं ।
 गुरुं वन्दित्तु सज्झायं कुज्जा दुक्खविमोक्खणिं ॥२१॥
 पोरिसीण चउब्भाण, वन्दित्ताण तओ गुरुं ।
 अपडिक्कमित्ता कालस्स, भायणं पडिलेहण ॥२२॥
 मुहपोत्तिं पडिलेहिता, पडिलेहिज्ज गोच्छं ।
 गोच्छगलइयंगुलिओ, वत्थाइं पडिलेहण ॥२३॥
 उट्ठं थिरं अतुरियं, पुट्ठं ता वत्थमेव पडिलेहे ।
 तो विइयं पप्फोडे, तइयं च पुणो पमज्जिज्जा ॥२४॥

अणुच्चावियं अवलियं, अणुगुणान्धिमोसलिं चैव ।
 छुप्पुरिमा नव खोडा, पाणीपाणिविसोहरां ॥२५॥
 आरभडा सम्मदा, वज्जेयवा य मोसली तइया ।
 पप्फोडणा चउत्थी, विक्खित्ता वेइया छट्ठी ॥२६॥
 पसिढिलपलम्बलोला, एगा मोसा अरोगरूवधुणा ।
 कुणइ पमाणिपमायं, संकियगणणोवगं कुज्जा ॥२७॥
 अणूणाइरित्तपडिलेहा, अविवच्चासा तहेव य ।
 पढमं पयं पसत्थं, सेसाणि य अप्पसत्थाइं ॥२८॥
 पडिलेहरां कुणन्तो, मिहो कहं कुणइ जणवयकहं वा ।
 वेइ व पच्चक्खारां, वाएइ सयं पडिच्छइ वा ॥२९॥
 पुढवी आउक्काए, तेऊ-वाऊ-वणस्सइ-तसाणं ।
 पडिलेहराणपमत्तो, छराहं पि विराहओ होइ ॥३०॥
 पुढवी आउक्काए, तेऊ-वाऊ वणस्सइ-तसाणं ।
 पडिलेहराणआउत्तो, छराहं संरक्खओ होइ ॥३१॥
 तइयाए पोरिसीए, भत्तं पाणं गवेसए ।
 छराहं अन्नयरागम्मि, कारणम्मि समुट्ठिए ॥३२॥
 वेयणवेयावच्चे, इरियट्ठाए य संजमट्ठाए ।
 तह पाणवत्तियाए, छट्ठं पुण धम्मचिन्ताए ॥३३॥
 निग्गन्थो धिइमन्तो, निग्गन्थी वि न करेज्ज छहिं चैव ।
 ठारोहिं उ इमेहिं, अणइक्कमणाइ से होइ ॥३४॥
 आयंके उवसग्गे, तित्तिक्खया बम्भचेरगुत्तीसु ।
 पाणिदया तवहेउं, सरीर वोच्छेयणट्ठाए ॥३५॥
 अवसेसं भंडगं गिज्झ, चक्खुसा पडिलेहए ।
 परमज्जोयणाओ, विहारं विहरए मुणी ॥३६॥
 चउत्थीए पोरिसीए, निक्खित्तान भायरां ।
 सज्झायं तओ कुज्जा, सव्वभावविभावरां ॥३७॥

पोरिसीए चउब्भाए, वन्दिताए तओ गुरुं ।
 पडिक्कमिन्ना कालस्स, सेजं तु पडिलेहए ॥३८॥
 पासवणुच्चारभूमिं च, पडिलेहिज्ज जयं जई ।
 काउस्सगं तओ कुज्जा, सव्वदुक्खविमोक्खणं ॥३९॥
 देवसियं च अइयारं, चिन्तिज्जा अणुपुव्वसो ।
 नाणे य दंसणे चेव, चरित्तमि तहेव य ॥४०॥
 पारियकाउस्सग्गो, वन्दिताए तओ गुरुं ।
 देवसियं तु अइयारं, आलोएज्ज जहक्कमं ॥४१॥
 पडिक्कमित्तु निस्सल्लो, वन्दिताए तओ गुरुं ।
 काउस्सगं तओ कुज्जा, सव्वदुक्खविमोक्खणं ॥४२॥
 पारियकाउस्सग्गो, वन्दिताए तओ गुरुं ।
 थुइमंगलं च काऊण, कालं संपडिलेहए ॥४३॥
 पढमं पोरिसिं सज्झायं, वित्तियं ज्ञाणं क्रियायई ।
 तइयाए निदमोक्खं तु, सज्झायं तु चउत्थिए ॥४४॥
 पोरिसीए चउत्थीए, कालं तु पडिलेहिया ।
 सज्झायं तु तओ कुज्जा, अबोहन्तो असंजए ॥४५॥
 पोरिसीए चउब्भाए, वन्दिऊण तओ गुरुं ।
 पडिक्कमित्तु कालस्स, कालं तु पडिलेहए ॥४६॥
 आगए कायवुसग्गो, सव्वदुक्खविमोक्खणे ।
 काउस्सगं तओ कुज्जा, सव्वदुक्खविमोक्खणं ॥४७॥
 राइयं च अइयारं, चिन्तिज्ज अणुपुव्वसो ।
 नाणंमि दंसणंमि य, चरित्तंमि तवंमि य ॥४८॥
 पारियकाउस्सग्गो, वन्दिताए तओ गुरुं ।
 राइयं तु अइयारं, आलोएज्ज जहक्कमं ॥४९॥

पडिक्कमिन्नु निस्सल्लो, वन्दिच्चाण तओ गुहं ।
 काउस्सग्गं तओ कुज्जा, सव्वदुक्खविमुक्खणं ॥५०॥
 किं तवं पडिवज्जामि, एवं तत्थ विचिन्तए ।
 काउस्सग्गं तु पारित्ता, 'यन्दए य तओ गुहं ॥५१॥
 पारियकाउस्सग्गो, वन्दिच्चाण तओ गुहं ।
 तवं तु पडिवज्जेज्जा, कुज्जा सिद्धाण संथवं ॥५२॥
 एसा सामायारी, समासेण वियाहिया ।
 जं चरित्ता बहू जीवा, तिएणा संसारसागरं ॥५३॥

॥ सामायारी समत्ता ॥२६॥

॥ अह खलुंकिज्जं सत्तवीसइमं अज्जभयणं ॥

थेरे गणहरे गग्गे, मुणी आसि विसारए ।
 आइएणे गणिभावम्मि, समाहिं पडिसंधए ॥१॥
 वहणे वहमाणस्स, कंतारं अइवत्तए ।
 जोगे वहमाणस्स, संसारो अइवत्तए ॥२॥
 खलुंके जो उ जोएइ, विहम्माणो किलिस्सइ ।
 असमाहिं य वेएइ, तोत्तओ से य भज्जइ ॥३॥
 एगं डसइ पुच्छम्मि, एगं विन्धइ ऽभिकखणं ।
 एगो भंजइ समिलं, एगो उप्पहपट्ठिओ ॥४॥
 एगो पडइ पासेणं, निवेसइ निवज्जइ ।
 उक्कुदइ उप्पिडइ, सहे बालगवी वए ॥५॥
 माई मुज्जेण पडइ, कुज्जे गच्छइ पडिप्पवं ।
 मयलक्खेण निट्ठइ, वेगेण य पहावइ ॥६॥
 त्तिन्नाले छिन्दइ सिल्लिं, दुद्धन्तो भंजए जुगं ।
 खेवि य सुस्सुयाइत्ता, उज्जहिच्चा पलायए ॥७॥

खलुंका जारिसा जोज्जा, दुस्सीसा वि हु तारिसा ।
 जोइया धम्मजाणम्मि, भज्जंति धिइदुब्बला ॥८॥
 इड्ढीगारविण एगे, एगेऽत्थ रसगारवे ।
 सायागारविण एगे, एगे सुच्चिरकोहणे ॥९॥
 भिक्खालसिण एगे, एगे ओमाणभीरुण थद्धे
 एगं आणुसासम्मि, हेऊहिं कारणेहि य ॥१०॥
 सो वि अन्तरभासिल्लो, दोसमेव पकुब्बइ ।
 आयरियाणां तु वयणां, पडिकूलेइऽभिक्खणां ॥११॥
 न सा ममं वियाणाइ, न य सा मज्झ दाहिइ ।
 निग्गया होहिइ मत्ते, साहू अन्नोत्थ वच्चउ ॥१२॥
 पेसिया पलिउंचन्ति, ते परियन्ति समन्तओ ।
 रायविट्ठिं च मन्नन्ता, करेन्ति भिउडिं मुहे ॥१३॥
 वाइया संगहिया चेव, भत्तपाणेहि पोसिया ।
 जायपक्खा जडा हंसा, पक्कमंति दिसो दिसिं ॥१४॥
 अह सारही विचिन्तेइ, खलुंकेहिं समागओ ।
 किं मज्झ दुट्ठसीसेहिं, अप्पा मे अवसीयइ ॥१५॥
 जारिसा मम सीसाओ, तारिसा गलिगदहा ।
 गलिगदहे जहित्ताणां, दढं पणिएहइ तवं ॥१६॥
 मिउमद्वसंपन्नो, गम्भीरो सुसुमाहिओ ।
 विहरइ महिं महप्पा, सीलभूएण अप्पणा ॥१७॥

॥ खलुंकिज्जं समत्त ॥१८॥

॥ अह मोक्खमग्गगई णामं अट्ठावीसइमं अज्झयणं ॥

मोक्खमग्गगइं तच्च, सुणेह जिणभासियं ।
 चउकारणसंजुत्तं, नाणदंसणलक्खणां ॥१९॥

नारां च दंसरां चैव, चरित्तं च तवो तहा ।
 एस मग्गुत्ति पन्नत्तो, जिणेहिं वरदंसिहिं ॥२॥
 नारां च दंसरां चैव, चरित्तं च तवो तहा ।
 एयं मग्गमणुप्पत्ता, जीवा गच्छन्ति सोग्गइं ॥३॥
 तत्थ पंचविहं नारां, सुयं आभिनिबोहियं ।
 ओहिनारां तु तइयं, मणनारां च केवलं ॥४॥
 एयं पंचविहं नारां, दव्वाण य गुणाण य ।
 पज्जवाण य सव्वेसिं, नारां नाणीहि देसियं ॥५॥
 गुणाणमासओ दव्वं, एगदव्वस्सिया गुणा ।
 लक्खणं पज्जवाणं तु उभओ अस्सिया भवे ॥६॥
 धम्मो अहम्मो आगासं, कालो पुग्गलजन्तवो ।
 एस लोगो त्ति पन्नत्तो, जिणेहिं वरदंसिहिं ॥७॥
 धम्मो अहम्मो आगासं, दव्वं इक्किक्कमाहियं ।
 अणन्ताणि य दव्वाणि, कालो पुग्गलजन्तवो ॥८॥
 गइलक्खणो उ धम्मो, अहम्मो ठाणलक्खणो ।
 भायरां सव्वदव्वाणां, नहं ओगाहलक्खरां ॥९॥
 वत्तणालक्खणो कालो, जीवो उवओगलक्खणो ।
 नारोरां दंसरेणं च, सुहेण य दुहेण य ॥१०॥
 नारां च दंसरां चैव, चरित्तं च तवो तहा ।
 वीरियं अवओगो य, एयं जीवस्स लक्खणं ॥११॥
 सदन्धयार-उज्जोओ, पहा छायातवे इ वा ।
 वण्णरसगन्धफासा, पुग्गलाण तु लक्खरां ॥१२॥
 एगत्तं च पुहत्तं च, संखा संठाणमेव य ।
 संजोगा य विभागा य, पज्जवाणं तु लक्खरां ॥१३॥
 जीवाजीवा य वन्धो य, पुण्णां पावासवो तहा ।
 संवरो निज्जरा मोक्खो, सन्तेण तहिया नव ॥१४॥

तहियाणां तु भावाणां, सब्भवे उवएसणां ।
 भावेणां सद्वहन्तस्स, सम्मत्तं तं वियाहियं ॥१५॥
 निसग्गुवएसरुई, आणरुई सुत्तवीयरुइमेव ।
 अभिगमवित्थाररुई, किरिया-संखेव-धम्मरुई ॥१६॥
 भूयत्थेणाहिगया, जीवाजीवा य पुण्णपावं च ।
 सहसम्मइयासवसंवरो य रोणइ उ निस्सग्गो ॥१७॥
 जो जिणदिट्ठे भावे, चउव्विहे सद्वहाइ सयमेव ।
 एमेव नन्नह त्ति य, स निसग्गरुइ त्ति नायव्वो ॥१८॥
 एण चेव उ भावे, उवइट्ठे जो परेण सद्वहइ ।
 छउमत्थेण जिणेण व, उवएसरुइ त्ति नायव्वो ॥१९॥
 रागो दोसो मोहो, अन्नाणां जस्स अवगयं होइ ।
 आणाए रोयंतो, सो खलु आणारुई नामं ॥२०॥
 जो सुत्तमहिज्जन्तो सुण्ण ओगाहइ उ सम्मत्तं ।
 अंणेण बाहिरेण वा, सो सुत्तरुइ त्ति नायव्वो ॥२१॥
 एणेण अणेगाइ, पयाइ जो पसरइ उ सम्मत्ते ।
 उदएव्व तेल्लुबिन्दू, सो बीयरुइ त्ति नायव्वो ॥२२॥
 सो होइ अभिगमरुई, सुयनाणां जेण अत्थओ दिट्ठं ।
 एक्कारस अंगाई, पइरणगं दिट्ठिवाओ य ॥२३॥
 दव्वाण सव्वभावा, सव्वपमाणेहि जस्स उवलद्धा ।
 सव्वाहि नयविहीहिं य, वित्थाररुइ त्ति नायव्वो ॥२४॥
 दंसणनाणचरित्ते, तवविण्ण सव्वसमिइगुत्तीसु ।
 जो किरियाभावभई, सो खलु किरियारुई नाम ॥२५॥
 अणभिग्गहियकुदिट्ठी, संखेवरुइ त्ति होइ नायव्वो ।
 अविसारओ पवयणे, अणभिग्गहिओ य सेसेसु ॥२६॥
 जो अत्थिकायधम्मं, सुयधम्मं खलु चरित्तधम्मं च ।
 सद्वहइ जिणाभिहियं, सो धम्मरुइ त्ति नायव्वो ॥२७॥

परमत्थसंथवो वा, सुदिट्टपरमत्थसेवणा वा वि ।
 वावन्नकुदंसणवज्जणा, य सम्मत्तसद्वहणा ॥२८॥
 नत्थि चरित्तं सम्मत्तविहरां, दंसणे उ भइयव्वं ।
 सम्मत्तचरित्ताइं, जुगवं पुव्वं व सम्मत्तं ॥२९॥

नादंसणिस्स नारां,
 नाणेण विणा न हुन्ति चरणगुणा ।
 अगुणिस्स नत्थि मोक्खो,
 नत्थि अमोक्खस्स निव्वारां ॥३०॥

निस्संक्रिय-निक्कंखिय निव्वितिगिच्छं अमूढदिट्ठी य ।
 उववूहथिरीकरणे, वच्छल्ल-पभावणे अट्ट ॥३१॥
 सामाइयत्थ पढमं, छेओवट्ठावरां भवे विइयं ।
 परिहारविसुद्धीयं, सुहुमं तह संपरायं च ॥३२॥
 अकसायमहक्खायं, छुउमत्थस्स जिणस्स वा ।
 एयं चयरित्तकरं, चारित्तं होइ आहियं ॥३३॥
 तवो य दुविहो वुत्तो, बाहिरब्भन्तरो तहा ।
 बाहिरो छव्विहो वुत्तो, एवमब्भन्तरो तवो ॥३४॥
 नाणेण जाणइ भावे, दंसणेण य सद्वहे ।
 चरित्तेण निगिणहाइ, तवेण परिसुज्झइ ॥३५॥
 खवित्ता पुव्वकम्माइं, संजमेण तवेण य ।
 सव्वदुक्खपहीणट्ठा, पक्कमन्ति महेसिणो ॥३६॥ त्ति वेमि

॥ मोक्खमग्गगई सम्मत्तं ॥३८॥

॥ अह सम्मत्तपरक्कमं एगूणतीसइमं अज्झयणं ॥

सुयं मे आउसं ! तेरां भगवया एवमक्खायं-इह खलु
 सम्मत्तपरक्कमे नाम अज्झयणे समणेरां भगवया महावीरेणं
 कासवेणं पवेइए, जं सम्मं सद्वहिता पत्तइत्ता रोयइत्ता

फासित्ता पात्रइत्ता तीरित्ता कित्तइत्ता सोहइत्ता आराहित्ता
आणाए अणुपालइत्ता बहवे जीवा सिज्झन्ति बुज्झन्ति मुच्चन्ति
परिनिव्वयन्ति सच्चदुक्खाणमन्तं करेन्ति । तस्स एां अयमट्ठे
एवमाहिज्जइ, तंजहाः—

संवेगे १ निव्वेए २ धम्मसद्धा ३ गुरुसाहम्मियसुस्सूखणया ४
आलोयणया ५ निन्दणया ६ गरिहणया ७ सामाइए ८ चउव्वी-
सत्थवे ९ वन्दणए १० पडिक्कमणे ११ काउस्सग्गे १२ पच्च-
क्खाणे १३ थवथुईमंगले १४ कालपडिलेहणया १५ पायच्छित्त-
करणे १६ खमावणया १७ सज्झाए १८ वायणया १९ पडि-
पुच्छणया २० पडियट्ठणया २१ अणुप्पेहा २२ धम्मकहा २३
सुयस्स आराहणया २४ एगग्गमणसंनिवेसणया २५ संजमे २६
तवे २७ वोदाणे २८ सुहसाए २९ अपडिबद्धया ३० विवित्त-
सयणासणसेवणया ३१ विणियट्ठणया ३२ संभोगपच्चक्खाणे ३३
उवहिपच्चक्खाणे ३४ आहारपच्चक्खाणे ३५ कसायपच्चक्खाणे ३६
जोगपच्चक्खाणे ३७ सरीरपच्चक्खाणे ३८ सहायपच्चक्खाणे ३९
भत्तपच्चक्खाणे ४० सम्भावपच्चक्खाणे ४१ पडिरूवणया ४२
वेयावच्चे ४३ सच्चगुणसंपणणया ४४ वीयरगया ४५ खन्ती ४६
मुत्ती ४७ महवे ४८ अज्जवे ४९ भावसच्चे ५० करणसच्चे ५१
जोगसच्चे ५२ मणगुत्तया ५३ वयगुत्तया ५४ कायगुत्तया ५५
मणसमाधारणया ५६ वयसमाधारणया ५७ कायसमाधार-
णया ५८ नाणसंपन्नया ५९ दंसणसंपन्नया ६० चरित्तसंपन्नया ६१
सोइंदियनिग्गहे ६२ चक्खिन्दियनिग्गहे ६३ घाणिन्दिय-
निग्गहे ६४ जिब्भिन्दियनिग्गहे ६५ फासिन्दियनिग्गहे ६६ कोह-
विजए ६७ माणविजए ६८ मायाविजए ६९ लोहविजए ७०
पेज्जदोसमिच्छादंसणविजए ७१ सेलेसी ७२ अकम्मया ॥७३॥

संवेगेणां भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? संवेगेणां अणुत्तरं धम्म-

सद्धं जणयइ । अणुत्तराए धम्मसद्धाए संवेगं हव्वमागच्छइ ।
अणुन्ताणुबन्धिकोहमाणमायालोभे खवेइ । नवं च कम्मं न
बन्धइ । तप्पच्चइयं च रां मिच्छुत्तविसोहिं काऊणदंसणाराहए
भवइ । दंसणविसोहीए य रां विसुद्धाए अत्थेगइए तेणेव
भवग्गहणेरां ^१सिज्झइ । सोहीए य रां विसुद्धाए तच्चं पुणो
भवग्गहरां नाइक्कमइ ॥१॥

निव्वेएरां भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? निव्वेरां दिव्वमाणुस-
तेरिच्छएसु कामभोगेसु निव्वेयं हव्वमागच्छइ, सव्वविस-
एसु विरज्जइ । सव्वविसएसु विरज्जमाणे ^२आरम्भपरिच्चायं
करेइ । आरम्भपरिच्चायं करेमाणे संसारमग्गं वोच्छिन्दइ,
सिद्धिमग्गं पडिव्वेने य भवइ ॥२॥

धम्मसद्धाए रां भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? धम्मसद्धाए रां
सायासोकखेसु रज्जमाणे विरज्जइ । आगारधम्मं च रां चयइ ।
अणगाए रां जीवे सारीगमाणसारां दुक्खाणं छेयणभेयण-
संजोगाईरां वोच्छेयं करेइ अवावाहं च रां सुहं निव्वत्तेइ ॥३॥

गुरुसाहम्मियसुस्सूसणयाए णं भन्ते ! जीवे किं जण-
वइ ? गुरुसाहम्मियसुस्सूसणयाए विणयपडिव्वत्तिं जणयइ ।
विणयपडिव्वेने य रां जीवे अणच्चासायणसीले नेरइयतिरि-
क्खजोणियमणुस्सदेवदुग्गईओ निरुम्भइ । वणणसंजलणभत्ति-
बहुमाणयाए मणुस्सदेवगईओ निबन्धइ, सिद्धिं सोग्गइ च
विसोहेइ । पसत्थाइं च रां विणयमूलाइं सव्वकजाइं साहेइ
अन्ने य बहवे जीवे विणिइत्ता भवइ ॥४॥

१. सिज्झन्ति, बुज्झन्ति, मुच्चन्ति, परिनिव्वायन्ति, सव्वदुक्खा-
णमंतं करेति । २. आरंभपरिग्गहपरि० ।

आलोयणाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? आलोयणाए णं मायानियाणमिच्छादंसणसल्लाणं मोक्खमग्गविग्घाणं अणं-
तसंसारबन्धणाणं उद्धरणं करेइ । उज्जुभावं च जणयइ ।
उज्जुभावपडिवन्ने य णं जीवे अमाई इत्थीवेयनपुंसगवेयं च
न बन्धइ । पुव्वबद्धं च णं निज्जरेइ ॥५॥

निन्दणायाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? निन्दणायाए णं
पच्छाणुतावं जणयइ । पच्छाणुतावेणं विरज्जमाणे करणगुण-
सेढिं पडिवज्जइ । करणगुणसेढीपडिवन्ने य णं अणगारे मोह-
णिज्जं कम्मं उग्घाएइ ॥६॥

गरहणायाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? गरहणायाए अपुर-
क्कारं जणयइ । अपुरक्कारणए णं जीवे अप्पसत्थेहिंतो जोगेहिंतो
नियत्तेइ, पसत्थे य पडिवज्जइ । पसत्थजोगपडिवन्ने य णं
अणगारे अणन्तघाइपज्जवे खवेइ ॥७॥

समाइएणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? समाइएणं साव-
ज्जजोगविरइं जणयइ ॥८॥

चउव्वीसत्थएणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ । चउव्वीसत्थ-
एणं दंसणविसोहिं जणयइ ॥९॥

वन्दणाएणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? वन्दणाएणं नीया-
गोयं कम्मं खवेइ । उच्चागोयं कम्मं निबन्धइ । सोहग्गं च णं
अपडिहयं आणाफलं निव्वत्तेइ । दाहिणभावं च णं जण-
यइ ॥१०॥

पडिकमणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? पडिकमणेणं

वयच्छिदाणि पिहेइ । पिहियवयच्छिदे पुण जीवे निरुद्धासवे
असबलचरित्ते अट्टसु पवयणमायासु उवउत्ते अपुहत्ते
'सुप्पणिहिंदिए विहरइ ॥११॥

काउसग्गेरां भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? काउसग्गेरां
तीयपडुप्पन्नं पायच्छित्तं विसोहेइ । विसुद्धपायच्छित्ते य जीवे
निव्वुयहियए ओहरियभरुव्व भारवहे 'पसत्थज्झाणोवगए
सुहं सुहेरां विहरइ ॥१२॥

पच्चक्खारोरां भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? पच्चक्खारोरां
आसवदाराइं निरुम्भइ । पच्चक्खारोरां इच्छानिरोहं जणयइ ।
इच्छानिरोहं गए य रां जीवे सव्वदव्वेसु विणीयतएहे सीइभूए
विहरइ ॥१३॥

थवथुइमंगलेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? थ० नाणदंसण-
चरित्तबोहिलाभं जणयइ । नाणदंसणचरित्तबोहिलाभसंपन्ने य
णं जीवे अन्तकिरियं कप्पविमाणोववत्तिगं आराहरां आरा-
हेइ ॥१४॥

कालपडिलेहणयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? का०
णाणावरणिज्जं कम्मं खवेइ ॥१५॥

पायच्छित्तकरोरां भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? पा० पाव-
विसोहिं जणयइ, निरइयारे वावि भवइ । सम्मं च णं पाय-
च्छित्तं पडिवज्जमाणे मग्गं च मग्गफलं च विसोहेइ, आयाारं
च आयाारफलं च आराहेइ ॥१६॥

खमावणयाए रां भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? ख० पल्हा-
यणभावं जणयइ । पल्हायणभावमुबगए य सव्वपाणभूय-

जीवसत्तेसु मिक्तीभावमुष्णाण्ड । मिक्तीभावमुवगण य जीवे
भावविसोहिं काऊण निम्भण भवइ ॥१७॥

सज्झाणण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? स० णाणावरणिज्जं
कम्मं खवेइ ॥१८॥

वायणाण णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? वा० निज्जरं जण-
यइ । सुयस्स य अणुसज्झणाण अणासायणाण वट्टण । सुयस्स
अणुसज्झणाण अणासायणाण वट्टमाणे तित्थधम्मं अवलम्बइ ।
तित्थधम्मं अवलम्बमाणे महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवइ १९

पडिपुच्छणायाण णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? ण० सुत्त-
त्थतदुभयाइं विसोहेइ । कंखामोहणिज्जं कम्मं वोच्छिन्दइ ॥२०॥

परियट्ठणायाण णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? प० वंज-
णाइं जणयइ, वंजणलद्धिं च उप्पापइ ॥२१॥

अणुप्पेहाण णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? अ० आउय-
वज्जाओ सत्तकम्मपगडीओ धणियबन्धणवद्धाओ सिट्ठिल-
वन्धणवद्धाओ पकरेइ । दीहकालट्ठिइयाओ हस्सकालट्ठिइयाओ
पकरेइ । तिच्चाणुभावाओ मन्दाणुभावाओ पकरेइ । (बहु-
पणसग्गाओ अप्पपणसग्गाओ पकरेइ) आउयं च णं कम्मं
सिया बन्धइ, सिया नो बन्धइ । असायावेयणिज्जं च णं कम्मं
नो भुज्जो २ उवचिणइ । अणाइयं च णं अगवद्गगं दीह-
मद्धं चाउरन्तं संसारकन्तारं खिप्पामेव वीइवयइ ॥२२॥

धम्मकहाण णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? ध० कम्मनिज्जरं
जणयइ । धम्मकहाण णं पवयरां पभावेइ । पवयणपभावेरां
जीवे आगमेसस्स भद्दत्ताण कम्मं निबन्धइ ॥२३॥

सुयस्स आराहणायाण णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? सु०

अन्नाणं खवेइ न य संकिलिस्सइ ॥२४॥

एगग्गमणसंनिवेशणयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?
ए० चित्तनिरोहं करेइ ॥२५॥

संजमएणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? स० अणणहयत्तं
जणयइ ॥२६॥

तवेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? तवेणं वोदाणं जण-
यइ ॥२७॥

वोदाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? वो० अकिरियं जण-
यइ । अकिरियाए भवित्ता तओ पच्छा सिज्झइ, बुज्झइ
मुच्चइ, परिनिव्वायइ, सच्चदुक्खाणमन्तं करेइ ॥२८॥

सुहसाएणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? सु० अणुस्सुयत्तं
जणयइ । अणुस्सुयाए णं जीवे अणुकम्पए अणुब्भडे विगय-
सोगे चरित्तमोहणिज्जं कम्मं खवेइ ॥२९॥

अप्पडिबद्धयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? अ० निस्सं-
गत्तं जणयइ । निस्संगत्तेणं जीवे एगे एगग्गदित्ते दिया य
राओ य असज्जमाणे अप्पडिबद्धे यावि विहरइ ॥३०॥

विवित्तसयणासणयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? वि०
चरित्तगुत्तिं जणयइ । चरित्तगुत्ते य णं जीवे विवित्ताहारे
दढचरित्ते एगन्तरए मोक्खभावपडिवन्ने अट्टविहकम्मगंठिं
निज्जेइ ॥३१॥

विनियट्ठणयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? वि० पाव-
कम्माणं अकरणयाए अब्भुट्ठेइ । पुच्चवच्चाण य निज्जरणयाए

पावं नियत्तेइ । तओ पच्छा चाउरन्तं संसारकन्तारं वीइ-
वयइ ॥३२॥

संभोगपच्चक्खाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? सं० आल-
म्बणाइं खवेइ । निरालम्बणस्य य आययट्ठिया योगा भवन्ति ।
सपणं लाभेणं संतुस्सइ, परलाभं नो आसादेइ, परलाभं नो
तक्केइ, नो पीहेइ, नो पत्थेइ, नो अभिलसइ । परलाभं अणा-
साणमाणे अतक्केमाणे अपीहमाणे अपत्थेमाणे अणभिलस-
माणे दुच्चं सुहसेज्जं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ ॥३३॥

उवहिपच्चक्खाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? उ० अपलि-
मन्थं जणयइ । निरुवहिणं णं जीवे निकंखी उवहिमन्तरेण णं
न संकिलिस्सइ ॥३४॥

आहारपच्चक्खाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? आ०
जीवियासंसप्पओगं वोच्छिन्दइ । जीवियासंसप्पओगं वोच्छि-
न्दित्ता जीवे आहारमन्तरेणं न संकिलिस्सइ ॥३५॥

कसायपच्चक्खाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ । क० वीय-
रागभावं जणयइ । वीयरगभावपडिवन्ने वि य णं जीवे सम-
सुहदुक्खे भवइ ॥३६॥

जोगपच्चक्खाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ । जो० अजो-
गरां जणयइ । अजोगी णं जीवे नवं कम्मं न बन्धइ, पुव्वबज्जं
निज्जरेइ ॥३७॥

सरीरपच्चक्खाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? स० सिद्धा-
इसयगुणकिताणं निव्वत्तेइ । सिद्धाइसयगुणसंपन्ने य णं जीवे
लोगगमुवगणं परमसुही भवइ ॥३८॥

सहायपञ्चकखारेण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? स० एगी-
भावं जणयइ । एगीभावभूए य रां जीवे एगरां भावेमाणे अप्प-
सदे, अप्पभंझे, अप्पकलहे, अप्पकसाए, अप्पतुमंतुमे, संज-
मबहुले, संवरबहुले, समाहिए यावि भवइ ॥३९॥

भत्तपञ्चकखारेण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? भ० अणेगाइं
भवसयाइं निरुम्भइ ॥४०॥

सब्भावपञ्चकखारेण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? स० अनि-
यट्ठिं जणयइ । अनियट्ठिपडिवन्ने य अणगारे चत्तारि केवली-
कम्मंसे खवेइ तंजहा-वेयणिज्जं आउयं नामं गोयं । तओ पच्छा
सिज्झइ, बुज्झइ, मुच्चइ जाव सव्वदुक्खाणमन्नं करेइ ॥४१॥

पडिरूवयाए रां भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? प० लाघवियं
जणयइ । लघुभूए रां जीवे अप्पमत्ते पागडलिंगे पसत्थलिंगे
विमुद्धसम्मत्ते सत्तसमिइसमत्ते सव्वपाणभूयजीवसत्तेसु
वीससणिज्जरूवे अप्पडिलेहे जिइन्दिए विउलतवसमिइसम-
न्नागए यावि भवइ ॥४२॥

वेयावच्चेरां भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? वे० तित्थयरनाम-
गोत्तं कम्मं निबन्धइ ॥४३॥

सव्वगुणसंपन्नयाए रां भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? स०
अपुणरावत्तिं जणयइ । अपुणरावत्तिं पत्तए य रां जीवे सारीर-
माणसाणं दुक्खारां नो भागी भवइ ॥४४॥

वीयरगयाए रां भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? वी० नेहाणुब-
न्धणाणि तण्हाणुबन्धणाणि य वोच्छिन्दइ, मणुन्नामणुन्नेसु
सद्दफरिसरूवरसगन्धेसु^१ चेव विरज्जइ ॥४५॥

खन्तीए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? खन्तीए परीसहे
जिणइ ॥४६॥

मुत्तीए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? मु० अकिंचणं
जणयइ । अकिंचणे य जीवे अत्थलोल्लाणं पुरिसाणं अपत्थ-
णिज्जो भवइ ॥४७॥

अज्जवयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? अ० काउज्जुययं
भावुज्जुययं भासुज्जुययं अविसंवायणं जणयइ । अविसंवायण-
संपन्नयाए णं जीवे धम्मस्स आराहए भवइ ॥४८॥

महवयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? म० अणुस्सि-
यत्तं जणयइ । अणुस्सियत्तेण जीवे मिउमहवसंपन्ने अट्ठ
मयट्ठाणाइं निट्ठावेइ ॥४९॥

भावसच्चेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? भा० भावविसोहिं
जणयइ । भावविसोहिणं वट्ठमाणे जीवे अरहन्तपन्नत्तस्स
धम्मस्स आराहणयाए अब्भुट्ठेइ । अरहन्तपन्नत्तस्स धम्मस्स
आराहणयाए अब्भुट्ठित्ता परलोकधम्मस्स आराहए भवइ ॥५०॥

करणसच्चेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ । क० करणसत्तिं
जणयइ । करणसच्चे वट्ठमाणे जीवे जहा वाई तहा कारी यावि
भवइ ॥५१॥

जोगसच्चेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ । जो० जोगं विसो-
हेइ ॥५२॥

मणुगुत्तयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? म० जीवे
एगगं जणयइ । एगगचित्ते णं जीवे मणुगुत्ते संजमारा-
हए भवइ ॥५३॥

वयगुत्तयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? व० निव्विया-
रत्तं जणयइ । निव्वियारे णं जीवे वइगुत्ते अज्झप्पजोगसाहण-
जुत्ते यावि विहरइ ॥५४॥

कायगुत्तयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? का० संवरं
जणयइ । संवरेणं कायगुत्ते पुणो पावासवनिरोहंकरेइ ॥५५॥

मणसमाहारणयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? म०
एगगं जणयइ । एगगं जणइत्ता नाणपज्जवे जणयइ । नाण-
पज्जवे जणइत्ता सम्मत्तं विसोहेइ मिच्छत्तं च निज्जेरेइ ॥५६॥

वयसमाहारणयाए भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? व० वयसा-
हारणदंसणपज्जवे विसोहेइ । वयसाहारणदंसणपज्जवे विसो-
हिता सुलहबोहियत्तं निव्वत्तेइ, दुल्लहबोहियत्तं निज्जेरेइ ॥५७॥

कायसमाहारणयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? का०
चरित्तपज्जवे विसोहेइ । चरित्तपज्जवे विसोहिता अहक्खाय-
चरित्तं विसोहेइ । अहक्खायचरित्तं विसोहेत्ता चत्तारि केवलि-
कम्मंसे खवेइ । तओ पच्छा सिज्झइ, बुज्झइ, मुच्चइ, परि-
निव्वाइ, सब्बदुक्खाणमन्तं करेइ ॥५८॥

नाणसंपन्नयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? ना० जीवे
सव्वभावाहिगमं जणयइ । नाणसंपन्ने जीवे चाउरन्ते संसार-
कन्तारे न विणस्सइ ।

जहासूई ससुत्ता पडिया न विणस्सइ ।

तहा जीवे ससुत्ते संसारे न विणस्सइ ॥

नाणविणयतवचरित्तजोगे संपाउणइ, ससमयपरसमय-
विस्तारण य असंवाथणिज्जे भवइ ॥५९॥

दंसणसंपन्नयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? दं० भव-
मिच्छुत्तछेयणं करेइ, परं न विज्झायइ । परं अविज्झाएमाणे
अणुत्तरेणं नाणदंसणेणं अप्पाणं संजोएमाणे सम्मं भावे-
माणे विहरइ ॥६०॥

चरित्तसंपन्नयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? च० सेलेसी-
भावं जणयइ । सेलेसिं पडिवन्ने य अणगारे चत्तारि केवलि-
कम्मंसे खवेइ । तओ पच्छा सिज्झइ, बुज्झइ, मुच्चइ, परि-
निव्वायइ, सव्वदुक्खाणमन्तं करेइ ॥६१॥

सोइन्द्रियनिग्गहेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? सो० मणु-
न्नामणुन्नेसु सहेसु रागदोसनिग्गहं जणयइ, तप्पच्चइयं कम्मं
च णं न बन्धइ, पुव्ववद्धं च निज्जरेइ ॥६२॥

चक्खिन्द्रियनिग्गहेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? च० मणु-
न्नामणुन्नेसु रूवेसु रागदोसनिग्गहं जणयइ, तप्पच्चइयं च णं
कम्मं न बन्धइ, पुव्ववद्धं च निज्जरेइ ॥६३॥

घ्राणिन्द्रियनिग्गहेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? घ्रा० मणु-
न्नामणुन्नेसु गन्धेसु रागदोसनिग्गहं जणयइ, तप्पच्चइयं च णं
कम्मं न बन्धइ, पुव्ववद्धं च निज्जरेइ ॥६४॥

जिब्भिन्द्रियनिग्गहेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? जि० मणु-
न्नामणुन्नेसु रसेसु रागदोसनिग्गहं जणयइ, तप्पच्चइयं च णं
कम्मं न बन्धइ, पुव्ववद्धं च निज्जरेइ ॥६५॥

फासिन्द्रियनिग्गहेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? फा० मणु-
न्नामणुन्नेसु फासेसु रागदोसनिग्गहं जणयइ, तप्पच्चइयं च णं
कम्मं न बन्धइ, पुव्ववद्धं च निज्जरेइ ॥६६॥

कोहविजएणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? को० खन्ति जण-
यइ, कोहवेयणिज्जं कम्मं न बन्धइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ॥६७॥

माणविजएणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? मा० मद्दवं जणयइ,
माणवेयणिज्जं कम्मं न बन्धइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ॥६८॥

मायाविजएणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? मा० अज्जवं जण-
यइ, मायावेयणिज्जं कम्मं न बन्धइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ॥६९॥

लोभविजएणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? लो० संतोसं
जणयइ, लोभवेयणिज्जं कम्मं न बन्धइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ७०.

पिज्जदोसमिच्छादंसणविजएणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?
पि० नाणदंसणचरित्ताराहणयाए अब्भुट्ठेइ । अट्ठविहस्स
कम्मस्स कम्मगणित्ठविमोयणयाए तप्पढमयाए जहाणुपुव्वीए
अट्ठावीसइविहं मोहणिज्जं कम्मं उग्घापइ पञ्चविहं नाणाबर-
णिज्जं, नवविहं दंसणावरणिज्जं, पंचविहं अन्तराइयं, एए
तिस्सि वि कम्मंसे जुगवं खवेइ । तओ पच्छा अणुत्तरं कसिणं
पडिपुएणं निरावरणं वित्तिमिरं विसुद्धं लोगालोगप्पभावं केवल-
वरणाणदंसणं समुप्पाडेइ । जाव सजोगी भवइ, ताव ईरिया-
वहियं कम्मं निबन्धइ सुहफरिसं दुसमयठियं । तं पढम-
समए बद्धं, बिइयसमए वेइयं, तइयसमए निज्जिजएणं, तं बद्धं
पुट्ठं उदीरियं वेइयं निज्जिजएणं सेयाले य अकम्मं यावि भवइ ७१.

अहाउयं पालइत्ता अन्तोमुहुत्तद्धावसेसाए जोगनिरोहं
करेमाणे सुहुमकिरियं अप्पडिवाइं सुक्कज्झाणं भायमाणे
तप्पढमयाए मणजोगं निरुंभइ, वयजोगं निरुंभइ, कायजोगं
निरुंभइ आणपाणनिरोहं करेइ, ईसि पंचहस्सकखसञ्चारणद्धाए

य णं अणगारे समुच्छिन्नकिरियं अनियद्विसुक्कभाणं भियाय-
माणे वेयणिज्जं आउयं नामं गोत्तं च एण चत्तारि कम्मंसे
जुगवं खवेइ ॥७२॥

तओ ओरालियतेयकम्माइं सव्वाहिं विप्पजहणाहिं विप्प-
जहिता उज्जुसेढिपत्ते अफुसमाणगई उड्ढं एगसमएणं
अविग्गहेणं तत्थ गन्ता सागारोवउत्ते सिज्झइ बुज्झइ
जाव अंतं करेइ ॥७३॥

एस खलु सम्मत्तपरकम्मस्स अज्झयणस्स अट्ठे समणेणं
भगवया महावीरेणं आग्रविण, पन्नविण, परूविण, दंसिण,
निदंसिण उवदंसिण ॥७४॥ त्ति वेमि ॥

॥ सम्मत्तपरकमे समत्ते ॥२६॥

॥ अह तवमग्गं तीसइमं अउभयणं ॥

जहा उ पावगं कम्मं, रागदोससमज्जियं ।
खवेइ तवसा भिक्खू, तमेगग्गमणेण सुण ॥१॥
पाणिवहमुसावाया अदत्तमेहुणपरिग्गहा विरओ ।
राईभोयणविरओ, जीवो भवइ अणासवो ॥२॥
पंचसमिओ तिगुत्तो, अकसाओ जिइन्दिओ ।
अगारवो य निस्सल्लो, जीवो होइ अणासवो ॥३॥
एएसिं तु विवच्चासे, रागदोससमज्जियं ।
खवेइ उ जहा भिक्खू, तमेगग्गमणेण सुण ॥४॥
जहा महातलायस्स, संनिरूद्धे जलागमे ।
उत्तिसिचणाए तवणाए, कमेणं सोसणा भवे ॥५॥
एवं तु संजयस्सावि, पावकम्मनिरासवे ।
भवकोडीसंचियं कम्मं, तवसा निज्जरिज्झइ ॥६॥

सो तवो दुविहो वुत्तो, बाहिरब्भन्तरो तहा ।
 बाहिरो छुविहो वुत्तो, एवमब्भन्तरो तवो ॥७॥
 अणसणमूणोयरिया, भिक्खायरिया य रसपरिच्चाओ ।
 कायकिलेसो संलीणया य वज्झो तवो होइ ॥८॥
 इत्तरियमरणकाला य, अणसणा दुविहा भवे ।
 इत्तरिया सावकंखा, निरवकंखा उ विइज्जिया ॥९॥
 जो सो इत्तरियतवो, सो समासेण छुविहो ।
 सेट्ठितवो पयरतवो, घणो य तह होइ वग्गो य ॥१०॥
 तत्तो य वग्गवग्गो, पंचमो छट्ठओ पइरणतवो ।
 मणइच्छियचित्तत्थो, नायव्वो होइ इत्तरिओ ॥११॥
 जा सा अणसणा मरणे, दुविहा सा वियाहिया ।
 सवियारमवियारा, कायच्चिट्ठं पई भवे ॥१२॥
 अहवा सपरिकम्मा, अपरिकम्मा य आहिया ।
 नीहारिमनीहारी, आहारच्छेओ दोसु वि ॥१३॥
 ओमोयरणं पंचहा, समासेण वियाहियं ।
 दव्वओ खेत्तकालेण, भावेणं पज्जवेहि य ॥१४॥
 जो जस्स उ आहारो, तत्तो ओमं तु जो करे ।
 जहन्नरेणगसिंथाई, एवं दव्वेण ऊ भवे ॥१५॥
 गामे नगरे तह रायहाणिनिगमे य आगरे पल्ली ।
 खेडे कव्वडदोणमुहपट्टणमडम्बसंवाहे ॥१६॥
 आसमपण विहारे, सन्निवेसे समयघोसे य ।
 थल्लिसेणाखन्धादे, सव्वे संवट्ठकोट्टे य ॥१७॥
 वाडेसु य रत्थासु व, घरेसु वा एवमित्थियं खेतं ।
 कप्पइ उ एवमाई, एवं खेत्तेण ऊ भवे ॥१८॥
 पेडा य अद्धपेडा, गोमुत्तिपयंगवीहिया चेव ।
 सम्बुक्कावट्टाययगन्तुपच्चागया छट्ठा ॥१९॥

दिवसस्स पोरुसीणां, चउणहंपि उ जत्तिओ भवे कालो ।
 एवं चरमाणो खलु कालोमाणं मुण्येयव्वं ॥२०॥
 अहवा तइयाए पोरिसीए, ऊणाइ घासमेसन्तो ।
 चउभागूणाए वा, एवं कालेण ऊ भवे ॥२१॥
 इत्थी वा पुरिसो वा, अलंकिओ वा नलेकिओ वावि ।
 अन्नयरवयत्थो वा, अन्नयरेणां व वत्थेणं ॥२२॥
 अन्नेण विसेसेणां, वण्णेणं भावमणुमुयन्ते उ ।
 एवं चरमाणो खलु, भावोमाणं मुण्येयव्वं ॥२३॥
 दव्वे खेत्ते काले भावम्मि य आहिया उ जे भावा ।
 एएहि ओमचरओ, पज्जवचरओ भवे भिक्खू ॥२४॥
 अट्ठविहगोयरग्गं तु, तहा सत्तेव एसणा ।
 अभिग्गहा य जे अन्ने, भिक्खायरियमाहिया ॥२५॥
 खीरदहिसप्पिमाई, पणीयं पाणभोयरां ।
 परिवज्जरां रसारां तु, भणियं रसविवज्जरां ॥२६॥
 ठाणा वीरासणाईया, जीवस्स उ सुहावहा ।
 उग्गा जहा धरिज्जन्ति, कायकिलेसं तमाहियं ॥२७॥
 एगन्तमणावाए, इत्थीपसुविवज्जिए ।
 सयणासणसेवणया, विवित्तसयणासरां ॥२८॥
 एसो बाहिरंगतवो, समासेण वियाहिओ ।
 अब्भिन्तरं तवं एत्तो, बुच्छामि अणुपुव्वसो ॥२९॥
 पायच्छित्तं विणओ, येयावच्च तहेव सज्झाओ ।
 भाणां च विउसग्गो, एसो अब्भिन्तरो तवो ॥३०॥
 आलोयणारिहाईयं, पायच्छित्तं तु दसविहं ।
 जं भिक्खू वहई सम्मं, पायच्छित्तं तमाहियं ॥३१॥
 अब्भुट्ठाणां अंजलिकरणां, तहेवासणदायरां ।
 गुरुभत्तिभावसुस्सुसा, विणओ एस वियाहिओ ॥३२॥

आयरियमाईए, वेयावच्चम्मि दसविहे ।
 आसेवणं जहाथामं, वेयावच्चं तमाहियं ॥३३॥
 वायला पुच्छणा चेव, तहेव परियट्ठणा ।
 अणुप्पेहा धम्मकहा, सज्झाओ पञ्चहा भवे ॥३४॥
 अट्ठरुद्धाणि वज्जित्ता, झाएज्जा सुसमाहिए ।
 धम्मसुक्काइं भाणाइं, भाणां तं तु बुहा वए ॥३५॥
 सयणासण्ठाणे वा जे उ भिक्खू न चावरे ।
 कायस्स विउस्सगो, छट्ठो सो परिकित्तिओ ॥३६॥
 एवं तवं तु दुविहं, जे सम्मं आयरे मुणी ।
 सो खिप्पं सच्चसंसारा, विप्पमुच्चइ पण्डित्थो ॥३७॥ त्ति बेमि

॥ तवमगं समत्तं ॥३०॥

॥ अह चरणविही नामं एगतीसइमं अज्झयणं ॥

चरणविहिं पवक्खामि, जीवस्स उ सुहावहं ।
 जं चरित्ता बहू जीवा, तिण्णा संसारसागरं ॥१॥
 एगओ विरइं कुज्जा, एगओ य पवत्तणं ।
 असंजमे नियत्तिं च, संजमे य पवत्तणं ॥२॥
 रागदोसे य दो पावे, पावकम्मपवत्तणे ।
 जे भिक्खू संभई निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥३॥
 दण्डाणं धारवाणं च, सल्लाणं च तियं तियं ।
 जे भिक्खू चयइ निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥४॥
 दिव्वे य जे उवसग्गे, तहा तेरिच्छमाणुसे ।
 जे भिक्खू सहई निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥५॥
 विगहाकसायसन्नाणं झाणाणं च दुयं तहा ।
 जे भिक्खू वज्जई निच्चं से न अच्छइ मण्डले ॥६॥

वणसु इन्द्रियत्थेसु, समिईसु किरियासु य ।
 जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥७॥
 लेसासु छसु काणपु छके आहारकारणे ।
 जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥८॥
 पिरडोग्गहपडिमासु, भयट्ठाणेसु सत्तसु ।
 जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥९॥
 मदेसु बम्भगुत्तीसु, भिक्खुधम्ममि दसविहे ।
 जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥१०॥
 उवासगाणां पडिमासु, भिक्खूणां पडिमासु य ।
 जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥११॥
 किरियासु भूयगामेसु, परमाहम्मिएसु य ।
 जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥१२॥
 गाहासोलसएहिं, तहा असंजम्मि य ।
 जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥१३॥
 बम्भम्मि नायज्झयणेसु, ठाणेसु य ऽसमाहिण ।
 जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥१४॥
 एगवीसाए सबले, बावीसाए परीसहे ।
 जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥१५॥
 तेवीसाइ सूयगडे, रूवाहिएसु सुरेसु अ
 जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥१६॥
 पणुवीसभावणासु, उदेसेसु दसाइरां ।
 जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥१७॥
 अणगारगुणेहिं च, पगप्पम्मि तहेव य ।
 जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥१८॥
 पावसुयपसंगेसु, मोहठाणेसु चेव य ।
 जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥१९॥

सिद्धाद्गुणजोगेसु, तेत्तीसासायणासु य ।
 जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥२०॥
 इय एणसु ठाणेसु, जे भिक्खू जयई सया ।
 खिण्णं सो सव्वसंसारो, विण्णमुच्चइ परिडओ ॥२१॥ त्ति वेमि
 ॥ चरणविही समत्ता ॥२१॥

॥ अह पमायद्वाणं वत्तीसइमं अज्झयणं ॥

अच्चन्तकालस्स समूलगस्स,
 सव्वस्स दुक्खस्स उ जो पमोक्खो ।
 तं भासओ मे पडिपुणचित्ता,
 सुणेह एगन्तहियं हियत्थं ॥१॥
 नाणस्स सव्वस्स पगासणाए,
 अन्नाणमोहस्स विवज्जणाए ।
 रागस्स दोसस्स य संखपणां,
 एगन्तसोक्खं समुवेइ मोक्खं ॥२॥
 तस्सेस मग्गो गुरुविद्धसेवा,
 विवज्जणा बालजणस्स दूरा ।
 सज्झायएगन्तनिसेवणा य,
 सुत्तत्थसंचिन्तणया धिई य ॥३॥
 आहारमिच्छे मियमेसणिज्जं,
 सहायमिच्छे निउणत्थबुद्धिं ।
 निक्केयमिच्छेज्ज विवेगजोग्गं,
 समाहिकामे समणे तवस्सी ॥४॥
 न वा लभेज्जा निउणं सहायं
 गुणाहियं वा गुणओ समं वा ।

एगो वि पावाइ 'विवज्जयंतो,
 विहरेज्ज कामेसु असज्जमाणो ॥५॥
 जहा य अंडप्पभवा बलागा,
 अण्डं बलागप्पभवं जहा य ।
 एमेव मोहाययणं खु तणहा,
 मोहं च तणहाययणं वयन्ति ॥६॥
 रागो य दोसो वि य कम्मवीयं,
 कम्मं च मोहप्पभवं वयन्ति ।
 कम्मं च जाइमरणस्स मूलं,
 दुक्खं च जाइमरणं वयन्ति ॥७॥
 दुक्खं हयं जस्स न होइ मोहो,
 मोहो हओ जस्स न होइ तणहा ।
 तणहा हया जस्स न होइ लोहो,
 लोहो हओ जस्स न किंचणाइं ॥८॥
 रागं च दोसं च तहेव मोहं,
 उद्धत्तुकामेण समूलजालं ।
 जे जे उवाया पडिवज्जियव्वा,
 ते कित्तइस्सामि अहाणुपुट्ठिव ॥९॥
 रसा पगामं न निसेवियव्वा,
 पायं रसा दित्तिकरा नराणं ।
 दित्तं च कामा समभिद्वन्ति,
 दुमं जहा साउफलं व पक्खी ॥१०॥
 जहा दवग्गी पउरिन्धरो वणे,
 समारुओ नोवसमं उवेइ ।

एविन्द्रियग्गी वि पगामभोइणो,
 न बम्भयारिस्स हियाय कस्सई ॥११॥
 विवित्तसेज्जासणजन्तियाणं,
 ओमासणाणं दमिइन्द्रियाणं ।
 न रागसत्तू धरिसेइ चित्तं,
 पराइओ वाहिरिवोसहेहिं ॥१२॥
 जहा विरलावसहस्स मूले,
 न मूसगाणं वसही पसत्था ।
 एमेव इत्थीनिलयस्स मज्जे,
 न बम्भयारिस्स खमो निवासो ॥१३॥
 न रूवलावणविलासहासं,
 न जंपियं इंगियपेहियं वा ।
 इत्थीण चित्तंसि निवेसइत्ता,
 दट्ठुं ववस्से समणे तवस्सी ॥१४॥
 अदंसणं चेव अपत्थणं च,
 अचिन्तणं चेव अकित्ताणं च ।
 इत्थीजणस्सारियज्झाणजुगं,
 हियं सया बम्भवए रयाणं ॥१५॥
 कामं तु देवीहि विभूसियाहिं,
 न चाइया खोभइउं तिगुत्ता ।
 तहा वि एगन्तहियं ति नच्चा,
 विवित्तवासो मुणिणं पसत्थो ॥१६॥
 मोक्खामिकंखिस्स उ माणवस्स,
 संसारभीरुस्स ठियस्स धम्मे ।
 नेयारिस्सं दुत्तरमत्थि लोए,
 जहिस्सिओ बालमणोहराओ ॥१७॥

एष य संगे समइकमिच्छा,
 सुहुत्तरा चेव भवन्ति सेसा ।
 जहा महासागरमुत्तरिच्छा,
 नई भवे अवि गङ्गासमाणा ॥१८॥
 कामाणुगिद्धिप्पभवं खु दुक्खं,
 सव्वस्स लोगस्स सदेवगस्स ।
 जं काइयं माणसियं च किंछि,
 तस्सन्तगं गच्छइ वीयरगो ॥१९॥
 जहा य किम्भागफला मणोरमा,
 रस्सेण वण्णेण य भुज्जमाणा ।
 ते खुइए जीविए पञ्चमाणा,
 एओवमा कामगुणा विवागे ॥२०॥
 जे इंदियाणं विसया मणुत्ता,
 न तेसु भावं निसिरे कयाइ ।
 न यामणुत्तेसु मणं पि कुज्जा,
 समाहिकामे समणे तवस्सी ॥२१॥
 चक्खुस्स रूवं गहणं वयन्ति,
 तं रागहेउं तु मणुत्तमाहु ।
 तं दोसहेउं अमणुत्तमाहु,
 समो य जो तेसु स वीयरगो ॥२२॥
 रूवस्स चक्खुं गहणं वयन्ति,
 चक्खुस्स रूवं गहणं वयन्ति ।
 रागस्स हेउं समणुत्तमाहु,
 दोसस्स हेउं अमणुत्तमाहु ॥२३॥
 रूवेसु जो गिद्धिमुवेइ तिब्बं,
 अकालियं पावइ से विणासं ।

रागाउरे से जह वा पर्यंगे,
 आलोयलोले समुवेइ मच्चुं ॥२४॥
 जे यावि दोसं समुवेइ तिच्चं,
 तंसि कखणे से उ उवेइ दुक्खं ।
 दुहन्तदोसेण सएण जन्तु,
 न किञ्चि रूवं अवरज्झइ से ॥२५॥
 एगन्तरत्ते रुहरंसि रूवे,
 अतालसे से कुणई पओसं ।
 दुक्खस्स सम्पीलमुवेइ बाले,
 न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥२६॥
 रूवाणुगासाणुगए य जीवे,
 चराचरे हिंसइ ऽणोगरूवे ।
 चित्तेहि ते परितावेइ बाले,
 पीलेइ अत्तट्ठगुरु किलिट्ठे ॥२७॥
 रूवाणुवाएण परिग्गहेण,
 उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
 वए विओगे य कहं सुहं से,
 सम्भोगकाले य अतित्तलामे ? ॥२८॥
 रूवे अतित्ते य परिग्गहम्मि,
 सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं ।
 अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स,
 लोभाविहे आययई अदत्तं ॥२९॥
 तएहाभिभूयस्स अदत्तहारिणो,
 रूवे अतित्तस्स परिग्गहे य ।
 मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा,
 तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥३०॥

मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य,
 पयोगकाले य दुही दुरन्ते ।
 एवं अदत्ताणि समाययन्तो,
 रूवे अत्तिओ दुहिओ अणिस्सो ॥२१॥
 रूवाणुरत्तस्स नरस्स एवं,
 कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किञ्चि ।
 तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं,
 निव्वत्ताई जस्स कएण दुष खं ॥२२॥
 एमेव रूवस्मि गओ पओसं,
 उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।
 पदुट्टचित्तो य चिणाइ कम्मं,
 जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥२३॥
 रूवे विरत्तो मणुओ विसोगो,
 एएण दुक्खोहपरंपरेण ।
 न लिप्पए भवमज्जे वि सन्तो,
 जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥२४॥
 सोयस्स सद्दं गहणां वयन्ति,
 तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु ।
 तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु,
 समो य जो तेसु स वीयरगो ॥२५॥
 सहस्स सोयं गहणां वयन्ति,
 सोयस्स सद्दं गहणां वयन्ति ।
 रागस्स हेउं समणुन्नमाहु,
 दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ॥२६॥
 सद्देसु जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं,
 अकालियं पावइ से विणासं ।

रागाउरे हरिणमिगे व मुद्धे,
 सहे अतित्ते समुवेइ मच्चुं ॥३७॥
 जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं,
 तंसि कखणे से उ उवेइ दुक्खं ।
 दुहन्तदोसेण सपण जन्तू,
 न किञ्चि सहो अवरज्झई से ॥३८॥
 एगन्तरत्ते रुइरंसि सहे,
 अताल्लिसे से कुणई पओसं ।
 दुक्खस्स सम्पीलमुवेइ बाले,
 न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥३९॥
 सद्वाणुगासाणुगण य जीवे,
 चराचरे हिंसइ ऽणेरूवे
 चित्तेहि ते परितावेइ बाले,
 पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिद्धे ॥४०॥
 सद्वाणुवापण परिग्गहेण,
 उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
 वण विओगे य कहं सुहं से,
 संभोगकाले य अतित्तलामे ॥४१॥
 सहे अतित्ते य परिग्गहम्मि,
 सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठि ।
 अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स,
 लोभाविले आययई अदत्तं ॥४२॥
 तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो,
 सहे अतित्तस्स परिग्गहे य ।
 मावामुसं वड्ढइ लोभदोसा,
 तत्थावि दुक्खा न विमुच्चइ से ॥४३॥

मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य,
 पओगकाले य दुही दुरन्ते ।
 एवं अदत्ताणि समाययन्तो,
 सहे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥४४॥
 सहाणुरत्तस्स नरस्स एवं,
 कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि ?
 तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं,
 निव्वराई जस्स कएण दुक्खं ॥४५॥
 एमेव सहम्मि गओ पओसं,
 उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।
 पदुट्ठचित्तो य चिणाइ कम्मं,
 जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥४६॥
 सहे विरत्तो मणुओ विसोगो,
 एएण दुक्खोहपरंपरेण ।
 न लिप्पए भवमज्जे वि सन्तो,
 जत्तेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥४७॥
 घाणस्स गन्धं गहणं वयन्ति,
 तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु ।
 तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु,
 समो य जो तेसु स वीयरगो ॥४८॥
 गन्धस्स घाणं गहणं वयन्ति,
 घाणस्स गंधं गहणं वयन्ति ।
 रागस्स हेउं समणुन्नमाहु
 दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ॥४९॥
 गन्धेसु जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं,
 अकालियं पावइ से विणासं ।

रागाउरे ओसहगन्धगिद्धे,
 सण्णे बिलाओ विव निक्खमंते ॥५०॥
 जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं,
 तंसि कखणे से उ उवेइ दुक्खं ।
 दुदन्तदोसेण सण्ण जन्तू,
 न किञ्चि गन्धं अवरज्झई से ॥५१॥
 एगन्तरत्ते रुद्धंस्सि गन्धे,
 अतालसे से कुणई पओसं ।
 दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले,
 न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥५२॥
 गन्धाणुगासाणुगए य जीवे,
 चराचरे हिंसइ ऽणेगरूवे ।
 चित्तेहि ते परितावेइ बाले,
 पीलेइ अत्ताट्ठगुरू किलिट्ठे ॥५३॥
 गन्धाणुवाएण परिग्गहेण,
 उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
 वए विओगे य क्हं सुहं से,
 संभोगकाले य अतित्तलामे ? ॥५४॥
 गन्धे अतित्ते य परिग्गहम्मि,
 सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं ।
 अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स,
 लोभाविले आययई अदत्तं ॥५५॥
 तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो,
 गन्धे अतित्तस्स परिग्गहे य ।
 मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा,
 मत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥५६॥

मोसस्स पच्छ। य पुरत्थओ य,
 पओगकाले य दुही दुरन्ते ।
 एवं अदत्ताणि समाययन्तो,
 गन्धे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥५७॥
 गन्धाणुरत्तस्स नरस्स एवं,
 कुत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि ?
 तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं,
 निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥५८॥
 एमेव गन्धम्मि गओ पओसं,
 उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।
 पदुट्ठचित्तो य चिणाइ कम्मं,
 जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥५९॥
 गन्धे विरत्तो मणुओ विसो गो,
 एएण दुक्खोहपरंपरेण ।
 न लिप्पई भवमज्झे वि सन्तो,
 जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥६०॥
 जिब्भाए रसं गहणां वयन्ति,
 तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु ।
 तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु,
 समो य जो तेसु स वीयरगो ॥६१॥
 रसस्स जिब्भं गहणां वयंति,
 जिब्भाए रसं गहणां वयन्ति ।
 रागस्स हेउं समणुन्नमाहु,
 दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ॥६२॥
 रसेसु जो गिद्धिमुवेइ तिब्बं,
 अकालियं पावइ से विणासं ।

रागाउरे वडिसविभिन्नकाण,
 मच्छे जहा आमिसभोगगिद्धे ॥६३॥
 जे यावि दोसं समुवेइ तिच्चं,
 तसि कखणे से उ उवेइ दुक्खं ।
 दुद्धन्तदोसेण सणण जन्तू
 न किंचि रसं अवरज्झई से ॥६४॥
 एगन्तरत्ते रुइरंसि रसे,
 अतालसे से कुणई पओसं ।
 दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले,
 न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥६५॥
 रसाणुगासाणुगए य जीवे,
 चराचरे हिंसइऽणोगरूवे ।
 चित्तेहि ते परितावेइ बाले,
 पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे ॥६६॥
 रसाणुवाएण परिग्गहेण,
 उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
 वए विओगे य कहं सुहं से,
 संभोगकाले य अतित्तलाभे ? ॥६७॥
 रसे अतित्ते य परिग्गहम्मि,
 सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं ।
 अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स,
 लोभाविले आययई अदत्तं ॥६८॥
 तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो,
 रसे अदत्तस्स परिग्गहे य ।
 मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा,
 तत्थावि दुक्खा न त्रिमुच्चई से ॥६९॥

मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य,
 पओगकाले य दुही दुरन्ते ।
 एवं अदत्ताणि समाययन्तो,
 रसे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥७८॥
 रसाणुरत्तस्स नरस्स एवं,
 कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि ?
 तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं,
 निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥७९॥
 एमेव रसम्मि गओ पओसं,
 उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।
 पदुट्ठचित्तो य चिणाइ कम्मं,
 जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥८०॥
 रसे विरत्तो मणुओ विसोगो,
 एएण दुक्खोहपरंपरेण ।
 न लिप्पई भवमज्जे वि सन्तो,
 जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥८१॥
 कायस्स फासं गहणं वयन्ति,
 तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु ।
 तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु,
 समो य जो तेसु स वीयरगो ॥८२॥
 फासस्स कायं गहणं वयन्ति,
 कायस्स फासं गहणं वयन्ति ।
 रागस्स हेउं समणुन्नमाहु,
 दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ॥८३॥
 फासेसु जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं,
 अकालियं पावइ से विणासं ।

रागाउरे सीयजलावसन्ने,
 गाहग्गहीए महिसे विवन्ने ॥७६॥
 जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं,
 तंसि कखणे से उ उवेइ दुक्खं ।
 दुइन्तदोसेण सएण जन्तू,
 न किञ्चि फासं अवरज्झई से ॥७७॥
 एगन्तरत्ते रुइरंमि फासे,
 अतालिसे से कुणई पओसं ।
 दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले,
 न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥७८॥
 फासाणुगासाणुगए य जीवे,
 चराचरे हिंसइऽणेगरूवे ।
 चित्तेहि ते परितावेइ बाले,
 पीलेहि अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे ॥७९॥
 फासाणुवाएण परिग्गहेण,
 उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
 वए विओगे य कहं सुहं से,
 संभोगकाले य अतित्तलामे ॥८०॥
 फासे अतित्ते य परिग्गहम्मि,
 सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं ।
 अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स,
 लोभाविले आययई अदत्तं ॥८१॥
 तएहाभिभूयस्स अदत्तहारिणो,
 फासे अतिरास्स परिग्गहे य ।
 मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा,
 तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥८२॥

मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य,
 पओगकाले य दुही दुरंते ।
 एवं अदत्ताणि समांययन्तो,
 फासे अत्तिओ दुहिओ अणिस्सो ॥८३॥
 फासाणुरत्तस्स नरस्स एवं,
 कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि ?
 तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं,
 निव्वत्ताई जस्स कएण दुक्खं ॥८४॥
 एमेव फासम्मि गओ पओसं,
 उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।
 पदुट्टचित्तो य चिणाइ कम्मं,
 जं से पुणे होइ दुहं विवागे ॥८५॥
 फासे विरत्तो मणुओ विसोगे,
 एएण दुक्खोहपरंपरेण ।
 न लिप्पई भवमज्जे वि सन्तो,
 जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥८६॥
 मणस्स भावं गहणां वयन्ति,
 तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु ।
 तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु,
 समो य जो तेसु स वीयरानो ॥८७॥
 भावस्स मणां गहणां वयन्ति,
 मणस्स भावं गहणां वयन्ति ।
 रागस्स हेउं समणुन्नमाहु,
 दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ॥८८॥
 भावेसु जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं,
 अकालियं पावइ से विणासं ।

रागाउरे कामगुणेषु गिद्धे,
 करेणुमग्गावहिण गजे वा ॥८९॥
 जे यावि दोसं समुवेइ तिब्बं,
 तंसि कखणे से उ उवेइ दुक्खं ।
 दुहन्तदोसेण सपण जन्तू,
 न किंचि भावं अवरज्झई से ॥९०॥
 एगन्तरत्ते रुइरंसि भावे,
 अतालसे से कुणई पओसं ।
 दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले,
 न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥९१॥
 भावाणुगासाणुगए य जीवे,
 चराचरे हिंसइऽणेगरूवे ।
 चित्तेहि ते परितावेइ बाले,
 पीलेहि अत्तट्ठगुरू किलिट्ठ ॥९२॥
 भावाणुवाएण परिग्गहेण,
 उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
 वए विओगे य कइं सुहं से,
 संभोगकाले य अतित्तलाभे ? ॥९३॥
 भावे अतित्ते य परिग्गहम्मि,
 सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं ।
 अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स,
 लोभाविले आययई अदत्तं ॥९४॥
 तएहाभिभूयस्स अदत्तहारिणो,
 भावे अतित्तस्स परिग्गहे य ।
 मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा,
 तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥९५॥

मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य,
 पओगकाले य दुही दुरन्ते ।
 एवं अदत्ताणि समाययन्तो,
 भावे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥६६॥
 भावाणुरत्तस्स नरस्स एवं,
 कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किञ्चि ?
 तत्थेवभोगे वि किलेसदुक्खं,
 निव्वत्ताई जस्स कएण दुक्खं ॥६७॥
 एमेव भावस्मि गओ पओसं,
 उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।
 पदुट्ठचित्तो य चिणाइ कम्मं,
 जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥६८॥
 भावे विरत्तो मणुओ विसोमो,
 एएण दुक्खोहपरंपरेण ।
 न लिप्पई भवमज्जे वि सत्तो,
 जस्से वा पोक्खरिणःपलासं ॥६९॥
 एविन्दियत्था ये मणस्स अत्था,
 दुक्खस्स हेउं मणुयस्स रागिणो ।
 ते चेव थोवं पि कयाइ दुक्खं,
 न वीयरगस्स कोरन्ति किञ्चि ॥७०॥
 न कामभोगा समयं उरन्ति,
 न यावि भोगा विगइं उवेन्ति ।
 जे तप्पओसी य परिग्गही य,
 सो तेसु मोहा विगइं उवेइ ॥७१॥
 कोहं च माणां च तहेव मायं,
 लोहं दुगुंच्छं अरइं रइं च ।

हासं भयं सोगपुमितिथवेयं,
 नपुंसवेयं विविहे य भावे ॥१०२॥
 आवज्जई एवमणेरूवे,
 एवंविहे कामगुणेषु सत्तो ।
 अन्ने य एयणभवे विसेसे,
 कारुणदीणे हिरिमे वइस्से ॥१०३॥
 कण्णं न इच्छिज्ज सहायलिच्छू,
 पच्छाणुतावे न तवण्णभावं ।
 एवं वियारे अमियण्णयारे,
 आवज्जइ इन्दियचोरवस्से ॥१०४॥
 तओ से जायन्ति पओयणाईं,
 निमज्जिउं मोहमहरणवम्मि ।
 सुहेसिणो दुक्खविणोयणद्धा,
 तण्णयं उज्जमण य रागी ॥१०५॥
 विरज्जमाणस्स य इन्दियत्था,
 सद्दाइया तावइयण्णगारा ।
 न तस्स सव्वे वि मणुन्नयं वा,
 निव्वत्तयंती अमणुन्नयं वा ॥१०६॥
 एवं ससंकण्णविकण्णणासुं,
 संजायई समयमुवट्ठियस्स ।
 अत्थे य संकण्णयओ तओ से,
 पहीयण कामगुणेषु तण्हा ॥१०७॥
 स वीयरगो कयसव्वकिच्चो,
 खवेइ नाणावरणां खणेणां ।
 तहेव जं दंसणमावरेइ,
 जं चन्तरायं पकरेइ कम्मं ॥१०८॥

सव्वं तओ जाणइ पासए य,
 अमोहणे होइ निरन्तराए ।
 अणासवे आणसमाहिजुत्ते,
 आउक्खए मोक्खमुवेइ सुद्धे ॥१०९॥
 सो तस्स सव्वस्स दुहस्स मुक्को,
 जं वाहई सययं जन्तुमेयं ।
 दीहामयं विप्पमुक्को पसत्थो,
 तो होइ अच्चन्तसुही कयत्थो ॥११०॥
 अणाइकालप्पभवस्स एसो,
 सव्वस्स दुक्खस्स पमोक्खमग्गो ।
 वियाहिओ जं समुविच्च सत्ता,
 कमेण अच्चन्तसुही भवन्ति ॥१११॥ त्ति वेमि
 ॥ पमायट्ठाणं समत्तं ॥३२॥

॥ अह कम्मप्पयडी णाम तेत्तीसइमं अजभयणं ॥

अट्ठं कम्माइं वोच्छामि, आणुपुर्व्वि जहकमं ।
 जेहिं बद्धो अयं जीवो, संसारे परिवट्ठइ^१ ॥१॥
 नाणस्सावरणिज्जं, दंसणावरणं तहा ।
 वेयणिज्जं तहा मोहं, आउकम्मं तहेव य ॥२॥
 नामकम्मं च गोयं च, अन्तरायं तहेव य ।
 एवमेयाइ कम्माइं, अट्ठेव उ समासओ ॥३॥
 नाणावरणं पञ्चविहं, सुयं आभिणिबोहियं ।
 ओहिनाणं च तइयं, मयूनाणं च केवलं ॥४॥
 निद्दा तहेव पयला, निद्धानिद्दा पयलपयला य ।
 तत्तो य श्रीणगिद्धी उ. पंचमा होइ नायव्वा ॥५॥

चकखुमचकखू ओहिस्स, दंसणे केवले य आवरणे ।
 एवं तु नवविगणं, नायव्वं दंसणावरणं ॥६॥
 वेयणीयंपि य दुविहं, सायमसायं च आहियं ।
 सायस्स उ बहू भेया, एमेव असायस्स वि ॥७॥
 मोहणिज्जंपि च दुवेहं, दंसणे चरणे तथा ।
 दंसणे तिविहं वुरां, चरणे दुविहं भवे ॥८॥
 सम्मत्तां चेव मिच्छतां, सम्मामिच्छत्तमेव य ।
 एयाओ तिल्लि पयडीओ, मोहणिज्जस्स दंसणे ॥९॥
 चरित्तमोहरां कम्मं, दुविहं तु वियाहियं ।
 कसायमोहणिज्जं तु, नोकसायं तहेव य ॥१०॥
 सोलसविहमेएरां, कम्मं तु कसायजं ।
 सत्तविहं नवविहं वा, कम्मं च नोकसायजं ॥११॥
 नेरइयतिरिक्खाउं, मणुस्साउं तहेव य ।
 देवाउयं चउत्थं तु, आउकम्मं चउत्थिवहं ॥१२॥
 नामकम्मं तु दुविहं, सुहमसुहं च आहियं ।
 सुभस्स उ बहू भेया, एमेव असुहस्स वि ॥१३॥
 गोयं कम्मं दुविहं, उच्चं नीयं च आहियं ।
 उच्चं अट्ठविहं होइ, एवं नीयं पि आहियं ॥१४॥
 दाणे लामे य भोगे ए, उवभोगे वीरिए तथा ।
 पञ्चविहमन्तरायं, समासेण वियाहियं ॥१५॥
 एयाओ मूलपयडीओ, उत्तराओ य आहिया ।
 पएसग्गं खेत्तकाले य, भावं च उत्तरं सुण ॥१६॥
 सव्वेसिं चेव कम्माणां, पएसग्गमणन्तगं ।
 गंठियसत्ताईयं, अन्तो सिद्धाण आहियं ॥१७॥

सव्वजीवाण कम्मं तु, संगहे छुद्दिसागयं ।
 सव्वेसु वि पणसेसु, सव्वं सव्वेण बद्धगं ॥१८॥
 उदहीसरिसनामाणां, तीसई कोडिकोडिओ ।
 उक्कोसिया ठिई होइ, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥१९॥
 आवरणिज्जाण दुग्गहंपि, वेयणिज्जं तहेव य ।
 अन्तराण य कम्मस्मि, ठिई एसा वियाहिया ॥२०॥
 उदहीसरिसनामाणां, सत्तरिं कोडिकोडिओ ।
 मोहणिज्जस्स उक्कोसा, अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥२१॥
 तेत्तीस सागरोवमा, उक्कोसेण वियाहिया ।
 ठिई उ आउकम्मस्स, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥२२॥
 उदहीसरिसनामाणां, वीसई कोडिकोडिओ ।
 नामगोत्ताणां उक्कोसा, अट्ठमुहुत्तं जहन्निया ॥२३॥
 सिद्धाणणन्तभागो य, अणुभागा हवन्ति उ ।
 सव्वेसु वि पणसगं, सव्वजीवेसु इच्छियं ॥२४॥
 तम्हा एएसि कम्माणां अणुभागा वियाणिया ।
 एएसि संवरे चेव, खवणे य जण बुहो ॥२५॥ त्ति वेमि

॥ कम्मप्पयडी समत्ता ॥२६॥

॥ अह लेसज्जयणं चोत्तीसइमं अज्जयणं ॥

लेसज्जयणं पवक्खामि, आणुपुट्ठि जहकम्मं ।
 छग्गहंपि कम्मलेसाणां, अणुभावे सुग्गेह मे ॥२७॥
 नामाई वण्णरसगन्धफासपरिणामलक्खणां ।
 ठाणां ठिई गइं चाउं, लेसाणां तु सुग्गेह मे ॥२८॥
 किग्गहा नीला य काऊ य, तेऊ पम्हा तहेव य ।
 सुक्कलेसा य छट्ठा य, नामाई तु जहकम्मं ॥२९॥

जीमूयनिद्धसंकासा, गवलरिटुगसन्निभा ।
 खंजंजनयणनिभा, किरहलेसा उ वरणओ ॥४॥
 नीलासोगसंकासा, चासपिच्छसम्पभा ।
 वेरुलियनिद्धसंकासा, नीललेसा उ वरणओ ॥५॥
 अयसीपुष्पसंकासा, कोइलच्छदसन्निभा ।
 पारेवयगीवनिभा, काऊलेसा उ वरणओ ॥६॥
 हिंगुलयधाउसंकासा, तरुणइच्चसन्निभा ।
 सुयतुरडपईवनिभा, तेउलेसा उ वरणओ ॥७॥
 हरियालभेयसंकासा, हलिदाभेयसम्पभा^१ ।
 सणासणकुसुमनिभा, पम्हलेसा उ वरणओ ॥८॥
 संखंककुन्दसङ्कासा, खीरपूरसम्पभा ।
 रययहारसंकासा, सुकलेसा उ वरणओ ॥९॥

जह कडुयतुम्बरसो,
 निम्बरसो कडुयरोहिणिरसो वा ।
 एत्तो वि अणन्तगुणो,
 रसो य किरहाए नायव्वो ॥१०॥

जह तिकडुयस्स य रसो,
 तिकखो जह हत्थिपिप्पलीए वा ।
 एत्तो वि अणन्तगुणो,
 रसो उ नीलाए नायव्वो ॥११॥

जह तरुणअम्बरसो,
 तुवरकविट्टस्स वावि जारिसओ ।
 एत्तो वि अणन्तगुणो,
 रसो उ काऊण नायव्वो ॥१२॥

जह परिणयम्बगरसो,
 पक्ककविट्टस्स वावि जारिसओ ।
 एत्तो वि अणन्तगुणो,
 रसो उ तेऊण नायव्वो ॥१३॥
 वरवारुणीए व रसो,
 विविहाण व आसवाण जारिसओ ।
 महुमेरयस्स व रसो,

एत्तो पम्हाए परएणं ॥१४॥
 खज्जूरमुद्दियरसो, खीररसो खंडसक्कररसो वा ।
 एत्तो वि अणंतगुणो, रसो उ सुक्काए नायव्वो ॥१५॥
 जह गोमडस्स गंधो सुणगमडस्स व जहा अहिमडस्स ।
 एत्तो वि अणंतगुणो, लेसाणं अप्पसत्थाणं ॥१६॥
 जह सुरहिकुसुमगंधो, गंधवासाण पिस्समाणाणं ।
 एत्तो वि अणंतगुणो, पसत्थलेसाण तिण्हं पि ॥१७॥
 जह करगयस्स फासो, गोजिब्भाए य सागपत्ताणं ।
 एत्तो वि अणंतगुणो, लेसाणं अप्पसत्थाणं ॥१८॥
 जह बूरस्स व फासो, नवणीयरस व सिरीसकुसुमाणं ।
 एत्तो वि अणंतगुणो, पसत्थलेसाण तिण्हंपि ॥१९॥
 तिविहो व नवविहो वा, सत्तावीसइविहेक्कसीओ वा ।
 दुसओ तेयालो वा, लेसाणं होइ परिणामो ॥२०॥
 पंचासवण्णवत्तो, तीहिं अगुत्तो दृसुं अविरओ य ।
 तिव्वारंभपरिणओ, खुदो सहासिओ नरो ॥२१॥
 निद्धन्धसपरिणामो, निस्संसो अजिइन्दिओ ।
 एयजोगसमाउत्तो, किण्हलेसं तु परिणमे ॥२२॥
 इस्साअमरिसअतवो, अविज्जमाया अहीरिया ।
 गिद्धी पओसे य सढे, पमत्ते रसलोलुप ॥२३॥

(सायगवेसएय) आरम्भाओ अविरओ, खुदो साहस्सिओ नरो
 एयजोगसमाउत्तो, नीललेसं तु परिणमे ॥२४॥
 वंके वंकसमायारे, नियड्डिले अणुज्जुए ।
 पलिउंचगओवहिए, मिच्छदिट्ठी अणारिए ॥२५॥
 उप्फालगदुट्ठवाई य, तेणे यावि य मच्छरी ।
 एयजोगसमाउत्तो, काऊलेसं तु परिणमे ॥२६॥
 नीयाविच्ची अचवले. अमाई अकुऊहले ।
 विणीयविणए दन्ते, जोगवं उवहाणवं । २७॥
 पियधम्मे दढधम्मेऽवज्जभीरू हिएसए ।
 एयजोगसमाउत्तो, तेउलेसं तु परिणमे ॥२८॥
 पयणुकोहमाणे य, मायालोभे य पयणुए ।
 पसन्तचित्ते दन्तप्पा, जोगवं उवहाणवं ॥२९॥
 तहा पयणुवाई य, उवसन्ते जिइन्दिए ।
 एयजोगसमाउत्तो, पम्हलेसं तु परिणमे ॥३०॥
 अट्ठग्गणि वज्जित्ता, धम्मसुक्काणि भायए ।
 पसन्तचित्ते दन्तप्पा, समिए गुत्ते य गुत्तिसु ॥३१॥
 सरागे वीयरगे वा, उवसन्ते जिइन्दिए ।
 एयजोगसमाउत्तो, सुक्कलेसं तु परिणमे ॥३२॥
 असंखिज्जाणोसप्पिणीण, उस्सप्पिणीण जे समया ।
 संखाईया लोगा, लेसाण हवन्ति ठाणाइं ॥३३॥
 मुहुत्तञ्चं तु जहन्ना, तेत्तीसा सागरा मुहुत्तहिया ।
 उक्कोसा होइ ठिई, नायव्वा किएहलेसाए ॥३४॥
 मुहुत्तञ्चं तु जहन्ना, दस उदही पलियमसंखभागमब्भहिया ।
 उक्कोसा होई ठिई, नायव्वा नीललेसाए ॥३५॥
 मुहुत्तञ्चं तु जहन्ना, तिएणुदही पलियमसंखभागमब्भहिया ।
 उक्कोसा होइ ठिई, नायव्वा काऊलेसाए ॥३६॥

मुहुत्तद्धं तु जहन्ना, दीरणुदही पलियमसंखभागमब्भहिया ।
 उक्कोसा होइ ठिई, नायव्वा तेउलेसाए ॥३७॥
 मुहुत्तद्धं तु जहन्ना, दस होन्ति य सागरा मुहुत्तहिया ।
 उक्कोसा होइ ठिई, नायव्वा पम्हलेसाए ॥३८॥
 मुहुत्तद्धं तु जहन्ना, तेत्तीसं सागरा मुहुत्तहिया ।
 उक्कोसा होइ ठिई, नायव्वा सुक्कलेसाए ॥३९॥
 एसा खलु लेसाणं, ओहेण ठिई उ वणिणया होइ ।
 चउमु वि गईसु एत्तो, लेसाण ठिई तु वोच्छामि ॥४०॥
 दस वाससहस्साइ, काऊए ठिई जहन्निया होइ ।
 तिण्णुदही पलिओवम, असंखभागं च उक्कोसा ॥४१॥
 तिण्णुदही पलिओवमसंखभागो जहन्नेण नीलठिई ।
 दस उदही पलिओवमअसंखभागं च उक्कोसा ॥४२॥
 दसउदही पलिओवमअसंखभागं जहन्निया होइ ।
 तेत्तीससागरां उक्कोसा, होइ किण्हाए लेसाए ॥४३॥
 एसा नेरइयाणं, लेसाण ठिई उ वणिणया होइ ।
 तेण परं वोच्छामि, तिरियमणुस्साण देवाणं ॥४४॥
 अन्तोमुहुत्तमद्धं, लेसाण ठिई जहिं जहिं जाउ ।
 तिरियाण नराणं वा, वज्जित्ता केवलं लेसं ॥४५॥
 मुहुत्तद्धं तु जहन्ना उक्कोसा होइ पुव्वकोडीओ ।
 नवहि वरिसेहि ऊणा, नायव्वा सुक्कलेसाए ॥४६॥

एसा तिरियनराणं,

लेसाण ठिई उ वणिणया होइ ।

तेण परं वोच्छामि,

लेसाण ठिई उ देवाणं ॥४७॥

दस वाससहस्साइ,

किण्हाए ठिई जहन्निया होइ ।

पलियमसंखिज्जइमो,

उक्कोसो होइ किएहाए ॥४८॥

जा किएहाए ठिई खलु,

उक्कोसा सा उ समयमव्वहिया ।

जहन्नेणं नीलाए,

पलियमसंखं च उक्कोसा ॥४९॥

जा नीलाए ठिई खलु,

उक्कोसा सा उ समयमव्वहिया ।

जहन्नेणं काऊए,

पलियमसंखं च उक्कोसा ॥५०॥

तेण परं वोच्छामि, तेऊलेसा जहा सुरगणाणं ।

भवणवइवाणमन्तरजोइसवेमाणियाणं च ॥५१॥

पलिओवमं जहन्ना, उक्कोसा सागरा उ दुव्वहिआ ।

पलियमसंखेज्जेणं, होइ भागेण तेऊए ॥५२॥

दसवाससहस्साइं, तेऊए ठिई जहन्निया होइ ।

दुन्नुदही पलिओवमअसंखभागं च उक्कोसा ॥५३॥

जा तेऊए ठिई खलु,

उक्कोसा सा उ समयमव्वहिया ।

जहन्नेणं पम्हाए,

दस उ मुहुत्ताहियाइ उक्कोसा ॥५४॥

जा पम्हाए ठिई खलु, उक्कोसा सा उ समयमव्वहिया ।

जहन्नेणं सुक्काए, तेत्तीसमुहुत्तमव्वहिया ॥५५॥

किएहा नीला काऊ, तिन्नि वि एयाओ अहम्मलेसाओ ।

एयाहिं तिहि वि जीवो, दुग्गइ उववज्जइ ॥५६॥

तेऊ पम्हा सुक्का, तिन्नि वि एयाओ धम्मलेसाओ ।

एयाहिं तिहि वि जीवो, सुग्गइ उववज्जइ ॥५७॥

लेसाहिं सञ्वाहिं, पढमे समयम्मि परिणयाहिं तु ।
 न हु कस्सइ उववाओ, परे भवे अत्थि जीवस्स ॥५८॥
 लेसाहिं सञ्वाहिं, चरिमे समयम्मि परिणयाहिं तु ।
 न हु कस्सइ उववाओ, परे भवे होइ जीवस्स ॥५९॥
 अन्तमुहुत्तमि गए, अन्तमुहुत्तमि सेसए चेव ।
 लेसाहि परिणयाहिं, जीवा गच्छन्ति परलोयं ॥६०॥
 तम्हा एयासि लेसाणां, अणुभावं वियाणिया ।
 अपसत्थाओ वज्जित्ता, पसत्थाओऽहिट्ठिए मुणी ॥६१॥ त्ति वेमि
 ॥ लेसज्झयणं समत्तं ॥३४॥

॥ अह अणगारिज्जं णाम पंचतीसइमं अज्झयणं ॥

सुणेह मे एगग्गमणा, मग्गं बुद्धेहि देसियं ।
 जमायरन्तो भिक्खू, दुक्खाणन्तकरे भवे ॥१॥
 गिहवासं परिच्चज्ज, पवज्जामस्सिए मुणी ।
 इमे संगे वियाणिज्ज, जेहिं सज्जन्ति माणवा ॥२॥
 तहेव हिंसं अलियं, चोज्जं अबम्भसेवणं ।
 इच्छाकामं च लोभं च, संजओ परिवज्जए ॥३॥
 मणोहरं चित्तधरं, मल्लभूवेण वासियं ।
 सकवाडं पण्डुरुल्लोयं, मणसावि न पत्थए ॥४॥
 इन्दियाणि उ भिक्खुस्स, तारिसम्मि उवस्सए ।
 दुक्कराइ निवारेउं, कामरागविवद्दणे ॥५॥
 सुसारो सुन्नगारे वा, रुक्खमूले व इक्कओ ।
 पइरिक्के परकडे वा, वासं तत्थाभिरोयए ॥६॥
 फासुयम्मि अणावाहे, इत्थीहिं अणभिद्दुए ।
 तत्थ संकप्पए वासं, भिवखू परमसंजए ॥७॥

न सयं गिहाइं कुव्विज्जा, रोव अन्नेहिं कारण ।
 गिहकम्पसमारम्भे, भूयाणां दिस्सए वहो ॥८॥
 तसारां थावराणां च, सुहुमाणां बादराण य ।
 तम्हा गिहसमारम्भं, संजओ परिवज्जए ॥९॥
 तहेव भत्तापाणेसु, पयणे पयावणेसु य ।
 पाणभूयदयट्ठाए, न पए न पयावए ॥१०॥
 जलधन्ननिस्सिया जीवा, पुढवीकट्टनिस्सिया ।
 हम्मन्ति भत्तापाणेसु, तम्हा भिक्खू न पयावए ॥११॥
 विसप्पे सञ्चओ धारे, बहुपाणिविणासणे ।
 नत्थि जोइसमे सत्थे, तम्हा जोइं न दीवए ॥१२॥
 हिरण्णां जायरूवं च, मणसा वि न पत्थए ।
 समलेट्ठुकंचणे भिक्खू, विरए कयविक्रए ॥१३॥
 किणन्तो कइओ होइ, विक्किणन्तो य वाणिओ ।
 कयविक्रयस्मि वट्टन्तो, भिक्खू न भवइ तारिसो ॥१४॥
 भिक्खियव्वं न केयव्वं, भिक्खुणा भिक्खवत्तिणा ।
 कयविक्रओ महादोसो, भिक्खावित्ती सुहावहा ॥१५॥
 समुयाणां उच्छमेसिज्जा, जहासुत्तमणिन्दियं ।
 लाभालाभस्मि संतुट्ठे, पिण्डवायं चरे मुणी ॥१६॥
 अलोले न रसे गिद्धे, जिब्भादन्ते अमुच्छिष्टए ।
 न रसट्ठाए भुंजिज्जा, जवणट्ठाए महामुणी ॥१७॥
 अच्चरां रयरां चेव, वन्दरां पूयरां तहा ।
 इट्ठीसक्कारसम्भारां, मणसा वि न पत्थए ॥१८॥
 सुक्कज्झाणां भियाणज्जा, अणियारो अकिंचणे ।
 वोसट्ठकाए विहरेज्जा, जाव कालस्स पज्जओ ॥१९॥

निज्जुहिऊण आहारं, कालधम्मे उवट्टिए ।
 १जहिऊण माणुसं बोन्दि, पट्ट दुक्खा विमुच्चई ॥२०॥
 निम्ममे निरहंकारे, वीयरगो अणासवो ।
 संपत्तो केवलं नाणं, सासयं परिणिव्वुए ॥२१॥ त्ति वेमि ।

॥ अणगारज्झयणं समत्तं ॥३५॥

॥ अह जीवाजीवविभत्ती णाम लुत्तीसइमं अज्झयणं ॥

जीवाजीवविभत्तिं मे, सुणेहेगमणा इओ ।
 जं जाणिऊण भिक्खू, सम्मं जयइ संजमे ॥१॥
 जीवा चेव अजीवा य, एस लोए वियाहिए ।
 अजीवदेसमागासे, अलोगे से वियाहिए ॥२॥
 दव्वओ खेत्तओ चेव, कालओ भावओ तहा ।
 परूवणा तेसिं भवे, जीवाणमजीवाण य ॥३॥
 रूविणो चेव रूवी य, अजीवा दुविहा भवे ।
 अरूवी दसहा वुत्ता, रूविणो य चउव्विहा ॥४॥
 धम्मत्थिकाए तद्देसे, तप्पएसे य आहिए ।
 अहम्मे तस्स देसे य तप्पएसे य आहिए ॥५॥
 आगासे तस्स देसे य, तप्पएसे य आहिए ।
 अद्धासमए चेव, अरूवी दसहा भवे ॥६॥
 धम्माधम्मे य दो चेव, लोगमित्ता वियाहिया ।
 लोगालोगे य आगासे, सप्पए समयखेत्तिए ॥७॥
 धम्माधम्मागासा, तिन्निवि एए अणाइया ।
 अपज्जवसिया चेव, सव्वद्धं तु वियाहिए ॥८॥
 समएवि सन्तइं पप्प, एवमेव वियाहिया ।
 आएसं पप्प साईए, सपज्जवसिएवि य ॥९॥

खन्धा य खन्धदेसा य, तप्पएसा तहेव य ।
 परमाणुणो य बोधव्वा, रूविणो य चउव्विहा ॥१०॥
 एगत्तेण पुहत्तेरां, खन्धा य परमाणु य ।
 लोएगदेसे लोए य, भइयव्वा ते उ खेत्तओ ॥११॥
 (सुहुमा सव्वलोगम्मि लोएगदेसे य वायरा ।)
 इत्तो कालविभागं तु, तेसिं वुच्चं चउव्विहं ॥१२॥
 संतइं पप्प तेऽणाई, अप્पज्जवसियावि य ।
 ठिई पडुच्च साईया, सपज्जवસિયા વિ ય ॥१૩॥
 असंखकालमुक्कोसं, एक्को समओ जहन्नयं ।
 अजीवाण य रूवीण, ठिई एसा वियाहिया ॥१४॥
 અસંખકાલમુક્કોસં, એક્કો સમઓ જહન્નયં ।
 અજીવાણ ય રૂવીણ, અન્તરેયં વિયાહિયં ॥૧૫॥
 વણઓ ગન્ધઓ ચેવ, રસઓ ફાસઓ તહા ।
 સંઠાણઓ ય વિન્નેઓ, પરિણામો તેસિ પંચહા ॥૧૬॥
 વણઓ પરિણયા જે ઉ, પશ્ચહા તે પકિત્તિયા ।
 કિણહા નીલા ય લોહિયા, હલિદા સુક્કિલા તહા ॥૧૭॥
 ગન્ધઓ પરિણયા જે ઉ, દુવિહા તે વિયાહિયા ।
 સુભિગન્ધપરિણામા, દુભિગન્ધા તહેવ ય ॥૧૮॥
 રસઓ પરિણયા જે ઉ, પશ્ચહા તે પકિત્તિયા ।
 તિત્તકડુયકસાયા, અમ્બિલા મહુરા તહા ॥૧૯॥
 ફાસઓ પરિણયા જે ઉ, અટ્ટહા તે પકિત્તિયા ।
 કક્કલડા મઝા ચેવ, ગરુયા લહુઆ તહા ॥૨૦॥
 સીયા ઊગહા ય નિદ્ધા ય, તહા લુક્ખા ય આહિયા ।
 હિય ફાસપરિણયા એવ, પુગ્ગલા સમુદાહિયા ॥૨૧॥
 સંઠાણઓ પરિણયા જે ઉ, પશ્ચહા તે પકિત્તિયા ।
 પરિમંડલા ય વટ્ટા ય, તંસા ચઉરંસમાયયા ॥૨૨॥

વણઑ જે ભવે કિણહે, મહણ સે ડ ગન્ધઑ ।
 રસઑ ફાસઑ ચેવ, મહણ સંઠાણઑવિ ય ॥૨૩॥
 વણઑ જે ભવે નીલે, મહણ સે ડ ગન્ધઑ ।
 રસઑ ફાસઑ ચેવ, મહણ સંઠાણઑવિ ય ॥૨૪॥
 વણઑ લોહિણ જે ડ, મહણ સે ડ ગન્ધઑ ।
 રસઑ ફાસઑ ચેવ મહણ સંઠાણઑવિ ય ॥૨૫॥
 વણઑ પીયણ જે ડ, મહણ સે ડ ગન્ધઑ ।
 રસઑ ફાસઑ ચેવ, મહણ સંઠાણઑવિ ય ॥૨૬॥
 વણઑ સુક્કિલે જે ડ, મહણ સે ડ ગન્ધઑ ।
 રસઑ ફાસઑ ચેવ, મહણ સંઠાણઑવિ ય ॥૨૭॥
 ગન્ધઑ જે ભવે સુઘ્મી, મહણ સે ડ વણઑ ।
 રસઑ ફાસઑ ચેવ, મહણ સંઠાણઑવિ ય ॥૨૮॥
 ગન્ધઑ જે ભવે દુઘ્મી, મહણ સે ડ વણઑ ।
 રસઑ ફાસઑ ચેવ, મહણ સંઠાણઑવિ ય ॥૨૯॥
 રસઑ તિત્તણ જે ડ, મહણ સે ડ વણઑ ।
 ગન્ધઑ રસઑ ચેવ, મહણ સંઠાણઑવિ ય ॥૩૦॥
 રસઑ કહુણ જે ડ, મહણ સે ડ વણઑ ।
 ગન્ધઑ ફાસઑ ચેવ, મહણ સંઠાણઑવિ ય ॥૩૧॥
 રસઑ કસાણ જે ડ, મહણ સે ડ વણઑ ।
 ગન્ધઑ ફાસઑ ચેવ, મહણ સંઠાણઑવિ ય ॥૩૨॥
 રસઑ અમ્બિલે જે ડ, મહણ સે ડ વણઑ ।
 ગન્ધઑ ફાસઑ ચેવ, મહણ સંઠાણઑવિ ય ॥૩૩॥
 રસઑ મહુરણ જે ડ, મહણ સે ડ વણઑ ।
 ગન્ધઑ ફાસઑ ચેવ, મહણ સંઠાણઑવિ ય ॥૩૪॥
 ફાસઑ કકલ્હે જે ડ, મહણ સે ડ વણઑ ।
 ગન્ધઑ રસઑ ચેવ, મહણ સંઠાણઑવિ ય ॥૩૫॥

ફાસઓ મડણ જે ઉ, મડણ સે ઉ વણઓ ।
 ગન્ધઓ રસઓ જેવ, મડણ સંઠાણઓવિ ય ॥૩૬॥
 ફાસઓ ગુરુણ જે ઉ, મડણ સે ઉ વણઓ ।
 ગન્ધઓ રસઓ જેવ, મડણ સંઠાણઓવિ ય ॥૩૭॥
 ફાસઓ લઘુણ જે ઉ, મડણ સે ઉ વણઓ ।
 ગન્ધઓ રસઓ જેવ, મડણ સંઠાણઓવિ ય ॥૩૮॥
 ફાસણ સીયણ જે ઉ, મડણ સે ઉ વણઓ ।
 ગન્ધઓ રસઓ જેવ, મડણ સંઠાણઓવિ ય ॥૩૯॥
 ફાસઓ ડગહણ જે ઉ, મડણ સે ઉ વણઓ ।
 ગન્ધઓ રસઓ જેવ, મડણ સંઠાણઓવિ ય ॥૪૦॥
 ફાસઓ નિદ્ધણ જે ઉ, મડણ સે ઉ વણઓ ।
 ગન્ધઓ રસઓ જેવ, મડણ સંઠાણઓવિ ય ॥૪૧॥
 ફાસઓ લુક્કણ જે ઉ, મડણ સે ઉ વણઓ ।
 ગન્ધઓ રસઓ જેવ, મડણ સંઠાણઓવિ ય ॥૪૨॥
 પરિમણડલસંઠાણે, મડણ સે ઉ વણઓ ।
 ગન્ધઓ રસઓ જેવ, મડણ ફાસઓવિ ય । ૪૩॥
 સંઠાણઓ ભવે વટ્ટે, મડણ સે ઉ વણઓ ।
 ગન્ધઓ રસઓ જેવ, મડણ ફાસઓવિ ય ॥૪૪॥
 સંઠાણઓ ભવે તંસે, મડણ સે ઉ વણઓ ।
 ગન્ધઓ રસઓ જેવ, મડણ ફાસઓવિ ય ॥૪૫॥
 સંઠાણઓ ય ચડરંસે, મડણ સે ઉ વણઓ ।
 ગન્ધઓ રસઓ જેવ, મડણ ફાસઓવિ ય ॥૪૬॥
 જે આયયસંઠાણે, મડણ સે ઉ વણઓ ।
 ગન્ધઓ રસઓ જેવ, મડણ ફાસઓવિ ય ॥૪૭॥
 ણસા અજીવવિભત્તી, સમાસેણ વિયાહિયા ।
 દત્તો જીવવિભત્તિ, વુચ્છામિ અણુપુવ્વસો ॥૪૮॥

संसारत्था य सिद्धा य, दुविहा जीवा दियहिया ।
 सिद्धा रोगविहा वुत्ता, तं मे कित्तयओ सुण ॥४६॥
 इत्थीपुरिससिद्धा य, तहेव य नपुंसगा ।
 सलिंगे अन्नलिंगे य, गिहिलिंगे तहेव य ॥५०॥
 उक्कोसोगाहणाए य, जहन्नमज्झिमाइ य ।
 उड्ढं अहे य तिरियं च, समुद्दम्मि जलम्मि य ॥५१॥
 दस य नपुंसएसु, वीसं इत्थियासु य ।
 पुरिसेसु य अट्टसयं, समएणेगेण सिज्झइ ॥५२॥
 चत्तारि य गिहिलिंगे, अन्नलिंगे दसेव य ।
 सलिंगेण अट्टसयं, समएणेगेण सिज्झइ ॥५३॥
 उक्कोसोगाहणाए य, सिज्झन्ते जुगवं दुवे ।
 चत्तारि जहन्नाए मज्जे अट्ठुत्तरं सयं ॥५४॥
 चउरुद्धलोए य दुवे समुद्धे,
 तओ जले वीसमहे तहेव य ।
 सयं च अट्ठुत्तरं तिरियलोए,
 समएणेगेण सिज्झइ धुवं ॥५५॥
 कहिं पडिहया सिद्धा ? कहिं सिद्धा पइट्ठिया ?
 कहिं बोन्दि, चइत्ताणां ? कत्थ गन्तूण सिज्झइ ? ॥५६॥
 अलोए पडिहया सिद्धा, लोयग्गे य पइट्ठिया ।
 इहं बोन्दि चइत्ताणां, तत्थ गन्तूण सिज्झइ ॥५७॥
 बारसहिं जोयणेहिं, सव्वट्ठस्सुवरिं भवे ।
 ईसिपब्भारनामा उ, पुढवी छत्तसंठिया ॥५८॥
 पणयालसयसहस्सा, जोयणाणां तु आयया ।
 तावइयं चेव वित्थिण्णा, तिगुणो साहिय परिरओ ॥५९॥

अट्टजोयणवाहल्ला, सा मज्झम्मि वियाहिया ।
परिहायन्ती चरिमन्ते, मच्छिपत्ताउ तणुययरी ॥६०॥

अज्जुण सुवणणमई,

सा पुढवी निम्मला सहावेण ।

उत्ताणगच्छत्तगसंठिया य,

भणिया

जिणवरेहिं ॥६१॥

संखंककुंदसंकासा, पराडुग निम्मला सुहा ।

सीयाए जोयणे तत्तो, लोयन्तो उ वियाहिओ ॥६२॥

जोयणस्स उ जो तत्थ, कोसो उवरिमो भवे ।

तस्स कोसस्स छम्भाए, सिद्धाणोगाहणा भवे ॥६३॥

तत्थ सिद्धा महाभागा, लोगगम्मि पइट्टिया ।

भवपवंचओ मुक्का, सिद्धिं वरगइं गया ॥६४॥

उस्सेहो जस्स जो होइ, भवम्मि चरिमम्मि उ ।

तिभागहीणो तत्तो य, सिद्धाणोगाहणा भवे ॥६५॥

एगत्तेण साईया, अपज्जवसियावि य ।

पुहत्तेण अणाइया, अपज्जवसियावि य ॥६६॥

अरूविणो जीववणा, नाणदंसणसन्निया ।

अउलं सुहं संपत्ता, उवमा जस्स नत्थि उ ॥६७॥

लोगेगदेसे ते सञ्जे, नाणदंसणसन्निया ।

संसारपारनित्थिणणा, सिद्धिं वरगइं गया ॥६८॥

संसारत्था उ जे जीवा, दुविहा ते वियाहिया ।

तसा य थावरा चेव, थावरा तिविहा तहिं ॥६९॥

पुढवी आउजीवा य, तहेव य वणस्सई ।

इच्चेए थावरा तिविहा, तेसिं भेए सुणेह मे ॥७०॥

दुविहा उ पुढवीजीवा, सुहुमा बायरा तहा ।

पज्जत्तमपज्जत्ता, एवमेए दुहा पुणो ॥७१॥

बायरा जे उ पज्जत्ता, दुविहा ते वियाहिया ।
 सएहा खरा य बोधव्वा, सएहा सत्तविहा तहिं ॥७२॥
 किएहा नीला य रुहिरा य, हलिहा सुक्किला तहा ।
 पण्डुपण्णगमट्टिया, खरा छत्तीसईविहा ॥७३॥

पुढवी य सकरा बालुक्का य,
 उवले सिला य लोणूसे ।

अय-तम्ब तउय-सीसग,
 रुण-पुवण्णे य वइरे य ॥७४॥

हरियाले हिंगुलण,
 मणोसिला सासगंजण-पवाले ।

अब्भपडलब्भवालुय,
 बायरकाण मणिविहाणे ॥७५॥

गोमेज्जण य रुयगे, अंके फलिहे य लोहियक्खे य ।
 मरगय-मसारगल्ले, भुयमोयग-इन्दनीले य ॥७६॥
 चन्दण गेरुय हंसगब्भे, पुलण सोगन्धिण य बोधव्वे ।
 चन्दप्पहव्वेरुलिण, जलकन्ते सूरकन्ते य ॥७७॥

एण खरपुढवीण, भेया छत्तीसमाहिया ।
 एणविहमनाणत्ता, सुहुमा तत्थ वियाहिया ॥७८॥

सुहुमा य सव्वलोगम्मि, लोगदेसे य बायरा ।
 इत्तो कालविभागं तु, वुच्छं तेसिं चउव्विहं ॥७९॥

संतं पप्पऽण्णईया, अपज्जवसियावि य ।
 ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसियावि य ॥८०॥

बावीससहस्साइं, वासाणुक्कोलिया भवे ।
 आउठिई पुढवीणां, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥८१॥

असंखकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
 कायठिई पुढवीणां, तं कायं तु असुच्चओ ॥८२॥

अणन्तकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
 विजढम्मि सए काए, पुढविजीवाण अन्तरं ॥८३॥
 एएसिं वण्णओ चेव, गन्धओ रसफासओ ।
 संठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥८४॥
 दुविहा आउजीवा उ, सुहुमा बायरा तथा ।
 पज्जत्तमपज्जत्ता, एवमेव दुहा पुणो ॥८५॥
 बायरा जे उ पज्जत्ता, पंचहा ते पक्कित्तिया ।
 सुद्धोदए य उस्से य, हरतरू महिया हिमे ॥८६॥
 एगविहमणात्ता, सुहुमा तत्थ वियाहिया ।
 सुहुमा सव्वलोगम्मि, लोगदेसे य बायरा ॥८७॥
 संतइं पप्पऽणईया, अपज्जवसियावि ।
 ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसियावि य ॥८८॥
 सत्तेव सहस्साइं, वासाणुक्कोसिया भवे ।
 आउठिई आऊणां, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥८९॥
 असंखकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
 कायठिई आऊणां, तं कायं तु अमुं वओ ॥९०॥
 अणन्तकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
 विजढम्मि सए काए, आऊजीवाण अन्तरं ॥९१॥
 एएसिं वण्णओ चेव, गन्धओ रसफासओ ।
 संठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥९२॥
 दुविहा वणस्सईजीवा, सुहुमा बायरा तथा ।
 पज्जत्तमपज्जत्ता, एवमेव दुहा पुणो ॥९३॥
 बायरा जे उ पज्जत्ता, दुविहा ते वियाहिया ।
 साहारणवरीरा य, पत्तेगा य तहेव य ॥९४॥
 पत्तेगसरीराओऽणोगहा, ते पक्कित्तिया ।
 रुक्खा गुच्छा य गुम्मा य, लया वल्ली तणा तथा ॥९५॥

वलया ^१पव्वगा कुहुणा, जलरुहा ओसही तथा ।
 हरिष्काया बोधवा पत्तेगा इह आहिया ॥६६॥
 साहारणक्षरीराओऽणोगहा, ते पकित्तिया ।
 आलुए मूलए चेव, सिंगवेरे तहेव य ॥६७॥
 हिरिली सिरिली सस्सिरिली, जावई केयकन्दली ।
 पणडुलसणकन्दे य, कन्दली य कुहुवए ॥६८॥
 लोहिणी ह्यत्थी ह्य, कुहगा य तहेव य ।
 कएहे य वज्जकन्दे य, कन्दे सूरणए तथा ॥६९॥
 अस्सकणणी य बोधवा, सीहकणणी तहेव य ।
 मुसुणही य हलिहा य, णोगहा एवमायंओ ॥१००॥
 एगविहमणणात्ता, सुहुमा तत्थ वियाहिया ।
 सुहुमा सव्वलोगम्मि, लोगदेसे य बायरा ॥१०१॥
 संतइं पण णाईया, अपज्जवसियावि य ।
 ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसियावि य ॥१०२॥
 दस चेव सहस्साइं, कस्साणुक्कोसिया भवे ।
 वणप्फईण आउं तु अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥१०३॥
 अणन्तकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
 कायठिई पणगाणां, तं कायं तु अमुंचओ ॥१०४॥
 असंखकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
 विजढम्मि सए काए, पणगजीवाण अन्तरं ॥१०५॥
 एएसिं वणओ चेव, गन्धओ रसफासओ ।
 संठाणादेसओ वावि, विहाणाइ सहस्ससो ॥१०६॥
 इच्चेए थावरा तिविहा, समासेण वियाहिया ।
 इत्तो उ तसे तिविहे, वुच्छामि अणुपुव्वसो ॥१०७॥

तेऊ वाऊ य बोधव्वा, उराला य तसा तहा ।
 इच्चेण तसा तिविहा, तेसिं भेण सुणेह मे ॥१०८॥
 दुविहा तेउजीवा उ, सुहुमा बायरा तहा ।
 पज्जत्तमपज्जत्ता, एवमेण दुहा पुणे ॥१०९॥
 बायरा जे उ पज्जत्ताऽरोगहा ते वियाहिया ।
 इंगाले मुम्मुरे अगणी, अच्चिजाला तहेव य ॥११०॥
 उक्का विज्जू य बोधव्वा रोगहा एवमायओ ।
 एगविहमणाणत्ता, सुहुमा ते वियाहिया ॥१११॥
 सुहुमा सब्बलोगम्मि, लोगदेसे य बायरा ।
 इत्तो कालविभागं तु, तेसिं बुच्छं चउच्चिहं ॥११२॥
 संतइं पप्पऽण्णईया, अपज्जवसियावि य ।
 ठिइ पडुच्च साइया सपज्जवसियावि य ॥११३॥
 तिरणेव अहेरत्ता, उक्कोसेण वियाहिया ।
 आउठिई तेऊणां, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥११४॥
 असंखकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
 कायठिई तेऊणां, तं कायं तु अमुच्चओ ॥११५॥
 अणन्तकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
 विजढम्मि सए काए, तेऊजीवाण अन्तरं ॥११६॥
 एएसिं वरणओ चेव, गन्धओ रसफासओ ।
 संठाणदेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥११७॥
 दुविहा वाउजीवा उ, सुहुमा बायरा तहा ।
 पज्जत्तमपज्जत्ता, एवमेण दुहा पुणे ॥११८॥
 बायरा जे उ पज्जत्ता, पञ्चहा ते पक्कित्तिया ।
 उक्कलिया मण्डलिया, घणगुज्जा सुद्धवाया य ॥११९॥
 संवट्ठगवाये य, रोगहा एवमायओ ।
 एगविहमणाणत्ता, सुहुमा तत्थ वियाहिया ॥१२०॥

सुहुमा सव्वलोगम्मि, लोगदेसे य बायरा ।
 इत्तो कालविभागं तु, तेसिं वुच्छं चउव्विहं ॥१२१॥
 सन्तइं पप्पऽणाईया, अपज्जवसियावि य ।
 ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसियावि य ॥१२२॥
 तिण्णोव सहस्साइं, वासाणुक्कोसिया भवे ।
 आउठिई वाऊणं, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥१२३॥
 असंखकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
 कायठिई वाऊणं, तं कायं तु अमुंचओ ॥१२४॥
 अणन्तकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
 विजहम्मि सए काए, वाऊजीवाण अन्तरं ॥१२५॥
 एएसिं वण्णओ चेव, गन्धओ रसफासओ ।
 संठाणदेसओ वावि, दिहाणाइं सहस्ससो ॥१२६॥
 उराला तसा जे उ, चउहा ते पक्कित्तिया ।
 वेइन्दिआ-तेइन्दिआ-चउरो पंचिन्दिआ तहा ॥१२७॥
 वेइन्दिआ उ जे जीवा, दुदिहा ते पक्कित्तिया ।
 पज्जत्तपमज्जत्ता, तेसिं भेए सुणेह मे ॥१२८॥
 किमिणो सोऽङ्गला चेव, अलसा माइवाहया ।
 वासीमुहा य सिण्णिया, संखा संखण्णगा तहा ॥१२९॥
 पल्लोयाणुल्लया चेव, तहेव य वराडगा ।
 जलुगा जालगा चेव, चन्दणा य तहेव य ॥१३०॥
 इह वेइन्दिआ एएऽणोगहा एवमायओ ।
 लोगेगदेसे ते सव्वे, न सव्वत्थ वियाहिया ॥१३१॥
 संतइं पप्पऽणाइया अपज्जवसियावि य ।
 ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसियावि य ॥१३२॥
 वासाइं वारसा चेव, उक्कोसेण वियाहिया ।
 वेइन्दिआ आउठिई अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥१३३॥

संखिज्जकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
 बेइन्दियकायठिई, तं कायं तु अमुंचओ ॥१३४॥
 अणन्तकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
 बेइन्दियजीवाणां, अन्तरं च वियाहियं ॥१३५॥
 एणसि वरणओ चेव, गन्धओ रसफासओ ।
 संठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥१३६॥
 तेइन्दिया उ जे जीवा, दुविहा ते पकित्तिया ।
 पज्जत्तमपज्जत्ता, तेसि भेए सुणेह मे ॥१३७॥
 कुन्थुपित्रीलिउट्टंसा, उक्कलुदेहिया तथा ।
 तणहारकट्टहारा य, मालुगा पत्तहारगा ॥१३८॥
 कप्पासट्ठिमिजा य, तिंदुगा तउसमिजगा ।
 सदावरी य गुम्मी य, बोधव्वा इन्दगाइया ॥१३९॥
 इन्दगोवगमाईया रोगहा एवमायओ ।
 लोगेगदेसे ते सव्वे, न सव्वत्थ वियाहिया ॥१४०॥
 संतइं पप्पसाईया, अपज्जवसियावि य ।
 ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसियावि य ॥१४१॥
 एगूणपरणहेरत्ता, उक्कोसेण वियाहिया ।
 तेइन्दियआउठिई, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥१४२॥
 संखिज्जकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
 तेइन्दियकायठिई, तं कायं तु अमुंचओ ॥१४३॥
 अणन्तकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
 तेइन्दियजीवाणां, अंतरं तु वियाहियं ॥१४४॥
 एणसि वरणओ चेव, गन्धओ रसफासओ ।
 संठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥१४५॥
 चउरिन्दिया उ जे जीवा, दुविहा ते पकित्तिया ।
 पज्जत्तमपज्जत्ता, तेसि भेए सुणेह मे ॥१४६॥

अन्धिया पोत्तिया चेव, मच्छिया मसगा तथा ।
 भमरे कीडपयंगे य, ढिंकुणे कंकणे तथा ॥१४७॥
 कुक्कुडे सिंगिरीडी य, नन्दावत्ते य विच्छुए ।
 डोले भिंगीरीडी य, विरिली अच्छिवेहए ॥१४८॥
 अच्छिले माहए अच्छिरोडए,
 विन्धिते चित्तपत्तए ।
 उहिंजलिया जलकारी य,
 नीया तन्तवयाइया ॥१४९॥
 इय चउरिन्दिया एए, ऽणेगहा एवमायओ ।
 'लोगेगदेसे ते सव्वे, न सव्वत्थ वियाहिया ॥१५०॥
 संतइं पप्पऽणाईया, अपज्जवसिया वि य ।
 ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसिया वि य ॥१५१॥
 छेव मासाऊ, उक्कोसेण वियाहिया ।
 चउरिन्दियआउठिई, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥१५२॥
 संखिज्जकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
 चउरिन्दियकायठिई, तं कायं तु अमुंचओ ॥१५३॥
 अणन्तकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
 चउरिन्दियजीवाणं, अन्तरं च वियाहियं ॥१५४॥
 एएसिं वणओ चेव, गन्धओ रसफासओ ।
 संठाण देसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥१५५॥
 पन्निन्दिया उ जे जीवा, चउव्विहा ते वियाहिया ।
 नेरइयतिरिक्खा य, मणुया देवा य आहिया ॥१५६॥
 नेरइया सत्ताविहा, पुढवीसु सत्तासु भवे ।
 रयणाभसक्काराभा, वालुयाभा य आहिया ॥१५७॥

पंकाभा धूमाभा, तमा तमतमा तथा ।
 इइ नेरइया एए, सत्तहा परिकित्तिया ॥१५॥
 लोगस्स एगदेसम्मि, ते सव्वे उ दियाहिया ।
 एत्तो कालविभागं तु, वोच्छं तेसिं चउविवहं ॥१५६॥
 संतइं पप्पाऽणाईया, अपज्जवसियावि य ।
 ठिइं पडुच्च साइया, सपज्जवसियावि य ॥१६०॥
 सागरोवममेगं तु उक्कोसेण वियाहिया ।
 पढमाए जहन्नेरां, दसवाससहस्सिया ॥१६१॥
 तिण्णेव सागरा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया ।
 दोच्चाए जहन्नेरां, एगं तु सागरोवमं ॥१६२॥
 सत्तेव सागरा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया ।
 नइयाए जहन्नेरां, तिण्णेव सागरोवमा ॥१६३॥
 दस सागरोवमा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया ।
 चउत्थीए जहन्नेरां, सत्तेव सागरोवमा ॥१६४॥
 सत्तरस सागरा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया ।
 पंचमाए जहन्नेरां, दस चेव सागरोवमा ॥१६५॥
 बावीस सागरा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया ।
 छट्ठीए जहन्नेरां सत्तरस सागरोवमा ॥१६६॥
 तेत्तीस सागरा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया ।
 सत्तमाए जहन्नेरां, बावीसं सागरोवमा ॥१६७॥
 जा चेव य आउठिई, नेरइयाणां वियाहिया ।
 सा तेसिं कायठिई, जहन्नुक्कोसिया भवे ॥१६८॥
 अणन्तकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुसं जहन्नयं ।
 विजढम्मि सए काए, नेरइयाणां तु अन्तरं ॥१६९॥
 एएसिं वण्णओ चेव, गन्धओ रसफासओ ।
 संठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥१७०॥

पंचिन्द्रियतिरिक्खाओ,

दुविहा ते वियाहिया ।

संमुच्छिप्रतिरिक्खाओ,

गम्भवक्कन्तिया तथा ॥१७१॥

दुविहा ते भवे तिविहा, जलयरा थलयरा तथा ।

नहयरा य बोधव्वा, तेसिं मेए सुणेह मे ॥१७२॥

मच्छा य कच्छभा य, गाहा य मगरा तथा ।

सुंसुमारा य बोधव्वा, पंचहा जलयराहिया ॥१७३॥

लोएगदेसे ते सव्वे, न सव्वत्थ वियाहिया ।

एत्तो कालविभागं तु, वोच्छं तेसिं चउव्विहं ॥१७४॥

संतइं पप्प ऽणाईया, अपज्जवसिया वि य ।

ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसिया वि य ॥१७५॥

एगा य पुव्वकोडी, उक्कोसेण वियाहिया ।

आउठिई जलयराणां, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥१७६॥

पुव्वकोडिपुहत्तं तु, उक्कोसेण वियाहिया ।

कायठिई जलयराणां, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ॥१७७॥

अणन्तकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।

विजढम्मि सए काए, जलयराणां तु अन्तरं ॥१७८॥

(एएसिं वरणओ चेव गन्धओ रसकासओ ।

संठाणादेसओ वावि विहाणाइं सहस्सओ ॥)

चउप्पया य परिसप्पा, दुविहा थलयरा भवे ।

चउप्पया चउविहा उ, ते मे कित्तयओ सुण ॥१७९॥

एगखुरा दुखुरा चेव, गरडीपयसणहप्पया ।

हयमाइगोणमाइगयमाइसीहमाइणो ॥१८०॥

भुञ्जोरगपरिसन्पा य, परिसन्पा दुविहा भवे ।
 गोहाई गहिमाई य, एकेकाणेगहा भवे ॥१८१॥
 लोएगदेसे ते सव्वे, न सव्वत्थ वियाहिया ।
 एत्तो कालविभागं तु, वोच्छं तेसिं चउव्विहं ॥१८२॥
 संतइं पण्ण ऽणाईया, अपज्जवसियावि य ।
 ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसियावि य ॥१८३॥
 पलिओवमाइं तिरिण उ, उक्कोसेण वियाहिया ।
 आउठिई थलयराणां, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥१८४॥
 पलिओवमाइं तिरिण उ, उक्कोसेण वियाहिया ।
 कायठिई थलयराणां अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥१८५॥
 कालमणन्तमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
 विजढम्मि सए काए, थलयराणां तु अन्तरं ॥१८६॥

चम्मे उ लोमपक्खी य,

तइया समुग्गपक्खिया ।

विगयपक्खी य बोधव्वा,

पक्खिणो य चउव्विहा ॥१८७॥

लोगेगदेसे ते सव्वे, न सव्वत्थ वियाहिया ।
 इत्तो कालविभागं तु, वोच्छं तेसिं चउव्विहं ॥१८८॥
 संतइं पण्ण ऽणाईया, अपज्जवसियावि य ।
 ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसियावि य ॥१८९॥
 पलिओवमस्स भागो, असंखेज्जइमो भवे ।
 आउठिई खहयराणां, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥१९०॥
 असंखभाग पलियस्स, उक्कोसेण उ साहिया ।
 पुव्वकोडीपुहत्तेणां, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥१९१॥

कायठिई खहयराणां, अन्तरे तेसिमे भवे ।
 अणन्तकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ॥१९२॥
 एएसिं वरणओ चेव, गन्धओ रसफासओ ।
 संठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥१९३॥
 मणुया दुविहभेया उ, ते मे कित्तयओ सुण ।
 संमुच्छिमा य मणुया, गम्भवक्कन्तिया तथा ॥१९४॥
 गम्भवक्कन्तिया जे उ, तिविहा ते वियाहिया ।
 कम्मअकम्मभूमा य, अन्तरद्दीवया तथा ॥१९५॥
 पन्नरस तीसविहा, भेया अट्टवीसइं ।
 संखा उ कमसो तेसिं, इइ एसा वियाहिया ॥१९६॥
 संमुच्छिमाण एसेव, भेओ होइ वियाहिओ ।
 लोगस्स एगदेसम्मि, ते सव्वे वि वियाहिया । ॥१९७॥
 संतइं पप्प ऽणाइया, अपज्जवसियावि य ।
 ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसियावि य ॥१९८॥
 पलिओवमाइ तिणिणवि, उक्कोसेण वियाहिया ।
 आउट्ठिई मणुयाणां, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥१९९॥
 पलिओवमाइं तिणिण उ, उक्कोसेण वियाहिया ।
 पुव्वकोडिपुहत्तेणां, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ॥२००॥
 कायठिई मणुयाणां, अन्तरं तेसिमं भवे ।
 अणन्तकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ॥२०१॥
 एएसिं वरणओ चेव, गन्धओ रसफासओ ।
 संठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥२०२॥
 देवा चउव्विहा वुत्ता, ते मे कित्तयओ सुण ।
 भोमिज्जवाणमन्तरजोइसवेमाणिया तथा ॥२०३॥

दसहा उ भवणवासी, अट्टहा वणचारिणो ।

पंचविहा जोइसिया, दुविहा वेमाणिया तहा ॥२०४॥

असुरा

नागसुवण्णा,

विज्जू अग्गी वियाहिया ।

दीवोदहिसा

वाया,

थणिया भवणवासिणो ॥२०५॥

पिसायभूया जक्खा य,

रक्खसा किन्नरा किंपुरिसा ।

महोरगा य गन्धवा,

अट्टविहा वाणमन्तरा ॥२०६॥

चन्दा सूरा य नक्खत्ता,

गहा तारगणा तहा ।

१ठिया विचारिणो चेव,

पंचहा जोइसालया ॥२०७॥

वेमाणिया उ जे देवा, दुविहा ते वियाहिया ।

कप्पोवगा य बोधवा, कप्पाईया तहेव य ॥२०८॥

कप्पोवगा बारसहा, सोहम्मीसणगा तहा ।

सरांकुमारमाहिन्दा वम्भलोगा य लन्तगा ॥२०९॥

महासुक्का सहस्सारा, आणया पाणया तहा,

आरणा अच्चुया चेव, इइ कप्पोवगा सुरा ॥२१०॥

कप्पाईया उ जे देवा, दुविहा ते वियाहिया ।

गेविज्जगाणुत्तरा चेव, गेविज्जा नवविहा तहिं ॥२११॥

हेट्टिमाहेट्टिमा चेव, हेट्टिमामज्झिमा तथा ।
हेट्टिमाउवरिमा चेव, मज्झिमाहेट्टिमा तथा ॥२१२॥
मज्झिमामज्झिमा चेव,
मज्झिमाउवरिमा तथा ।
उवरिमाहेट्टिमा चेव,
उवरिमामज्झिमा तथा ॥२१३॥

उवरिमाउवरिमा चेव, इय गेविज्जगा सुरा ।
विज्जया वेजयन्ता य, जयन्ता अपराजिया ॥२१४॥
सव्वत्थसिद्धगा चेव, पंचहाणुत्तरा सुरा ।
इय वेमाणिया एएऽण्णगहा एवमायओ ॥२१५॥
लोगस्स एगदेसम्मि, ते सव्वेवि वियाहिया ।
इत्तो कालविभागं तु, बुच्चं तेसिं चउव्विहं ॥२१६॥
संतं पप्प ऽणाईया, अपज्जवसियावि य ।
ठिइं पडुच्च साइया, सपज्जवसियावि य ॥२१७॥
साहियं सागरं एकं उक्कोसेण ठिईं भवे ।
भोमेज्जाणं जहन्नेणं, दसवाससहस्सिया ॥२१८॥
(पलिओवम दो ऊणा उक्कोसेण वियाहिया ।
असुरिन्दवज्जेताण जहन्ना दससहस्सगा ॥)
पलिओवममेगं तु, उक्कोसेण ठिईं भवे ।
वन्तराणं जहन्नेणं, दसवाससहस्सिया ॥२१९॥
पलिओवममेगं तु, वासलक्खेण साहियं ।
पलिओवमट्टभागो, जोइसेसु जहन्निया ॥२२०॥
दो चेव सागराइं, उक्कोसेण वियाहिया ।
सोहम्मम्मि जहन्नेणं, एगं च पलिओवमं ॥२२१॥

सागरा साहिया दुन्नि, उक्कोसेण विग्राहिया ।

ईसाणम्मि जहन्नेणां, साहियं पलिओवमं ॥२२२॥

सागराणि य सत्तेव, उक्कोसेण ठिई भवे ।

सणंकुमारे जहन्नेणां, दुन्नि उ सागरोवमा ॥२२३॥

साहिया सागरा सत्त, उक्कोसेणां ठिई भवे ।

माहिन्दम्मि जहन्नेणां, साहिया दुन्नि सागरा ॥२२४॥

दस चेव सागराई, उक्कोसेण ठिई भवे ।

बम्भलोण जहन्नेणां सत्त ऊ सागरोवमा ॥२२५॥

चउदससागराई, उक्कोसेण ठिई भवे ।

लन्तगम्मि जहन्नेणां, दस उ सागरोवमा ॥२२६॥

सत्तरससागराई, उक्कोसेण ठिई भवे ।

महासुके जहन्नेणां, चोदस सागरोवमा ॥२२७॥

अट्टारस सागराई, उक्कोसेण ठिई भवे ।

सहस्सारम्मि जहन्नेणां, सत्तरस सागरोवमा ॥२२८॥

सागरा अउणवीसं तु, उक्कोसेण ठिई भवे ।

आणयम्मि जहन्नेणां, अट्टारस सागरोवमा ॥२२९॥

वीसं तु सागराई, उक्कोसेण ठिई भवे ।

पाणयम्मि जहन्नेणां, सागरा अउणवीसई ॥२३०॥

सागरा इक्कवीसं तु, उक्कोसेण ठिई भवे ।

आरणम्मि जहन्नेणां, वीसई सागरोवमा ॥२३१॥

बावीसं सागराई, उक्कोसेण ठिई भवे ।

अच्चुयम्मि जहन्नेणां, सागरा इक्कवीसई ॥२३२॥

तेवीससागराई, उक्कोसेण ठिई भवे ।

पढमम्मि जहन्नेणां, बावीसं सागरोवमा ॥२३३॥

चउवीसं सागराई, उक्रोसेण ठिई भवे ।
 बिइयमि जहन्नेण, तेवीसं सागरोवमा ॥२३४॥
 पणवीसं सागराई, उक्रोसेण ठिई भवे ।
 तइयंमि जहन्नेण, चउवीसं सागरोवमा ॥२३५॥
 छवीसं सागराई, उक्रोसेण ठिई भवे ।
 चउत्थमि जहन्नेण, सागरा पणवीसई ॥२३६॥
 सागरा सत्तवीसं तु, उक्रोसेण ठिई भवे ।
 पञ्चममि जहन्नेण, सागरा उ छवीसई ॥२३७॥
 सागरा अट्टवीसं तु, उक्रोसेण ठिई भवे ।
 छट्ठमि जहन्नेण, सागरा सत्तवीसई ॥२३८॥
 सागरा अउणतीसं तु, उक्रोसेण ठिई भवे ।
 सत्तममि जहन्नेण, सागरा अट्टवीसई ॥२३९॥
 तीसं तु सागराई उक्रोसेण ठिई भवे ।
 अट्ठममि जहन्नेण, सागरा अउणतीसई ॥२४०॥
 सागरा इक्कतीसं तु, उक्रोसेण ठिई भवे ।
 नवममि जहन्नेण, तीसई सागरोवमा ॥२४१॥
 तेत्तीसा सागराई, उक्रोसेण ठिई भवे ।
 चउसुंमि विजयाईसु, जहन्नेणेक्कतीसई ॥२४२॥
 अजहन्नमणुक्कोसं, तेत्तीसं सागरोवमा ।
 महाविमाणे सव्वट्ठे, ठिई एसा वियाहिया ॥२४३॥
 जा चेव उ आउठिई, देवाणं तु वियाहिया ।
 सा तेसिं कायठिई, जहन्नमुक्कोसिया भवे ॥२४४॥
 अणन्तकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
 विजडमि सए काए, देवाणं हुज्ज अन्तरं ॥२४५॥

एएसिं वरणओ चेव, गन्धओ रसफासओ ।
 संठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥२४६॥
 (अणन्तकालमुक्कोसं वासपुहुत्तं जहन्नगं ।
 आणयाईं कप्पाण गेविज्जाणं तु अन्तरं ॥
 संखिज्जसागरुक्कोसं वासपुहुत्तं जहन्नगं ।
 अणुत्तराण य देवाणं अन्तरं तु वियाहिया)
 संसारत्था य सिद्धा य, इय जीवा वियाहिया ।
 रूविणो चेवऽरूवी य, अजीवा दुविहावि य ॥२४७॥
 इय जीवमजीवे य, सोच्चा सद्विहङ्गण य ।
 सव्वनयणमणुमण, रमेज्ज संजमे मुणी ॥२४८॥
 तओ बहूणि वासाणि, सामणमणुपालिय ।
 इमेण कमजोगेण, अप्पाणं संलिहे मुणी ॥२४९॥
 बारसेव उ वासाइं, संलेहुक्कोसिया भवे ।
 संवरच्छरमज्झमिया, छम्मासा य जहन्निया ॥२५०॥
 पढमे वासचउक्कम्मि, विगई-निज्जूहणं करे ।
 बिईण वासचउक्कम्मि, विवित्तं तु तवं चरे ॥२५१॥
 एगन्तरमायामं, कट्टु संवच्छरे दुवे ।
 तओ संवच्छरद्धं तु, नाइविगट्ठं तवं चरे ॥२५२॥
 तओ संवच्छरद्धं तु, विगिट्ठं तु तवं चरे ।
 परिमियं चेव आयामं, तस्मिं संवच्छरे करे ॥२५३॥
 कोडी सहियमायामं, कट्टु संवच्छरे मुणी ।
 मासद्धमासिणं तु, आहारेण तवं चरे ॥२५४॥

कन्दप्पमाभिओगं च,

किब्बिसियं मोहमासुरत्तं च ।

एयाउ दुग्गईओ,

मरणम्मि विराहिया होन्ति ॥२५५॥

मिच्छादंसणरत्ता, सनियणा उ हिंसगा ।

इय जे मरन्ति जीवा, तेसिं पुण दुल्लहा बोही ॥२५६॥

सम्पदंसणरत्ता, अनियाणा सुक्करेसमोगाढा ।

इय जे मरन्ति जीवा, तेसिं सुलहा भवे बोही ॥२५७॥

मिच्छादंसणरत्ता,

सनियणा कणहलेसमोगाढा ।

इय जे मरन्ति जीवा,

तेसिं पुण दुल्लहा बोही ॥२५८॥

जिणवयणे अणुरत्ता, जिणवयणं जे करेन्ति भावेण ।

अमता असंक्किल्लिटा, ते होन्ति परित्तसंसारी ॥२५९॥

वालमरणाणि बहुसो,

अकाममरणाणि चेव य बहूणि ।

मरिहन्ति ते वराया,

जिणवयणे जे न जाणन्ति ॥२६०॥

बहुआगमविन्नाणा, समाहिउप्पायगा य गुणगाही ।

एएणं कारणेणं, अरिहा आलोयणं सोउं ॥२६१॥

कन्दप्पकुक्कुयाइ, तह सीलसहावहसणविगहाइ ।

विम्हावेन्तोवि परं, कन्दप्पं भावणं कुणइ ॥२६२॥

मन्ताजोगं काउं, भूइकम्मं च जे पउंजन्ति ।

साय-रस-इड्ढिहेउं, अभिओगं भावणं कुणइ ॥२६३॥

नाणस्स केवलीणं, धम्मायरियस्स संघसाहूणं ।

माई अवणवाई, किब्बिसियं भावणं कुणइ ॥२६४॥

अणुबद्धरोसपसरो, तह य निमित्तम्मि होइ पडिसेवी ।

एएहि कारणेहिं, आसुरियं भावणं कुणइ ॥२६५॥

सत्यगहणं विसभक्खणं च,
जलणं च जलपवेसो य ।

अणायारभण्डसेवी,

जम्मणमरणाणि बंधन्ति ॥२६६॥

इय पाउकरे बुद्धे, नायए परिनिव्वुए ।

छत्तीसं उत्तरजभाए, भवसिद्धियसंबुडे' ॥२६७॥ त्ति वेमि

॥ जीवाजीवविभत्ती समत्ता ॥२६८॥

॥ उत्तरज्झयणमुत्तं समत्तं ॥



॥ सिरी नंदीसुत्तं ॥



जयइ जगजीवजोणीवियाणओ, जगगुरू जगाणांदो ।
जगणाहो जगबंधू, जयइ जगप्पियामहो भयवं ॥१॥
जयइ सुआणां पभवो, तिथयरणां अपच्छिमो जयइ ।
जयइ गुरू लोणाणां, जयइ महप्पा महावीरो ॥२॥
भइं सव्वजगुज्जोयगस्स, भइं जिणस्स वीरस्स ।
भइं सुरासुरनमंसियस्स, भइं धुरयस्स ॥३॥
गुणभवणगहण सुयरयण-भरिय दंसणविसुद्धरत्थागा ।
संघनगर ! भइं ते, अखंडचारित्तपागारा ॥४॥
संजम-तव-तुंबारयस्स, नमो सम्मत्तपारियल्लस्स ।
अप्पडिचक्कस्स जओ, होउ सया संघचक्कस्स ॥५॥
भइं सीलपडागूसियस्स, तवनियमतुरयजुत्तस्स ।
लंघरहस्स भगवओ, सज्झायसुनन्दिघोसस्स ॥६॥
कम्मरयजलोहविणिग्गयस्स, सुयरयणदीहनालस्स ।
पंच महव्वयथिरकन्नियस्स, गुणकेसरालस्स ॥७॥
सावगजणमहुअर^१-परिवुडस्स, जिणसूरतेयवुद्धस्स ।
संघपउमस्स भइं, समणगणसहस्सपत्तरस ॥८॥

तवसंजममयलंछण, अक्रियराहुमुहदुद्धरिस निञ्चं ।
 जय संघचंद्र निम्मलसम्पत्तविसुद्धजोगहागा ॥९॥
 परतिथियगहपहनासगस्स, तवतेयदित्तलेसस्स ।
 नाणुज्जोयस्स जए, भदं दमसंघसूरस्स ॥१०॥
 भदं धिइवेलापरिगयस्स, सज्जायजोगमगरस्स ।
 अक्खोहस्स भगवओ, संघसमुद्दस्स रुंदस्स ॥११॥
 सम्मदंसणवरवहरदढरूढगाढावगाढपेढस्स ।
 धम्मवररयणमंडियचामीयरमेहलागस्स ॥१२॥
 नियमूसियकणयसिलायलुज्जलजलंतचित्तकूडस्स ।
 नंदणवणमणहरसुरभिसील गंधुद्धुमायस्स ॥१३॥
 जीवदयासुंदरकंदरुद्धरियमुणिवरमइंदइन्नस्स ।
 हेउसयधाउपगलंतरयणदित्तोसहिगुहस्स ॥१४॥
 संवरवरजलपगलियउज्झरपविरायमाणहारस्स ।
 सावगजणपउररवंतमोरनञ्चंतकुहरस्स ॥१५॥
 विणयनयपवरमुणिवरफुरंतविज्जुज्जलंतसिहरस्स ।
 विविहगुणकप्परुक्खगफलभरकुसुमाउलवणस्स ॥१६॥
 नाणवररयणदिप्पंतकंतवेरुलियदिमलचूलस्स ।
 वंदामि विणयपणओ, संघमहामंदरगिरिस्स ॥१७॥
 *गुणारयणुज्जलकडयं सीलसुगंधितवमंडिउद्देसं ।
 सुयवारसंगसिहरं संघमहामंदरं वंदे ॥१८॥
 *नगररहचक्रपउमे चंदे सूरं समुद्दमेरुमि ।
 जो उवमिज्जइ सययं, तं संघगुणायरं वंदे ॥१९॥
 [वंदे] उसभं अजियं संभवमभिनंदणसुमइसुप्पभसुपासं ।
 ससिपुप्फदंतसीयलसिज्जंसं वासुपुज्जं च ॥२०॥

विमलवरांतं य धम्मं सन्ति कुंथुं अरं च मल्लिं च ।
 मुनिसुव्वयनमिनेमिं पासं तह वद्धमाणां च ॥२१॥
 पढमित्थ इंदभूर्ई वीए पुण होइ अग्गिभूइत्ति ।
 तइए य वाउभूर्ई, तओ वियत्ते सुहम्मे य ॥२२॥
 मंडिअ-मोरियपुत्ते अकंपिए चेव अयलभाया य ।
 मेअजे य पहासे गरहरा हुंति वीरस्स ॥२३॥
 निव्वुइपहसासणयं, जयइ सया सव्वभावदेसणयं ।
 कुसमयमयनासणयं जिणिंदवरवीरसासणयं ॥२४॥
 सुहम्मं अग्गिवेसाणां, जंबुनामं च कासवं ।
 पभवं कच्च यणां वन्दे, वच्छं सिज्जंभवं तहा ॥२५॥
 जसभदं तुंगियं वन्दे संभूयं चेव माढरं ।
 भदवाहुं च पाइन्नं, थूलभदं च गोयमं ॥२६॥
 एलावच्चसगोत्तं, वन्दामि महागिरिं सुहत्तिं च ।
 तत्तो कोसियगोत्तं, बहुलस्स सरिव्वयं वन्दे ॥२७॥
 हारियगुत्तं साइं च, वन्दिमो हारियं च सामज्जं ।
 वन्दे कोसियगोत्तं, संडिल्लं अज्जजीयधरं ॥२८॥
 तिसमुदखायकित्ति, दीवसमुदेसु गहियपेयालं ।
 वन्दे अज्जसमुदं अक्खुभियसमुदगंभीरं ॥२९॥
 भणगं करगं भरगं, पभावगं णाणदंसणगुणाणां ।
 वन्दामि अज्जमंगुं, सुयसागरपारगं धीरं ॥३०॥
 *वन्दामि अज्जधम्मं, तत्तो वन्दे ए भदगुत्तं च ।
 तत्तो य अज्जवइरं तवनियमगुणेहिं वइरसमं ॥३१॥
 *वन्दामि अज्जरक्खियखमणे रक्खिय चरित्तसव्वस्से ।
 रयणकरडंगभूओ, अणुओगो रक्खिओ जेहिं ॥३२॥

नाणम्मि दंसणम्मि य, तवविणए णिच्चकालमुज्जुत्तं ।
 अज्जं नंदिलखमणां, सिरसा वन्दे पसन्नमणां ॥३३॥
 वहुउ वायगवंसो, जसवंसो अज्जनागहत्थीणां ।
 वागरणकरणभंगियकम्मप्पयडीपहाणां ॥३४॥
 जच्चजणधाउसमप्पहाणमुद्दियकुवलयनिहाणां ।
 वहुउ वायगवंसो रेवइनक्खत्तनामाणां ॥३५॥
 अयलपुरा णिक्खंते कालियसुयअणुओगिए धीरे ।
 वंभद्दीवगसीहे वायगपयमुत्तमं पत्ते ॥३६॥
 जेसिं इमो अणुओगो पयरइ अज्जावि अड्ढभरहम्मि ।
 बहुनयरनिग्गयजसे, ते वंदे खंदिलायरिए ॥३७॥
 तत्तो हिमवंतमहंतदिक्कमे धिइपरक्कममणांते ।
 सज्झायमणांतधरे, हिमवंते वंदिमो सिरसा ॥३८॥
 कालियसुयअणुओगस्स धारए धारए य पुब्बाणां ।
 हिमवंतखमासमणे, वंदे णागज्जुणायरिये ॥३९॥
 मिउमहवसंपन्ने, अणुपुठ्वि^१ वायगत्तणां पत्ते ।
 ओहसुयसमायारे नागज्जुणवायए वंदे ॥४०॥
 *गोविंदाणां पि नमो, अणुओगविउलधारिणिंदाणां ।
 णिच्चं खंतिदयाणां परूवणे दुल्लभिं दाणां ॥४१॥
 *तत्तो य भूयदिन्नं निच्चं तव संजमे अनिव्विणां ।
 पंडियजण सामणां वंदामि संजमविहिरणुं ॥४२॥
 वरकणगतवियचंपगलिमउलवरकमलगब्भसरिवन्ने ।
 भवियजणहिययदइए दयागुणविसारए धीरे ॥४३॥
 अड्ढभरहप्पहाणे, बहुविहसज्झायसुमुणिय पहाणे ।
 अणुओगियवरवसमे नाइलकुलवंसनंदिकरे ॥४४॥

^१जगभूयहियपगब्मे वंदेऽहं भूयदिन्नमायरिण ।
 भवभयवुच्छेयकरे सीसे नागज्जुणरिसीणं ॥४५॥
 सुमुणियनिच्चानिच्चं सुमुणिय सुत्तत्थधारयं वन्दे ।
^२सब्भावुब्भावणया तत्थं लोहिच्चणामाणं ॥४६॥
 अत्थमहत्थक्खाणिं सुसमणवक्खाणकहणनिव्वाणि ।
 पयईण महुरवाणिं पयओ पणमामि दूसगणिं ॥४७॥
 तवनियमसच्चसंजमविणयज्जवखंतिमद्वरयाणं ।
 सीलं गुणगदियाणं अणुओगजुगप्पहाणारं ॥४८॥
 सुकुमालकोमलतले नेसिं पणमामि लक्खणपसत्थे ।
 पाए पावयणीणं पडिच्छयसएहि पणिवइए ॥४९॥
 जे अन्ने भगवंते कालियसुयआणुओगिए धीरे ।
 ते पणमिऊण सिरसा नाणस्स परूवणं वोच्छं ॥५०॥

इति ।

सेल-घण^१, कुडग^२, चालणि^३, परिपूणग^४, हंस^५, महिस^६,
 मेसे य^७ । मसग^८, जलूग^९, विराली^{१०}, जाहग^{११}, गो^{१२}, भेरी^{१३},
 आभीरी^{१४}, ॥१॥

सा समासओ तिविहा पन्नत्ता तंजहा—जाणिया, अजा-
 णिया, दुव्वियद्धा । जाणिया जहा-गाहा-खीरमिव जहा हंसा
 जे घुट्टन्ति इह गुरुगुणसमिद्धा । दोसेय विवज्जन्ति तं जाणसु
 जाणियं परिसं ॥२॥

अजाणिया जहा—जा होइ पगइमहुरा मियछावयसीह-
 कुक्कुडयभूआ । रयणमिव असंठविया अजाणिया सा भवे
 परिसा ॥३॥

१. भूयहियअपगब्मे । २. वंदेऽहं लेहिच्चं सत्भावुब्भावणा शिक्खं ।

दुर्विविद्धा जहा—न य कथं न निम्माओ न य पुच्छइ परि-
भवस्स दोसेणं । वत्थिव्व वायपुरणो फुट्टइ गामिल्लयवियड्ढो १४

(सूत्रं) नारां पंचविहं परणत्तं, तंजहा—आभिणिबोहियनारां,
सुयनारां, ओहिनारां, मणपज्जवनारां, केवलनारां ॥सू० १॥

तं समासओ दुविहं परणत्तं, तंजहा—पच्चकखं च परोकखं
च ॥सू० २॥

से किं तं पच्चकखं ? पच्चकखं दुविहं परणत्तं, तंजहा—
इंदियपच्चकखं, नोइंदियपच्चकखं च ॥सू० ३॥

से किं तं इंदियपच्चकखं ? इन्दियपच्चकखं पंचविहं परणत्तं
तंजहा—सोइन्दियपच्चकखं, चक्खिंदियपच्चकखं, घाणिंदिय-
पच्चकखं, जिभिंदियपच्चकखं, फासिंदियपच्चकखं, से तं इंदिय-
पच्चकखं ॥सू० ४॥

से किं तं नोइन्दियपच्चकखं ? नोइन्दियपच्चकखं तिविहं
परणत्तं तंजहा—ओहिनारणपच्चकखं, मणपज्जवनारणपच्चकखं,
केवलनारणपच्चकखं ॥सू० ५॥

से किं तं ओहिनारणपच्चकखं ? ओहिनारणपच्चकखं दुविहं
परणत्तं, तंजहा—भवपच्चइयं च खाओवसमियं च ॥सू० ६॥

से किं तं भवपच्चइयं ? भवपच्चइयं दुण्हं, तंजहा—देवाण
य नेरइयाण य ॥सू० ७॥

से किं तं खओवसमियं ? खओवसमियं दुण्हं, तंजहा—
मणूसाण य पंचेदियतिरिक्खजोणियाण य । को हेऊ खओव-

समियं ? खओवसमियं तयावरणिज्जाणं कम्पणं उदिणणाणं
खण्णं, अणुदिणणाणं उवसमेणं ओहिनाणं समुप्पज्जइ ॥ सू० ८॥

अहवा गुणपडिवन्नस्स अणुगारम्स ओहिनाणं समुप्पज्जइ,
तं समासओ छुव्विहं पणत्तं, तंजहा-आणुगामियं, अणा-
णुगामियं^२, वड्ढमाण्यं^३, हीयमाण्यं^४, पडिवाइयं^५, अप्पडिवा-
इयं^६ ॥ सू० ९ ॥

से किं तं आणुगामियं ओहिनाणं ? आणुगामियं ओहि-
नाणं दुव्विहं पणत्तं, तंजहा-अंतगयं च मज्झगयं च । से किं
तं अंतगयं ? अंतगयं तिव्विहं पणत्तं तंजहा-पुरओ अंतगयं,
मग्गओ अंतगयं, पासओ अंतगयं । से किं तं पुरओ अंतगयं ?
पुरओ अंतगयं-से जहानामए केइ पुरिसे उक्कं वा चड्डुलियं वा
अलायं वा मणिं वा पईवं वा जोइं वा पुरओ काउं पणुल्ले-
माणे २ गच्छेज्जा, से तं पुरओ अंतगयं । से किं तं मग्गओ
अंतगयं ? मग्गओ अंतगयं-से जहानामए केइ पुरिसे उक्कं वा
चड्डुलियं वा अलायं वा मणिं वा पईवं वा जोइं वा मग्गओ
काउं अणुकड्ढेमाणे २ गच्छेज्जा, से तं मग्गओ अंतगयं । से
किं तं पासओ अंतगयं ? पासओ अंतगयं-से जहानामए केइ
पुरिसे उक्कं वा चड्डुलियं वा अलायं वा मणिं वा पईवं वा जोइं
वा पासओ काउं परिकड्ढेमाणे २ गच्छेज्जा, से तं पासओ
अंतगयं, से तं अंतगयं । से किं तं मज्झगयं ? मज्झगयं से जहा-
नामए केइ पुरिसे उक्कं वा चड्डुलियं वा अलायं वा मणिं वा
पईवं वा जोइं वा मत्थए काउं समुव्वहमाणे २ गच्छेज्जा से
तं मज्झगयं । अंतगयस्स मज्झगयस्स य को पइविसेसो ?
पुरओ अंतगणं ओहिनाणेणं पुरओ चेव संखिज्जाणि वा
असंखेज्जाणि वा जोयणाइ जाणइ पासइ, मग्गओ अंतगणं

ओहिनाणेणं मग्गओ चेव संखिज्जाणि वा असंखिज्जाणि वा जोयणाइं जाणइ पासइ । पासओ अंतगएणं ओहिनाणेणं पासओ चेव संखिज्जाणि वा असंखिज्जाणि वा जोयणाइं जाणइ पासइ । मज्झमएणं ओहिनाणेणं सब्बओ समंता संखिज्जाणि वा असंखिज्जाणि वा जोयणाइं जाणइ पासइ । से तं अणुगामियं ओहिनाणं ॥सू० १०॥

से किं तं अणुगामियं ओहिनाणं ? अणुगामियं ओहिनाणं से जहानामए केइ पुरिसे एणं महंतं जोइट्ठाणं काउं तस्सेव जोइट्ठाणस्स परिपेरंतेहिं परिपेरंतेहिं परिघोलेमाणे परिघोलेमाणे तमेव जोइट्ठाणं पासइ, अन्नत्थगए न पासइ, एवा-मेव अणुगामियं ओहिनाणं जत्थेव समुप्पज्जइ तत्थेव संखेज्जाणि वा असंखेज्जाणि वा संबद्धाणि वा असंबद्धाणि वा जोयणाइं जाणइ पासइ, अन्नत्थगएण पासइ, से तं अणुगामियं ओहिनाणं ॥सू० ११॥

से किं तं वड्ढमाणं ओहिनाणं ? वड्ढमाणं ओहिनाणं पसत्थेसु अज्झवसायट्ठाणेणु वट्ठमाणस्स वड्ढमाणचरित्तस्स विसुज्झमाणस्स विसुज्झमाणचरित्तस्स सब्बओ समंता ओही वड्ढइ; गा ह—

जावइया तिसमयाहारगस्स सुहुमस्स पणगजीवस्स ।

ओगाहणा जहन्ना ओहीखित्तं जहन्नं तु ॥१॥

सब्बवहुयगणिजीवा निरंतं जत्तियं भरिज्जं सु ।

खित्तं सब्बदिसागं परमोहीखेत्तं निदिट्ठो ॥२॥

अंगुलमावलिआणं भागमसंखिज्जं दोसु संखिज्जा ।

अंगुलमावलिअंतो आवलिया अंगुलपुहुत्तं ॥३॥

હત્યમ્મિ મુહુત્તંને, દિવસન્તો ગાઉયમ્મિ બોદ્ધવ્વો ।
 જોયણ દિવસપુહુત્તં, પક્ખંતો પન્નવીસાઓ ॥૪॥
 ભરહમ્મિ અદ્ધમાસો, જમ્બુદ્વીવમ્મિ સાહિઓ માસો ।
 વાસં ચ મણ્ણયલે, વાસપુહુત્તં ચ રુયગમ્મિ ॥ ૫ ॥
 સંખિજ્જમ્મિ ઉ કાલે, દીવસમુદ્ધાવિ હુતિ સંખિજ્જા ।
 કાલમ્મિ અસંખિજ્જે દીવસમુદ્ધા ઉ ભઇયવ્વા ॥ ૬ ॥
 કાલે ચ ઉગ્ગહુદ્ધી, કાલો ભઇયવ્વુ ચિત્તવુદ્ધી ॥
 વુદ્ધી ॥ દવ્વપજ્જવ, ભઇયવ્વા ચિત્તકાલા ઉ ॥ ૭ ॥
 સુહુમો ય હોઇ કાલો, તત્તો સુહુમયરં હવઇ ચિત્તં ।
 અંગુલસેદ્ધિમિત્ત, ઓસણ્ણિઓ અસંખિજ્જા ॥ ૮ ॥

સે તં વડ્ઢમાણયં ઓહિનાણં ॥ સૂ ૧૨ ॥

સે કિં તં હીયમાણયં ઓહિનાણં ?

હીયમાણં ઓહિનાણં અપ્પસત્થેહિં અજ્ઞવસાયટ્ટાણેહિં
 વટ્ટમાણસ્સ વટ્ટમાણચરિત્તસ્સ સંકિલિસ્સમાણસ્સ સંકિલિ-
 સ્સમાણચરિત્તસ્સ સવ્વઓ સમન્તા ઓહી પરિહાયઇ સે તં-
 હીયમાણં ઓહિનાણં ॥ ૧૩ ॥

સે કિં તં પઢિવાઇઓહિનાણં ?

પઢિવાઇઓહિનાણં જહણ્ણેણં અંગુલસ્સ અસંખિજ્જયભાગં
 વા સંખિજ્જયભાગં વા વાલગ્ગં વા વાલગ્ગપુહુત્તં વા લિક્ખં વા
 લિક્ખંપુહુત્તં વા, જૂયં વા જૂયપુહુત્તં વા, જવં વા જવપુહુત્તં વા,
 અંગુલં વા અંગુલપુહુત્તં વા, પાયં વા પાયપુહુત્તં વા, વિહત્થિં વા
 વિહત્થિપુહુત્તં વા, રયણિં વા રયણિપુહુત્તં વા, કુચ્છિં વા કુચ્છિ-
 પુહુત્તં વા, ધણું વા ધણપુહુત્તં વા, ગાઉઅં વા ગાઉયપુહુત્તં વા

जोयरां वा जोयरापुहुत्तं वा, जोयरासयं वा जोयरासयपुहुत्तं वा,
जोयरासहस्सं वा जोयरासहस्सपुहुत्तं वा, जोयरालक्खं वा
जोयरालक्खपुहुत्तं वा जोयराकोडिं वा जोयराकोडिपुहुत्तं वा
जोयराकोडाकोडिं वा जोयराकोडाकोडिपुहुत्तं, वा जोयरासं-
खिज्जं वा जोयरासंखिज्जपुहुत्तं वा, जोयराअसंखेज्जं वा जोय-
राअसंखेज्जपुहुत्तं वा उक्कोसेणं लोणं वा पासित्ताणं पडिवइज्जा ।
से तं पडिवाइओहिनाणं ॥ १४ ॥

से किं तं अपडिवाइ-ओहिनाणं ?

अपडिवाइ-ओहिनाणं जेणं अलोगस्स एगमवि आगा-
सपएसं जाणइ पासइ तेण परं अपडिवाइओहिनाणं । से
तं अपडिवाइ ओहिनाणं ॥ १५ ॥

तं समासओ चउट्ठिहं पणत्तं, तंजहा-दव्वओ, खित्तओ,
कालओ, भावओ । तत्थ दव्वओ णं ओहिनाणी जहन्नेणं
अणंताइं रूविदव्वाइं जाणइ पासइ, उक्कोसेणं सव्वाइं रूविद-
व्वाइं जाणइ पासइ । खित्तओ णं ओहिनाणी जहन्नेणं अंगुलस्स
असंखिज्जयभागं जाणइ पासइ, उक्कोसेणं असंखिज्जाइं अलोगे
लोगप्पमाण-मित्ताइं खंडाइं जाणइ पासइ । कालओ णं ओहि-
नाणी जहन्नेणं आचलियाए असंखिज्जयभागं जाणइ पासइ,
उक्कोसेणं असंखिज्जाओ उस्सप्पिणीओ अवसप्पिणीओ अईय-
मणागयं च कालं जाणइ पासइ । भावओ णं ओहिनाणी
जहन्नेणं अणंते भावे जाणइ पासइ, उक्कोसेण विअणंते भावे
जाणइ पासइ । सव्वभावाणमणंतभागं जाणइ पासइ ॥ १६ ॥

ओही भवपच्चइओ गुणपच्चइओ य वरिणओ दुट्ठिहो ।
तस्स य बहू विगप्पा दव्वे खित्ते य काले य ॥ १७ ॥

नेरइयदेवतिथंकरा य ओहिस्सऽवाहिरा हुंति ।
पासंति सव्वओ खलु सेसा देसेण पासंति ॥ १० ॥

से तं ओहिनाणपच्चकखं ।

से किं तं मणपज्जवणारे ? मणपज्जवणारे णं भन्ते ! किं
मणुस्साणं उप्पज्जइ अमणुस्साणं ?

गोयमा ! मणुस्साणं, नो अमणुस्साणं ?

जइ मणुस्स णं किं संमुच्छिममणुस्साणं, गव्वभवकंतिय-
मणुस्साणं ?

गोयमा ! नो संमुच्छिममणुस्साणं उप्पज्जइ, गव्वभवकंतिय-
मणुस्साणं ।

जइ गव्वभवकंतियमणुस्साणं किं कम्मभूमियगव्वभवकंति-
यमणुस्साणं, अकम्मभूमियगव्वभवकंतियमणुस्साणं, अन्तर-
दीवगगव्वभवकंतिय मणुस्साणं ?

गोयमा ! कम्मभूमियगव्वभवकंतियमणुस्साणं, नो अकम्म-
भूमियगव्वभवकंतियमणुस्साणं, नो अन्तरदीवगगव्वभवकंतिय-
मणुस्साणं ।

जइ कम्मभूमियगव्वभवकंतियमणुस्साणं, किं संखिज्ज-
वासाउयकम्मभूमियगव्वभवकंतियमणुस्साणं असंखिज्जवासा-
उयकम्मभूमियगव्वभवकंतियमणुस्साणं ?

गोयमा ! संखिज्जवासाउयकम्मभूमियगव्वभवकंतियमणु-
स्साणं, नो असंखेज्जवासाउयकम्मभूमियगव्वभवकंतियमणु-
स्साणं ।

जइ संखेज्जवासाउयकम्मभूमियगव्वभवकंतियमणुस्साणं किं पज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमियगव्वभवकंतियमणुस्साणं, अपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमियगव्वभवकंतियमणुस्साणं ?

गोयमा ! पज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमियगव्वभवकंतियमणुस्साणं, नो अपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमियगव्वभवकंतियमणुस्साणं ।

जइ पज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमियगव्वभवकंतियमणुस्साणं, किं सम्महिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमियगव्वभवकंतियमणुस्साणं, मिच्छदिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमियगव्वभवकंतियमणुस्साणं, सम्ममिच्छदिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमियगव्वभवकंतियमणुस्साणं ?

गोयमा ! सम्महिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमियगव्वभवकंतियमणुस्साणं, नो मिच्छदिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमियगव्वभवकंतियमणुस्साणं, नो सम्ममिच्छदिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमियगव्वभवकंतियमणुस्साणं

जइ सम्महिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमियगव्वभवकंतियमणुस्साणं किं संजयसम्महिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमियगव्वभवकंतियमणुस्साणं, असंजयसम्महिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमियगव्वभवकंतियमणुस्साणं, संजयासंजयसम्महिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमियगव्वभवकंतियमणुस्साणं ?

गोयमा ! संजयसम्महिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमियगव्वभवकंतियमणुस्साणं, नो असंजयसम्महिट्ठिपज्जत्त-

गसंखेज्जवासाउयकम्मभूमियगब्भवकंतियमणुस्सारां, नो
संजयासंजयसम्महिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमिय-
गब्भवकंतियमणुस्सारां ।

जइ संजयसम्महिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमिय-
गब्भवकंतियमणुस्सारां, किं पमत्तसंजयसम्महिट्ठिपज्जत्तग-
संखेज्जवासाउयकम्मभूमियगब्भवकंतियमणुस्सारां, अप्पमत्त-
संजयसम्महिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमियगब्भवकं-
तियमणुस्सारां ?

गोयमा ! अप्पमत्तसंजयसम्महिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासा-
उयकम्मभूमियगब्भवकंतियमणुस्सारां, नो पमत्तसंजयसम्म-
हिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमियगब्भवकंतियमणु-
स्सारां ।

जइ अप्पमत्तसंजयसम्महिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्म-
भूमियगब्भवकंतियमणुस्सारां, किं इड्ढीपत्ताप्पमत्तसंजयस-
म्महिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमियगब्भवकंतियम-
णुस्सारां, अणिइड्ढीपत्ताप्पमत्तसंजयसम्महिट्ठिपज्जत्तगसंखे-
ज्जवासाउयकम्मभूमियगब्भवकंतियमणुस्सारां ?

गोयमा ! इड्ढीपत्ताप्पमत्तसंजयसम्महिट्ठिपज्जत्तगसंखे-
ज्जवासाउयकम्मभूमियगब्भवकंतियमणुस्सारां, नो अणि-
इड्ढीपत्ताप्पमत्तसंजयसम्महिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउय-
कम्मभूमियगब्भवकंतियमणुस्सारांमणपज्जवनाणं समु-
णज्जइ ॥ सू० १७ ॥

तं च दुविहं उप्पज्जइ तंजहा—उज्जुमई य विउलमई य ।

तं समासओ चउविवहं पन्नत्तं, तंजहा—दव्वओ, खित्तओ, कालओ, भावओ ।

तत्थ दव्वओ णं उज्जुमई अणंते अणंतपणसिए खंधे जाणइ पासइ, ते चेव विउलमई अब्भहियतराण विउलतराण विमुद्धतराण वितिमिरतराण जाणइ पासइ ।

खित्तओ णं उज्जुमई जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जयभागं उक्कोदेणं अहे जाव इमीसे रयणप्पभाण पुढवीए उवरिमहे-ट्टिल्ले खुड्डणपयरे, उड्ढं जाव जोइसस्स उवरिमतले, तिरियं जाव अंतोमणुस्सखित्ते अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु पन्नरससु कम्मभूमिसु, तीसाए अकम्मभूमिसु, द्दपन्नाए अन्तरदीवगेसु सन्निपंचेंदियाणं पज्जत्तयाणं मणोगए भावे जाणइ पासइ । तं चेव विउलमई अड्ढाइज्जेहिमंगुलेहिं अब्भहियतरं विउलतरं विमुद्धतरं वितिमिरतराणं खेत्तां जाणइ पासइ ।

कालओ णं उज्जुमई जहन्नेणं पलिओवमस्स असंखिज्जय-भागं उक्कोसेणवि पलिओवमस्स असंखिज्जयभागं अतीयमणा-गयं वा कालं जाणइ पासइ । तं चेव विउलमई अब्भहियतराणं विउलतराणं विमुद्धतराणं वितिमिरतराणं जाणइ पासइ ।

भावओ णं उज्जुमई अणंते भावे जाणइ पासइ, सब्ब-भावाणं अणंतभागं जाणइ पासइ । तं चेव विउलमई अब्भहिय-तराणं विउलतराणं विमुद्धतराणं वितिमिरतराणं जाणइ पासइ ।

मणपज्जवनाणं पुण जणमणपरिचित्तियत्थपागडणं ।

माणुसखित्तनिबद्धं गुणपच्चइयं चरित्तवओ ॥ ग। ११ ॥

से तां मणपज्जवनाणं ॥ सू० १८ ॥

से किं तं केवलनाणां ? केवलनाणां दुविहं पञ्चत्तं, तंजहा—
भवत्थकेवलनाणां च सिद्धकेवलनाणां च । से किं तं भवत्थ-
केवलनाणां ? भवत्थकेवलनाणां दुविहं परणत्तं, तंजहा—
सजोगिभवत्थकेवलनाणां च अजोगिभवत्थकेवलनाणां च ।

से किं तं सजोगिभवत्थकेवलनाणां ?

सजोगिभवत्थकेवलनाणां दुविहं परणत्तं, तंजहा—पढम-
समयसजोगिभवत्थकेवलनाणां च अपढमसमयसजोगिभवत्थ-
केवलनाणां च, अहवा चरमसमयसजोगिभवत्थकेवलनाणां च
अचरमसमयसजोगिभवत्थकेवलनाणां च । से त्तं सजोगि-
भवत्थकेवलनाणां ।

से किं तं अजोगिभवत्थकेवलनाणां ?

अजोगिभवत्थकेवलनाणां दुविहं पञ्चत्तं, तंजहा—
पढमसमयअजोगिभवत्थकेवलनाणां च अपढमसमयअजोगि-
भवत्थकेवलनाणां च, अहवा चरमसमयअजोगिभवत्थकेवल-
नाणां च अचरमसमयअजोगिभवत्थकेवलनाणां च । से त्तं
अजोगिभवत्थकेवलनाणां, से त्तं भवत्थकेवलनाणां ॥ सू० १६ ॥

से किं तं सिद्धकेवलनाणां ? सिद्धकेवलनाणां दुविहं परणत्तं,
तंजहा—अणंतरसिद्धकेवलनाणां च परंपरसिद्धकेवलनाणां च
॥सू० ॥२०॥

से किं तं अणंतरसिद्धकेवलनाणां ? अणंतरसिद्धकेवलनाणां
पञ्चत्तं दुविहं परणत्तं, तंजहा—तित्थसिद्धा १, अतित्थसिद्धा २,
तित्थयरसिद्धा ३, अतित्थयरसिद्धा ४, सयंबुद्धसिद्धा ५, पत्ते-
यबुद्धसिद्धा ६, बुद्धबोहियसिद्धा ७, इत्थिलिंगसिद्धा ८, पुरि-
सलिंगसिद्धा ९, नपुंसगलिंगसिद्धा १०, सलिंगसिद्धा ११,

અન્નલિંગસિદ્ધા ૧૨, ગિહિલિંગસિદ્ધા ૧૩, ઇગસિદ્ધા ૧૪, અણે-
ગસિદ્ધા ૧૫, સે ત્તં અણાંતરસિદ્ધકેવલનાણં । સૂ૦ ૨૧ ॥

સે કિં તં પરંપરસિદ્ધકેવલનાણં ? પરંપરસિદ્ધકેવલનાણં
અણેગવિહં પરણત્તં, તંજહા--અપદમસમયસિદ્ધા, દુસમયસિદ્ધા
તિસમયસિદ્ધા, ચડસમયસિદ્ધા, જાવ દસસમયસિદ્ધા, સંખિ-
જ્જસમયસિદ્ધા, અસંખિજ્જસમયસિદ્ધા, અણાંતસમયસિદ્ધા,
સે ત્તં પરંપરસિદ્ધકેવલનાણં, સે ત્તં સિદ્ધકેવલનાણં ॥

તં સમાસઓ ચડવિહં પરણત્તં, તંજહા-દ્વવઓ, સ્વિત્તઓ,
કાલઓ, ભાવઓ । તત્થ દ્વવઓ ણં કેવલનાણી સવ્વદ્વવાઈ
જાણઈ પાસઈ । સ્વિત્તઓ ણાં કેવલનાણી સવ્વં સ્વિત્તં જાણઈ
પાસઈ । કાલઓ ણાં કેવલનાણીસવ્વં કાલં જાણઈ પાસઈ ।
ભાવઓ ણાં કેવલનાણી સવ્વં ભાવે જાણઈ પાસઈ ।

અહ સવ્વદ્વવપરિણામભાવવિણત્તિકારણમણાંતં ।

સાસયમપ્પહિવાઈ, ઇગવિહં કેવલં નાણં ॥ ૧૨ ॥ સૂ૦ ॥ ૨૨ ॥

કેવલનાણેણડત્થે, નાંડે જે તત્થ પરણવણજોમે ।

તે માસઈ તિત્થયરો, વડજોગસુયં હવઈ સેસં ॥ ૧૩ ॥

સે ત્તં કેવલનાણં સે ત્તં નોંદિયપચ્ચક્કલં, સે ત્તં પચ્ચક્કલ-
નાણં ॥ સૂ૦ ॥ ૨૩ ॥

સે કિં તં પરોક્કલનાણં ? પરોક્કલનાણં દુવિહં પન્નત્તં,
તંજહા--આભિણિવોહિયનાણપરોક્કલં ચ, સુયનાણપરોક્કલં
ચ । જત્થ આભિણિવોહિયનાણં તત્થ સુયનાણં, જત્થ સુયનાણં
તત્થ આભિણિવોહિયનાણં, દોડ્ઠવિ ઇગાઈ અણમણમણુગયાઈ,
તહવિ પુણ ઇત્થ આયરિયા નાણત્તં પરણવયંતિ-અભિનિબુઝ્ઞઈત્તિ
આભિણિવોહિયનાણં, સુણેઈત્તિ સુયં; મડ્ઠપુણં જેણ સુયં, ન
મડ્ઠ સુયપુણ્ણિયા ॥ સૂ૦ ॥ ૨૪ ॥

अविसेसिया मई, मइनाणं च मइअन्नाणं च । विसेसिया
सम्महिट्टिस्स मई मइनाणं, मिच्छहिट्टिस्स मई मइअन्नाणं ।
अविसेसियं सुयं सुयनाणं च सुयअन्नाणं च । विसेसियं सुयं
सम्महिट्टिस्स सुयं सुयनाणं, मिच्छहिट्टिस्स सुयं सुयअन्नाणं
॥ सू० ॥ २५ ॥

से किं तं आभिणिबोहियनाणं ? अभिणिबोहियनाणं दुविहं
पण्णत्तां, तंजहा-सुयनिरिस्सियं च, असुयनिरिस्सियं च । से किं
तं असुयनिरिस्सियं ? असुयनिरिस्सियं चउव्विहं पण्णत्तां, तंजहा-
उप्पत्तिया १, वेणइया २, कम्मया ३, परिणामिया ४ ।
बुद्धी चउव्विह । बुत्ता, पंचमा नोवलम्भइ ॥ १४ ॥ सू० ॥ २६ ॥

पुव्वमदिट्ठमस्सुयमवेइय-तक्खणविसुद्धगहियत्था । अवा-
हयफलजोगा, बुद्धी उप्पत्तिया नाम ॥ १५ ॥

भरह-सिल-मिढ-कुक्कुड-तिल-वालुय-हत्थी-अगड-
वणसंडे । पायस-अइया-पत्ते-खाडहिला-पंच पिअरो य ॥ १६ ॥

भरहसिल-पणिय-रुक्खे-खुड्डग-पड-सरड-काय-
उच्चारै । गय-घयण-गोल-खंभे-खुड्डग-मग्गि-त्थि-पइ-पुत्ते-
॥ १७ ॥

महुसिथ-मुद्दि-अंके-नाणए-भिकखु-चेडगनिहाणे-
सिक्खा य अत्थसत्थे-इच्छा-य महं-सयसहस्से ॥ १८ ॥

भरनित्थरणसमत्था, तिवग्गसुत्तत्थगहियपेयाला । उभओ
लोगफलवई, विणयसमुत्था हवइ बुद्धी ॥ १९ ॥

निमित्ते अत्थसत्थे य, लेहे गणिए य कूव-अस्से य ।
गद्दभ-लक्खण-गंठी-अगए-रहिए य गणिया य ॥ २० ॥

सीया साडी दीहं, च तणं अवसव्वयं च कुंचस्स । निव्वो-
दए य गोणे, घोडगपडणं च रुक्खाओ ॥ २१ ॥

उवओगदिट्ठसारा, कम्मपसंगपग्घोलणविसाला । साहु-
क्कारफलवई, कम्मसमुत्था हवइ बुद्धी ॥ २२ ॥

हेरणिए-करिए-कोलिय-डोवे य मुत्ति-घय-पवए ।
तुआए-वड्डईय-पूयइ-घड-चित्तकारे य ॥ २३ ॥

अणुमाणहेउदिट्ठंतसाहिया वयविवागपरिणाम । हियनि-
स्सेयसफलवई, बुद्धी परिणामिया नाम ॥ २४ ॥

अभए-सिट्ठि-कुमारे-देवी-उदिओदए हवइ राया । साहु
य नंदिसेणे-धणदत्ते-सावग-अमच्चे ॥ २५ ॥

खमए-अमच्चपुत्ते-चाणकके चेव थूलभहे य । नासिक-
सुंदरिनंदे-वयरे-परिणामबुद्धीए ॥ २६ ॥

चलणाहरां-आमंडे-मणी य सप्पे य खग्गि-थूभिंदे । परि-
णामियबुद्धीए, एवमाई उदाहरणा ॥ २७ ॥

सेरां अस्सुयनिस्सियं ।

से किं तं सुयनिस्सियं ?

सुयनिस्सियं चउव्विहं पण्णरां, तंजहा-उग्गहे-ईहा-
अवाओ-धारणा ॥ सू० २७ ॥

से किं तं उग्गहे ?

उग्गहे दुविहे पणत्ते तंजहा-अथुग्गहे य वंजणुग्गहे य
॥ सू० ॥ २८ ॥

से किं तं वंजणुग्गसेहे

वंजणुग्गहे चउव्विहे पणत्ते, तंजहा-सोइंदियवंजणुग्गहे,
घाणिंदियवंजणुग्गहे, जिब्भियवंजणुग्गहे, फासिंदियवंज-
णुग्गहे, से तं वंजणुग्गहे ॥ सू० २९ ॥

से किं तं अथुग्गहे ?

अथुग्गहे छुव्विहे पणत्ते, तंजहा-सोइंदियअथुग्गहे,
चक्खिंदियअथुग्गहे, घाणिंदियअथुग्गहे, जिब्भियअथु-
ग्गहे, फासिंदियअथुग्गहे, नोइंदियअथुग्गहे ॥ सू० ३० ॥

तस्स रां इमे एगट्ठिया नाणाघोसा नाणावंजणा पंच नाम-
धिज्जा भवन्ति, तंजहा-ओगेणहणया, उवधारणया, सवणया,
अवलंबणया, मेहा, से तं उग्गहे ॥ सू० ३१ ॥

से किं तं ईहा ? ईहा छुव्विहा पणत्ता, तंजहा-सोइंदियईहा,
चक्खिंदियईहा, घाणिंदियईहा, जिब्भियईहा, फासिंदिय-
ईहा, नोइंदियईहा । तीसे रां इमे एगट्ठिया नाणाघोसानाणा
वंजणा पंच नामधिज्जा भवन्ति, तंजहा-आभोगणया, मग्गणया
गवेसणया, चिंता, वीमंसा, से तं ईहा ॥ सू० ३२ ॥

से किं तं अवाए ? अवाए छुव्विहे पणत्ते, तंजहा-सोइंदि-
यअवाए, चक्खिंदियअवाए, घाणिंदियअवाए जिब्भिय-
अवाए, फासिंदियअवाए, नोइंदियअवाए । तस्स रां इमे एग-
ट्ठिया नाणाघोसा नाणावंजणा पंच नामधिज्जा भवन्ति, तंजहा-
आउट्ठणया, पच्चाउट्ठणया, अवाए, बुद्धी, विण्णणे, से तं
अवाए ॥ सू० ३३ ॥

से किं तं धारणा ?

धारणा छविहा परणत्ता, तंजहा-सोइंदियधारणा, चविंख-
दियधारणा, घाणिदियधारणा, जिभिंदियधारणा, फासिंदिय-
धारणा, नोइंदियधारणा । तीसे रां इमे एगट्टिया नाणाघोसा
नाणावंजणा पंच नामधिज्जा भवंति, तंजहा धरणा, धारणा,
ठवणा, पइट्टा, कोट्टे, से तं धारणा ॥ सू० ॥ ३४ ॥

उग्गहे इक्कसमइए, अंतोमुहुत्तिया ईहा, अंतोमुहुत्तिए
अवाए, धारणा संखेज्जं वा कालं असंखेज्जं वा कालं ॥ सू० ॥ ३५ ॥

एवं अट्ठावीसइविहस्स आभिणिबोहियनारस्स वंजणु
ग्गहस्स परूवरणं करिस्सामि पडिबोहगदिट्ठंतेण मल्लगदिट्ठं-
तेण य ।

से किं तं पडिबोहगदिट्ठंतेणं ?

पडिबोहगदिट्ठंतेणं से जहानामए वेइ पुरिसे कंचि पुरिसं
सुत्तं पडिबोहिज्जा, अमुगा अमुगत्ति, तत्थ चोयगे पन्नवयं एवं
वयासी-किं एगसमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति ? दुस-
मयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति ? जाव दससमयपविट्ठा
पुग्गला गहणमागच्छंति ?, संखिज्जसमयपविट्ठा पुग्गला
गहणमागच्छंति ?, असंखिज्जसमयपविट्ठा पुग्गला गहणमा-
गच्छंति ?, एवं वयंतं चोयगं परणवइ एवं वयासी-नो एग-
समयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति, नो दुसमयपविट्ठा पुग्गला
गहणमागच्छंति; जाव नो दससमयपविट्ठा पुग्गला गहणमा-
गच्छंति, नो संखिज्जसमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति;
असंखिज्जसमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति, से तं पडि-
बोहगदिट्ठंतेणं ।

से किं तं मल्लगदिट्ठंतेरां ?

मल्लगदिट्ठंतेरां से जहानामए केइ पुरिसे आवागसीसाओ मल्लगं गहाय तत्थेगं उदगविंदुं पक्खिविज्जा से नट्ठे, अणोऽवि पक्खित्ते सेऽवि नट्ठे, एवं पक्खिप्पमाणेसु पक्खिप्पमाणेसु होही से उदगविंदू जे रां तं मल्लगं रावेहिइत्ति; होही से उदगविन्दू जे रां तं सि मल्लगं सि ठाहिति; होही से उदगविन्दू जे रां तं मल्लगं भरिहिति; होही से उदगविंदू जे रां तं मल्लगं पवाहे-
हिति; एवामेव पक्खिप्पमाणेहिं पक्खिप्पमाणेहिं अणंतेहिं पुग्गलेहिं जाहे तं वंजणं पूरियं होइ; ताहे हुंति करेइ, नो चेव णं जाणइ के वि एस सद्दाइ ? तओ ईहं पविसइ, तओ जाणइ अमुगे एस सद्दाइ; तओ अवायं पविसइ, तओ से उवगयं हवइ तओ रां धारणां पविसइ, तओ रां धारेइ संखिज्जं वा कालं असंखिज्जं वा कालं । से जहानामए केइ पुरिसे अव्वरां सइं सुणिज्जा, तेरां सदोत्ति उग्गहिए, नो चेव रां जाणइ के वेस सद्दाइ ? तओ ईहं पविसइ, तओ जाणइ अमुगे एस सद्दे, तओ रां अवायं पविसइ, तओ रां धारेइ संखेज्जं वा कालं असंखेज्जं वा कालं ।

से जहानामए केइ पुरिसे अव्वत्तं रूवं पासिज्जा तेरां रूवत्ति उग्गहिए, नो चेव णं जाणइ के वेस रूवत्ति; तओ ईहं पविसइ, तओ जाणइ अमुगे एस रूवे, तओ अवायं पविसइ, तओ से उवगयं हवइ, तओ धारणां पविसइ, तओ रां धारेइ संखेज्जं वा कालं, असंखेज्जं वा कालं ।

से जहानामए केइ पुरिसे अव्वत्तं गंधं अग्घाइज्जा तेरां गंधत्ति उग्गहिए, नो चेव रां जाणइ के वेस गंधेत्ति; तओ ईहं

पविसइ तओ जाणइ अमुगे एस गंधे; तओ अवायं पविसइ, तओ से उवगयं हवइ; तओ धारणं पविसइ, तओ णं धारेइ संखेज्जं वा कालं असंखेज्जं वा कालं ।

से जहानामए वेइ पुरिसे अव्वत्तं रसं आसाइज्जा तेणं रसोत्ति उग्गहिए, नो चेव णं जाणइ के वेस रसेत्ति; तओ ईहं पविसइ, तओ जाणइ अमुगे एस रसे, तओ अवायं पविसइ, तओ से उवगयं हवइ, तओ धारणं पविसइ, तओ णं धारेइ संखिज्जं वा कालं असंखिज्जं वा कालं ।

से जहानामए केइ पुरिसे अव्वत्तं फासं पडिसंवेइज्जा तेणं फासेत्ति उग्गहिए, नो चेव णं जाणइ के वेस फासओत्ति; तओ ईहं पविसइ, तओ जाणइ अमुगे एस फासे, तओ अवायं पविसइ, तओ से उवगयं हवइ, तओ धारणं पविसइ, तओ णं धारेइ संखेज्जं वा कालं असंखेज्जं वा कालं ।

से जहानामए केइ पुरिसे अव्वत्तं सुमिणं पासिज्जा तेणं सुमिणेत्ति उग्गहिए, नो चेव णं जाणइ के वेस सुमिणेत्ति, तओ ईहं पविसइ, तओ जाणइ अमुगे एस सुमिणे; तओ अवायं पविसइ, तओ से उवगयं हवइ, तओ धारणं पविसइ, तओ णं धारेइ संखेज्जं वा कालं, असंखेज्जं वा कालं से तं मल्लगदिट्ठंतेणं ॥ सू० ३६ ॥

ते समासओ च उव्विहं पणत्तं, तंजहा-दव्वओ, खित्तओ, कालओ, भावओ । तत्थ दव्वओ णं आभिणिबोहियनाणी आपसेणं सव्वाइं दव्वाइं जाणइ, न पासइ । खेत्तओ णं आभिणिबोहियनाणी आपसेणं सव्वं खेत्तं जाणइ न पासइ । कालओ णं आभिणिबोहियनाणी आपसेणं सव्वं कालं जाणइ न

पासइ । भावओ णं आभिणिबोहियनाणी आपसेणं सव्वे भावे जाणइ, न पासइ ।

उग्गह ईहाऽवाओ, य धारणा एव हुंति चत्तारि ।
 आभिणिबोहियनाणस्स भेयवत्थू समासेणं ॥ २८ ॥
 अत्थाणं उग्गहणम्मि उग्गहो तह विद्यालणे ईहा ।
 ववसायम्मि अवाओ, धराणं पुण धारणां विन्ति ॥ २९ ॥
 उग्गह इक्कं समयं, ईहावाया मुहुत्तमद्धं तु ।
 कालमसंखं संखं च धारणा होइ नायव्वा ॥ ३० ॥
 पुट्ठं सुणेइ सद्दं, रूवं पुण पासइ अपुट्ठं तु ।
 गंधं रसं च फासं च, बद्धपुट्ठं वियागरे ॥ ३१ ॥
 भासासमसेढीओ, सद्दं जं सुणइ मीसियं सुणइ ।
 वीसेढी पुण सद्दं, सुणेइ नियमा पराघाए ॥ ३२ ॥
 ईहा अपोह वीमंसा, मग्गणा य गवेसणा ।
 सन्ना सई मई पन्ना, सव्वं आभिणिबोहियं ॥ ३३ ॥
 से तं आभिणिबोहियनाणपरोक्खं, से तं मइनाणं ॥ सू० ३७ ॥

से किं तं सुयनाणपरोक्खं ?

सुयनाणपरोक्खं चोइसविहं पणत्तं तंजहा—अक्खर-
 सुयं १ अणक्खरसुयं २ सणिसुयं ३ असणिसुयं ४ सम्मसुयं
 ५ मिच्छसुयं ६ साइयं ७ अणाइयं ८ सपज्जवसियं ९ अपज्ज-
 वसियं १० गमियं ११ अगमियं १२ अंगपविट्ठं १६ अणंगपविट्ठं
 १४ ॥ सू० ॥ ३८ ॥

से किं तं अक्खरसुयं ?

१ अत्थाणं उग्गहणां, च उग्गहं तह विद्यालणं ईहं । ववसायं च
 अवायं धराणं पुण धारणां विन्ति ॥ १ ॥ इति पाठान्तरगाथा ।

अक्षरसुयं तिविहं परणत्तं, तंजहा-सन्नक्षरं, वंजणक्षरं
लद्धिअक्षरं ।

से किं तं सन्नक्षरं ?

सन्नक्षरं अक्षरस्स संठाणागिई, से तं सन्नक्षरं ।

से किं तं वंजणक्षरं ?

वंजणक्षरं अक्षरस्स वंजणाभिलावो, से तं वंजणक्षरं ।

से किं तं लद्धिअक्षरं ?

लद्धिअक्षरं अक्षरलद्धियस्स लद्धिअक्षरं समुप्पज्जइ,
तंजहा-सोइंदियलद्धिअक्षरं, चक्खिंदियलद्धिअक्षरं, घाणिं-
दियलद्धिअक्षरं, रसणिंदियलद्धिअक्षरं, फासिंदियलद्धिअ-
क्षरं, नोइंदियलद्धिअक्षरं, से तं लद्धिअक्षरं, से तं अक्ष-
रसुयं ॥

से किं तं अणक्षरसुयं ?

अणक्षरसुयं अणोगविहं परणत्तं, तंजहा—

ऊससियं नीससियं, निच्छृढं ख।सियं च छीयं च ।

निर्सिधियमणुसारं, अणक्षरं छेलियाईयं ॥ ३४ ॥

से तं अणक्षरसुयं ॥ सू० ३६ ॥

से किं तं सणिसुयं ?

सणिसुयं तिविहं परणत्तं, तंजहा—कालिओवणसेणं, हेऊ-
वणसेणं, दिट्ठिवाओवणसेणं ।

से किं तं कालिओवणसेणं ?

कालिओवणसेरां जस्स रां अत्थि ईहा, अवोहो, मग्गणा, गवेसणा, चिन्ता, वीमंसा, से रां सण्णीति लब्भइ । जस्स रां नत्थि ईहा, अवोहो, मग्गणा, गवेसणा, चिन्ता, वीमंसा, से रां असण्णीति लब्भइ, से रां कालिओवणसेरां ।

से किं तं हेऊवणसेरां ?

हेऊवणसेरां जस्स रां अत्थि अभिसंधारणपुव्विया करणसत्ती से रां सण्णीति लब्भइ । जस्स रां नत्थि अभिसंधारणपुव्विया करणसत्ती से रां असण्णीति लब्भइ, से रां हेऊवणसेरां ।

से किं तं दिट्ठिवाओवणसेरां ?

दिट्ठिवाओवणसेरां सण्णिसुयस्स खओवसमेरां असण्णी लब्भइ, असण्णिसुयस्स खओवसमेरां असण्णी लब्भइ, से तं दिट्ठिवाओवणसेरां, से तं सण्णिसुयं, से तं असण्णिसुयं ॥ सू० ॥ ४० ॥

से किं तं सम्मसुयं ?

सम्मसुयं जं इमं अरहंतेहिं भगवंतेहिं उप्पण्णानाणदंस-
णधरेहिं तेलुकनिरिक्खियमहियपूइएहिं तीयपडुप्पण्णमणाग-
यजाणएहिं सव्वराणहिं सव्वदरिसीहिं पजीयं दुवालसंगं गणि-
पिडगं, तंजहा—आयारो १ सूयगडो २ ठारां ३ समवाओ ४
विवाहपण्णत्ती ५ नायाधम्मकहाओ ६ उवासगदसाओ ७
अंतगडदसाओ ८ अणुत्तरोववाइयदसाओ ९ पण्हावागर-
णाइं १० विवागसुयं ११ दिट्ठिवाओ १२, इच्चयं दुवालसंगं
गणिपिडगं चोदसपुव्विस्स सम्मसुयं, अभिण्णदसपुव्विस्स

सम्मसुयं, तेण परं भिरणेसु भयणा, से त्तं सम्मसुयं ॥ सू० ४१ ॥

से किं तं मिच्छासुयं ?

मिच्छासुयं जं इमं अण्णाणि एहिं मिच्छादिट्ठि एहिं सच्छं-
दबुद्धिमइविगप्पियं, तंजहा—भारहं, रामायणं, भीमासुरुक्खं,
कोडिल्लयं, सगडभद्वियाओ, खोडमुहं. कप्पासियं नागसुहुमं,
कण्णसत्तरी, वइसेसियं, बुद्धवयणं, तेरासियं, काविलियं, लोका-
ययं, सट्ठितंतं, माढरं, पुराणं, वागरणं, भागवयं, पायंजली,
पुस्सदेवयं, लेहं, गणियं, सउणरुयं, नाडयाइं, अहवा वावत्त-
रिकलाओ, चत्तारि य वेया संगोवंगा, एयाइं मिच्छदिट्ठिस्स
मिच्छत्तपरिग्गहियाइं मिच्छासुयं, एयाइं चेव सम्मदिट्ठिस्स
सम्मत्तपरिग्गहियाइं सम्मसुयं, अहवा मिच्छदिट्ठिस्स वि एयाइं
चेव सम्मसुयं, कम्हा ? सम्मत्तहेउत्तणओ; जम्हा ते मिच्छ-
दिट्ठिया तेहिं चेव समएहिं चोइया समाणा केइ सपक्खदि-
ट्ठीओ चयंति, से त्तं मिच्छासुयं ॥ सू० ॥ ४२ ॥

से किं तं साइयं सपज्जवसियं, अणाइयं अपज्जवसियं च ?

इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं बुच्छित्तिनयट्ठयाए साइयं
सपज्जवसियं, अबुच्छित्तिनयट्ठयाए अणाइयं अपज्जवसियं ।
तं समासओ चउव्विहं पणत्तं, तंजहा-दव्वओ, खित्तओ,
कालओ, भावओ । तत्थ दव्वओ णं सम्मसुयं एगं पुरिसं
पडुच्च साइयं सपज्जवसियं, वहवे पुरिसे य पडुच्च अणाइयं
अपज्जवसियं । खेत्तओ णं पंच भरहाइं पंचेरवयाइं पडुच्च साइयं
पंचमहाविदेहाइं पडुच्च अणाइयं अपज्जवसियं । कालओ णं
उस्सप्पिणिं ओसप्पिणिं च पडुच्च साइयं सपज्जवसियं, नो-

उस्सप्पिणिं नोओसप्पिणिं च पडुच्च अणाइयं अपज्जवसियं ।
भावओ रां जे जया जिणपन्नत्ता भावा आघविज्जंति, पण्णवि-
ज्जंति, परुविज्जंति, दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति, ते
तया भावे पडुच्च साइयं सपज्जवसियं । खाओवसमियं पुण भावं
पडुच्च अणाइयं अपज्जवसियं । अहवा भवसिद्धियस्स सुयं
साइयं सपज्जवसियं च, अभवसिद्धियस्स सुयं अणाइयं अप-
ज्जवसियं च, सव्वागासपएसग्गं सव्वागासपएसेहिं अणंतगु-
णियं पज्जवक्खरं निप्फज्जइ, सव्वजीवाणांपि य रां अक्खरस्स
अणंतभागो निच्चुग्घाडियो, जइ पुण सोऽवि आवरिज्जा तेरां
जीवो अजीवत्तं पाविज्जा,—“सुद्धुवि मेहसमुदए, होइ पभा
चंदसूराणां” से तं साइयं सपज्जवसियं, से तं अणाइयं अपज्ज-
वसियं ॥ सू० ॥ ४३ ॥

से किं तं गमियं ?

गमियं दिट्ठिवाओ ॥

से किं तं अगमियं ?

अगमियं कालियं सुयं । से तं गमियं, से तं अगमियं ॥

अहवा तं समासओ दुविहं पण्णत्तं, तंजहा—अंगपविट्ठं
अंगबाहिरं च । से किं तं अंगबाहिरं ? अंगबाहिरं दुविहं पण्णत्तं,
तंजहा—आवस्सयं च, आवस्सयवइरित्तं च । से किं तं आव-
स्सयं ? आवस्सयं छुव्विहं पण्णत्तं, तंजहा—सामाइयं, चउवी-
सत्थओ, वेदणयं, पडिक्कमणां, काउस्सग्गो, पच्चक्खाणं; से तं
आवस्सयं ।

से किं तं आवस्सयवइरित्तं ? आवस्सयवइरित्तं दुविहं
पण्णत्तं, तंजहा—कालियं च, उक्कालियं च ॥

से किं तं उक्कालियं ? उक्कालियं अरोगविहं पण्णत्तं, तंजहा—

दसवेयालियं, कप्पियाकप्पियं, चुल्लकप्पसुयं, महाकप्पसुयं, उववाइयं, रायपसेणियं, जीवाभिगमो, पणवणा, महापणवणा, पमायप्पमायं, नंदी, अणुओगदागाइं, देविंदत्थओ, तंदुलवेयालियं, चन्दाविज्झयं, सूरपणत्ती, पोरिसिमण्डलं, मण्डलपवैसो, विज्जाचरणविणिच्छओ, गणिविज्जा, ज्ञाणविभत्ती, मरणविभत्ती, आयविसोही, वीयरागसुयं, संलेहणासुयं, विहारकप्पो, चरणविही, आउरपच्चक्खाणं, महापच्चक्खाणं, एवमाइ; से तं उक्कालियं ।

से किं तं कालियं ?

कालियं अरोगविहं पणत्तं, तंजहा—उत्तरज्झयणाइं, दसाओ, कप्पो, ववहारो, निसीहं, महानिसीहं, इसिभासियाइं, जम्बूदीवपन्नत्ती, दीवसागरपन्नत्ती, चन्दपन्नत्ती, खुड्डिया विमाणपविभत्ती, महल्लिया विमाणपविभत्ती, अंगचूलिया, वग्गचूलिया, विवाहचूलिया, अरुणोववाए, वरुणोववाए, गरुलोववाए, धरुणोववाए, वेसमणोववाए, वेलंधरोववाए, देविंदोववाए, उट्ठाणसुए, समुट्ठाणसुए, नागपरियावणियाओ, निरयावलियाओ कप्पियाओ, कप्पवडिसियाओ, पुप्फियाओ, पुप्फचूलियाओ, वण्हीदसाओ, (आसीविसभावणाणं, दिट्ठिविसभावणाणं, सुमिणभावणाणं, महासुमिणभावणाणं, तेयग्गिनि-सग्गाणं,) एवमाइयाइं चउरासीइं पइन्नगसहस्साइं भगवओ अरहओ उसहसामिस्स आइतित्थयरस्स, तहा संखिज्जाइं पइन्नगसहस्साइं मज्झिमगाणं जिणवराणं, चोदस पइन्नगसहस्साइं भगवओ वद्धाणसामिस्स, अहवा जस्स जत्तिया सीसा उप्पत्तियाए, वेणइयाए, कम्मयाए, परिणामियाए, चउ-विवाए बुद्धीए उववेया तस्स तत्तियाइं पइरणगसहस्साइं,

प्तोयबुद्धावि तत्तिया चेव, से त्तं कालियं, से त्तं आवस्सयवइ-
रित्तं, से त्तं अण्णपविट्ठं ॥ सू० ॥ ४४ ॥

से किं तं अण्णपविट्ठं ?

अण्णपविट्ठं दुवालसविहं पणत्तं, तंजहा—आयारो १ सूय-
गडो २ ठाणं ३ समवाओ ४ विवाहपन्नत्ती ५ नायाधम्मक-
हाओ ६ उवासगदसाओ ७ अंतगडदसाओ ८ अणुत्तरोववाइ-
यदसाओ ९ पणहावागरणाइं १० विवागसुयं ११ दिट्ठि-
वाओ १२ ॥ सू० ॥ ४५ ॥

से किं तं आयारे ? आयारे णं समणारं निग्गंथारं आया-
रगोयरविणयवेणइयसिक्खाभासाअभासाचरणकरणजायामा-
यावित्तीओ आग्रविज्जंति । से समासओ पंचविहे पणत्ते,
तंजहा—नाणायारे, दंसणायारे, चरित्तायारे, तवायारे, वीरि-
यायारे । आयारे णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा,
संखिज्जा वेढा, संखिज्जा सिलोगा, संखिज्जाओ निज्जुत्तीओ,
(संखिज्जाओ संगहणीओ) संखिज्जाओ पडिवत्तीओ, से णं
अंगट्ठयाए पढमे अंगे, दो सुयकलंधा, पणुवीसं अज्झयणा,
पंचासीइ उद्देसणकाला, पंचासीइ समुद्देसणकाला, अट्टारस
पयसहस्साइं पयग्गेणं, संखिज्जा अकलरा, अणंता गमा,
अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासयकडनि-
वद्धनिकाइया जिणपणत्ता भावा आग्रविज्जंति, पन्नविज्जंति,
परुविज्जंति, दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति, से एवं
आया, एवं नाया, एवं विणयाया, एवं चरणकरणपरुवणा
आग्रविज्जइ, से त्तं आयारे १ ॥ सू० ॥ ४६ ॥

से किं तं सूयगडे ? सूयगडे णं लोए सूइज्जइ, अलोए सूइ-

जइ, लोयालोए सइजइ, जीवा सइजंति, अजीवा सइजंति, ससमए सइजइ, परसमए सइजइ, ससमयपरसमए सइजइ, सूयगडे णं असीयस्स किरियावाइसयस्स, चउरासीइए अकि-
रिवाईणं, सत्तट्ठीए अण्णाणीयवाईणं, वत्तीसाए वेणइयवाईणं,
तिण्हं तेसट्ठाणं पासंडियसयाणं वूहं किच्चा ससमए ठाविजइ ।
सूयगडे णं परित्ता वायणा, संखिज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा
वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखिज्जाओ निज्जुत्तीओ, (संखि-
ज्जाओ संगहणीओ) संखिज्जाओ पडिवत्तीओ, से णं अंगट्ठयाए
विइए अंगे, दो सुयक्खेधा तेवीसं अज्झयणा, तिच्चीसं उद्देस-
णकाला, तिच्चीसं समुद्देसणकाला, छत्तीसं पयसहस्साइं पय-
ग्गेणं, संखिज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता
तसा, अणंता थावरा, सासयकडनिवद्धनिकाइया जिणपरणत्ता
भावा आघविजंति, परणविजंति, परूविजंति, दंसिजंति,
निदंसिजंति, उवदंसिजंति, से एवं आया, एवं नाया, एवं
विण्णाया, एवं चरणकरणपरूवणा आघविजइ, से तं सूय-
गडे २ ॥ सु० ॥ ४७ ॥

से किं तं ठाणे ? ठाणे णं जीवा ठाविजंति, अजीवा ठावि-
जंति, जीवाजीवा ठाविजंति, ससमए ठाविजइ, परसमए
ठाविजइ, ससमयपरसमए ठाविजइ, लोए ठाविजइ, अलोए
ठाविजइ, लोयालोए ठाविजइ । ठाणे णं टंका, कूडा, सेला,
सिहरिणो, पंभारा, कुंडाई गुहाओ. आगरा, दहा, नईओ,
आघविजंति । ठाणे णं एगाइयाए एगुत्तरियाए वुइटीए दस-
ट्ठाणगविवड्ढियाणं भावाणं परूवणा आघविजइ । ठाणे णं
परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा
सिलोगा, संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ;
संखेज्जाओ पडिवत्तीओ । से णं अंगट्ठयाए तइए अंगे, एगे

सुयक्खंधे, दस अज्झयणा एगवीसं उद्देसणकाला, एकवीसं समुद्देसणकाला, वावत्तरि पयसहस्सा पयग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासयकयनिबद्धनिकाइया जिणपन्नत्ता भावा आघविज्जंति, पन्नविज्जंति, परूविज्जंति दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति । से एवं आया, एवं नाया, एवं विण्णाया, एवं चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ, से तं ठाणे ३ ॥ सू० ॥ ४८ ॥

से किं तं समवाए ? समवाए णं जीवा समासिज्जंति, अजीवा समासिज्जंति, जीवाजीवा समासिज्जंति, ससमए समासिज्जइ, परसमए समासिज्जइ, ससमयपरसमए समा—सिज्जइ, लोए समासिज्जइ, अलोए समासिज्जइ, लोयालोए समासिज्जइ । समवाए णं एगाइयाणं एगुत्तरियाणं ठाणसयविवड्ढियाणं भावाणं परूवणा आघविज्जइ; दुवालसविहस्स य गणिपिडगस्स पल्लवग्गे समासिज्जइ । समवायस्स णं परित्ता वायणा, संखिज्जा अणुओगदारा, संखिज्जा वेढा, संखिज्जा सिलोगा, संखिज्जाओ निज्जुत्तीओ, संखिज्जाओ संगहणीओ, संखिज्जाओ पडिवत्तीओ, से णं अंगद्वयाएचउ अत्थे अंगे, एगे सुयक्खंधे, एगे अज्झयणे, एगे उद्देसणकाले, एगे चोयाले सयसहस्से पयग्गेणं; संखेज्जा अक्खरा, अणंता गंमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासयकडनिबद्धनिकाइया जिणपणत्ता भावा आघविज्जंति, पणविज्जंति, परूविज्जंति, दंसिज्जंति निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति । से एवं आया, एवं नाया, एवं विण्णाया, एवं चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ । से तं समवाए ४ ॥ सू० ॥ ४९ ॥

से किं तं विवाहे ? विवाहे णं जीवा विआहिज्जंति, अजीवा

विआहिज्जंति, जीवाजीवा विआहिज्जंति, ससमए विआहिज्जति,
 परसमए विआहिज्जति, ससमयपरसमए विआहिज्जंति, लोए
 विआहिज्जति, अलोए विआहिज्जति, लोयलोए विआहिज्जति ।
 विवाहस्स णं परित्ता वायणा, संखिज्जा अणुओगदारा,
 संखिज्जा वेढा, संखिज्जा सलोगा, संखिज्जाओ निज्जुत्तीओ,
 संखिज्जाओ संगहणीओ, संखिज्जाओ पडिवत्तीओ । से णं
 अंगट्ठयाए पंचमे अंगे, एगे सुयक्खंधे, एगे साइरेगे अज्झयण-
 सए, दस उद्देसगसहस्साइं, दस समुद्देसगसहस्साइं छत्तीसं
 वांगरणसहस्सःइं, दो लक्खा अट्ठासीइं पयसहस्साइं पयग्गेणं,
 संखिज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा,
 अणंता थावरा, सासयकडनिबद्धनियाइया जिणपरणत्ता भावा
 आघविज्जंति परणविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति निदंसिज्जंति,
 उवदंसिज्जंति, से एवं आया, एवं नाया, एवं विण्णया,
 एवं चरणकरणपरूवणा, आघविज्जइ, से तां विवाहे ॥ ५ ॥
 ॥ सू० ॥ ५० ॥

खे किं तं नायाधम्मकहाओ? नायाधम्मकहासु णं नायाणं
 नगराइं, उज्जाणाइं, चेइयाइं, वणसंडाइं, समोसरणाइं, रायाणो,
 अम्मापियरो, धम्मायरिया, धम्मकहाओ, इहलोइयपरलोइया
 इइहिविसेसा, भोगपरिच्चाया पव्वज्जाओ, परिआया, सुय-
 परिग्गहा, तवोवहाणाइं, संलेहणाओ, भत्तपच्चक्खाणाइं, पाओ-
 वगमणाइं, देवलोगगमणाइं, सुकुलपच्चायाईओ, पुणवोहिलाभा,
 अंतकिरियाओ य आघविज्जंति । दस धम्मकहाणं वग्गा, तत्थ
 णं एगमेगाए धम्मकहाए पंच पंच अक्खाइयासयाइं, एग-
 मेगाए अक्खाइयाए पंच पंच उवक्खाइयासयाइं, एगमेगाए

उवक्खाइयाए पंच पंच अक्खाइयउवक्खाइयासयाइं एवमेव
सपुव्वावरेणं अद्धुट्ठाओ कहाणगकोडीओ हवंतित्ति सम-
क्खायं । नायाधम्मकहाणं परित्ता वायणा, संखिज्जा अणुओ-
गदारा, संखिज्जा वेढा, संखिज्जा सिलोगा, संखिज्जाओ
निज्जुत्तीओ संखिज्जाओ संगहणीओ संखिज्जाओ पडिव-
त्तीओ । से णं अंगट्ठयाए छुट्ठे अंगे, दो सुयक्खंधा एगुण-
वीसं अज्झयणा, एगुणवीसं समुद्देसणकाला, संखेज्जा पय-
सहस्सा पयग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता
पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासयकडनिबद्धनिका-
इवा जिणपणत्ता भावा आघविज्जंति, पणविज्जंति,
परुविज्जंति, दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति । से
एवं आया, एवं नाया, एवं विणयाया, एवं चरणकरणपरुवणा
आघविज्जइ, से सं नायाधम्मकहाओ ६ ॥ सू० ॥ ५० ॥

से किं तं उवासगदसाओ ? उवासगदसासु णं समणो-
वासयाणं नगराईं, उज्जाणाईं, चेइयाईं, वणसंडाईं, समोसर-
णाईं, रायाणो, अम्मापियरो, धम्मायरिया, धम्मकहाओ इह-
लोइयपरलोइया इड्ढिविसेसा, भोगपरिच्चाया, पव्वजाओ,
परिआगा, सुयपरिग्गहा, तवोवहाणाईं सीलव्यगुणवेरमण-
पच्चक्खाणपोसहोववासपडिवज्जणया, पडिमाओ, उवसग्गा,
संलेहणाओ, भत्तपच्चक्खाणाईं, पाओवगमणाईं, देवलोगगम-
णाईं, सुकुलपच्चाईओ, पुणवोहिलाभा, अंतकिरियाओ य आघ-
विज्जंति । उवासगदसाणं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओग-
दारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ,
संखेज्जाओ संगहणीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ । से णं अंग-
ट्ठयाए सत्तमे अंगे, एगे सुयक्खंधे, दस अज्झयणा, दस
उद्देसणकाला, दस समुद्देसणकाला, संखेज्जा पयसहस्सा

पयग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासयकडनिवद्धनिकाइया जिणपणत्ता भावा आघविज्जंति, पन्नविज्जंति, परूविज्जंति, दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति । से एवं आया, एवं नाया, एवं विन्नाया, एवं चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ; से तं उवागदसाओ ७ ॥ सू० ॥ ५२ ॥

से किं तं अंतगडदसाओ ? अंतगडदसासु णं अंतगडाणं नगराई, उज्जाणाई, चेइयाई, वणसंडाई, समोसरणाई, रायाणो, अम्मापियरो, धम्मापरिया, धम्मकहाओ, इहलोइयपरलोइया इड्ढिविसेसा, भोगपरिच्चागा, पच्चज्जाओ, परिआगा, सुयपरिग्गहा तवोवहाणाई, संलेहणाओ, भत्तपच्चक्खाणाई, पाओ-वगमणाई अंतकिरियाओ, आघविज्जंति । अंतगडदसासु णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ । से णं अंगट्ठयाए अट्ठमे अंगे, एगे सुयक्खंधे, अट्ठ वग्गा, अट्ठ उद्देसणकाला, अट्ठ समुद्देसणकाला, संखेज्जा पयसहससा पयग्गेणं; संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासयकडनिवद्धनिकाइया जिणपणत्ता भावा आघविज्जंति, पन्नविज्जंति, परूविज्जंति, दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति; से एवं आया, एवं नाया, एवं विन्नाया, एवं चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ; से तं अंतगडदसाओ ॥ ८ सू० ॥ ५३ ॥

से किं तं अणुत्तरोववाइयदसाओ ? अणुत्तरोववाइयदसासु णं अणुत्तरोववाइयाणं नगराई, उज्जाणाई, चेइयाई, वणसंडाई, समोसरणाई, रायाणो, अम्मापियरो, धम्मापरिया,

धम्मकहाओ, इहलोइयपरलोइया इड्ढिविसेसा, भोगपरि-
च्चागा, पव्वज्जाओ, परिआगा, सुयपरिग्गहा, तवोवहाणाइं,
पडिमाओ, उवसग्गा, संलेहणाओ, भत्तपच्चक्खाणाइं, पाओव-
गमणाइं, अणुत्तरोववइयत्ते उववत्ती, सुकुलपच्चायाईओ,
पुणवोहिलाभा, अंतकिरियाओ, आघविज्जंति । अणुत्तरोववा-
इयदसासु णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा
वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ
संगहणीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ, से णं अंगट्टयाए नवमे
अंगे, एगे सुयक्खंधे, तिन्नि वग्गा, तिन्नि उद्देसणकाला, तिन्नि
समुद्देसणकाला, संखेज्जाइं पयसहस्साइं पयग्गेणं, संखेज्जा
अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता
थावरा, सासयकडनिबद्धनिकाइया जिणपणत्ता भावा आश्र-
विज्जंति, पणविज्जंति, परूविज्जंति, दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति,
उवदंसिज्जंति; से एवं आया, एवं नाया, एवं विणयाया, एवं
करणकरणपरूवणा आघविज्जइ, से त्तं अणुत्तरोववाइयद-
साओ ६ ॥ सू० ॥ ५४ ॥

से किं तं पणहावागरणाइं ? पणहावागरणेसु णं अट्ठुत्तरं
पसिणसयं, अट्ठुत्तरं अपसिणसयं, अट्ठुत्तरं पसिणापसिणसयं
तंजहा—अंगुट्ठपसिणाइं, वाहुपसिणाइं, अद्वागपसिणाइं, अन्ने
वि विचित्ता विज्जाइसया, नागसुवणणेहिं सद्धिं दिव्वा संवाया
आघविज्जंति । पणहावागरणाणं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणु-
ओगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ निज्जु-
त्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ; से णं
अंगट्टयाए दसमे अंगे; एगे सुयक्खंधे पणयालीसं अज्झयणा,
पणयालीसं उद्देसणकाला, पणयालीसं समुद्देसणकाला,
संखेज्जाइं पयसहस्साइं पयग्गेणं; संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा

अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासयकडनिव-
द्धनिकाइया जिणपणत्ता भावा आघविज्जंति, पणविज्जंति
परुविज्जंति, दसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति,
से एवं आया एवं नाया एवं विण्णाया एवं चरणकरण-
परुवणा आघविज्जइ, से तं पणहावागरणाइं १० ॥ सू० ॥ ४५ ॥

से किं तं विवागसुयं ? विवागसुयं एं सुकडदुक्कडाणं
कम्माणं फलविवागे आघविज्जइ । तत्थ एं दस दुहविवागा,
दस सुहविवागा । से किं तं दुहविवागा ? दुहविवागेसु एं
दुहविवागाणां नगराइं उज्जाणाइं वणसंडाइं चैइयाइं समो-
सरणाइं रायाणो अम्मापियरो धम्मावरिया धम्मकहाओ इह-
लोइयपरलोइया इड्ढिविसेसा निरयगमणाइं, संसारभवप-
वंचा दुहपरंपराओ, दुकुलपच्चायाइओ, दुल्लहवोहियत्तं आघवि-
ज्जइ; से तं दुहविवागा । से किं तं सुहविवागा ? सुहविवागेसु
एं सुहविवागाणं नगराइं, उज्जाणाइं वणसंडाइं चैइयाइं;
समोसरणाइं, रायाणो, अम्मापियरो, धम्मावरिया, धम्म-
कहाओ, इहलोइयपरलोइया इड्ढिविसेसा, भोगपरिच्चागा,
पव्वजाओ, परियागा, सुयपरिगहा, तवोवहाणाइं, संलेहणाओ,
भत्तपच्चक्खाणाइं, पाओवगमणाइं, देवलोगगमणाइं, सुहपरं-
पराओ, सुकुलपच्चायाइओ, पुणवोहिलाभा, अंतकिरियाओ,
आघविज्जंति । विवागसुयस्य एं परित्ता वायणा, संखेज्जा
अणुभोगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ
निज्जुत्तीओ, संखिज्जाओ संगहणीओ, संखिज्जाओ पडिव-
त्तीओ । से एं अंगदुयाए इक्कारसमे अंगे, दो सुयक्खंधा,
वीसं अज्झयणा, वीसं उद्देसणकाला, वीसं समुद्देसणकाला,
संखिज्जाइं पयसहस्साइं पयग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता
गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासय-

कडनिश्चङ्कमिकाइया जिणपणत्ता भावा आघविज्जंति, पन्न-
विज्जंति, परूविज्जंति, दंसिज्जंति निदंसिज्जंति, उवदंसि-
ज्जंति । से एवं आया, एवं नाया, एवं विस्नाया, एवं चरण-
करणपरूवणा आघविज्जइ, से तं विवागसुयं ११ । सू० ॥ ५६ ॥

से किं तं दिट्ठिवाए ? दिट्ठिवाए रां सव्वभावपरूवणा आघ-
विज्जइ, से समासओ पंथविहे पणत्तो, तंजहा—परिकम्मे १
सुत्ताइं २ पुट्ठगण ३ अणुओगे ४ चूलिया ५ ।

से किं तं परिकम्मे ? परिकम्मे सत्तविहे पणत्तो, तंजहा-
सिद्धसेणियापरिकम्मे १ मणुस्ससेणियापरिकम्मे २ पुट्ठसेणिया
परिकम्मे ३ ओगाढसेणियापरिकम्मे ४ उवसंपज्जणसेणियापरि-
कम्मे ५ विप्पजहणसेणियापरिकम्मे ६ चुयाचुयसेणियापरि-
कम्मे ७ । से किं तं सिद्धसेणियापरिकम्मे ? सिद्धसेणियापरि-
कम्मे चउहसविहे पणत्तो, तंजहा—माउगापयाइं १ एगट्ठिय-
पयाइं २ अट्ठपयाइं ३ पाढोआगासपयाइं ४ केउभूयं ५ रासि-
वद्धं ६ एगगुणं ७ दुगुणं ८ तिगुणं ९ केउभूयं १० पडिग्गहो ११
संसारपडिग्गहो १२ नंदावत्तं १३ सिद्धावत्तं १४, से तं सिद्ध-
सेणियापरिकम्मे १ । से किं तं मणुस्ससेणियापरिकम्मे ?
मणुस्ससेणियापरिकम्मे चउहसविहे पणत्तो, तंजहा—माउया-
पयाइं १ एगट्ठियपयाइं २ अट्ठपयाइं ३ पाढोआगासपयाइं ४ केउ
भूयं ५ रासिवद्धं ६ एगगुणं ७ दुगुणं ८ तिगुणं ९ केउभूयं १० पडि-
ग्गहो ११ संसारपडिग्गहो १२ नंदावत्तं १३ मणुस्सावत्तं १४, से तं
मणुस्ससेणियापरिकम्मे २ । से किं तं पुट्ठसेणियापरिकम्मे ? पुट्ठ-
सेणियापरिकम्मे इक्कारसविहे पणत्तो, तंजहा—पाढोआगास-

पयाइं १ केउभूयं २ रासिबद्धं ३ एगगुणं ४ दुगुणं ५ तिगुणं ६ केउभूयं ७ पडिग्गहो ८ संसारपडिग्गहो ९ नंदावत्तं १० पुट्टा-वत्तं ११, से त्तं पुट्टसेणियापरिकम्मे ३ । से किं तं ओगाढसे-
 णियापरिकम्मे ? ओगाढसेणियापरिकम्मे इक्कारसविहे पणत्ते, तंजहा-पाढोआगासपयाइं १ केउभूयं २ रासिबद्धं ३ एगगुणं ४ दुगुणं ५ तिगुणं ६ केउभूयं ७ पडिग्गहो ८ संसारपडिग्गहो ९ नंदावत्तं १० ओगाढावत्तं ११, से त्तं ओगाढसेणियापरिकम्मे ४ ।
 से किं तं उवसंपज्जणसेणियापरिकम्मे ? उवसंपज्जणसेणिया-
 परिकम्मे इक्कारसविहे पणत्ते, तंजहा—पाढोआगासपयाइं १ केउभूयं २ रासिबद्धं ३ एगगुणं ४ दुगुणं ५ तिगुणं ६ केउभूयं ७ पडि-
 ग्गहो ८ संसारपडिग्गहो ९ नंदावत्तं १० उवसंपज्जण-
 वत्तं ११, से त्तं उवसंपज्जणसेणियापरिकम्मे ५ । से किं तं विप्पजहणसेणियापरिकम्मे ? विप्पजहणसेणियापरिकम्मे इक्का-
 रसविहे पणत्ते, तंजहा—पाढोआगासपयाइं १ केउभूयं २ रासिबद्धं ३ एगगुणं ४ दुगुणं ५ तिगुणं ६ केउभूयं ७ पडि-
 ग्गहो ८ संसारपडिग्गहो ९ नंदावत्तं १० विप्पजहणावत्तं ११, से त्तं विप्पजहणसेणियापरिकम्मे ६ । से किं तं चुयाचुयसे-
 णियापरिकम्मे ? चुयाचुयसेणियापरिकम्मे इक्कारसविहे पणत्ते, तंजहा-पाढोआगासपयाइं १ केउभूयं २ रासिबद्धं ३ एगगुणं ४ दुगुणं ५ तिगुणं ६ केउभूयं ७ पडि-
 ग्गहो ८ संसारपडिग्गहो ९ नंदावत्तं १० चुयाचुयवत्तं ११, से त्तं चुयाचुयसेणियापरिकम्मे ७ । छ चउकनइयाइं, सत्त तेरासियाइं, से त्तं परिकम्मे १ ।

से किं तं सुत्ताइं ? सुत्ताइं वावीसं पन्नत्ताइं, तंजहा—
 उज्जुसुयं १ परिणयापरिणयं २ बहुभंगियं ३ विजयचरियं ४ अणंतं ५ परंपरं ६ मासाणं ७ संजूहं ८ संभिरणं ९ आहव्वायं १०

सोवत्थियावत्तं ११ नंदावत्तं १२ बहुलं १३ पुट्टापुट्टं १४ विया-
वत्तं १५ एवंभूयं १६ दुयावत्तं १७ वत्तमाणपयं १८ समभिरूढं
१९ सव्वओभदं २० पस्सासं २१ दुप्पडिग्गहं २२ इच्चेइयाइं
बावीसं सुत्ताइं छिन्नच्छेयनइयाणि ससमयसुत्तपरिवाडीए;
इच्चेइयाइं बावीसं सुत्ताइं अच्छिन्नच्छेयनइयाणि आजीविय-
सुत्तपरिवाडीए; इच्चेइयाइं बावीसं सुत्ताइं तिगणइयाणि
तेरासिय सुत्तपरिवाडिण; इच्चेइयाइं बावीसं सुत्ताइं चउक्कनइ-
याणि ससमयसुत्तपरिवाडीए; एवामेव सपुव्वावरेणं अट्टासीई
सुत्ताइं भवन्ति मक्खायं, से तं सुत्ताइं २ ॥

से किं तं पुव्वगए ? पुव्वगए चउदहसविहे पणत्ते, तंजहा-
उप्पायपुव्वं १ अग्गाणीयं २ वीरियं ३ अत्थिनत्थिप्पवायं ४
नाणप्पवायं ५ सच्चप्पवायं ६ आयप्पवायं ७ कम्मप्पवायं ८
पच्चक्खाणप्पवायं ९ विज्जाणुप्पवायं १० अवंझं ११ पाणाऊ १५
किरियाविसालं १३ लोकविदुसारं १४ । उप्पायपुव्वस्स रां दंस
वत्थू, चत्तारि चूलियावत्थू पणत्ता । अग्गाणीयपुव्वस्स णं
चोदस वत्थू; दुवालस चूलियावत्थू पणत्ता । वीरियपुव्वस्स
णं अट्ठ वत्थू अट्ठ चूलियावत्थू पणत्ता । अत्थिनत्थिप्पवाय-
पुव्वस्स रां अट्ठारस वत्थू दस चूलियावत्थू पणत्ता । नाण-
प्पवायपुव्वस्स णं बारस वत्थू पणत्ता । सच्चप्पवायपुव्वस्स
णं दोण्णि वत्थू पणत्ता । आयप्पवायपुव्वस्स णं सोलस वत्थू
पणत्ता । कम्मप्पवायपुव्वस्स णं तीसं वत्थू पणत्ता । पच्च-
क्खाणपुव्वस्स णं वीसं वत्थू पणत्ता । विज्जाणुप्पवायपुव्वस्स
णं पन्नरस वत्थू पणत्ता । अवंझपुव्वस्स णं बासस वत्थू
पणत्ता । पाणाउपुव्वस्स णं तेरस वत्थू पणत्ता । किरि-

याविसाल पुव्वस्स रां तीसं वत्थू पणत्ता । लोकविंदुसार-
पुव्वस्स रां पणुवीसं वत्थू पणत्ता, गाहा—

दस १ चोदस २ अट्ठ ३ ऽट्ठारसेव ४ बारस ५ दुवे ६ य
वत्थूणि । सोलस ७ तीस ८ वीसा ९ पन्नरस १० अणुप्पवा-
यम्मि ॥ ३५ ॥

बारस इकारसमे, बारसमे तेरसेव वत्थूणि । तीसा पुस
तेरसमे, चोदसमे पणविसाओ ॥ ३६ ॥

चत्तारि १ दुवालस २ अट्ठ ३ चेव दस ४ चेव चुल्लवत्थूणि।
आइल्लाण चउएहं, सेसाणं चूलिया नत्थि ॥ ३७ ॥

से त्तं पुव्वगए ।

से किं तं अणुओगे ? अणुओगे दुविहे पणत्ते, तंजहा-मूलपढ-
माणुओगे; गंडि माणुओगे य । से किं तं मूलपढमाणुओगे ? मूल-
पढमाणुओगे णं अरहंताणं भगवंताणं पुव्वभवा, देवलोग-
गमणाइं, आउं, चवणाइं; जम्मणाणि, अभिसेया रायवरसिरीओ
पव्वज्जाओ, तवा य उग्गा, केवलनाणुप्पयाओ, तित्थपवत्ताणि
य, सीसा, गणा, गणहरा, अज्जा पवत्तिणीओ संघस्स चउ-
विहस्स जं च परिमाणं, जिणमणपज्जवओहिनाणी, सम्मत्त-
सुयनाणिणो य, वाई, अणुत्तरगईय, उत्तरवेउव्विणो य मुणिणो,
जत्तिया सिद्धा, सिद्धिपहो जह देसिओ, जच्चिरं च काळं,
पाओवगया जे जहिं जत्तियाइं भत्ताइं (अणसणाए) छेइत्ता
अंतगडे, मुणिवरुत्तमे, तिमिरओघविप्पमुक्के मुक्खसुहमणुत्तरं
च पत्ते, एवमन्ने य एवमाइभावा मूलपढमाणुओगे कहिया,
से त्तं मूलपढमाणुओगे । से किं तं गंडियाणुओगे ? गंडियाणु-
ओगे कुलगरगंडियाओ, तित्थयरगंडियाओ, चक्रवट्ठिगंडि-

याओ, दसारगंडियाओ, बलदेवगंडियाओ, वासुदेवगंडियाओ
गणधरगंडियाओ, भद्रबाहुगंडियाओ, तवोकम्मगंडियाओ,
हरिवंसगंडियाओ, उस्सप्पिणीगंडियाओ, ओसप्पिणीगंडि-
याओ, चित्तंतरगंडियाओ, अमरनरतिरियनिरयगइगमणविवि-
हपरियट्टणेसु एवमाइयाओ गंडियाओ आघविज्जंति पण-
विज्जंति से तं गंडियाणुओगे, से तं अणुओगे ४ ॥

से किं तं चूलियाओ ? आइल्लाणं चउएहं पुव्वाणं चूलिअ,
सेसाइं पुव्वाइं अचूलियाइं, से तं चूलियाओ ।

दिट्ठिवायस्स रां परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा,
संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा संखेज्जाओ पडिवत्तीओ संखि-
ज्जाओ निज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ, से रां अंगट्टयाए
बारसमे अंगे, एगे सुयक्खंधे, चोदस पुव्वाइं, संखेज्जा वत्थू,
संखेज्जा चूलवत्थू, संखेज्जा पाहुडा, संखेज्जापाहुडपाहुडा,
संखेज्जाओ पाहुडियाओ, संखेज्जाओ पाहुडपाहुडियाओ, संखे-
ज्जाइं पयसहस्साइं पयग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा,
अणंता पज्जवा, परित्ता तसा अणंता थावरा, सासयकडनि-
बद्धनिकाइया जिणपन्नत्ता भावा आघविज्जंति, पणविज्जंति,
परुविज्जंति दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उषदंसिज्जंति । से
एवं आया, एवं नाया एवं विण्णया, एवं चरणकरणपरुवणा
आघविज्जंति, से तं दिट्ठिवाए १२ ॥ सू० ॥ ५७ ॥

इच्चैइयंमि दुवालसंगे गणिपिडगे अणंता भावा अणंता
अभावा, अणंता हेऊ, अणंता अहेऊ, अणंता कारणा, अणंता
अकारणा, अणंता जीवा, अणंता अजीवा अणंता भवसिद्धिया
अणंता अभवसिद्धिया अणंता सिद्धा, अणंता असिद्धा
पणत्ता—

भावमभावा हेऊमहेऊ कारणमकारणे चेवे ।

जीवाजीवा भवियमभविया सिद्धा असिद्धा य ॥ ३८ ॥

इच्छेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं तीए काले अणंता जीवा
आणाए विराहिता चाउरंतं संसारकंतरं अणुपरियट्टिसु ।
इच्छेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं पटुपणकाले परित्ता जीवा
आणाए विराहिता चाउरंतं संसारकंतरं अणुपरियट्टंति ।
इच्छेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं अणागए काले अणंता जीवा
आणाए विराहिता चाउरंतं संसारकंतरं अणुपरियट्टिस्संति ।

इच्छेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं तीए काले अणंता जीवा
आणाए आराहिता चाउरंतं संसारकंतरं वीईवइंसु । इच्छेइयं
दुवालसंगं गणिपिडगं पटुपणकाले परित्ता जीवा आणाए
आराहिता चाउरंतं संसारकंतरं वीईवयंति । इच्छेइयं दुवालसंगं
गणिपिडगं अणागए काले अणंता जीवा आणाए आराहिता
चाउरंतं संसारकंतरं वीईवइस्संति ।

इच्छेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं न कयाइ नासी, न कयाइ
न भवइ, न कयाइ न भविस्सइ, भुविं च, भवइ य, भविस्सइ
य, धुवे, नियए, सासए, अक्खए अव्वए, अवट्ठिए, निच्चे ।
से जहानामए पंचत्थिकाए न कयाइ नासी न कयाइ नत्थि, न
कयाइ न भविस्सइ, भुविं च, भवइ य, भविस्सइ य, धुवे, नियए
सासए, अक्खए, अव्वए, अवट्ठिए, निच्चे, एवामेव दुवालसंगं
गणिपिडगं न कयाइ नासी, न कयाइ नत्थि, न कयाइ न भवि-
स्सइ, भुविं च, भवइ य, भविस्सइ य, धुवे, नियए, सासए,
अक्खए, अव्वए, अवट्ठिए, निच्चे ।

से समासओ चउट्ठिहे पणत्ते, तंजहा-दव्वओ खित्तओ,

कालओ, भावओ, । तत्थ दव्वओ णं सुयनाणी उवउत्ते सव्व-
दव्वाइं जाणइ पासइ, खित्तओ णं सुयनाणी उवउत्ते सव्वं
खेतं जाणइ पासइ, खित्तओ णं सुयनाणी उवउत्ते सव्वं
कालं जाणइ पासइ, भावओ णं सुयनाणी उवउत्ते सव्वे भावे
जाणइ पासइ, ॥ सू० ५८ ॥

अकखर सन्नी सम्मं, साइयं खलु सपज्जवसियं च ।

गमियं अंगपविट्ठं, सत्तवि एए सपडिवक्खा ॥ ३६ ॥

आगमसत्थग्गहरां, जं बुद्धिगुणेहिं अट्ठहिं दिट्ठं ।

बिंत्ति सुयनाणलंभं, तं पुव्वविसारया धीरा ॥ ४० ॥

सुस्सूसइ पडिपुच्छइ सुणेइ गिरइइ य ईहए यावि ।

तत्तो अपोहए वा धारेइ करेइ वा सम्मं ॥ ४१ ॥

मूअं हुंकारं वा, वाढक्कारं पडिपुच्छवीमंसा ।

तत्तो पसंगपारायणां च परिणिट्ठ सत्तमए ॥ ४२ ॥

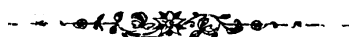
सुत्तत्थो खलु पढमो, बीओ निज्जुत्तिमीसिओ भणिओ ।

तइओ य निरवसेसो, एस विही होइ अणुओगे ॥ ४३ ॥

से तं अंगपविट्ठं, से तं सुयनाणां, से तं परोक्खनाणां, से
तं नंदी ॥ नंदी समत्ता ॥



श्री अनुत्तरोववाइयदशांग सूत्रम्



तेरां कालेरां, तेरां समपरां, रायगिहेणामंणयरे होत्था,
सेणियनामंराया होत्था, चेलणा देवीए गुणसिलए चेइए
वरणओ ॥ १ ॥

तेरां कालेरां तेरां समपरां रायगिहे नयरे, अज्ज-सुहम्मस्स
समोसररां, परिता णिग्गया धम्मकहिओ परिता पडिग्गया ॥ २ ॥

जंबू जाव पज्जुवासइ एवं वयासी-जइ रां भन्ते ! समणेरां
जाव संपत्तेरां अट्टमस्स अंगस्स अंतगडदसां अयमट्ठे पएणत्ते;
नवमस्स रां भन्ते ! अंगस्स अणुत्तरोववाइयदसां समणेरां
जाव संपत्तेरां के अट्ठे पएणत्ते ? ॥ ३ ॥

तएरां से सुहम्मे अणगारे, जम्बू अणगारं एवं वयासी-एवं
खलु जम्बू ! समणेरां जाव संपत्तेरां नवमस्स अंगस्स अणु-
त्तरोववाइयदसां तिण्णि वग्गा पएणत्ता ॥ ४ ॥

जइ रां भन्ते ! समणेरां जाव संपत्तेरां नवमस्स अंगस्स
अणुत्तरोववाइयदसां तओ वग्गा पएणत्ता, पढमस्स रां
भन्ते ! वग्गस्स अणुत्तरोववाइयदसां समणेरां जाव संप-
त्तेरां कइ अज्झयणा पएणत्ता ? ॥ ५ ॥

एवं खलु जम्बू ! समणेरां जाव संपत्तेरां अणुत्तरोववाइय-

दसाणां पढमस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पणत्ता तं जहा—
जालि, मयालि, उवयालि । पुरिससेणे य, वारिसेणे य, ।
दीहदंते य, लट्ठदंते य, वेहल्ले, वेहायसे, अभये—ति कुमारे ॥१॥६॥

जइ णां भन्ते ! समणेणां जाव संपत्तेणां अणुत्तरोववाइय-
दसाणां पढमस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पणत्ता, पढमस्स
णां भन्ते ! अज्झयणस्स समणेणां जाव संपत्तेणां के अट्ठे पणत्ते ?
॥ ७ ॥

एवं खलु जम्बू ! तेणां कालेणां तेणां समणां रायणिहे नयरे
रिद्धित्थिमिय-समिद्धे, गुणसिलए चेइए सेणिए राया, धारिणी
देवी, सीहसुमिणां पासित्ताणां पडिबुद्धा जाव जालि कुमारे जाए,
जहा मेहो जाव अट्ठट्ठओ दाओ, जाव उप्पि पासाय जाव
विहरइ ॥ ८ ॥

तेणां कालेणां तेणां समणां समणे भगवं महावीरे जाव
समोसढे सेणिओ शिग्गओ, जहा मेहो तहा जाली वि शिग्गओ,
तहेव णिक्खन्तो, जहा मेहो, एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ ॥ ९ ॥

तएणां से जाली अणगारे जेणेव समणे भगवं महावीरे
तेणेव उवागच्छइ २ त्ता समणां भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ २
त्ता एवं वयासी-इच्छामि णां भन्ते ! तुब्भेहिं अब्भणुणाय
समाणे गुण-रयण संवच्छरं तवो कम्म उवसंपज्जित्ताणां विह-
रित्तए ? अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबन्ध करेह ॥ १० ॥

तएणां से जाली अणगारे समणेणां भगवया महावीरेण
अणुणाय समणे समणां भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ २
त्ता गुणरयणां संवच्छरं तवो कम्म उवसंपज्जित्ताणां विह-
रइ । तंजह—

१ षष्ठं मासं चउत्थं चउत्थेणं अनिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं दियट्ठाणुक्कडुणं सूराभिमुहे आयावणभूमिणं आयावेमाणे रत्तिं वीरासणेणं अवाउडेणय ।

२ दोच्चं मासं छट्ठं छट्ठेणं अनिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं दियट्ठाणुक्कडुणं सूराभिमुहे आयावण भूमिणं आयावेमाणे, रत्तिं वीरासणेणं अवाउडेणय ।

३ तच्चं मासं अट्ठमं अट्ठमेणं अनिक्खित्तेणं तवो कम्मेणं दियट्ठाणुक्कडुणं सूराभिमुहे, आयावणभूमिणं आयावेमाणे, रत्तिं वीरासणेणं अवाउडेणय ।

४ चउत्थं मासं दसमं दसमेणं अनिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं दियट्ठाणुक्कडुणं सूराभिमुहे आयावणभूमिणं आयावेमाणे रत्तिं वीरासणेणं अवाउडेणय ।

५ पंचमं मासं बारसमं बारसमेणं अनिक्खित्तेणं तवो-
कम्मेणं दियट्ठाणुक्कडुणं सूराभिमुहे आयावणभूमिणं आयावे-
माणे रत्तिं वीरासणेणं अवाउडेणय ।

६ छट्ठं मासं चउदसं चउदसमेणं अनिक्खित्तेणं तवो-
कम्मेणं दियट्ठाणुक्कडुणं सूराभिमुहे आयावणभूमिणं आयावे
माणे रत्तिं वीरासणेणं अवाउडेणय ।

७ सत्तमं मासं सोलसमं सोलसमेणं अनिक्खित्तेणं तवो-
कम्मेणं दियट्ठाणुक्कडुणं सूराभिमुहे आयावणभूमिणं आयावेमाणे
रत्तिं वीरासणेणं अवाउडेणय ।

८ अट्ठमं मासं अट्ठारसमं अट्ठारसमेणं अनिक्खित्तेणं तवो

कम्मेणां दियट्ठाणुक्कडुण सूराभिमुहे आयावणभूमिण आयावेमाणे, रत्तिं वीरासणेणां अवाउडेणय ।

६ णवमं मासं विसइमं वीसइमेणां अनिक्खित्तेणां तवोकम्मेणां दियट्ठाणुक्कडुण सूराभिमुहे आयावणभूमिण आयावेमाणे रत्तिं वीरासणेणां अवाउडेणय ।

१० दसमं मासं बावीसाण बावीसइमेणां अनिक्खित्तेणां दियट्ठाणुक्कडुण सूराभिमुहे आयावणभूमिण आयावेमाणे रत्तिं वीरासणेणां अवाउडेणय ।

११ एकास्समं मासं चउवीसाण चउवीसइमेणां अणिक्खित्तेणां तवोकम्मेणां दियट्ठाणुक्कडुण सूराभिमुहे आयावणभूमिण आयावेमाणे रत्तिं वीरासणेणां अवाउडेणय ।

१२ बारसमं मासं छुव्वीसाण छुव्वीसइमेणां अनिक्खित्तेणां तवोकम्मेणां दियट्ठाणुक्कडुण सूराभिमुहे आयावणभूमिण आयावेमाणे रत्तिं वीरासणेणां अवाउडेणय ।

१३ तेरसमं मासं अट्ठावीसाण अट्ठावीसइमेणां अनिक्खित्तेणां तवोकम्मेणां दियट्ठाणुक्कडुण सूराभिमुहे आयावणभूमिण आयावेमाणे रत्तिं वीरासणेणां अवाउडेणय ।

१४ चउदसमं मासं तीसइमं तीसइमेणां अनिक्खित्तेणां तवोकम्मेणां दियट्ठाणुक्कडुण सूराभिमुहे आयावणभूमिण आयावेमाणे रत्तिं वीरासणेणां अवाउडेणय ।

१५ पन्नरसमं मासं वत्तीसइमं वत्तीसइमेणां अनिक्खित्तेणां तवोकम्मेणां दियट्ठाणुक्कडुण सूराभिमुहे आयावणभूमिण आयावेमाणे रत्तिं वीरासणेणां अवाउडेणय ।

वेमाणे रत्तिं वीरासणेणं अवाउडेणय ।

१६ सोलमं मासं चोत्तीसइमं चोत्तीसइमेणं तवोकम्मोणं
दियट्ठाणुकडुण सूरामिमुहे आयावणभूमिण आयावेमाणे रत्तिं
वीरासणेणं अवाउडेणय ॥ ११ ॥

तए णं से जालि अणगारे गुणरयणं संवच्छरं तवोकम्मं
आहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं समकाएणं फासित्ता
पालित्ता सोहित्ता तिरित्ता किट्ठित्ता आणए आगहित्ता जेणेव
समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता समणं भगवं
महावीरं वंदइ नमंसइ वंदइत्ता नमंसइत्ता वडूहिं चउत्थछट्ठ
अट्ठमदसमदुवालसेहिं मासेहिं अद्धमासखमणेहिं विचित्तेहिं
तवोकम्मोहिं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥ १२ ॥

तए णं से जाली अणगारे तेणं उरालेणं विउलेणं पयत्तेणं
पग्गहिणं एवं जा चेव जहा खंदगस्स वत्तव्वया सा चेव
चिन्तणा, आपुच्छणा थेरेहिं सद्धिं विपुलं तहेव दुरूहति, णवरं
सोलस वासाइं सामणपेरियाणं पाउणिता कालमासे कालं
किच्चा उइढं चंदिमसोहम्मीसाण जाव आरणच्चुए कप्पे नव
य गेवेज्जे विमाणपत्थडे उइढं दूरं वीतीवत्तिता विजयविमाणे
देवत्ताए उववणणे ॥ १३ ॥

तए णं ते थेरा भगवंतो जालिं अणगारं कालगयं जाणिता
परिनिव्वाणवत्तियं काउसग्गं करेति, पत्तचीवराइं गिरहंति
तहेव उत्तरंति जाव इमे से आयारभंडए ॥ १४ ॥

अंतेत्ति ! भगवं गोयमे जाव एवं वयासी—एवं खलु देवा-
णुणियाणं अंतेवासी जाली नामं अणगारे पगइभट्टए, से णं

जाली अणुगारे कालगए कहिं गए, कहिं उववण्णे ? । एवं खलु गोयमा ! मम अंतेवासी तहेव जहा खंदयस्स जाव कालगए उड्ढं चंदिमाइ जाव विजए विमाणे देवत्ताए उववण्णे ॥ १५ ॥

जालिस्स णं भन्ते ! देवस्स केवइयं कालं ठिई पणत्ता ? गोयमा ! वत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पणत्ता ॥ १६ ॥

से णं भंते ! ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिईक्खएणं कहिं गच्छिहिइ कहिं उववज्जहिइ ? । गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ जाव सव्वदुक्खाणमंतं करि—स्सइ ॥ १७ ॥

एवं खलु जम्बू ! समणेणं जाय संपत्तेणं अणुत्तरोववाइय-दसाणं पढमस्स वग्गस्स पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पणत्ते ।

एवं सेसाणवि अट्ठएहं भाणियव्वं । नवरं छु धारिणि-सुआ वेहल्लवेहायसा चेल्लणाए । अभयस्स नालत्तं—रायणिहे नगरे, सेणिए राया, नंदा देवी माया, सेसे तहेव । आइल्लाणं पंचएहं सोलस वासाइं सामणएपरियाओ, तिरहं बारस-वासाइं, दोएहं पंच वासाइं । आइल्लाणं पंचएहं अणुपुव्वीए उववाओ; विजए विजयंते जयंते अपराजिए सव्वट्ठसिद्धे । दीहदंते सव्वट्ठसिद्धे, अणुक्कमेणं सेसा । अभओ विजये । सेसं जहा पढमे ।

एवं खलु जम्बू ! समणेणं जाव संपत्तेणं अणुत्तरोववाइय-दसाणं पढमस्स वग्गस्स अयमट्ठे पणत्ते ।

॥ इति पढमस्स वग्गस्स दस अज्झयणा समत्ता ॥

॥ द्वितीय-वर्ग ॥

जइ रां भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं अणुत्तरोववाइय-
दसाणं पढमस्स वग्गस्स अयमट्ठे पणत्ते, दोच्चस्स रां भंते !
वग्गस्स अणुत्तरोववाइयदसाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के
अट्ठे पणत्ते ? ॥ १ ॥

एवं खलु जम्बू ! समणेणं जाव संपत्तेणं अणुत्तरोववाइ-
यदसाणं दोच्चस्स वग्गस्स तेरस अज्झयणा पणत्ता ? तंजहा-

दीहसेणे, महासेणे, लट्ठदंते य, गुढदंते य, ।

सुद्धदंते य, हल्ले, दुमे, दुमसेणे, महादुमसेणे य आहिण ॥ १ ॥

सीहे य, सीहसेणे य, महासीहसेणे य आहिण ।

पुन्नसेणे य बोधव्वे, तेरसमे हांति अज्झयणे ॥ २ ॥

जइ रां भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं अणुत्तरोववाइय-
दसाणं दोच्चस्स वग्गस्स तेरस अज्झयणा पणत्ता, दोच्चस्स
रां भंते ! वग्गस्स पढमस्स अज्झयणस्स समणेणं जाव संप-
त्तेणं के अट्ठे पणत्ते ?

एवं खलु जम्बू ! तेणं कालेणं तेणं समणं रायगिहे णयरे,
गुणसिलण चेइए, सेणिण राया, धारिणी देवी, सीहो सुमिणे
जहा जाली तहा जम्मं, बालत्तणं कलाओ, णवरं दीहसेणे
कुमारे सव्वे वत्ताव्वया, जहा-जालिस्स जाव अंतं काहिति ॥ १ ॥

एवं तेरसवि, रायगिहे नयरे, सेणिओ पिया, धारिणी माया
तेरसण्हवि सोलसवासाए परियायं मासियाए संलेहणाए आणु
पुव्वीए उववाओ विजए दोन्नि, विजयंते दोन्नि, जयंते दोन्नि,
अपराजिते दोन्नि, सेसा महादुमसेणमाइए पंच सव्वट्ठसिद्धे ॥ २ ॥

एवं खलु जम्बू ! समणेणं जाव संपत्तेणं अणुत्तरोववाइय-
दसाणं दोच्चस्स वग्गस्स अयमट्ठे परणत्ते, मासियाण संलेह-
णाण दोसुवि वग्गेसु ॥ त्ति वेमि ॥

॥ वीओ वग्गो समत्तो ॥

॥ तृतीय-वर्ग ॥

जइ णं भन्ते ! समणेणं जाव संपत्तेणं अणुत्तरोववाइय-
दसाणं दोच्चस्स वग्गस्स अयमट्ठे परणत्ते; तच्चस्स णं भन्ते !
वग्गस्स अणुत्तरोववाइयदसाणं समणेणं जाव संपत्तेणं कै
अट्ठे परणत्ते ? ॥ १ ॥

एवं खलु जम्बू ! समणेणं जाव संपत्तेणं अणुत्तरोववाइय-
दसाणं तच्चस्स वग्गस्स दस अज्झयणा परणत्ता तंजहा—

धरणे य, सुनक्खत्ते य, इसिदासे य, आहिते ।

पेत्तण, रामपुत्ते य, चन्दिमा, पिट्ठिमाइ य ॥ १ ॥

पेढालपुत्ते अणगारे, नवमे पोट्टिले इ य ।

वेहल्ले, दसमे वुत्ते, इमे य दस आहिया ॥ २ ॥

जइ णं भन्ते ! समणेणं जाव संपत्तेणं अणुत्तरोववाइय-
दसाणं तच्चस्स वग्गस्स दस अज्झयणा परणत्ता, पढमस्स
णं भन्ते ! अज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेणं कै अट्ठे परणत्ते ?
॥ ३ ॥

एवं खलु जम्बू ! तेणं कालेणं तेणं समणं काकन्दी नामं
नयरी होत्था, रिद्धित्थिमियसमिद्धा, सहस्संबवणे उज्जाणे
सव्वोउयपुप्फफलसमिद्धे जाव पासाइए, जियसत्तू राया ॥ ४ ॥

तत्थ णं काकन्दीए नयरीए भद्दा णामं सत्थवाही परिवसइ,
अह्हा जाव अपरिभूया ॥ ५ ॥

तीसे णं भद्दए सत्थवाहीए पुत्ते धेत्त नमं दाए होत्था
अहीण जाव सुरूवे, पंचधाई-परिग्गहिए, तंजहा—खीरधाइए
जहा महव्वलो जाव वावत्तरिं कलाओ अहिण जाव अलं भोग-
समत्थे जाए यावि होत्था ॥ ६ ॥

तए णं सा भद्दा सत्थवाही धरणदारयं उम्मुक्कवालभावं
जाव भोगसमत्थं जाणित्ता, वत्तीसं पासायवडिंसए करेइ
अब्भुग्गयमूसिए जाव तेसिं मज्झे अरोग-भवरण--खंभ-सय-
सन्निविट्ठं जाव वत्तीसाए इब्भवरकन्नगाणं एगदिवसे णं पाणि-
गिणहावेइ २ त्ता वत्तीसाओ दाओ जाव उट्ठि पासायवडि-
सए फुट्ठंतेहिं मुइंगमत्थएहिं जाव विहरइ ॥ ७ ॥

तेणं काळेणं तेणं समणं समणे भगवं महावीरे समो-
सहे, परिसा निग्गया, जहा कोणिओ तहा जियसत्तू
णिग्गओ ॥ ८ ॥

तए णं तस्स धरणस्स तं महया जणसइं जहा जमाली
तहा णिग्गओ, णवरं पायचारेणं जाव जं णवरं अम्मयं भइं
सत्थवाहिं आपुच्छामि, तए णं अहं देवाणुप्पियाणं अंतिए
जाव पव्वयामि, जाव जहा जमाली तहा आपुच्छइ, मुच्छिया,
वुत्तपडिवुत्तया, जहा महव्वले जाव जाहे नो संचाइया,
जहा थावच्चापुत्ते तहा जियसत्तू आपुच्छइ, छत-चामराओ,
सयमेव जियसत्तू निक्खमणं करेइ; जहा थावच्चापुत्तस्स
कण्हो, जाव पव्वइए, अणगारे जाए, ईरियासमिए जावगुत्त-
वंभयारी ॥ ९ ॥

तएणं से धरणे अणगारे, जं चेव दिवसं मुंडे भवित्ता जाव पव्वइए तं चेव दिवसं समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी-एवं खलु इच्छामि णं भन्ते ! तुम्हेहिं अब्भणुण्णाए समाणे जावज्जीवाए छट्ठं-छट्ठेणं अणिक्खित्तेणं आयंबिल-परिग्गहिणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरित्तए, छट्ठस्सवि य णं पारणंगंसि कप्पइ मे आयंबिलं पडिग्गहित्तए, णो चेव णं अणायंबिलं, तंपि य संसट्ठेणं णो चेव णं असंसट्ठेणं, तं पि य णं उज्झिय-धम्मयं णो चेव णं अणुज्झियधम्मियं, तंपि य णं जं अन्नबहवे समणमाहण-अतिहि-क्खिण-वणिमगा णावकंखंति । अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंघं करेह ॥ १० ॥

तएणं से धरणे अणगारे समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णायसमाणे हट्ठ-तुट्ठ जावज्जीवाए छट्ठं-छट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥ ११ ॥

तएणं से धरणे अणगारे पढम-छट्ठखमणं-पारणयंसि पढ-माणे पोरिसीए सज्झायं करेति जहा गोयमस्वामी तहेव आपु-च्छति जाव जेणेव काकंदी णयरी तेणेव उवागच्छइ २ ता काकंदीए नयरीए उच्चनीय जाव अडमाणे आयंबिलं जाव नावकंखंति ॥ १२ ॥

तए णं से धरणे अणगारे ताए आभुज्जताए पयत्ताए पग्ग-हियाए एसणाए एसमाणे जइ भत्तं लभइ तो पाणं ण लभइ, अह पाणं लभइ तो भत्तं ण लभइ ॥ १३ ॥

तए णं धेन्न अणगारे अदीणे अविमणे अकलुसे अविसादी अपरितंतजोगी जयणघडण-जोग-चरित्ते अहापज्जत्तं समुदाणं

पडिगाहेइ २ ता काकंदीओ रायरीओ पडिणिक्खमइ २ ता जहा गोयमे तहा पडिदंसेइ ॥ १३ ॥

तए रां से धरणे अणगारे, समणरां भगवया महावीरेण अब्भणुरणाए समाणे अमुच्छिण जाव अणज्जेववन्ने बिलमिव पण्णगभूणरां अप्पाणरां आहारं आहारेइ २ ता, संजमेण तवसा अप्पाणं-भावेमाणेविहरइ ॥ १४ ॥

तए रां समणे भगवं महावीरे अणया कयाइ काकंदीओ रायरीओ सहस्संबवणाओ उज्जाणाओ पडिणिक्खमइ २ ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥ १५ ॥

तए रां से धरणे अणगारे समणस्स भगवन्नो महावीरस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिणं सामाइयमाइयइ एकारस अंगाइं अहिज्जति २ ता संजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥ १७ ॥

तए रां से धरणे अणगारे तेरां ओरालेणं जहा खंदओ जाव सुहुयहुयासणे इव तेयसा जलंते उवसोमेमाणे चिट्ठति ॥ १८ ॥

धन्नस्स रां अणगारस्स पायाणं अयमेयारूवे तवरूव-लावणणे होत्था से जहानामए सुक्खल्लीडि वा, कट्टपाउयाइ वा, जरग्गओवाहणाइ वा, एवामेव धन्नस्स अणगारस्स पाया सुक्का भुक्खा लुक्खा निमंसा अट्ठिचम्मछिरत्ताए पन्नायंति, नो चेव रां मंससोणियत्ताए ॥ १९ ॥

धन्नस्स रां अणगारस्स पयंगुलियाणं अयमेयारूवे तवरूवलावणणे होत्था से जहानामए कलसंगलियाइ वा मुग्गमाससंगलियाइ वा, तरुणिया छिण्णा उण्हे दिण्णा सुक्का समाणी मिलायमाणी मिलायमाणी चिट्ठति, एवामेव धन्नस्स

पायंगुलियाओ सुक्काओ जाव णो मंससोणियत्ताए ॥ २० ॥

धन्नस्स अणगारस्स जंघाणं अयमेयारूवे-से जहानामए कंकजंघाइ वा, काकजंघाइ वा, ढेणियालियाजंघाइ वा, एवं जाव सोणियत्ताए ॥ २१ ॥

धन्नस्स णं जाणूणं अयमेयारूवे से जहानामए-कालिपोरेइ वा, मयूरपोरेइ वा, ढेणियालियापोरेइ वा, एवं जाव सोणियत्ताए ॥ २२ ॥

धन्नस्सणं उरूणं-जहा नामए सामकरिल्लेइ वा, बोरिकरिल्लेइ वा, सल्लइयरिल्लेइ वा, सामलिकरिल्लेइ वा, तहणिया छिन्ना उरहे दिरण्णा जाव चिट्ठइ, एवामेव धन्नस्स उरूणं जाव सोणियत्ताए ॥ २३ ॥

धन्नस्स णं कडिपत्तस्स इमेयारूवे, से जहा नामए उंट्टपाणइ, वा, जरग्गपाणइ वा, महिसपाणइ वा जाव णो सोणियत्ताए ॥ २४ ॥

धन्नस्स णं उदरभायणस्स अयमेयारूवे से जहा नामए-सुक्कदिण इवा, भज्जणय कभल्ल इवा, कट्टकोलंबणइवा, एवामेव उदरसुक्कं ॥ २५ ॥

धन्नस्स णं पांसुलियाकड्याणं अयमेयारूवे से जहा नामए-थासयावलीइ वा, पाणावलीइ वा, मुंडावलीइ वा, एवामेव ॥ २६ ॥

धन्नस्स पिट्टकरंडगाणं अयमेयारूवे से जहा नामए-कल्लवल्लीइ वा, गोलावलीइ वा, वट्ठावलीइ वा, एवामेव ॥ २७ ॥

धणस्स उरकडयस्स अयमेयारूवे से जहा नामए-चित्तकट्टरेइ वा, वियणपत्तेइ वा, तालियंटपत्तेइ वा, एवामेव ॥ २८ ॥

धन्नस्स बाहाराणं से जहा नामए-समिसंगलियाइ वा पहाया संगलियाइ वा, अगत्थियसंगलियाइ वा; एवामेव० ॥ २६ ॥

धरणस्स हत्थाराणं अयमेयारूवे से जहा नामए-सुक्क-छग-णियाइ वा; वडपत्तेइ वा, पलासपत्तेइ वा एवामेव० ॥ २७ ॥

धरणस्स हत्थंगुलियाणं से जहा नामए-कलसंगलियाइ वा, मुग्ग-माससंगलियाइ वा, तरुणिया छिन्ना आयवे दिरण्णा सुक्का समाणी एवामेव० ॥ २८ ॥

धन्नस्स गीवाए से जहा नामए-करगगीवाइ वा, कुंडिया-गीवाइ वा, [कोत्थवणाइ वा] उच्चट्टवणएइ वा एवामेव० ॥ २९ ॥

धन्नस्स रां हणुयाए से जहा नामए-लाउफलेइ वा, हकु-वफलेइ वा अंगगट्टियाइ वा एवामेव० ॥ ३० ॥

धन्नस्स रां उट्ठाराणं से जहा नामए-सुक्कजलोयाइ वा, सिले-सगुलियाइ वा, अलत्तगुलियाइ वा, [अंबाडगपेसीयाइ वा] एवामेव० ॥ ३१ ॥

धन्नस्स जिम्भाए से जहा नामए वडपत्तेइ वा, पलास-पत्तेइ वा [उवरपत्तेइ वा] सागपत्तेइ वा एवामेव० ॥ ३२ ॥

धन्नस्स नासाए से जहा नामए-अंगग-पेसियाइ वा, अंबा-डगपेसियाइ वा, माउलिंगपेसियाइ वा, तरुणियाइ वा, एवा-मेव० ॥ ३३ ॥

धरणस्स अक्कीराणं से जहा नामए-वीणाछिडेइ वा वज्जी-सगछिडेइ वा, पाभाइयतारगाइ वा, एवामेव० ॥ ३४ ॥

धन्नस्स कन्नाणां, से जहा नामए मूलाळ्ळियाइ वा, वालुं-
कळ्ळियाइ वा, कारेल्लयळ्ळियाइ वा, एवामेव० ॥ ३८ ॥

धन्नस्स णं अणगारस्स सीसस्स अयमेवारुवे से जहानामए
तरुणगलाउएइ वा, तरुणगएलालुएइ वा, सिणहालएइ वा,
तरुणएजाव चिट्ठति एवामेव धन्नस्स अणगारस्स सीसं सुक्कं-
भुक्खं-लुक्खं-निम्मंसं अट्ठिचम्मछिरत्ताए पन्नायइ नो चेव णं
मंस-सोणियत्ताए ॥ ३९ ॥

एवं सव्वत्थमेव नवरं उदर--भायणं, कन्ना, जीहा, उट्ठा,
एएसिं अट्ठी न भएणइ, चम्मछिरत्ताए पन्नायंति इति
भएंति ॥ ४० ॥

धन्ने णं अणगारे सुक्केणं भुक्खेणं पायजंघोरुणा विगत--
तडिकरालेणं कडिकडाहेणं पिट्टमवस्सिएणं उदरभायणेणं
जोइज्जमाणेहिं पासुलियकडाएहिं अक्खसुसमालाइ वा मणि-
ज्जमाणेहिं पिट्टिकरंडगसंधीहिं गंगातरंग-भूएणं, उरकडाम
देसभाएणं सुक्क-सप्पसमाणेहिं बाहाहिं सिढिल-कडाली विव
लंबंतेहि य अग्गहत्थेहिं कण्णवाइए विव वेवमाणीए सीसघडीए
एव्वादवदन-कमले उब्भडघडमुहे उब्बुडुनयणकोसे ॥ ४१ ॥

जीवं जीवेणं गच्छइ, जीवं जीवेणं चिट्ठइ भासं भासिइसा-
मिच्छि गिलायइ से जहा नामए इंगालसगडियाइ वा, जहा
खंदओ तहा हुयासणे इव भास-रासिपल्लिच्छे, तवेणं तेएणां
तवतेयसिरीए उवसोमेमाणे चिट्ठइ ॥ ४२ ॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं रायणिहे णयरे, गुणसिलए चेइए;
सेणिए राया । समणे भगवं महावीरे समोसढे परिसा णिग्गया
सेणिओ णिग्गओ, धम्मकहा, परिसा पडिगया ॥ ४३ ॥

तए णं से सेणिए राया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ वंदइत्ता वमंसित्ता एवं वयासी—इमेसि णं भंते ! इंदभूइपा-मोक्खाणं चउदसण्हं समणसाहस्सीणं कयरे अणगारे महा-दुक्करकारण चेव महाणिज्जरयराण चेव ? ॥ ४४ ॥

एवं खलु सेणिया ! इमेसि इंदभूइपामोक्खाणं चउदसण्हं समणसाहस्सीणं धन्ने अणगारे महादुक्करकारण चेव, महा-निज्जरतराण चेव ॥ ४५ ॥

से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ इमेसि चउदसण्हं समणसाहस्सीणं धन्ने अणगारे महादुक्करकारण चेव महानिज्जरयराण चेव ॥ ४६ ॥

एवं खलु सेणिया ! तेणं कालेणं तेणं समणं काकंदी नामं नयरी होत्था, जाव उण्णि पासायवडिसण विहरइ । तए णं अहं अणया कयाइ पुव्वाणुपुव्वीए चरमाणे गामाणुगामं दुइ-ज्जमाणे जेणेव क.कंदी नयरी जेणेव सहस्संबवणे उज्जाणे तेणेव उवागए २ ता अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिणिहत्ता संजमेणं तवसा जाव विहरामि । परिसा णिग्गया, तं चेव जाव पव्वइए जाव बिलमिव जाव आहारेति, धन्नस्स णं अणगारस्स पादाणं सरीर-वन्नओ सव्वो जाव उवसोभेमाणे २ चिट्ठइ । से तेणट्ठेणं सेणिया ! एवं वुच्चइ इमेसि चउदसण्हं समणसाहस्सीणं धन्ने अणगारे महादुक्करकारण चेव महानिज्जरयराण चेव ॥ ४७ ॥

तते णं से सेणिए राया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे समणं भगवं महावीरं तिकखुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ वंदइ नमंसइ २ ता

जेणेव धन्ने अणुगारे तेणेव उवागच्छइ २ ता धन्ने अणुगारं
तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ वंदइ नमंसइ, वंदइत्ता
नमंसइत्ता एवं वयासी-धरणे सिंहां तुमं देवाणुप्पिया ! सुपुण्णे
सुकयत्थे कयलक्खणे सुलद्धे णं देवाणुप्पिया ! तव माणुस्सए
जम्मजीवियफलेत्ति कट्ठु वंदइ नमंसइ २ ता जेणेव समणे भगवं
महावीरे तेणेव उवागच्छइ २ ता समणे भगवं महावीरं तिक्खु-
त्तो जाव वंदइ २ ता जामेव दिस्सि पाउब्भूए तामेव दिस्सि
पडिगए ॥ ४८ ॥

तए णं तस्स धन्नस्स अणुगारस्स अन्नया कयाइ पुब्ब-
एत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स इमेया-
रूवे अज्झत्थिए चित्तिए मणोगए संकप्पे समुपज्झित्था, एवं
खलु अहं इमेणं ओरालेणं जहा खंदओ तहेव चित्ता, आपु-
च्छणं, थेरेहिं सद्धिं विपुलं दुरूहइ, । मासियाए संलेहणाए
नवमासा परियाओ जाव कालमासे कालं किच्चा उड्ढं चंदिम
जाव नवयगेविज्जविजयविमाणपत्थडे उड्ढं दुरं वीइवइत्ता
सव्वट्ठसिद्धे विमाणे देवत्ताए उववन्ने ॥ ४९ ॥

थेरा तहेव उत्तरंति जाव इमे से आचारभंडए ॥ ५० ॥

भंते त्ति, भगवं गोयमे तहेव पुच्छइ जहा खंदयस्स भगवं
वागरेति जाव सव्वट्ठसिद्धे विमाणे उववन्ने ॥ ५१ ॥

धन्नस्स णं भन्ते ! देवस्स केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता ?
गोयमा ! तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता ॥ ५२ ॥

से णं भंते ! ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं
ठितिकखएणं कहिं नच्छिहिति कहिं उववज्जेहिति ? गोयमा !

महाविदेहवासे सिज्झहिइ बुज्झहिइ मुच्चिहिइ परिणिव्वाहिइ
सव्वदुक्खाणमंतं करेहिइ ॥ ५३ ॥

एवं खलु जम्बू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संप-
णेणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पणुत्ते ॥ ५४ ॥

॥ पढमं अज्झयणं समत्तं ॥

जइ एणं भन्ते ! उक्खेवओ एवं खलु जम्बू ! तेणं कालेणं
तेणं समणं काकंदी नयरी होत्था, भद्दा सत्थवाही परिव-
सइ ॥ १ ॥

तीसे एणं भद्दाए सत्थवाहीए पुत्ते सुनक्खत्ते नामं दारए
होत्था, अहीणं जाव सुरूवे, पंचधाइ-परिक्खत्ते जहा धन्नो-
तहेव बत्तीसओ दाओ जाव उट्ठिं पासायवडिंसए विह-
रइ ॥ २ ॥

तेणं कालेणं तेणं समणं सामी समोसढे जहा धन्नो
तहा सुणक्खत्ते वि निग्गओ जहा थावच्चापुत्तस्स तहा निक्ख-
मणं जाव अणगारे जाए ईरियासमिणं जाव गुत्तबंभया-
रिणं ॥ ३ ॥

तएणं से सुनक्खत्ते अणगारे जं चेव दिवसं समणस्स
भगवओ महावीरस्स अंतिणं मुंडे जाव पव्वइए तं चेव दिवसं
अभिग्गहं तहेव बिलमिव पण्णगभूएणं आहारं आहारेइ,
संजमेणं जाव विहरइ ॥ ४ ॥

समणं जाव बहिया जणवयविहारं विहरइ । एक्कारस्स
अंगाइ अहिज्झइ, संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥ ५ ॥

तएणां से सुनक्खरो अणगारे तेणां उरालेणां जहा खंदओ
॥ ६ ॥

तेणां कालेणां तेणां समएणां रायगिहे णयरे गुणसिलए
चेइए, सेणिए राया सामी समोसढे, परिसा णिग्गया, राया
निग्गओ धम्मकहा राया पडिगओ, परिसा पडिगया ॥ ७ ॥

तएणां तस्स सुनक्खत्तस्स अन्नया कयाइ पुव्वरत्ता जाव
धम्मजागरियं जहा खंदयस्स बहुवासाओ परियाओ ॥ ८ ॥

गोयमपुच्छा जाव सव्वट्टसिद्धे विमाणे देवत्ताए उववण्णे ।
जाव महाविदेहवासे सिज्झिहिति ॥ ९ ॥

॥ इति बीयं अज्झयणं समत्तं ॥

एवं खलु जम्बू ! सुनक्खत्तगमेणां सेसावि अट्ट भाणि-
यव्वा, णवरं आणुपुव्वीए-दोन्नि रायगिहे, दोन्नि साइए,
दोन्नि वाणिथग्गामे, नवमो हत्थिणापुरे, दसमो रायगिहे ॥ १ ॥

नवएहं भद्दाओ जणणीओ, नवएहवि बत्तीसओ दाओ
नवएहं निक्खमणं थावच्चापुत्तस्स सरिसं, वेहल्लुप्पिया करेइ,
नवमास धरणे वेहल्लु छमासापरियाओ, सेसाणां बहुवासाइं,
मासं संलेहणा सव्वे महाविदेहवासे सिज्झिहिति । एवं दस
अज्झयणाणि । एवं खलु जम्बू ! समणेणां भगवया महावीरेण
अणुत्तरोववाइयदसाणां तच्चस्स वग्गस्स अयमट्ठे पन्नरो ।
अणुत्तरोववाइयदसाओ सम्मत्ताओ । अणुत्तरोववाइयदसाणां
एगो सुयखंधो तिनि वग्गा तिसु दिवसेसु उद्दिशिज्जंति,
पढमे वग्गे दस उद्देसगा बीए वग्गे तेरस उद्देसगा, तइये
वग्गे दस उद्देसगा, सेसं जहा धम्मकहा नायव्वा ॥ इति ॥

॥ दशाश्रुतस्कंध चित्त-समाधि पंचमी दशा ॥

नमो सुयदेवयाप भगवतीए ॥ सुयं मे आउसं ! तेरां भगवया
एवमक्खायं, इह खलु थेरेहिं भगवंतेहिं दस चित्त-समाहि-
ठाणा पन्नत्ता । कयरा खलु ते थेरेहिं भगवंतेहिं दस चित्त-
समाहिठाणा-परणत्ता ? इमे खलु थेरेहिं भगवंतेहिं दस-
चित्तसमाहिठाणा-पन्नत्ता तंजहा—तेरां कालेरां तेरा समएरां
वाणियग्गामे नगरे होत्था, नगर-वणओ भाणियव्वो ॥ १ ॥

तस्स रां वाणियग्गामस्स नगरस्स बहिया उत्तरपुरच्छिमे
दिसिभाए दूतिपलासए नामं चेइए होत्था, चेइए वणओ
भाणियव्वो ॥ २ ॥

जियसत्तू राया, तस्स धारिणी नामं देवी एवं सव्वं
समोसररां भाणियव्वं जाव पुढविसिलापट्टए, सामी समो-
सडे परिसा निग्गया; धम्मो कहिओ परिसा पडिगया ॥ ३ ॥

अज्जो ! इति समणे भगवं महावीरे समणाय समणीओय
निग्गंथा य निग्गंथीओय आमंतित्ता एवं वयासी-इह खलु अज्जो !
निग्गंथारां वा, निग्गंथीरां वा इरियासमियारां, भासासमियारां,
एसणासमियारां, आयाणभंड-मत्त-निकखेवणा-समियारां,
उच्चारपासवण-खेल-जल्लसिंघाण-पारिट्ठावणिया-समियारां,
मण समियारां, वय-समियारां, काय-समियारां, मण-गुत्ति-

ग्राणं, वय-गुत्तियाणं, काय-गुत्तियाणं, गुत्ति-दिय्याणं गुत्त-
बंभयारीणं, आयट्ठीणं, आय-हियाणं, आय-जोयणं, आय-परि-
क्कमाणां पक्खिए-पोसहिएसु समाहि-पत्ताणां मियायमाणानं
इमाइं दसचित्तसमाहि-ट्ठाणाइं असमुप्पण-पुव्वाइं समुप्प-
ज्जित्था तंजहा—धम्मचिंता वा से असमुप्पण-पुव्वाइं समुप्प-
ज्जेज्जा सव्वं धम्मं जाणित्तए ॥ १ ॥

सुमिण-दंसिण वा से असमुप्पण-पुव्वे समुप्पज्जेज्जा, अहा-
तञ्च सुमिणां पासित्तए, सणिण-जाइ-सरणेणां सणिण-णाणां वा
से असमुप्पण-पुव्वे समुप्पज्जेज्जा अप्पणो पोराणियं जाइ
समरित्तए ॥ ३ ॥

देव-दंसणे वा से असमुप्पण-पुव्वे समुप्पज्जेज्जा दिव्वं
देवडिंढ दिव्वं देव-जुइं दिव्वं देवाणुभावं पासित्तए ॥ ४ ॥

ओहिणारो वा से असमुप्पण-पुव्वे समुप्पज्जेज्जा, ओहिणा
लोगं जाणित्तए ॥ ५ ॥

ओहि-दंसणे वा से असमुप्पण-पुव्वे समुप्पज्जेज्जा-अट्ठा-
इज्जेसु दीव-समुद्देसु सणीणां-पंचिंदियाणां पज्जत्तगाणां मणो-
गणभावे जाणित्तए ॥ ७ ॥

केवलनारो वा से असमुप्पण-पुव्वे समुप्पज्जेज्जा केवल-
कप्पं लोया-लोयं जाणित्तए ॥ ८ ॥

केवल-दंसणे वा से असमुप्पण-पुव्वे समुप्पज्जेज्जा
केवलकप्पं लोयालोयं पासित्तए ॥ ९ ॥

केवल-मरणे वा से असमुप्पण-पुव्वे समुप्पज्जेज्जा सव्व-
दुक्खप्पहाणाए ॥ १० ॥

ओयं चित्तं समादाय, ज्झाणं समुप्पज्जइ ।
 धम्मं विज्झो अविमणो, निव्वारणमभिगच्छइ ॥ १ ॥
 ण इमं चित्तं समादाय, भुज्झो लोयंसि जायइ ।
 अप्पणो उत्तमं ठाणं, सण्णी णारोण जाणइ ॥ २ ॥
 अहातच्चं तु सुमिणं, खिप्पं पासेति संवुडे ।
 सव्वं वा ओहं तरति, दुक्खओ य विमुच्चइ ॥ ३ ॥
 पंताइं भयमाणस्स, विवित्तं सयणासणं ।
 अप्पाहारस्स दंतस्स, देवा दंसेति ताइणो ॥ ४ ॥
 सव्व-काम-विरतस्स, खमणो भय-मेरवं ।
 तओ से ओही भवइ, संजयस्स तवस्सिणो ॥ ५ ॥
 तवसा अवहट्ठु लेस्सस्स, दंसणं परिसुज्झइ ।
 उड्ढं अहे तिरियं च, सव्वमणुपस्सति । ६ ॥
 सुसमाहियलेस्सस्स, अवितक्कस्स भिक्खुणो ।
 सव्वओ विप्पमुक्कस्स, आया जाणइ पज्जवे ॥ ७ ॥
 जया से नाणावरणं, सव्वं होइ खयं गयं ।
 तओ लोगमलोगं च, जिणो जाणति केवली ॥ ८ ॥
 जया से दरसणावरणं, सव्वं होइ खयं गयं ।
 तओ लोगमलोगं च, जिणो पासति केवली ॥ ९ ॥
 पडिमाए विसुद्धाए, मोहणिज्जे खयं गयं ।
 असेसं लोगमलोगं च पासेति सुसमाहिण ॥ १० ॥
 जहा मत्थए सूइए, हंताए हम्मइ तले ।
 एवं कम्माणि हम्मंति, मोहणिज्जे खयं गण ॥ ११ ॥
 सेणावइमि निहते, जहा सेणा पणस्सइ ।
 एवं कम्माणि णस्संति, मोहणिज्जे खयं गण ॥ १२ ॥
 धूम-हीणो जहा अग्गी, खीयति से निरिंधणे ।
 एवं कम्माणि खीयंति, मोहणिज्जे खयं गण ॥ १३ ॥

सुक्क-मूले जहा रुक्खे, सिंचमाणे ण रोहति ।
 एवं कम्मा ण रोहंति, मोहणिज्जे खयं गए ॥ १४ ॥
 जहा दङ्कणां बीयाणां, न जायंति पुण अंकुरा ।
 कम्म-बीएसु दङ्क्रेसु न जायंति भवंकुरा ॥ १५ ॥
 चिञ्चा ओरालिये बोदिं, नाम-गोथं च केवली ।
 आउयं वेयणिज्जं च, छित्ता भवति णीरण ॥ १६ ॥
 एवं अभिसमागम्म, चित्तमादाय आउसो ।
 सेणिसुद्धिमुवागम्म आया सुद्धिमुवागइ ॥ चित्ति वेमि ॥ १७ ॥

॥ इति दशाश्रुतस्कन्ध-चित्तसमाधि-नाम-पंचमी दशा ॥

॥ चउसरण पइण्णा ॥

सावज्जजोगविरई^१, उक्कित्तण^२, गुणवओ अ पडिवत्ती^३ ।
 खलिअस्स निंदणा^४, वणतिगिच्छ^५, गुणधारणा^६ चेव ॥ १ ॥
 चारित्तस्स विसोही कीरइ सामाइएण किल इहयं ।
 सावज्जेअरजोगाण वज्जणासेवणत्तणओ ॥ २ ॥
 दंसणायारविसोही चउवीसत्थएण किञ्चइ य ।
 अच्चम्भुअगुणकित्तणरूवेण जिणवरिंदारं ॥ ३ ॥
 नाणाईआ उ गुणा तस्संपन्नपडिवत्तिकरणाओ ।
 वंदणएणां विहिणा कीरइ सोही उ तेसिं तु ॥ ४ ॥
 खलिअस्स य तेसिं पुणो विहिणा जं निंदणाइ पडिक्कमणां ।
 तेण पडिक्कमणेणां तेसिंपि अ कीरण सोही ॥ ५ ॥

चरणाईयारा णं जहक्कम्मं वणतिगिच्छरूवेणं ।
 पडिक्कमणासुद्धाणं सोही तह काउसग्गेणं ॥ ६ ॥
 गुणधारणरूवेणं पच्चक्खारेण तवइआरस्स ।
 विरिआयारस्स पुणो सव्वेहिवि कीरण सोही ॥ ७ ॥
 गय^१ वसह^२ सीह^३ अभिसेअ^४ दाम^५ ससि^६ दिणयर^७ झय^८ कुभं^९ ।
 पउमसर^{१०} सागर^{११} विमाण-भवण^{१२} रयणुच्चय^{१३} सिहिं^{१४} च ८
 अमरिंदनरिंदमुणिंदवंदिअं वंदिउं महावीरं
 कुसलाणुवंधि वंधुरमज्झयणं कित्तइस्सामि ॥ ९ ॥
 चउसरणगमण दुक्कडगरिहा सुकडाणुमोअणा चेव ।
 एस गणो अणवरयं कायव्वो कुसलहेउत्ति ॥ १० ॥
 अरहंत-सिद्ध-साह-केवलिकहिओ सुहावहो धम्मो ।
 एण चउरो चउगइहरणा सरणं लहइ धन्नो ॥ ११ ॥
 अह सो जिणभत्ति-भरुत्थरंत-रोमंच-कंचुअ-करालो ।
 पहरिसण-उम्मीसं सीसंमि कयंजलि भणइ ॥ १२ ॥
 रागदोसारीणं हंता कम्मट्टगाइअरिहंता ।
 विसय-कसायारीणं अरिहंता हुंतु मे सरणं ॥ १३ ॥
 रायसिरिमुवक्कमि (सि) त्ता तवचरणं दुच्चरं अणुचरित्ता ।
 केवलसिरिमरिहंता अरिहंता हुंतु मे सरणं ॥ १४ ॥
 थुइ-वंदणमरिहंता अमरिंद-नरिंदपूइअमरिहंता ।
 सासयसुहमरहंता अरिहंता हुंतु मे सरणं ॥ १५ ॥
 परमणगयं मुणंता जोइंदमहिंदभाणमरहंता ।
 धम्मकहं अरहंता अरिहंता हुंतु मे सरणं ॥ १६ ॥
 सव्वजिआणमहिंसं अरहंता सच्चवयणमरहंता ।
 वंभव्वयमरहंता अरिहंता हुंतु मे सरणं ॥ १७ ॥
 ओसरणमवसरित्ता चउतीसं अइसण निसेवित्ता ।
 धम्मकहं च कहंता अरिहंता हुंतु मे सरणं ॥ १८ ॥

पगाइ गिराऽणेगे संदेहे देहिणां समं छित्ता ।
 तिहुयणमणुसासंता अरिहंता हुंतु मे सरणां ॥ १६ ॥
 वयणामणण भुवणं निव्वाविंता गुणेषु ठावंता ।
 जिअलोअमुद्धरंता अरिहंता हुंतु मे सरणां ॥ २० ॥
 अच्चब्भुयगुणवंते नियजसससइरपसाहिअदिअंते ।
 निअयमणाइ अणांते पडिवन्नो सरणमरिहंते ॥ २१ ॥
 उज्झिअजरमरणाणां समत्तदुक्खत्तसत्त-सरणाणां ।
 तिहुअणजणसुहयाणां अरिहंताणां नमो ताणां ॥ २२ ॥
 अरिहंत-सरण-मल-सुद्धिलद्ध-सुविसुद्ध-सिद्धबहुमाणो ।
 पणय-सिर-रइय-कर-कमल-सेहरो-सहरिसं भणइ ॥ २३ ॥
 कम्मट्ठुक्खयसिद्धा साहाविअनाणदंसणसमिद्धा ।
 सव्वट्ठुलद्धिसिद्धा ते सिद्धा हुंतु मे सरणां ॥ २४ ॥
 तिअलोअमत्थयत्था परमपयत्था अचित्तसामत्था ।
 मंगलसिद्धपयत्था सिद्धा सरणां सुहपसत्था ॥ २५ ॥
 मूलुक्खयपडिवक्खा अमूढलक्खा सजोगिपच्चक्खा ।
 साहविअत्तसुक्खा सिद्धा सरणां परममुक्खा ॥ २६ ॥
 पडिपिल्लिअ पडिणीया समग्गभाणग्गिदड्ढभववीआ ।
 जोइसरसरणीया सिद्धा सरणां सुमरणिआ ॥ २७ ॥
 पावियपरमाणांदा गुणनीसंदा विभिन्न भवकंदा ।
 लहुईकय-रविचंदा सिद्धा सरणां खविअदंदा ॥ २८ ॥
 उवलद्धपरमवंभा दुल्लहलंभा विमुक्कसंरंभा ।
 भुवणघरधरणखंभा सिद्धा सरणां निरारंभा ॥ २९ ॥
 सिद्धसरणेण नववंभहेउसाहुगुणजणिअ-बहुमाणो
 मेइणिमिलंत-सुपसत्थत्थओ तत्थिमं भणइ ॥ ३० ॥
 जिअलोअबंधुणो कुगइसिंधुणो पारगा महाभागा ।
 नाणाइपहिं सिवसुक्खसाहगा साहुणो सरणां ॥ ३१ ॥

केवलियो परमोही विउलमई सुअहरा जिएमयंसि ।
 आयरिअ उवज्झाया ते सव्वे साहुणो सरणां ॥ ३२ ॥
 चउदस-दस-नवपुव्वी दुवालसिक्कारसंगियो जे अ ।
 जिएकप्पाहालंदिअपरिहार-विमुद्धि-साहू अ ॥ ३३ ॥
 खीरासवमहु-आसवसंभिन्नस्सोअकुट्टवुद्धी अ ।
 चारणवेउव्विपयाणुसारिणो साहुणो सरणं ॥ ३४ ॥
 उज्झियवइरविरोहा निच्चमदोहा पसंतमुहसोहा ।
 अभिमयगुणसंदोहा हयमोहा साहुणो सरणं ॥ ३५ ॥
 खंडिअसिणेहदामा अकामयामा निकामसुहकामा ।
 सुपुरिसमणाभिरामा आयारामा मुणी सरणां ॥ ३६ ॥
 मिल्हिअविसयकसाया उज्झियघरघरणिंसंगसुहसाया ।
 अकलिअहरिसविसाया साहू सरणां गयपमाया ॥ ३७ ॥
 हिंसाइदोससुन्ना कयकारुन्ना सयंभुरुप्पन्ना-(पुणणा) ।
 अजरामरपहखुन्ना साहू सरणां सुकयपुन्ना ॥ ३८ ॥
 कामविंडवणचुक्का कलेमलमुक्का विवि [मु] कचोरिक्का ।
 पावरय-सुरयरिक्का साहू गुणरणचच्चिक्का ॥ ३९ ॥
 साहुत्तसुट्ठिया जं आयरिआई तओ य ते साहू ।
 साहुभणिण गहिया तम्हा ते साहुणो सरणां ॥ ४० ॥
 पडिवन्नसाहुसरणो सरणां काउं पुणोवि जिएधम्मं ।
 पहरिसरोमंचपवंचकंचुअन्विअतरू भणइ ॥ ४१ ॥
 पवरसुकणहिं पत्तं पत्तेहिवि नवरि केहिवि न पत्तं ।
 तं केवलिपन्नत्तं धम्मं सरणां पवन्नोऽहं ॥ ४२ ॥
 पत्तेण अपत्तेण य पत्ताणि अ जेण नरसुरसुहाइं ।
 मुक्खसुहं पुण पत्तेण नवरि धम्मो स मे सरणां ॥ ४३ ॥
 निद्वलिअकलुसकम्मो कयसुहजम्मो खलीकय-अहम्मो ।
 पमुहपरिणामरम्मो सरणां मे होउ जिएधम्मो ॥ ४४ ॥

कालत्तएवि न मयं जम्पण--जरमरणवाहिसय--समयं ।
 अमयं व बहुमयं जिणमयं च सरणां पवन्नोऽहं ॥ ४५ ॥
 पसमिअकामपमोहं दिट्ठादिट्ठेसु नकलिअविरोहं ।
 सिवसुहफलयममोहं धम्मं सरणां पवन्नोऽहं ॥ ४६ ॥
 नरय-गइ गमणरोहं गुणसंदोहं पवाइजिक्खोहं ।
 निहणिअवम्पहजोहं धम्मं सरणां पवन्नोऽहं ॥ ४७ ॥
 भासुर-सुवन्न-सुंदर-रयणालंकार-गारव-महग्घं ।
 निहिमिव दोगच्चहरं धम्मं जिणदेसिअं वंदे ॥ ४८ ॥
 चउसरणागमणसंचिअपुचरिअगेमंचअंचियसरीरो ।
 कयदुक्कडगरिहो असुहकम्पकखयकंखिरो भणइ ॥ ४९ ॥
 इहभविअमन्नभविअं मिच्छत्तपवत्तणं जमहिगरणं ।
 जिणपवयणपडिक्कुट्ठं दुट्ठं गरिहामि तं पावं ॥ ५० ॥
 मिच्छत्ततमंघेणं अरिहंताइसु अवन्नवयणं जं ।
 अन्नाणेण विरइयं इणिह गरिहामि तं पावं ॥ ५१ ॥
 सुअधम्म-संगसाहुसु पावं पडिणीअयाइ जं रइअं ।
 अन्नेसु अ पावेसुं इणिह गरिहामि तं पावं ॥ ५२ ॥
 अन्नेसु अ जीवेसुं मित्ती-करुणाइ-गोयरेसु कयं ।
 परिआवणाइ दुक्खं इणिह गरिहामि तं पावं ॥ ५३ ॥
 जं मणवयकाएहिं कयकारिअ-अणुमईहिं आयरियं ।
 धम्मविरुद्धमसुद्धं सव्वं गरिहामि तं पावं ॥ ५४ ॥
 अह सो दुक्कडगरिहादलिउक्कडदुक्कडो फुडं भणइ ।
 सुकडाणुरायसमुइन्नपुन्नपुलयं-कुरकरालो ॥ ५५ ॥
 अरिहत्तं अरिहंतेसु जं च सिद्धत्तणं च सिद्धेसु ।
 आयां आयरिण उज्झायत्तं उवज्झाए ॥ ५६ ॥
 साहण साहुचरिअं च देसविरइं च सावय-जणाणं ।
 अणुमन्ते सव्वेसिं सम्मत्तं सम्मदिट्ठीणं ॥ ५७ ॥

अहवा सव्वं स्रिअ वीयरायवयणाणुसारि जं सुकयं ।
 कालत्तएवि तिविहं अणुमोणमो तयं सव्वं ॥ ५८ ॥
 सुहरिणामो निच्चं चउसरणगमाइ आयारं जीवो ।
 कुसलपयडीउ बंधइ बंधाउ सुहाणुबंधाउ ॥ ५९ ॥
 मंदाणुभावा बद्धा तिव्वाणुभावाउ कुणइ ता चेव ।
 असुहाउ निरणुबंधाउ कुणइ तिव्वाउ मंदाउ ॥ ६० ॥
 ता एयं कायव्वं बुहेहिं निच्चपि संकिलेसम्मि ।
 होइ तिकालं सम्मं असंकिलेसंमि सुकयफलं ॥ ६१ ॥
 चउरंगो जिणधम्मो न कओ चउरंगसरणमवि न कयं ।
 चउरंगभवुच्छेओ न कओ हा हारिओ जम्मो ॥ ६२ ॥
 इअ-जीवपमायमहारिवीर-भदंतमे-अमज्झयणं ।
 झाएसु तिसंभमवंभ-कारणं निव्वुइसुहाणं ॥ ६३ ॥

॥ चउसरणं समत्तं ॥ १ ॥

॥ सुभाषित ॥

—:::()::::—

पंच-महव्वय-सुव्वय-मूलं, समण-मणाइल-साहू सुचिअं ।
 वेरविरमणपज्जवस्साणं, सव्वसमुद्गहोदधी तित्थं ॥ १ ॥
 तित्थंकरेहिं सुदेसियमग्गं, नरग-तिरिय विवज्जिय-मग्गं ।
 सव्वं-पवित्तं सुनिम्मियसारं, सिद्धि विमाणं अवंगुय-दारं ॥ २ ॥
 देव नरिंद-नमंसिय-पूइयं, सव्वजगुत्तम-मंगल-मग्गं ।
 उद्धरिसं गुण-नायगमेगं, मोक्खलपहस्स-वडिसगभूयं ॥ ३ ॥

धम्मारामे चरे भिक्खू, धिइमं धम्म-सारही ।
 धम्मारामे रया दंते, बंभचेर-समाहिण ॥ ४ ॥
 देव-दाणव-गंधवा, जक्ख-रक्खस्स-किन्नरा ।
 बंभयारिं नमंसंति दुक्करं जे करन्ति तं ॥ ५ ॥
 एस धम्मे धुवे निच्चे, सासण जिणदेसिए ।
 सिद्धा सिज्झंति चाणेणं, सिज्झिस्संति तहावरे ॥ ६ ॥
 अरहंत-सिद्ध-पवयण-गुरु-थेर-बहुस्सुण-तवस्सीसु ।
 वञ्छल्लया य तेसिं अभिक्खनाणोवओणे य ॥ ७ ॥
 दंसण-विणय-आवस्सए य, सीलव्वए निरइयारे ।
 खणलव-तव-च्चियाए, वेयावच्चे समाहीए ॥ ८ ॥
 अपुव्वनाणग्गहणे सुयभत्ती, पव्वयणे पभावणया ।
 एएहिं कारणेहिं तिथयरात्तं लहइ जीवो ॥ ९ ॥
 जिणवयणे अणुरत्ता जिणवयणं जे करंति भावेणं ।
 अमला अस्संक्किलिट्ठा, ते हुंति य परित्तसंसारि ॥ १० ॥
 एवं खु नाणिणो-सारं, जं न हिंसई किंचणं ।
 अहिंसा-समयं चेव, एत्तावतं वियाणिया ॥ ११ ॥
 जाइं च बुद्धिं च इहेज्ज-पासं, भूतेहिं जाण पडिलेह सायं ।
 तम्हा तिविज्जो-परमंति णच्चा, सम्मत्तदंसी न करेइ पावं ॥ १२ ॥
 उम्मुच्च-पासं इह मच्चिएहिं, आरंभजीवीऊज्झपयाणुपस्सी ।
 कामेसु मिद्धा णिचयं करंति, संसिंचमाणा पुणरेति गम्भं ॥ १३ ॥
 सवणे नारो विन्नाणे, पच्चक्खाणे य संजओ ।
 अणण्हए तवे चेव, वोदाणे अकिरियासिद्धि ॥ १४ ॥
 एगोहं नत्थि मे कोइ, नाहमन्नस्स कस्सई ।
 एवं अदीणपणसा, अप्पाणमणुसासई ॥ १५ ॥

एगो मे सासओ अप्पा, नाणदंसणसंजओ ।
 सेसा मे बाहिरा भावा, सब्बं संजोगलक्खणा ॥ १६ ॥
 जीवियं नाभिगच्छेज्जा मरणां नोवि पत्थए ।
 दुहउवि न इच्छेज्जा, जीवियं मरणां तहा ॥ १७ ॥
 सारं दंसणनाणां, सारं-तव-नियम-संजम-सीलं ।
 सारं जिणवरधम्मं; सारं संलेहणा पंडियमरणां ॥ १८ ॥
 कल्लाणकोडिकारिणी, दुग्गइदुहनिट्ठवणी ।
 संसारजलतारिणी, एगंत होइ जीवदया ॥ १९ ॥
 आरंभे नत्थि दया, महिलए संग नासइ बंभं ।
 संकाए नासइ सम्मत्तं, एवज्झा अत्थग्गहरां च ॥ २० ॥
 मज्जं विसयकसाया, निद्दा विकहा य पंचमी भणिया ।
 एए पंच पमाया, जीवा पाडेति संसारे ॥ २१ ॥
 लब्भंति विमला भोए, लब्भंति सुरसंपया ।
 लब्भंति पुत्तमित्तं च, एगो धम्मो न लब्भई ॥ २२ ॥
 न वि सुही देवता देवलोए, न वि सुही पुढवीपइराया ।
 न वि सुही सेट्ठिसेणावइ य, एगंत सुही मुणी वीयरानी ॥ २३ ॥
 नगरी सोहंती जलमूलबागे, नारी सोहंति घरपुरुषत्यागे ।
 राजासोहंत सभा पुराणी, साधु सोहंता अमृतवाणी ॥ २४ ॥
 चलंति मेरु चलंति मंदिरं, चलंति तारा रविचन्द्रमंडलं ।
 कदापि काले पृथ्वी चलंति, साहसपुरुषवाक्यो न चलंति धर्मे ॥ २५ ॥
 अशोकवृक्षः सुरपुष्पवृष्टिं दिव्यध्वनिश्चामरमासनं च ।
 भामण्डलं दुंदुभिरातपत्रं, सत्प्रातिहार्याणि जिनेश्वराणाम् ॥ २६ ॥
 अप्पा नई वेयरणी, अप्पा मे कुडसामली ।
 अप्पा कामदुहा धेणू, अप्पा मे नंदरां वणं ॥ २७ ॥

अप्पा कत्ता विकत्ता य, दुहाण य सुहाण य ।
 अप्पा मित्तममित्तं च, दुप्पट्टियसुपट्टिओ ॥ २८ ॥
 जो सहस्सं सहस्साणां, संगामे दुज्जए जिए ।
 एगं जिणेज्ज अप्पाणां, एस से परमो जओ ॥ २९ ॥
 लाभालाभे सुहे-दुक्खे, जीविण मरणे तहा ।
 समो भिन्दापसंसासु, तहा माणावमाणओ ॥ ३० ॥

॥ भक्तामरस्तोत्रम् ॥

भक्तामरप्रणतमलिपणिपभाणा—
 मुद्योतकं दलितपापतमोवितानम् ।
 सम्यक् प्रणम्य जिनपादयुगं युमादा—
 वालम्बनं भवजले पततां जनानाम् ॥१॥

यः संस्तुतः सकलवाङ्मयतत्त्वबोधा—
 दुद्भूतबुद्धिपटुभिः सुरलोकनाथैः ।
 स्तोत्रैर्जगत्त्रितयचित्तरुद्रैरुद्धारैः,
 स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम् ॥२॥

बुद्ध्या विनाऽपि विबुधार्चितपादपीठ !,
 स्तोतुं समुद्यतमतिर्विगतत्रपोऽहम् ।
 बालं विहाय जलसंस्थितमिन्दुबिम्ब—
 सन्यः क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुम् ॥३॥

वक्तुं गुणान् गुणसमुद्र ! शशाङ्ककान्तान्,
कस्ते क्षमः सुरगुरोःप्रतिमोऽपि बुद्ध्या ।
कल्पांतकालपवनोद्धतनक्रचक्रं,
को वा तरीतुमलमम्बुनिधिं भुजाभ्याम् ॥४॥

सोऽहं तथापि तव भक्तिवशान्मुनीश !,
कर्तुं स्तवं विगतशक्तिरपि प्रवृत्तः ।
प्रीत्यात्मवीर्यमविचार्य मृगो मृगेन्द्रं,
नाभ्येति किं निजशिशोः परिपालनार्थम् ॥५॥

अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहासधाम,
त्वङ्गक्तिरैव मुखरीकुरुते बलान्माम् ।
यत्कोकिलः किल मधो मधुरं विरौति,
तच्चारुचाप्राकलिकानिकरैकहेतुः ॥ ६ ॥

त्वत्संस्तवेन भवसन्ततिसन्निबद्धं,
पापं क्षणत्क्षयमुपैति शरीरभाजाम् ।
आक्रान्तलोकमलिनीलमशेषमाशु,
सूर्याशुभिन्नमिव शार्धरमन्धकारम् ॥ ७ ॥

मत्वेति नाथ ! तव संस्तवनं मयेद—
मीरभ्यते तनुधियाऽपि तव प्रभावात् ।
चेतो हरिष्यति सतां नलिनीदलेषु,
मुक्ताफलद्युतिमुपैति ननूदबिन्दुः ॥ ८ ॥

आस्तां तव स्तवनमस्तसमस्तदोषं,
त्वत्संकथाऽपि जगतां दूरितानि हन्ति ।
दूरे सहस्रकिरणः कुरुते प्रभैव,
पद्माकरेषु जलजानि विकाशभाञ्जि ॥ ९ ॥

नात्यद्भुतं भुवनभूषण ! भूतनाथ !
भूतैर्गुणैर्भूवि भवन्तमभिष्टुवन्तः ।
तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन किं वा,
भूत्याश्रितं य इह नात्मसमं करोति ॥ १० ॥

दृष्ट्वा भवन्तमनिमेषविलोकनीयं,
नान्यत्र तोषमुपयाति जनस्य चक्षुः ।
पीत्वा पयः शशिकरद्युतिदुग्धसिन्धोः,
क्षारं जलं जलनिधेरशितुं क इच्छेत् ॥ ११ ॥

यैः शान्तगगरुचिभिः परमाणुभिस्त्वं,
निर्मापितस्त्रिभुवनैकललामभूत ! ।
तावन्त एव खलु तेऽप्यणवः पृथिव्यां,
यस्य समानमपरं न हि रूपमस्ति ॥ १२ ॥

वक्त्रं क ते सुरनरोरगनेत्रहारि,
निःशेषनिर्जितजगत्त्रितयोपमानम् ।
विम्बं कलङ्कमलिनं क निशाकरस्य,
यद्वासरे भवति पाण्डुपलाशकल्पम् ॥ १३ ॥

सम्पूर्णमण्डलशशाङ्ककलाकलाप !
शुभा गुणान्निभुवनं तव लङ्घयन्ति ।
ये संश्रितास्त्रिजगदीश्वर ! नाथमेकं,
कस्तान्निवारयति सञ्चरतो यथेष्टम् ॥ १४ ॥

न्नित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशाङ्गनाभि—
नीतं मनागपि मनो न विकारमार्गम् ।
कल्पान्तकालमरुता चलिताचलेन,
किं मन्दराद्रिशिखरं चलितं कदाचित् ॥ १५ ॥

निर्धूमवर्तिरपवर्जिततैलपूरः,
 कृत्स्नं जगत्त्रयमिदं प्रकटीकरोषि ।
 गम्यो न जातु मरुतां चलिताचलानां,
 दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ ! जगत्प्रकाशः ॥ १६ ॥

नास्तं कदाचिदुपयासि न राहुगम्यः,
 स्पष्टीकरोषि सहसा युगपज्जगन्ति ।
 नाम्भोधरोदरनिःशङ्कप्रहाप्रभावः,
 सूर्यातिशायिमहिमाऽसि मुनीन्द्र ! लोके ॥ १७ ॥

नित्योदयं दलितमोहमहान्धकारं,
 गम्यं न राहुवदनस्य न वारिदानाम् ।
 विश्रज्जते तव मुखाब्जमनल्पकान्ति,
 विद्योतयज्जगदपूर्वशशाङ्कबिम्बम् ॥ १८ ॥

किं शर्वरीषु शशिनाऽहिं विवस्वता वा,
 युष्मन्मुखेन्दुदलितेषु तमस्सु नाथ ! ।
 निष्पन्नशालिवनशालिनि जीवलोके,
 कार्यं कियञ्जलधरैर्जलभारनम्रैः ॥ १९ ॥

ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशं,
 नैवं तथा हरिहरादिषु नायकेषु ।
 तेजःस्फुरन्मणिषु याति यथा महत्त्वं,
 नैवं तु काचशकले किरणाकुलेऽपि ॥ २० ॥

मन्ये वरं हरिहरादय एव दृष्टा,
 दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति ।
 किं वीक्षितेन भयता भुवि येन नान्यः,
 कश्चिन्मनो हरति नाथ भवान्तरेऽपि ॥ २१ ॥

स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्,
नान्यसुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता ।
सर्वा दिशो दधति-भानु-सहस्ररश्मिः,
प्राच्येव दिग्जनयति स्फुरदंशुजालम् ॥२२॥

त्वामामनन्ति मुनयः परमं पुमांस—
मादित्यवर्णममलं तमसःपुरस्तात् ।
त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयन्ति मृत्युः,
नान्यः शिवः शिवपदस्य मुनीन्द्र ! पन्थाः ॥२३॥

त्वामव्ययं विभुमचिन्त्यमसङ्ख्यमाद्यं,
ब्रह्माण्मीश्वरमनन्तमनङ्गकेतुम् ।
योगीश्वरं विदितयोगमनेकमेकं,
ज्ञानस्वरूपममलं प्रवदन्ति सन्तः ॥ २४ ॥

बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चितबुद्धिबोधात्,
त्वं शङ्करोऽसिभुवनत्रयशङ्करत्वात् ।
धाताऽसि धीर ! शिवमार्गविधेर्विधानात्,
व्यक्तं त्वमेव भगवन् ! पुरुषोत्तमोऽसि ॥ २५ ॥

तुभ्यं नमस्त्रिभुवनात्तिहराय नाथ !
तुभ्यं नमः क्षितितलामलभूषणाय ।
तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्वराय,
तुभ्यं नमो जिन ! भवोदधिशोषणाय ॥ २६ ॥

को विस्मयोऽत्र यदि नाम गुणैरशेषै—
स्त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश ! ।
दोषैरुपात्तविविधाश्रयजातगर्वैः,
स्वप्नांतरेऽपि न कदाचिदपीक्षितोऽसि ॥२७॥

उच्चैरशोकतरुसंश्रितमुन्मयूख—

माभाति रूपममलं भवतो नितान्तम् ।

स्पष्टोल्लसत्किरणमस्ततमोवितानं,

बिम्बं रवेरिव पयोधरपार्श्ववर्ति ॥ २८ ॥

सिंहासने मणिमयूखशिखाविच्छिन्नं,

विभ्राजते तव वपुः कनकावदातम् ।

बिम्बं वियद्विलसदंशुलतावितानं,

तुङ्गोदयाद्रिशिरसीव सहस्ररश्मेः ॥ २९ ॥

कुन्दावदातचलचामरचारुशोभं,

विभ्राजते तव वपुः कलधौतकान्तम् ।

उद्यच्छशाङ्कशुचिनिर्जरवारिधार—

मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौम्भम् ॥ ३० ॥

छत्रत्रयं तव विभाति शशाङ्ककान्त—

मुच्चैः स्थितं स्थगितभानुकरप्रतापम् ।

मुक्ताफलप्रकरजालविवृद्धशोभं—

प्रख्यापयत्त्रिजगतः परमेश्वरत्वम् ॥ ३१ ॥

[गम्भीरताररवपूरितदिग्विभाग—

लौक्यलोकशुभसङ्गमभूतिदक्षः ।

सद्धर्मराजजयघोषणघोषकः सन्,

खे दुन्दुभिर्ध्वनति ते यशसः प्रवादी ॥ ३२ ॥

मन्दारसुन्दरनमेरुसुपारिजात—

संतानकादिकुसुमोत्करवृष्टिरुद्धा ।

गन्धोदबिन्दुशुभमन्दमरुत्प्रपाता,

दिव्या दिवः पतति ते वचसां ततिर्वा ॥ ३३ ॥

शुभ्रप्रभावलयभूरिविभा विभोस्ते,
लोकत्रयद्युतिमतां द्युतिमाक्षिपन्ती ।
प्रोद्यद्दिवाकरनिरन्तरभूरिसङ्ख्या,
दीप्तियार्जयत्यपि निशामपि सोमसौम्याः ॥३४॥

स्वर्गापवर्गगममार्गविमार्गशेष—
सखर्मतस्त्वकथनैकपटुखिलोक्याः ।
दिव्यध्वनिर्भवति ते विशदार्थसर्व—
भाषास्वभावपरिणामगुणैः प्रयोज्यः] ॥३५॥

उन्निद्रहेमनवपङ्कजपुञ्जकांति,
पर्युलसन्नखमयूखशिखाऽभिरामौ ।
पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र ! धत्तः,
पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयन्ति ॥ ३६ ॥

इत्थं यथा तव विभूतिरभूजिनेन्द्र !
धर्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य ।
यादृक् प्रभा दिनकृतः प्रहतान्धकारा,
तादृक् कुतो ग्रहगणस्य विकासिनोऽपि ॥३७॥

श्च्योतन्मदाविलविलोलकपोलमूल—
मत्तभ्रमद्भ्रमरनादविद्धवृकोषम् ।
ऐरावताभमिभमुद्धतमापतन्तं,
दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदाश्रितानाम् ॥३८॥

भिन्नेभकुम्भगलदुज्ज्वलशोणितक्त—
मुक्ताफलप्रकरभूषितभूमिभागः ।
बद्धक्रमः क्रमगतं हरिणाधिपोऽपि,
नाक्रामति क्रमयुगाचलसंश्रितं ते ॥ ३९ ॥

कल्पान्तकालपवनोद्धतवह्निकल्पं,
दावानलं ज्वलितमुज्ज्वलमुत्स्फुलिङ्गम् ।
विश्वं जिघत्सुमिव सन्मुखमापतन्तं,
त्वन्नामकीर्तनजलं शमयत्यशेषम् ॥ ४० ॥

रक्तेक्षणां समदकोकिलकण्ठनीलं,
क्रोधोद्धतं फणिनमुत्फणमापतन्तम् ।
आक्रामति क्रमयुगेन निरस्तशङ्क—
स्त्वन्नामनागदमनी हृदि यस्य पुंसः ॥ ४१ ॥

वल्गुत्तरङ्गजगर्जितभीमनाद—
माजौ बल बलवतामपि भूपतीनाम् ।
उद्यद्दिवाकरमयूखशिखापविद्धं,
त्वत्कीर्तनोत्तम इवाशु भिदामुपैति ॥ ४२ ॥

कुन्ताग्रमिन्नगजशोणितवारिवाह—
वेगावतारतरणानुरयोधभीमे ।
युद्धे जयं विजितदुर्जयजेयपक्षा—
स्त्वत्पादपङ्कजवनाश्रयिणो लभन्ते ॥ ४३ ॥

अम्भोनिधौ क्षुभितभीषणनक्रचक्र—
पाठीनपीठभयदोलवणवाडवाग्नौ ।
रङ्गत्तरंगशिखरस्थितयानपात्रा—
स्त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद् व्रजन्ति ॥ ४४ ॥

उद्भूतभीषणजलोदरभारभुग्नाः,
शोच्यां दशामुपगताश्च्युतजीविताशा ।
त्वत्पादपङ्कजरजोऽमृतदिग्धदेहा,
मर्त्या भवन्ति मकरध्वज्जतुल्यरूपाः ॥ ४५ ॥

आपादकण्ठमुरुशृङ्खलवेष्टिताङ्गा,
गाढं बृहन्निगडकोटिनिघृष्टजङ्घाः ।
त्वन्नाममंत्रमनिशं मनुजाः स्मरन्तः,
सद्यः स्वयं विगतबंधभया भवन्ति ॥ ४६ ॥

मत्तद्विप्रेन्द्रमृगराजदवानलाहि—
सङ्ग्रामवारिधिमहोदरबन्धनोत्थम् ।
तस्याशुनाशमुपयाति भयं भियेव,
यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते ॥ ४७ ॥

स्तोत्रस्त्रजं तव जिनेन्द्र ! गुणैर्निबद्धां,
भक्त्या मया रुचिरवर्णविचित्रपुष्पाम् ।
धत्ते जनो य इह कण्ठगतामजस्रं,
तं मानतुङ्गमवशा समुपैति लक्ष्मीः ॥ ४८ ॥
॥ इति मान्तुङ्गाचार्य विरचिते स्तोत्रम् ॥

॥ श्रीसिद्धसेनदिवाकरप्रणीतम् ॥

॥ श्रीकल्याणमन्दिरस्तोत्रम् ॥



कल्याणमन्दिरमुदारमवद्यमेदि,
भीताभयप्रदमनिन्दितमंघ्रिपद्मम् ।
संसारसागरनिमज्जदशेषजंतु—
पोतायमानमभिनम्य जिनेश्वरस्य ॥ १ ॥

यस्य स्वयं सुरगुरुर्गरिमाम्बुराशेः,
स्तोत्रं सुविस्तृतमतिर्न विभुर्विधातुम् ।
तीर्थेश्वरस्य कमठस्मयधूमकेतो—
स्तस्याहमेष किल संस्तवनं करिष्ये ॥ २ ॥

सामान्यतोऽपि तव वर्णयितुं स्वरूप—
मस्मादृशाः कथमधीश ! भवंत्यधीशाः ।
धृष्टोऽपि कौशिकशिशुर्यदि वा दिवान्धो,
रूपं प्ररूपयति किं किल धर्मरश्मेः ॥ ३ ॥

मोहक्षयादनुभवन्नपि नाथ ! मर्त्यो,
नूनं गुणान् गणयितुं न तव क्षमेत ।
कल्पान्तवान्तपयसः प्रकटोऽपि यस्मान्—
मीयेत केन जलधेननु रत्नराशिः ? ॥ ४ ॥

अभ्युद्यतोऽस्मि तव नाथ ! जडाशयोऽपि,
कर्तुं स्तवं लसदसङ्ख्यगुणाकरस्य ।
बालोऽपि किं न निजबाहुयुगं वितत्य,
विस्तीर्णतां कथयति स्वधियाऽम्बुराशेः ? ॥ ५ ॥

ये योगिनामपि न यान्ति गुणास्तवेश
वक्तुं कथं भवति तेषु ममावकाशः ।
जाता तदेवमसमीक्षितकारितेयं,
जल्पन्ति वा निजगिरा ननु पक्षिणोऽपि ॥ ६ ॥

आस्तामचिन्त्यमहिमा जिन ! संस्तवस्ते,
नामाऽपि पाति भवतो भवतो जगन्ति ।
तीव्रातपोपहतपान्थजनाग्निदाघे,
प्रीणाति पद्मसररुः सरसोऽनिलोऽपि ॥ ७ ॥

हृद्वर्तिनि त्वयि विभो ! शिथिलीभवन्ति,
जंतोः क्षणेन निविडा अपि कर्मबन्धाः ।
सद्यो भुजङ्गममया इव मध्यभाग—
मभ्यागते वनशिखरिडनि चन्दनस्य ॥ ८ ॥

मुच्यंत एव मनुजा सहसा जिनेन्द्र !
रौद्रैरुपद्रवशतैस्त्वयि वीक्षितेऽपि ।
गोस्वामिनि स्फुरिततेजसि दृष्टमात्रे,
चोरैरिवाशु पशवः प्रपलायमानैः ॥ ९ ॥

त्वं तारको जिन ! कथं ? भविनां त एव,
त्वामुद्वहन्ति हृदयेन यदुत्तरन्तः ।
यद्वा दृतिस्तरति यज्जलमेष नून—
मन्तर्गतस्य मरुतः स किलानुभावः ॥ १० ॥

यस्मिन् हरप्रभृतयोऽपि हतप्रभावाः,
सोऽपि त्वया रतिपतिः क्षपितः क्षणेन ।
विध्यापिता हुतभुजः पयसाऽथ येन,
पीतं न किं तदपि दुर्धरवाडवेन ? ॥ ११ ॥

स्वामिन्ननल्पगरिमाणमपि प्रपन्ना—
स्त्वां जन्तवः कथमहो हृदये दधानाः ।
जन्मोदधिं लघु तरन्त्यतिलाघवेन,
चिन्त्यो न हन्त ! महतां यदि वा प्रभावः ॥ १२ ॥

क्रोधस्त्वया यदि विभो ! प्रथमं निरस्तो,
ध्वस्तास्तदा बत कथं किल कर्मचौराः ?
प्लोषत्यमुत्र यदि वा शिशिराऽपि लोके,
नीलद्रुमाणि विपिनानि न किं हिमानी ॥ १३ ॥

त्वां योगिनो जिन ! सदा परमात्मरूप—
मन्वेषयन्ति हृदयाम्बुजकोशदेशे ।
पूतस्य निर्मलरुचेर्यदि वा किमन्य—
दत्तस्य सम्भवि पदं ननु कर्णिकायाः ? ॥ १४ ॥

ध्यानाज्जिनेश ! भवतो भविनः क्षणेन,
देहं विहाय परमात्मदशां व्रजन्ति ।
तीव्रानलादुपलभावमपास्य लोके,
चामीकरत्वमचिरादिव धातुभेदाः ॥ १५ ॥

अन्तः सदैव जिन ! यस्य विभाव्यसे त्वं,
भव्यैः कथं तदपि नाशयसे शरीरम् ।
एतत्स्वरूपमथ मध्यविवर्त्तिनो हि,
यद्विग्रहं प्रशमयन्ति महानुभावाः ॥ १६ ॥

आत्मा मनीषिभिरयं त्वदभेदबुद्ध्या,
ध्यातो जिनेन्द्र ! भवतीह भवत्प्रभावः ।
पानीयमप्यमृतमित्यनुचिन्त्यमानं,
किं नाम नो विषविकारमपाकरोति ॥ १७ ॥

त्वामेव वीततमसं परवादिनोऽपि,
नूनं विभो ! हरिहरादिधिया प्रसन्नाः ।
किं काचकामलिभिरीश ! सितोऽपि शङ्खो,
नो गृह्यते विविधवर्णविपर्ययेण ॥ १८ ॥

धर्मोपदेशसमये सविधानुभावा—
दास्तां जनो भवति ते तरुरप्यशोकः ।
अभ्युद्गते दिनपतौ स महीरुहोऽपि,
किं वा विबोधमुपयाति न जीवलोकः ॥ १९ ॥

चित्रं विभो ! कथमवाङ्मुखवृन्तमेव,
विष्वक् पतत्यविरला सुरपुष्पवृष्टिः ? ।
त्वद्गोचरे सुमनसां यदि वा मुनीश !,
गच्छन्ति नूनमथ एव हि बन्धनानि ॥ २० ॥

स्थाने गंभीरहृदयोदधिसंभवायाः,
पीयूषतां तव गिरः समुदीरयन्ति ।
पीत्वा यतः परमसंमदसङ्गभाजो,
भव्या व्रजन्ति तरसाऽप्यज्रामरत्वम् ॥ २१ ॥

स्वामिन् ! सुदूरमवनम्य समुत्पतन्तो,
मन्ये वदन्ति शुचयः सुरचामरौघाः ।
येऽस्मै नतिं विदधते मुनिपुङ्गवाय,
ते नूनमूर्ध्वगतयः खलु शुद्धभावाः ॥ २२ ॥

श्यामं गंभीरगिरमुज्ज्वलहेमरत्न—
सिंहासनस्थमिह भव्यशिखरिडनस्त्वाम् ।
आलोकयन्ति रभसेन नदन्तमुच्चै—
श्चामीकराद्रिशिरसीव नवाम्बुवाहम् ॥ २३ ॥

उद्गच्छतः तव शितिद्युतिमंडलेन,
लुप्तच्छदच्छविरशोकतरुर्बभूव ।
सान्निध्यतोऽपि यदि वा तव वीतराग !
नीरागतां व्रजति को न सचेतनोऽपि ॥ २४ ॥

भो भो ! प्रमादमवधूय भजध्वमेन—
मागत्य निर्वृतिपुरी प्रति सार्धवाहम् ।
एतन्निवेदयति देव ! जगस्त्रयाय,
मन्ये नवन्नभिनमः सुरहुन्दुभिस्ते ॥ २५ ॥

उद्योति तेषु भवता भुवनेषु नाथ !
 तारान्वितो विधुरयं विहताधिकारः ।
 मुक्ताकलापकलितोच्छ्वसितातपत्र—
 व्याजात्त्रिधा धृततनुर्ध्रुवमभ्युपेतः ॥ २६ ॥

स्वेन प्रपूरितजगत्त्रयपिण्डितेन,
 कान्तिप्रतापयशसामिव सञ्चयेन !
 माणिक्यहेमरजतप्रविनिर्मितेन,
 सालत्रयेण भगवन्नभितो विभासि ॥ २७ ॥

दिव्यस्त्रजो जिन ! नमस्त्रिदशाधिपाना-
 मुत्सृज्य रत्नरचितानपि मौलिबन्धान् !
 पादौ श्रयन्ति भवतो यदि वा परत्र,
 त्वत्सङ्गमे सुमनसो न रमन्त एव ॥ २८ ॥

त्वं नाथ ! जन्मजन्मैर्विपराडमुखोऽपि,
 यत्तारयस्यसुमतो निजपृष्ठलग्नः ।
 कुक्षं हि पार्थिवनिपस्य सतस्तवैव,
 चित्रं विभो ! यदसि कर्णविपाकशून्यः ॥ २९ ॥

विश्वेश्वरोऽपि जनपालक ! दुर्गतस्त्वं,
 किंवाक्षरप्रकृतिरप्यलिपिस्त्वमीश ! ।
 अज्ञानवत्यपि सदैव कथञ्चिदेव,
 ज्ञानं त्वयि स्फुरति विश्वविकाशहेतुः ॥ ३० ॥

प्राग्भारसंभृतनभांसि रजांसि रोषा—
 दुत्थापितानि कमठेन शठेन यानि ।
 छायापि तैस्तव न नाथ ! हता हताशो,
 प्रस्तस्त्वमीभिरयमेव परं दुरात्मा ॥ ३१ ॥

यद्गर्जदुर्जितघनौघमदभ्रमीमं,
भ्रश्यत्तडिन्मुसलमांसलघोरधारम् ।
दैत्येन मुक्तमयदुस्तरवारि दध्रे,
तेनैव तस्य जिन ! दुस्तरवारिकृत्यम् ॥ ३२ ॥

ध्वस्तोर्ध्वकेशविकृताकृतिमस्यमुण्ड—
प्रालम्बभृद्भयदवक्रविनिर्यदग्निः ।
प्रेतव्रजः प्रतिभवन्तमपीरितो यः,
सोऽस्याऽभवत्प्रतिभुवं भवदुःखहेतुः ॥ ३३ ॥

धन्यास्त एव भुवनाधिप ! ये त्रिसन्ध्य—
माशोधयन्ति विधिवद्विधुतान्यकृत्याः ।
भक्त्योल्लसत्पुलकपद्मलदेहदेशाः;
पादद्वयं तव विभो ! भुवि जन्मभाजः ॥ ३४ ॥

अस्मिन्नपारभववारिनिधौ मुनीश !,
मन्ये न मे श्रवणगोचरतां गतोऽसि ।
आकर्णिते तु तव गोत्रपवित्रमन्त्रे,
किं वा विषद्विषधरी सविधं समेति ॥ ३५ ॥

जन्मांतरेऽपि तव पादयुगं न देव !,
मन्ये मया महितमीहितदानदक्षम् ।
तेनेह जन्मनि मुनीश ! पराभवानां,
जातो निरुक्तनमहं मथिताशयानाम् ॥ ३६ ॥

नूनं न मोहतिमिरावृतलोचनेन,
पूर्वं विभो ! सकृदपि प्रविलोकितोऽसि ।
मर्माविधो विधुरयन्ति हि मामनर्थाः,
प्रोद्यन्प्रबन्धगतयः कथमन्यथैते ? ॥ ३७ ॥

आकर्णितोऽपि महितोऽपि निरीक्षितोऽपि,
नूनं न चेतसि मया विधृतोऽसि भक्त्या ।
जातोऽस्मि तेन जनबान्धव ! दुःखपात्रं,
यस्मात्क्रियाः प्रतिफलन्ति न भावशून्याः ॥ ३८ ॥

त्वं नाथ ! दुःखजनवत्सल ! हे शरण्य !,
कारुण्यपुण्यवसते ! वशिनां वरेण्य ! ।
भक्त्या न ते मयि महेश ! दयां विधाय,
दुःखाङ्कुरोदलनतत्परतां विधेहि ॥ ३९ ॥

निःसङ्ख्यसारशरणां शरणां शरण्य—
मासाद्य सादितरिपुप्रथितावदानम् ।
त्वत्पादपङ्कजमपि प्रणिधानवन्ध्यो,
वध्योऽस्मि चेद्भुवनपावन ! हा हतोऽस्मि ॥ ४० ॥

देवेन्द्रवन्द्य ! विदिताखिलवस्तुसार !,
संसारतारक ! विभो ! भुवनाधिनाथ ! ।
त्रायस्व देव ! करुणाहृद् ! मां पुनीहि,
सीदन्तमद्य भयदव्यसनाम्बुराशेः ॥ ४१ ॥

यद्यस्ति नाथ ! भवदङ्घ्रिसरोरुहाणां,
भक्तेः फलं किमपि सन्ततसञ्चितायाः ।
तन्मे त्वदेकशरणस्य शरण्य ! भूयाः,
स्वामी त्वमेव भुवनेऽत्र भवान्तरेऽपि ॥ ४२ ॥

इत्थं समाहितधियो विधिवज्जिनेन्द्र !
सान्द्रोल्लसत्पुलककञ्चुकिताङ्गभागाः ।
त्वद्विम्बनिर्मलसुखाम्बुजबद्धलक्ष्या,
ये संस्तवे तव विभो ! रचयन्ति भक्त्याः ॥ ४३ ॥

जननयनकुमुदचंद्र-प्रभास्वरा स्वर्गसंपदो भुक्त्वा ।
ते विगलितमलनिचया, अचिरान्मोक्षं प्रपद्यन्ते ॥ ४४ ॥

॥ श्री रत्नाकरपञ्चविंशतिः ॥

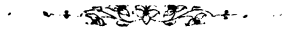
उपजातिवृत्तम्

श्रेयः श्रियां मंगलकेलिसङ्घ !, नरेन्द्रदेवेन्द्रनतांघ्रिपद्म ! ।
सर्वज्ञ ! सर्वातिशयप्रधान !, चिरञ्जयज्ञानकलानिधान ! ॥१॥
जगत्त्रयाधार ! कृपावतार ! दुर्वारसंसारविकारवैद्य !
श्रीव्रीतराग ! त्वयिमुग्धभावा-द्विज्ञप्रभो विज्ञपयामि किञ्चित् २
किं बाललीलाकलितो न बालः, पित्रोःपुरो जल्पति निर्विकल्पः ।
तथा यथार्थं कथयामि नाथ !, निजाशयं सानुशयस्तवाग्रे ॥३॥
दत्तं न दानं परिशीलितं च, न शालि शीलं न तपोऽभितप्तम् ।
शुभो न भावोऽप्यभवद् भवेऽस्मिन्, विभो ! मया भ्रांतमहो मुधैव
दग्धोऽग्निना क्रोधमयेन दष्टो, दुष्टेन लोभाख्यमहोरगेण ।
ग्रस्तोऽभिमानाजगरेण माया-जालेन बद्धोऽस्मि कथं भजे त्वां ५
कृतं मयाऽमुत्र हितं न चेह, लोकेऽपि लोकेऽह ! सुखं न मेऽभूत् ।
अस्मादृशां केवलमेव जन्म, जिनेश ! जज्ञे भवपूरणाय ॥६॥
मन्ये मनो यन्नमनोऽज्ञवृत्त !, त्वदास्यपीयूषमयूखलाभात् ।
द्रुतं महानन्दरसं कठोर-मस्मादृशां देव ! तदश्मतोऽपि ॥७॥
त्वत्तः सुदुःप्रापमिदं मयाऽऽप्तं, रत्नत्रयं भूरिभवभ्रमेण ।
प्रमादनिद्रावशतो गतं तत्, कस्याऽग्रतो नायक ! प्लूकरोऽसि ॥८॥

वैराग्यरङ्गः परवञ्चनाय, धर्मोपदेशो जनरञ्जनाय ।
 वादाय विद्याऽध्ययनं च मेऽभूत्, कियद्ब्रुवे हास्यकरं स्वमीश !
 परापवादेन मुखं सदोषं, नेत्रं परस्त्रीजनवीक्षणेन ।
 चेतः परापायविचिन्तनेन, कृतं भविष्यामि कथं विभोऽहं ॥१०॥
 विडम्बितं यत्स्मरघस्मरार्त्ति—दशावशात्स्वं विषयांधलेन ।
 प्रकाशितं तद्भवतो ह्रियैव, सर्वज्ञ ! सर्वं स्वयमेव वेत्सि ॥११॥
 ध्वस्तोऽन्यमन्त्रैः परमेष्ठिमन्त्रः कुशाखवाक्यैर्निहतागमोक्तिः ।
 कर्तुं वृथाकर्मकुदेवसंगादवाच्छि हि नाथ ! मतिभ्रमो मे ॥१२॥
 विमुच्य दृगलक्ष्यगतं भवन्तं, ध्याता मया मूढधिया हृदन्तः ।
 कटान्तवक्षोजगभीरनाभी, कटीतटीयाः सुदृशां विलासाः ॥१३॥
 लोलेक्षणावक्त्रनिरीक्षणेन यो मानसे रागलवो विलग्नः ।
 न शुद्धसिद्धांतपयोधिमध्ये, धौतोप्यगात्तारक कारणं किं ॥१४॥
 अंगं न चंगं न गणो गुणानां, न निर्मलः कोऽपि कलाविलासः ।
 स्फुरत्प्रधानप्रभुता च काऽपि, तथाप्यहंकारकदर्थितोऽहं ॥१५॥
 आयुर्गलत्याशु न पापबुद्धि-र्गतं वयो नो विषयाभिलाषः ।
 यत्तश्च भैषज्यविधौ न धर्मं, स्वामिन्महामोहविडम्बना मे ॥१६॥
 नात्मा न पुण्यं न भवो पापं, मया विटानां कटुगीरपीयं ।
 आधारि कर्णे त्वयि केवलाकें, परिस्फुटे सत्यपि देव ! धिग्माम् १७
 न देवपूजा न च पात्रपूजा, न श्राद्धधर्मश्च न साधुधर्मः ।
 लब्ध्वापि मानुष्यमिदं स भस्तं, कृतं मयाऽरण्यविलापतुल्यं ॥१८॥
 चक्रे मया सत्स्वऽपि कामधेनु—कल्पद्रुचिन्तामणिषु स्पृहार्त्तिः ।
 न जैनधर्मे स्फुटशर्मदेऽपि, जिनेश ! मे पश्य विमूढभावं ॥१९॥
 सद्भोगलीला न च रोगक्रीला, धनागमो नो निधनागमश्च ।
 दारानकारा नरकस्य चित्ते, व्यचिन्ति नित्यं मयकाऽधमेन २०.
 स्थितं न साधोर्हृदि साधुवृत्तात्, परोपकारान्न यशोऽर्जितं च ।
 कृतं न तीर्थोद्धरणादिकृत्यं, मया मुधाहारितमेव जन्म ॥२१॥

वैराग्यरंगो न गुरुदितेषु, न दुर्जनानां वचनेषु शान्तिः ।
 नाध्यात्मलेशो ममकोऽपि देव, तार्यः कथङ्कारमयम्भवाब्धिः ॥२२॥
 पूर्वं भवेऽकारि मया न पुण्य-मागामिजन्मन्यपि नो करिष्ये ।
 यदीदृशोऽहं मम ते न नष्टा, भूतोद्भवाद्भाविभवत्रयीश ! ॥२३॥
 किंवा मुधाऽहं बहुधा सुधाभुक्, पूज्य ! त्वदग्रे चरिते स्वकीयं ।
 जल्पामि यस्मात् त्रिजगत्स्वरूप ! निरूपकरत्वे कियदेतदत्र ॥२४॥
 शार्दूलः-दीनोद्धार धुरन्धरस्त्वदपरो नास्ते मदन्यः कृपा ।

पात्रं नात्र जने जिनेश्वर ! तथाऽप्येतां न याचं श्रियं ।
 किं त्वर्हन्निदमेव केवलमहो सद्बोधिरतन्नेशिव ।
 श्रीरत्नाकरमंगलैकनिलय ! श्रेयस्करं प्रार्थये ॥२५॥



श्री अमितगतिसूरिविरचित प्रार्थना पञ्चविंशतिः

॥ उपजातिवृत्तम् ॥

सत्त्वेषु मैत्रीं गुणिषु प्रमोदं, क्लिष्टेषु जीवेषु कृपापरत्वम् ।
 माध्यस्थ्यभावं विपरीतवृत्तौ, सदा ममात्मा विदधातु देव ! ॥१॥
 शरीरतः कर्तुमनन्तशक्तिं, विभिन्नमात्मानमपस्तदोषम् ।
 जिनेन्द्र ! कोषादिव खड्गयष्टिं, तव प्रसादेन ममास्तु शक्तिः ॥२॥
 दुःखे सुखे वैरिणि बन्धुवर्गे, योगे वियोगे भवने वने वा ।
 निराकृताऽशेषममत्वबुद्धेः, समं मनो मेऽस्तु सदाऽपि नाथ ! ॥३॥
 यः स्मर्यते सर्वमुनीन्द्रवृन्दैः, यः स्तूयते सर्वं नरामरेन्द्रैः ।
 यो गीयते वेदपुराणशास्त्रैः, स देवदेवो हृदये ममास्ताम् ॥४॥
 यो दर्शनज्ञानसुखस्वभावः समस्तसंसारविकारबाह्यः ।
 समाधिगम्यः परमात्मसंज्ञः, स देवदेवो हृदये ममास्ताम् ॥५॥

निषूदते यो भवदुःखजालम्, निरीक्षते यो जगदन्तरालम् ।
 योऽन्तर्गतो योगिनिरीक्षणीयः, स देवदेवो हृदये ममास्ताम् ॥ ६ ॥
 विमुक्तिपार्श्वप्रतिपादको यो, यो जन्ममृत्युव्यसनाद्व्यतीतः ।
 त्रिलोकलोकी विकलोऽकलंकः, स देवदेवो हृदये ममास्ताम् ॥ ७ ॥
 कोडीकृताशेषशरीरिवर्गा, रागादयो यस्य न संति दोषाः ।
 निरिन्द्रियो ज्ञानमयोऽनपायः, स देवदेवो हृदये ममास्ताम् ॥ ८ ॥
 यो व्यापको विश्वजनीनवृत्तिः, सिद्धो विबुद्धो धूतकर्मबन्धः ।
 ध्यातो धुनीते सकलं विकारं, स देवदेवो हृदये ममास्ताम् ॥ ९ ॥
 न स्पृश्यते कर्मकलंकदौषैः, यो ध्वान्तसंघैरिव तिग्मरश्मिः ।
 निरञ्जनं नित्यमनेकमेकं, तं देवमाप्तं शरणं प्रपद्ये ॥ १० ॥
 विभासते यत्र मरीचिमालि-न्यविद्यमाने भुवनावभासि ।
 स्वात्मस्थितं बोधमयप्रकाशं, तं देवमाप्तं शरणं प्रपद्ये ॥ ११ ॥
 विलोक्यमाने सति यत्र विश्वं विलोक्यते स्पष्टमिदं विविक्लम् ।
 शुद्धं शिवं शान्तमनाद्यनेतं, तं देवमाप्तं शरणं प्रपद्ये ॥ १२ ॥
 येन क्षता मन्मथमानमूर्छा—विषादनिद्राभयशोकचिन्ताः ।
 क्षय्योऽनलेनेव तरुप्रपञ्चस्तं देवमाप्तं शरणं प्रपद्ये ॥ १३ ॥

प्रतिक्रमण—[प्रभुसमी पेस्वात्मचिन्तनं]

विनिन्दनालोचनगर्हणैरहं, मनोवचःकायकपायनिर्मितम् ।
 निहन्मि पापं भवदुःखकारणं, भिषग्विषं मंत्रगुणैरिवाखिलम् १४
 अतिक्रमं यं विमतेर्व्यतिक्रमं, जिनातिचारं सुचरित्रकर्मणः ।
 व्यधामनाचारमपि प्रमादतः, प्रतिक्रमं तस्य करोमि शुद्धये १५
 न संस्तरोऽश्मानं न तृणं न मेदिनी, विधानतो नो फलको विनिर्मितः
 यतो निरस्ताक्षकषायविद्विष, सुधीभिरात्मैव सुनिमलोमतः १६
 न संस्तरो भद्रं समाधिसाधनं, न लोकपूजा न च संघमेलनम् ।
 यतस्ततोऽध्यात्मरतो भवाऽनिशं, विमुच्य सर्वमपि बाह्यवासनाम्

न संति बाह्या मम केचनार्था, भवामि तेषां न कदाचनाहम् ।
 इत्थं विनिश्चित्य विमुच्य बाह्यं, स्वस्थः सदा त्वं भव भद्र-मुक्त्यै
 आत्मानमात्मन्यविलोक्यमानस्त्वं दर्शनज्ञानमयो विशुद्धः,
 एकाग्रचित्तः खलु यत्र तत्र, स्थितोऽपि साधुर्लभते समाधिम् १६
 एकः सदा शाश्वतिको ममात्मा, विनिर्मलः साधिगमस्वभावः,
 बहिर्भवाः सन्त्यपरे समस्ताः, न शाश्वताः कर्मभवाः स्वकीयाः २०
 यस्यास्ति नैक्यं वपुषापि साध्यं, तस्यास्ति किं पुत्रकलत्रमित्रैः,
 पृथक्कृते चर्मणि रोमकृपाः, कुतो हि तिष्ठन्ति शरीरमध्ये ॥ २१ ॥
 संयोगतो दुःखमनैकभेदं, यतोऽश्नुते जन्मवने शरीरी,
 ततस्त्रिधासौ परिवर्जनीयो, यियासुना निर्वृतिमात्मनीनाम् २२
 सर्वं निराकृत्य विकल्पजालं, संसारकान्तारनिपातहेतुम्;
 विविक्लमात्मानमवेक्ष्यमाणो, निलीयसे त्वं परमात्मतत्त्वे ॥ २३ ॥
 स्वयं कृतं कर्म यदात्मना पुरा, फलं तदीयं लभते शुभाशुभम्,
 परेण दत्तं यदि लभ्यते स्फुटं, स्वयंकृतं कर्म निरर्थकं तदा ॥ २४ ॥
 विमुक्तिमार्गप्रतिकूलवर्तिना, मया कषायाक्षवशेन दुर्धिया,
 चारित्रशुद्धेयदकारि लोपने तदस्तु मिथ्या मम दुष्कृतं प्रभो ! २५

॥ श्री चिन्तामणि--पार्श्वनाथ--स्तोत्रम् ॥

॥ शार्दूलविक्रीडितवृत्तम् ॥

किं कर्पूरमयं सुधारसमयं किं चन्द्रोर्चिमयं ।
 किं लावण्यमयं महामणिमयं कारुण्यकेलिमयम् ॥
 विश्वानन्दमयं महोदयमयं शोभामयं चिन्मयं ।
 शुक्लध्यानमयं वपुर्जितवतेभूयाद् भक्तालम्बनम् ॥ १ ॥

पातालं कलयन् धरां धवलयन्नाकाशमापूरयन् ।
 दिक्चक्रं क्रमयन् सुरासुरनरश्रेणिं च विस्मापयन् ॥
 ब्रह्माण्डं सुखयन् जलानि जलधेः फेनच्छुलाललयन् ।
 श्रीचिन्तामणिगार्श्वसंभवयशो हंसश्चिरं राजते ॥ २ ॥

पुण्यानां विपणिस्तमो दिनमणिः कामेभकुम्भे सृणि—
 मूर्ति निस्तरणिः सुरेन्द्रकरिणी ज्योतिःप्रकाशारणिः ॥
 दाने देवमणिर्नतोत्तमजनश्रेणिः कृपासारिणी ।
 विश्वानन्दसुधाघृणिर्भवभिदे श्रीगार्श्वचिन्तामणिः ॥ ३ ॥

श्रीचिन्तामणिपार्श्वविश्वजनतासञ्जीवनस्त्वं मया ।
 दृष्टतात ! ततः श्रियः समभवन्नाशकमाचक्रिणम् ॥
 मुक्तिः क्रीडति हस्तयोर्बहुविधं सिद्धं मनोवाञ्छितं ।
 दुर्दैवं दुरितं च दुर्दिनभयं कष्टं प्रणष्टं मम ॥ ४ ॥

यस्य प्रौढतमप्रतापतपनः प्रोढामधामा जग—
 जङ्गलः कलिका न केलिदलनो मोहान्धविध्वंसकः
 नित्योद्योतपदं समस्तकमलाकेलिगृहं राजते ।
 स श्रीगार्श्वजिनो जने हितकरश्चिन्तामणिः पातु माम् ॥ ५ ॥

विश्वव्यापितमो हिनस्ति तरणिबीलोपि कल्पाङ्कुरो ।
 दारिद्र्याणि गजावलीं हरिशिशुः काष्ठानि वह्नेः कणः ॥
 पीयूषस्य लवोऽपि रोगनिवहं यद्वत्तथा ते विभो ! ।
 मूर्तिः स्फूर्तिमती सती त्रिजगतीकृष्टानि हर्तुं क्षमा ॥ ६ ॥

श्रीचिन्तामणिमंत्रमोक्तियुतं ह्रींकारसारश्रितं ।
 श्रीमदर्हन्नमिऊणपाशकलितं त्रैलोक्यवश्यावहम् ॥
 द्वेधाभूतविषापहं विषहरं श्रेयःप्रभावाश्रयं ।
 सोल्लासं वसहाङ्कितं जितफुल्लिगानन्ददं देहिनाम् ॥ ७ ॥

ही श्रींकारवरं नमोऽक्षरपरं ध्यायंति ये योगिनो-
हृत्पद्मे विनिवेश्य पार्श्वमधिपं चिंतामणिसंज्ञकम् ॥
भाले वामभुजे च नाभिकटयोर्भुयो भुजे दक्षिणे ।
पश्चादष्टदलेषु ते शिवपदं द्वित्रैर्भवैर्यान्त्यहो ॥ ८ ॥
स्रग्धरा-नो रोगानैव शोकान कलहकलना नारिमारिप्रचारा-
नैवाधिर्नासमाधिर्न च दरदुरिते दुष्टदारिद्रता नो ॥
नो शाकिन्यो ग्रहा नो न हरिकरिगणा व्यालवेतालजाला-
जायंते पार्श्वचिन्तामणिनतिवशतः प्राणिनां भक्तिभाजाम् ६
शार्दूलः-गीर्वाणदुग्धेन कुम्भमण्यस्तस्याङ्गणे रंगिणो-
देवा दानवमानवाः सविनयं तस्मै हितध्यायिनः ॥
लक्ष्मीस्तस्य वशाऽवशेव गुणिनां ब्रह्माण्डसंस्थायिनी ।
श्रीचिन्तामणिपार्श्वनाथमनिशं संस्तौति यो ध्यायति १०
मालिनीः-इति जिनपतिपार्श्वः पार्श्वपार्श्वार्थयक्षः
प्रदलितदुरितौघः प्रीणितप्राणिसार्थः ।
त्रिभुवनजनवाञ्छादानचिन्तामणिकः ।
शिवपदतरुबीजं बोधिबीजं ददातु ॥ ११ ॥

मेरी भावना

जिसने राग द्वेष कामादिक, जीते सब जग जान लिया ।
सब जीवों को मोक्ष माग का, निस्पृह हो उपदेश दिया ॥
बुद्ध वीर जिन हरि हर ब्रह्मा, या उसको स्वाधीन कहो ।
भक्ति भाव से प्रेरित हो, यह चित्त उसी में लीन रहो ॥१॥
विषयों की आशा नहीं जिनके, साम्य भाव धन रखते हैं ।
निज पर के हित साधन में जो, निशिदिन तत्पर रहते हैं ॥

स्वार्थ त्याग की कठिन तपस्या, बिना खेद जो करते हैं ।
 ऐसे ज्ञानी साधु जगत के, दुःख समूह को हरते हैं ॥२॥
 रहे सदा सत्संग उन्हीं का, ध्यान उन्हीं का नित्य रहे ।
 उन्हीं जैसी चर्या में यह, चित्त सदा अनुगृह्य रहे ॥
 नहीं संताऊँ किसी जीव को, झूठ कभी नहीं कहा करूँ ।
 परधन वनिता पर न लुभाऊँ, संतोषामृत पिया करूँ ॥३॥
 अहंकार का भाव न रक्खूँ, नहीं किसी पर क्रोध करूँ ।
 देख दूसरों की बढ़ती को, कभी न ईर्ष्या भाव धरूँ ॥
 रहे भावना ऐसी मेरी, सरल सत्य व्यवहार करूँ ।
 बने जहाँ तक इस जीवन में, औरों का उपकार करूँ ॥४॥
 मैत्री भाव जगत में मेरा, सब जीवों से नित्य रहे ।
 दीन दुःखी जीवों पर मेरे, उर से करुणा स्रोत बहे ॥
 दुर्जन-कूर-कुमार्गियों पर, क्रोध नहीं मुझको आवे ।
 साम्यभाव रक्खूँ मैं उन पर, ऐसी परिणति हो जावे ॥५॥
 गुणी जनों को देख हृदय में, मेरे प्रेम उमड़ आवे ।
 बने जहाँ तक उनकी सेवा, करके यह मन सुख पावे ॥
 होऊँ नहीं कृतघ्न कभी मैं, द्रोह न मेरे उर आवे ।
 गुण ग्रहण का भाव रहे, नित दृष्टि न दोषों पर जावे ॥६॥
 कोई बुरा कहो या अच्छा, लक्ष्मी आवे या जावे ।
 लाखों वर्षों तक जीवूँ, या मृत्यु आज ही आ जावे ॥
 अथवा कोई कैसा ही, भय या लालच देने आवे ।
 तो भी न्याय मार्ग से मेरा, कभी न पद डिगने पावे ॥७॥
 होकर सुख में मग्न न फूलें, दुःख में कभी न घबरावें ।
 पर्वत, नदी, स्मशान भयानक, अटवी से नहीं भय खावे ॥
 रहे अडोल, अकम्प निरन्तर, यह मन दृढ़तर बन जावे ।
 इष्ट वियोग अनिष्ट योग में, सहनशीलता दिखलावें ॥८॥

सुखी रहे सब जीव जगत के, कोई कभी न घबरावे ।
 वैर पाप अभिमान छोड़, जग जित्य नये मंगल गावें ॥
 घर घर चर्चा रहे धर्म की, दुष्कृत दुष्कर हो जावें ।
 ज्ञानचरेत उन्नत कर अपना, मनुज जन्म फल सब पावें ६
 ईति भीति व्यापे नहीं जग में, वृष्टि समय पर हुआ करे ।
 धर्मनिष्ठ होकर राजा भी, न्याय प्रजा का किया करे ॥
 रोग मरी दुर्मित्त न फैले, प्रजा शान्ति से जिया करे ।
 परम अहिंसा धर्म जगत में, फल सर्व हित किया करे १०॥
 फैले प्रेम परस्पर जग में, मोह दूर पर रहा करे ।
 अप्रिय, कटुक, कठोर शब्द नहीं, कोई मुख से कहा करे ॥
 वनकर सब “युग-वीर” हृदय से, देशोन्नतिरत रहा करें ।
 वस्तु स्वरूप विचार खुशी से, सब दुःख संकट सहा करे ११

प्रकीर्ण गाथाएँ

नमिऊरां असुरसुरगरूल-भूथंगपरिवंदिय-गयकिलेसे ।
 अरिहंतसिध्दायगियउवज्झायसध्वसाहूरां ॥
 सिद्धाणं बुद्धाणं पारगयाणं परंपारगयाणं ।
 लोअगगमुवगयाणं नमो सया सध्व-सिद्धाणं ॥१॥
 जो देवाणमवि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति ।
 तं देवं देवमहियं सिरसा वन्दे महावीरं ॥२॥
 इक्को वि नमुक्कारो, जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स ।
 संसार-सागराओ तारेइ नरं व नारिं वा ॥३॥
 उज्जितसेल-सिहरे दिक्ख। नारां निसिहीआ जस्स ।
 तं धम्मचक्कवट्ठिं अरिट्टुनेमिं नमस्सामि ॥४॥

चत्तारि अट्टदस दोय वंदिया जिणवरा चउव्वीसं ।

परमट्ट निट्ठिअट्टा सिद्धा सिद्धि ममं दिसंतु ॥५॥

सिद्धाणां नमो किञ्चा, संजयाणां च भावओ ।

सन्ती सन्तीकरे लोए, पत्तो गइमणुत्तरं ॥

अर्थ—इच्छित कार्य-सिद्धि होने के लिए प्रथम इष्टदेव को नमस्कार किया जाता है । सिद्धाणां अर्थात् सिद्ध भगवान् को नमस्कार हों ।

संजयाणां अर्थात् संयति—आचार्य, उपाध्याय व सर्व साधु-साध्वीजी महाराज को नमस्कार हों । सारे लोक में शान्ति करने वाले शान्तिनाथ प्रभुजी को त्रिकरण-शुद्धभाव-पूर्वक नमस्कार हो ।

चइत्ता भारहं वासं, चक्कवट्ठी महड्डिओ ।

सन्ती सन्तीकरे लोए, पत्तो गइमणुत्तरं ॥

अर्थ—सारे लोक में शान्ति स्थापित करने वाले सोलहवें शान्तिनाथ नामके चक्रवर्त्ती महान् ऋद्धि-सिद्धि वाले भरत क्षेत्र का राज्य छोड़कर उत्तम (मोक्ष) गति को प्राप्त हुए ।

अलद्धं पुव्वलद्धं जिणवयण-सुभासियं अमियं ।

भूइसुयगइमग्गं ना मरणाय बीयामो ॥१॥

जा जा वच्चइ रयणी, न सा पडिनियत्तइ ।

अहम्मं कुणमाणस्स, अफला जंति राईओ ॥२॥

जा जा वच्चइ रयणी, न सा पडिनियत्तइ ।

धम्मं च कुणमाणस्स, सफला जंति राईओ ॥३॥

एवं लोए पलित्तम्मि, जराए मरणेण य ।

अप्पाणां तारइस्सामि, तुब्भेहिं अणुमन्निओ ॥४॥

एगे जिए जिया पंच, पंच जिए जिया दस ।

दसहा उ जिणित्ता णां, सब्व सच्च जिणामहं ॥५॥



छपाई का उत्तम संग्रह

श्री बालिमासिंह के प्रबन्ध से श्री गुरुकुल
प्रिन्टिंग प्रेस, ब्यावर से प्रकाशित ।